



# पजावी की प्रतिनिधि कहानियाँ

# प्रतिनिधि साहित्य माला

(Representative Literature Series)

इस माना में हिन्दी तथा अन्य भाषाओं के अग्रगण्य साहित्यकारों के प्रतिनिधि कहानी नाट्य तथा काव्य साहित्य का सफल-सम्पन्न विभाजन जा रहा है। हिन्दी में इस प्रकार का यह प्रथम प्रयास और योजना है। ये अन्य प्रत्येक पुस्तकालय वाचनालय और सस्था की गोभा बढ़ाएंगे।

स० योगेद्रकुमार लल्ला श्रीकृष्ण	हिन्दी सतिवाभा की प्रतिनिधि कहानियाँ	10 00
स० पद्मिनाथ शास्त्री योगेद्रकुमार लल्ला	दगला की प्रतिनिधि हास्य कहानियाँ (सचित्र)	10 00
स० श्रीकृष्ण मनमोहन सरल	प्रतिनिधि हास्य कहानियाँ (सचित्र)	प्रेस में
स० डा० महीपसिंह	पञ्जाबी की प्रतिनिधि कहानियाँ	10 00
स० किराक गोरखपुरी	उर्दू की प्रतिनिधि प्रेम कविताएँ (कामरूप)	7 50
स० अश मलसियानी	उर्दू की प्रतिनिधि हास्य कविताएँ (सचित्र)	7 50
स० श्रीकृष्ण मनमोहन सरल अरुण	प्रतिनिधि ऐतिहासिक कहानियाँ	8 00
स० श्रीकृष्ण अरुण मनमोहन सरल	प्रतिनिधि हास्य एकांकी	10 00
स० श्रीकृष्ण योगेद्रकुमार लल्ला	प्रतिनिधि सामूहिक गान (रगिन)	4 00
स० श्रीकृष्ण योगेद्रकुमार लल्ला	प्रतिनिधि बाल सामूहिक गान (रगिन)	3 00
स० श्रीकृष्ण योगेद्रकुमार लल्ला	प्रतिनिधि बाल एकांकी (सचित्र)	6 00
स० जयप्रकाश भारती	भारत की प्रतिनिधि लोक कथाएँ	15 00
स० श्रीकृष्ण योगेद्रकुमार लल्ला	प्रतिनिधि रगमचीय एकांकी	प्रेस में
स० श्रीकृष्ण योगेद्रकुमार लल्ला	प्रतिनिधि हास्य 'दग्ग' कविताएँ	प्रेस में
स० कुन्दनिका कापडिया नीरज	गुजराती की प्रतिनिधि कहानियाँ	प्रेस में
स० डा० नवलबिहारी मिश्र श्रीकृष्ण योगेद्रकुमार लल्ला	प्रतिनिधि धनात्मिक कहानियाँ	प्रेस में
स० डा० एन० एन० गुप्ता	मराठी की प्रतिनिधि हास्य कहानियाँ	प्रेस में

आत्माराम एण्ड सस, दिल्ली

# पंजाबी की प्रतिनिधि कहानियाँ

(पंजाब के सामाजिक ग्राम्य तथा राजनीतिक जीवन पर  
पंजाबी के प्रमुख लेखकों की कहानियाँ जो पंजाबी  
कथा-साहित्य की अमूल्य निधि हैं)

संपादक

डा महीपसिंह

हिंदी विभाग

श्रीगुरु तेगबहादुर खालसा कालेज

देवनगर नई दिल्ली ५

१९७०



आत्माराम एण्ड सस

दिल्ली नई दिल्ली जयपुर लखनऊ चण्डीगढ़

PUNJABI KI PRATINIDHI KAHANIAN  
(Representative Punjabi Stories)  
Edited by Dr MAHIP SINGH  
Price Rs 10 00

© 1970 ATMA RAM & SONS DELHI 6

प्रकाशक रामदाल पुरी सचालक  
आत्माराम एण्ड सस  
कश्मीरी गेट दिल्ली ६ ।

शाखाए हीन पास नई दिल्ली ।  
धमानी मार्केट चौडा रास्ता जयपुर ।  
१७ अशाक मार्ग लखनऊ ।  
विश्वविद्यालय क्षेत्र चंडीगढ़ ।

मूल्य रूपए १० ००

मुद्रक राष्ट्रवाणी प्रिण्टर्स,  
मन्तर धाना रोड  
दिल्ली ६ ।

## पजावी कहानी विकास की मजिले

पजाव की धरती कहानी के लिए गायद इम दग म सर्वाधिक उबरा भूमि है। तभी तो आज पजावी के अतिरिक्त हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं में लिखन वाल कया कारा में पजाव निवासी लेखकों का खासा बोलबाला है। यगपाल, उपेन्द्रनाथ अशक, चद्रगुप्त विद्यालकार मुत्सयन कृष्णचद्र, राजेर्द्रासह बली, सग्नान हसन मटो बल वर्तसिह मुल्कराज आनद और खुगवर्तसिह जमे बहुन से लेखकों ने भारतीय कहानी को समृद्ध बनान में अपना महत्वपूर्ण योग दिया है। वस्तुतः पजाव के जन-जीवन में लोक कथाओं का अपना विनिष्ट स्थान है। हीर राभा, सोहनी महीवाल, ससी-गुनू, मिर्जा साहिबा आदि प्रेमकथाओं और उन पर लिख गए किस्सा काया की पजाव और पजावी में एक ऐसी परम्परा है जो अय प्रदगों में दुलभ सी है।

गताश्रिया तक पजाव युद्ध की भूमि रहा है। जिस भूमि के निवासियों को रात की बची हुई रोटियों का आने वाली सुनह तक के लिए भरोसा नहीं था वहाँ के साहित्य में ग्रास्त्र पत्र की अपेक्षा लोक पत्र का अधिक विकसित होना स्वाभाविक ही था। आधुनिक पजाबी साहित्य की विभिन्न विधाओं की समुन्नत स्थिति में इस ऐतिहासिक मय की छाया आज भी दिखाई देती है।

कहानी की साहित्यिक विधा को जिस रूप में हम आज पहचानने हैं उसका विकास आधुनिक युग के नवोत्थान के साथ सभी भारतीय भाषाओं में लगभग एक साथ ही हुआ। सुविधा की दृष्टि से पजावी कहानी के इतिहास को तीन काल-खंडों में बाँटा जा सकता है—

सन १९०१ से १९३० तक पहला दौर

सन १९३० से १९५० तक दूसरा दौर

सन १९५० से आज तक तीसरा दौर

भाई बीरसिंह (सन १८७२-१९५७) को आधुनिक पजाबी साहित्य का जन्म दाता माना जाता है। उन्होंने सिख इतिहास के आधार पर कुछ उपन्यासों एक कहा निमा की रचना की। यद्यपि ऐतिहासिक प्रसंगा पर आधारित वे कहानियाँ आज की कहानी की परिकल्पना में पूरा नहीं उतरती तथापि इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि उन्होंने अपनी निबंध शैली की उन कहानियों द्वारा पजाबी साहित्य का अपने समय में एक नवीन और अलौकिक शली प्रदान की थी।

इस दौर का दूसरा महत्वपूर्ण नाम भाई मोहनसिंह बद (सन १८८१-१९३६) का है। भाई मोहनसिंह ने पजाबी पाठकों का परिचय अय भाषाओं में लिखी जा

रही कहानियों से बरबादा। उहाँन हिंदी, उर्दू और अँग्रेजी से बहुत सी कहानियाँ का पंजाबी अनुवाद किया और समाज सुधार की प्रवृत्ति को साहित्य मृज्जन की प्रमुख प्रवृत्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया। पंजाबी में कहानी-संग्रहों के प्रकाशन का भी भाई मोहनसिंह से ही प्रारम्भ हुआ। उनकी अनूदित और मौलिक कहानियाँ व तीन संग्रह 'रंग बिरंगे फूल (१९२७), हीरे दिव्याँ कणिकाँ (१९२७) और 'किम्मत दा चक्कर' (१९३४) प्रकाशित हुए।

चरनसिंह शहीद का नाम इस दौर के लेखकों में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। पंजाबी में हास्य और व्यंग्य की कहानियाँ के व जन्मदाता थे और उन्होंने इस माध्यम से सामाजिक बुराइयों पर बड़ी गहरी चोट की। चरनसिंह शहीद ने योरापीय भाषाओं की कहानियों का अध्ययन किया था अतः वह प्रभाव उनकी रचनाओं पर दृष्टिगत होता है। उनकी बहुत सी कहानियों का कल्पित हास्य पात्र बाबा बर-यामा उस युग के पंजाबी पाठकों की गहरी जान पहचान का पात्र बन गया था। उनकी कहानियाँ का एक संग्रह 'हसते हँसू (हसते आँसू)' प्रकाशित हुआ था जिसकी भूमिका में लेखक ने बड़े विश्वास से लिखा था कि ये कहानियाँ आने वाली पीढ़ी का मार्ग दर्शन करेंगी।

इसी समय पंजाबी में अनेक मासिक पत्रों का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। प्रीतम (१९२३) 'फुलवाडी (१९२४) किरती (१९२९) और हंस आदि पत्रों के प्रकाशन से पंजाबी में एक नई साहित्यिक चेतना का विकास हुआ। इन पत्रों के लिए बहुत सी कहानियाँ लिखी गईं। इन कहानियों के लिखने वालों में लालसिंह 'कमला अकाली,' ज्ञानी हीरसिंह दद, सोहनसिंह जोश ज्ञानी गुरुमुखसिंह मुसाफिर', बलवर्तसिंह चतरथ, अमरसिंह और कसरसिंह कवल आदि के नाम विशेष रूप से लिए जा सकते हैं।

कला और विषय की दृष्टि से उपयुक्त लेखकों की कहानियाँ अपने पूर्ववर्ती लेखकों से आगे बढ़ चुकी थीं। सामाजिक और धार्मिक सुधारों की ओर इंगित करने के साथ ही ये कहानियाँ उभरती हुई राजनीतिक चेतना का संदेश भी दे रही थीं। इस दृष्टि से उस दौर के तीन लेखकों ज्ञानी हीरसिंह दद ज्ञानी गुरुमुखसिंह मुसाफिर और सोहनसिंह जोश का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

सन् १९२८ में उर्दू लिपि में प्रकाशित पंजाबी पत्र पंजाबी दरबार के प्रकाशन से कहानी लेखकों का एक और बग सामने आया। उनमें सर्वाधिक महत्त्व का स्थान जोगवा फजलदीन का है। उनकी कहानियाँ के संग्रह 'अरबी अफसान' और इखलाकी कहानियाँ अपने समय में बड़े लोकप्रिय हुए थे।

उसी समय रूसी हिंदी बंगला और मराठी की भी बहुत सी कहानियाँ का पंजाबी में अनुवाद हुआ। अमर्यासिंह ने चव लिखा कलिआ नीपन से टालसटाय की कुछ कहानियाँ का एक संग्रह प्रकाशित कराया। मुल्कराज ने प्रेमचंद की और सोहनसिंह जोश ने बगवा और मराठी की कहानियाँ के पंजाबी अनुवाद प्रस्तुत किए।

पंजाबी कहानी के दूसरे दौर का प्रारम्भ नानकसिंह और गुरुवर्तसिंह के प्रकाश से होता है। पंजाबी कथा साहित्य में नानकसिंह का आगमन एक युगांतरकारी घटना

थी। नानकसिंह अपने प्रारम्भिक लेखन कायम प्रेमचन्द से प्रभावित हुए थे। परन्तु उनकी कल्पना शक्ति ने उपमास को कहानी की अपेक्षा अधिक गहराई और अपनत्व से अपनाया। नानकसिंह उपमासकार के रूप में जितने सफल और लोकप्रिय हुए उतने कहानीकार के रूप में नहीं।

नानकसिंह की पहली कहानी 'रखडी' सन १९२७ में प्रकाशित हुई। वह भारतीय पुनर्जागरण का युग था। सामाजिक कुरीतियों से मुक्त होने का प्रयत्न हमारी सामाजिक गतिविधियों का प्रेरणा स्रोत बना हुआ था और साहित्य की रचना इस विनिष्ट उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही हो रही थी। नानकसिंह की कहानियाँ में यह सुधारवादी स्वर बहुत प्रबल रहा। साम्प्रदायिक एकता, छुआ छूत विधवाशा और वैश्याओं की समस्या अनमेल विवाह जमींदारों के अत्याचार आदि विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक प्रश्नों को उठाने अपनी कहानियों में छुआ।

पंजाबी के गद्य-लेखन को गुरुबख्शसिंह ने सबसे अधिक गति दी और उसके स्वरूप को खूब सजाया-सँवारा। युद्धों से आक्रांत रहने पर भी पंजाब की धरती से प्रीति का पौदा कभी नहीं कुम्हलाया। गीत और प्रणय के गीत पंजाबी जीवन में साथ साथ उभरते रहे हैं। परन्तु वीर गीत जहाँ पंजाब के विभिन्न सम्प्रदायों के वीर-पुत्रों की प्रशस्ति में लिखे जाने के कारण उस विनिष्ट वगैरे तक ही सीमित रहे वहाँ प्रणय गीत इन विभेदों से ऊपर उठकर पंजाब मात्र के जन जीवन में लोकप्रिय हुए।

भाई वीरसिंह से लेकर नानकसिंह तक पंजाबी जीवन के उस शीघ्र पक्ष का ही एक प्रकार में पुनर्जागरण हुआ था। परन्तु प्रीति पक्ष के पुनरुद्घाटन का श्रेय गुरुबख्शसिंह को है। सन १९३३ में उन्होंने प्रीतलडी का प्रकाशनारम्भ किया, जो आज भी पंजाबी का सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक पत्र है। प्रीतलडी का प्रकाशन आधुनिक पंजाबी साहित्य के लिए एक बड़ी महत्वपूर्ण घटना थी।

गुरुबख्शसिंह के कथनानुसार उन्होंने अपनी पहली कहानी 'प्रीतमा' सन १९१३ में लिखी थी परन्तु उनकी कहानियों का प्रथम संग्रह प्रीत कहानियाँ सन १९३८ में प्रकाशित हुआ था।

गुरुबख्शसिंह पंजाबी के प्रथम लेखक हैं जिनकी रचनाओं पर विदेशी प्रभाव सबसे पहले स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हुआ। अपने जीवन के आरम्भिक वर्ष उन्होंने अमेरिका में व्यतीत किये थे। वहाँ के जीवन का गहरा प्रभाव लेकर वे भारत में आए। स्त्री स्वातन्त्र्य और स्त्री-मुक्षय के शाश्वत प्रेम सम्बन्धों पर सामाजिक कथनों का विरोध उनकी प्रारम्भिक रचनाओं के मुख्य स्वर बन।

गुरुबख्शसिंह और नानकसिंह ने पंजाबी कहानी को आधुनिक आवश्यकताओं के अनुकूल बनाने में बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया था। हृष की बात है कि पंजाबी के ये दोनों वयोवृद्ध लेखक आज भी लिख रहे हैं। समय की बदलती हुई मायताओं की ओर से इन्हें कभी अपने आपको विमुक्त नहीं किया। सुधारवाद से प्रगतिवाद और प्रगतिवाद से मानवतावादी दृष्टिकोण की ओर इनकी लेखनी सदैव सजग रूप से अग्रसर होती रही है।



परन्तु कहानीकारों की जिम्मेदारी में पजाबी कहानियों को पश्चिमी बना दिया न स्तर तक जान था ज्ञान दिया इनमें गतिगिह संगीत गुजानसिंह और गुजानसिंह दुग्गल उल्लेखनीय हैं । तथा उन अपने सतत कथ्य अथवा स अन्वेष विद्या और विद्या पजाबी में विद्यमान । पश्चिमी दशा में विद्या जान याता कहानी का उठाने मूर्धनता में अध्ययन विद्या था । यह वह समय था जब भारत की मभा भाषाया का साहित्य प्रगतिशील आशानता में प्रभावित हो रहा था । बौद्धिक धरणा समायोजना चित्रण पश्चिमी और दक्षिण रंग व प्रति गानानुभूति तथा धार्मिक एक नविष चित्रण व प्रति विद्या का गान गया था कहानियों में बह प्रभावगाना दग म स्वका हुआ । तथा का कहानिया में नहीं एक धार माकमवाता विचारों का प्रभावित यग-अपय का चित्रण हुआ वहाँ दूसरी धार कायक व विचारों का प्रभाव भी दृष्टिगत हुआ । तथा का अन्वेष कहानिया में दक्षिण गीत भावता का गानानविक विद्यलयन हुआ है ।

गया का पहला कहानी-संग्रह गमासार सन १९४३ में प्रकाशित हुआ था । उसमें पचास उत्तर तीन चार संग्रह और प्रकाशित हो चुके हैं ।

प्रगतिशील मम व दूसरे प्रमुख लखन गुजानसिंह हैं । अपने सतत-जीवन व प्रारम्भ में व नानवसिंह में प्रभावित लग व और सामाजिक जीवन की बुरादया की धार उनका वही सुधारवादी दृष्टिकोण था, परन्तु धीरे धीरे व दृष्टान्तक भीतिवना सिद्धांत में प्रभावित हुए और पूजीवादी समाज व्यवस्था के विरुद्ध उठाने प्रगतिशील दृष्टिकोण अपनाया ।

निम्न मध्यम वग एक निम्न वग व पात्रों ने चित्रण में गुजानसिंह का अद्भुत सफलता मिली है । किमाना भजदूरा तथा एक विविष्ट प्रकार की समाज-व्यवस्था में पिप्त हुए आर्थिक दृष्टि में विपन्न और धार्मिक दृष्टि में त्याग्य लागों की सम स्याथा का बलात्मक चित्रण गुजानसिंह की कहानियों में मिलता है ।

गुजानसिंह का पहला कहानी संग्रह दुख-सुख सन् १९४१ में प्रकाशित हुआ था । उसके पश्चात् उनके ५ ७ संग्रह और प्रकाशित हो चुके हैं ।

पजाबी कहानीकारों में करतारसिंह दुग्गल का नाम पजाबी भाषा की सीमाया से बाहर सर्वाधिक लोकप्रिय है । दुग्गल ने पजाबी कहानीकारों में सबसे अधिक कहा नियाँ लिखी है, शिल्प और कथ्य की दृष्टि में सबसे अधिक प्रयोग किये हैं, अपने लेखन को सतत गतिशील रखा है और सबसे अधिक स्याति अज्ञित की है । दुग्गल मनोवैज्ञानिक कहानी लेखक हैं । मनोवैज्ञानिक कहानी लेखक तो लगभग सभी होते हैं परन्तु मनोविज्ञान की सूक्ष्मता गहराईयों में प्रविष्ट होकर वहाँ से निकाले गए मोतों व प्रकाश से कहानी को जगमगा देना दुग्गल को बहुत अच्छी तरह आता है ।

दुग्गल का पहला कहानी संग्रह सबेर सार सन् १९४१ में प्रकाशित हुआ था । अत्र तक उनके लगभग एक दर्जन कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं ।

दूसरी दौर के लेखकों में प्रो० मोहनसिंह दवेन्द्र सरपार्थी नीरसिंह आदि के नाम भी उल्लेखनीय हैं । प्रो० मोहनसिंह पजाबी के प्रतिष्ठित कवि हैं परन्तु उहाने कुछ बन्त ही अच्छी कहानियाँ लिखी हैं । उनकी कहानियों में पात्रों का मनो

खानिक विद्वान्पण बनी सूक्ष्मता से हुआ है। प्रो० मोहनसिंह की कहानिया का भुवाव मुख्यतः मूसम प्रणयानुभूति और उभरती हुए या दमित काम भावना की आर रहा है। उनकी कहानिया का एक संग्रह सन् १९४२ म निककी निककी वागना के नाम स प्रकाशित हुआ था। 'निककी निककी वासना,' 'कुवा,' 'पीरवरा' 'मा आदि कहानिया न पजाबी म अपना विविध म्यान बनाया है। परन्तु प्रो० मोहनसिंह के अर का कहानीकार अधिक आग नहा बडा। कहानी लेखन म अच्छी सफरता प्राप्त करके भी व अपन कवि म ही अधिक डूब रह हैं।

दवद्र सचार्थी न पजाबी, सिदी और उदू म समान ख्याति प्राप्त की है। लोक गीता व क्षेत्र म सत्यार्थी ने जो काम किया ह वह सबविधित है और इम प्रकार स्वाभाविक रूप स उनकी कहानिया, लोक गीतात्मक वातावरण से भरी हुई हैं। पजाबा के कथानक-हीन, वातावरण प्रधान कहानिया के प्रारम्भ का श्रेय दवद्र सचार्थी का ही है। उनका पहला कहानी संग्रह 'कुगपास सन् १९४१ म प्रकाशित हुआ था। अब तक उनसे पजाबी म ५६ कहानी-संग्रह प्रकाशित हा चुके हैं।

सन् १९४७ पजाब पजाबी और पजाबिया के लिए—वह वष था जब उह अपन जीवन क व क्रांतिपूर्ण दिन देखने पड जो उथल पुथल और सघर्ष स भर इतिहास म भी इसम पहले कभी देखन म नहा आए थे। पजाब की भूमि टुकडा म-वैट गई पजाब की जनता का बहुत बडा भाग निराश्रित हुआ और अपनी जीविका के लिए उम इधर-उधर बिखरना पडा। परन्तु पजाबी भाषा की दृष्टि से इसकी प्रतिक्रिया बिल्कुल भिन हुई। पजाबी भाषा को, प्रदेश म (यद्यपि वह बट कर बहुत छोटा हा चुका था) वह स्थान प्राप्त हुआ जा इससे पहले उसे कभी प्राप्त नही हुआ था और यह एक विडम्बना ही है कि यदि पजाब का विभाजन न हाना तो उम यह स्थान प्राप्त हाना सदिग्ध ही रहता।

विभाजन क पचात् भी उसे यह स्थान सरलता स प्राप्त नही हुआ। पजाब और सघष गायद सहोदर हैं इसलिए सघष वहा के जीवन म इस तरह रचा मिचा है कि उम अलग करके पजाब की कल्पना ही नहा की जा सकती। पजाबी भाषा को अपन ही घर म अपन लिए सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त करन क लिए गत १५ १६ वर्षों म निरंतर सघष करना पडा है और कुछ निहित तत्वो न दुर्भाग्यवग उसकी प्रति द्विद्विता उस भाषा स ही खडी कर दी जिसके स्नेहपूर्ण अपनत्व म उस क छुटी हुई मजिले बडे अल्प समय म ही तय करनी थी, जिह अर्थ भाषाएँ बहुत पहले ही तय कर चुकी थी।

पजाब के राजनातिक-साम्प्रदायिक दला न जहा बड-बडे नारे लगाकर उस स्थिति का बनान के नाम पर विगाडन का ही काम किया वहा पजाब क साहित्य-कारा न अपन गौरव क अनुरूप उन सभी विवादा स दूर रह कर अपने को रचनात्मक सृजन म ही लगाए रखा और सभवत उसी का परिणाम है कि आज पजाबी साहित्य अपन चतुर्मुखा विकास की ओर आश्चर्य उत्पन्न करने वाली गति स बढ रहा है।

विभाजन के पश्चात् और विषय रूप से सन् १९५० से पंजाबी कहानी बहुत तेजी से घाग बनी है। पंजाबी कहानीकारों ने बहुत सजग होकर नए-नए घरातलों का स्पर्श किया और अनुभूति के विविध पक्षों पर उन्होंने स्पष्टणीय कहानियाँ लिखी। सन् १५ वर्षों में इन कहानीकारों की दो-तीन पीढ़ियाँ हमारे सम्मुख आ चुकी है। कल्पितः अमृता प्रीतम ने इन्हीं वर्षों में कथा-जगत् में अपना स्थान बनाया। यद्यपि उनकी कथानियाँ के आ सग्रह विभाजन के पूर्व ही प्रकाशित हो चुके थे परन्तु कथा-कार के रूप में उनकी प्रतिष्ठा इन्हीं वर्षों में विशेष रूप से बनी।

नरसिंह कृष्णसिंह सिंह महर्षिसिंह सरना सतीशसिंह धीर हरीसिंह सिद्धाचार्य आचल बग्गी देवदर आदि अनेक कहानीकार सन् १९५० तक पंजाबी में अपना स्थान बना चुके थे। प्रभोजनकीर अमरसिंह जसवतसिंह कबल गुरेदसिंह नरना सिधीपरीर तिवाना सुसरीर महर्षिसिंह जोशी हरनामदाम सहर्षी गुरजीत मिश्र मरा गुरजन पुन आदि बन्त में लगभग इन्हीं वर्षों में आसपास पंजाबी में स्वीकृत हुए और इन्हीं दिनों उनका कहानी-संग्रह भी प्रकाशित हुए।

बनबन गार्गी और गुरध्यानसिंह पुन कहानीकारों के रूप में जान जान में पढ़ा हा गायकार के रूप में पंजाबी में प्रतिष्ठित हो चुके थे। परन्तु जब इन्होंने कहानी लेखन में अपनी प्रतिभा का प्रयोग किया तो उन्हें वहाँ भी अनुभूत सफलता प्राप्त हुई। सिद्धाचार्य टाडम द्वारा आयोजित गाथभाषित कहानों प्रतियोगिताओं में इन दोनों गायकारों की कथानियाँ पुरस्कृत हुई।

श्री० मानसिंह डॉ० गोपालसिंह डॉ० श्रीरामसिंह मोहन डॉ० मुनिरामसिंह उपाध्याय श्री० गुरधरनाथ और गुरमुखसिंह जीत पंजाबी में समानोच्च के रूप में चिर परिचित हैं परन्तु ये सब कथानकार भी हैं और इस क्षेत्र में उनकी सफलता किसी से कम नहीं है। उमा प्रकाश अमृता प्रीतम प्रभोजनकीर और गुरधर मृतक कवि हैं, परन्तु अपना कथानकार भाषा और कल्पनामयी अनुभूति में इन्होंने पंजाबी कथाना का अनायास रूप प्रदान किया।

का ढोल बजाकर कभी दूसरी प्रवृत्ति के लेखका को पजाबी में नजरअदाज नहीं किया गया। पजाबी में प्रगतिवादी लेखन सेखा मुजानसिंह से आगे बन्धर नवतेज, जसवर्तसिंह कवल, मुखबीर अमरसिंह, हरनामसिंह नाज आदि लेखका के हाथ और अधिक निखरा और जन जीवन की विपमताओं को उसने अधिक सूक्ष्म और बलारमक ढंग से व्यक्त किया।

वरतारसिंह दुग्गल से मनोविश्लेषणात्मक प्रवृत्ति का पजाबी में प्रचलन हुआ। इस प्रकार की कहानियाँ न जहाँ मानव-मन की अनक परता को उघड़ा वहाँ दमित यौन भावना का विशेष रूप से सूदम विश्लेषण किया। कुलवर्तसिंह विक, महर्द्रसिंह सरना, गुरचरनसिंह, देवेन्द्र, हरकिर्णसिंह और बूढासिंह आदि कहानी लेखका न बड़ी सफाई यौनप्रधान कहानियाँ लिखी हैं।

इसी प्रकार नारी जीवन की विपमताओं, उसकी सामाजिक पारिवारिक स्थिति, पग पग पर ठुकराया और पीड़ित उसका प्रेमपूरित हृदय और नय मूल्यों के प्रति उभरता हुआ उसका सचेतन भाव पजाबी की स्त्री लखिकाओं ने अपनी अनुभूति के गहर तात्पर्य से प्रस्तुत किया है। अमृता प्रीतम, दिनीपकोर टिवाना हरिदरकीर गरेवाल प्रभोजतकीर मजीतकीर, राजेन्द्रकीर और राज बदी आदि की कहानियाँ इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।

पजाबी कहानी में ग्रामीण जीवन और नगर जीवन के विविध पहलुओं पर सुंदर कहानियाँ लिखी गयी हैं। सेखो हरीसिंह दिलवर जसवर्तसिंह कवल, सतोर्खासिंह धीर गुरदमालसिंह और गुलजारासिंह सधू न जहाँ ग्रामीण जीवन की विविध पहलुओं में भरी हुई भाकियाँ प्रस्तुत की हैं वहाँ बलवत गार्गी गुरनामसिंह तीर सुरजीतसिंह सेठी मुखबीर अमरसिंह बंदप्रकाश शर्मा और कुलदीप न नगर जीवन के विविध वर्गों (विशेष रूप से मध्यम वर्ग) की विपमताओं का चित्रित किया है।

भारत की किसी भी भाषा में अभी तक आधुनिक युद्धों की भूमिका पर अच्छी कहानियाँ नहीं लिखी गयीं। पिछले दिनों चीनी और पाकिस्तानी आक्रमण की पृष्ठभूमि में जो कहानियाँ लिखी गयीं उनमें अनुभूति का खामलापन बहुत स्पष्ट था। इसका कारण भी हमसे छिपा नहीं है। दोनों महायुद्ध भारत की मुख्य भूमि में अमम्बद्ध रहें। भारतीयों ने उस विभीषिका के सम्बन्ध में बस मुना ही है, उसका प्रत्यक्ष अनुभव नहीं किया है और जिन भारतीयों ने सैनिक के रूप में इन युद्धों में भाग लिया उनमें मृजनात्मक प्रतिभा वाला का अभाव ही रहा। परन्तु पजाबी में तरलोक मसूर ने युद्ध का पृष्ठभूमि पर बहुत अच्छी कहानियाँ लिखी हैं। तरलोक मसूर स्वयं भारतीय सना के एक अधिकारी हैं और मृजनात्मक प्रतिभा से युक्त हैं।

पजाबी कहानियों के इस सग्रह में इस बात का ध्यान रखने का प्रयत्न किया गया है कि पजाबी कहानी की सभी पाठियों का, जहाँ तक संभव हो सके, प्रतिनिधित्व प्राप्त हो जाय। बहुत से ऐसे लेखकों की कहानियाँ भी इस सग्रह में ली गईं जो उनका जिनको इस क्षेत्र में पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त हो चुकी है और जिनका योगदान महत्वपूर्ण है। साथ ही कुछ ऐसे लेखकों की कहानियाँ सग्रह में ली गयी हैं जो



## विषय-सूची

क्रम		पृष्ठ
	पंजाबी कहानी विकास की मजिलें	(क)
१	भाभी मैना	गुरवटशसिंह १
२	जजर खपरैल की एक स्लेट	नानकसिंह १०
३	बल्हडवाल	गुरमुखसिंह मुसाफिर १५
४	भोनी-भोनी खुशबू	मोहनसिंह २१
५	हलवाहा	सतसिंह सेखो ३०
६	कचन माटी	देवेन्द्र सत्यार्थी ३५
७	सतहो से परे	गोपालसिंह ४८
८	खून	गुरदयालसिंह फुल्ल ५८
९	रजाई	सुजानसिंह ६६
१०	वापसी व वापसी	बलराज सहानी ७३
११	सौ मील की दौड़	बलवन्त गार्गी ८६
१२	लिखतुम लाजवती	करतारसिंह दुग्गल ९१
१३	छमक छल्लो	अमृता प्रतीम १००
१४	परो-महल की चौखे	जसवन्तसिंह कवल १०६
१५	उपकार	महेन्द्रसिंह जोशी १२०
१६	अधो पीसती है	सतोखसिंह वीर १२४
१७	वारिश	बूढासिंह १३६
१८	दूध की तलैया	कुलवतसिंह विर्क १४१
१९	ए शाला डाकात	गुरमुखसिंह जीत १४७
२०	युद्ध	तरलोक मसूर १५४
२१	धूल तेरे चरणों की	लोचन वटशी १५६
२२	प्रेम कहानी	प्रभजोतकौर १६७

२३	जन्म-दिवस	सविन्द्रसिंह उप्पल	१७४
२४	बहन को महक	नवतेजसिंह	१८५
२५	रोशनी के घेरे	देवेन्द्र	१८७
२६	वेणियाँ	सुखवीर	१९३
२७	आँधो और मगरमच्छ	अमरसिंह	२०१
२८	गुलवानो	अजीतकौर	२१२
२९	रत्तो	गुरदयालसिंह	२१६
३०	उमस	कुलदीपसिंह	२२२
३१	एक माँग एक गिला	जगजीतसिंह	२२९
३२	अपनी-अपनी सीमा	जसवन्तसिंह विर्दी	२३३
३३	वचिता	गुलजारसिंह सधू	२३८
३४	एकाकी	राजेन्द्रकौर	२४३

# भाभी मैना

गुरवर्णसिंह, १८९५

गुरवर्णसिंह को आधुनिक पंजाबी गद्य का जन्मदाता माना जाता है। रोचक और हृदयग्राही शली में उन्होंने गद्य की विभिन्न विधाओं पर अपनी प्रतिभा का चमत्कार दिखाया है। आधुनिक पंजाबी कहानी का विकास में उनका योग बहुत महत्वपूर्ण है। अपने व्यापक मानवीय दृष्टिकोण और प्रगतिशील विचारधारा के कारण वे आन वाली पीढ़ी के कहानी लेखकों के लिए सदा प्रकाश-मार्ग का काम करते रहे हैं।

गुरवर्णसिंह की विभिन्न विषयों पर लगभग ५० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इन में प्रीत कहानियाँ अनाथे त इकरन बीणा विनाद नाम प्रीत दा जाद् प्रीत दा पहरेदार, गजनम और भाभी मैना आदि लगभग एक दर्जन कहानी संग्रह हैं।

इस संग्रह में उनकी बहुचर्चित कहानी 'भाभी मैना' को संग्रहीत किया गया है।

शहर की एक गली में दो आसन-सामन के घरों के बीच में मुस्किन से तीन साड़ियाँ लटकी थीं। पहली छत पर उन घरों की खिन्कियाँ भी आसन-सामन खुलती थीं। एक में स सामने दोबारा पर टंगा टूटा बड़ा शीशा लटकता था। और चौथे इस कमरे में थोड़ी ही थी। एक चारपाई, दो चार पुस्तकें, कधी तल और दोबारा पर एक दो विद्युत् टाकरी में दो धार कपड़े।

यह एक छोटा-सा कमरा था और इस में सिवाय एक स्त्री के और कोई मूलतः कमरा देखा नहीं जा सकता था। यह स्त्री कभी कभी बाहरी, कभी पुस्तक पढ़ती, कभी



ऊँपनी दुई बठी रहता। घोर कभी पाग क मामा गडा हाकर बाता म भेर ता कधी करती रहती। यह सि म कई बार कधी करता था घोर घग्गाना ता ग्याय था कि इम बाय मवाना का पागमपन की हूँ ता घोर है।

उमर बाय लम्ब भी बन्ध प। जब वह मुँह पर उता मम्बाई पैगती ता य उग क टगना वा छू रह हान। प्रताग म य बाय चमकन दुण सिगार्ड श्न।

यह जवान थी। गुस्से नवगा वानी। उमकी घाँगो का रग मामा की गिडगी म म दीग नहा सवना था। उमर चहर पर एर मिठाग घोर उगगी भतरती।

वह अपनी गिडगी म बठी दर तर घाँगू यहानी रहती। कभी किंगी न उम खिडकी म म गिर निवान पर बाहर भावन दुण गही शरा था। पर गनी याता का उमर वहाँ पठन का आभाग जरूर हाना था और कभा कई स्त्री वहाँ म मुडरत हुए उम आवाज भी दे लती थी। और वह बड मोठे नहज म उमरा जवार भी निया करती थी।

जब वह कमर म न हानी तो गिडकी बन्द हा जाती थी। पर गनिया म घाम क समय और गरमियो म दापहर क समय यह खिडकी जरूर खुलती थी। तब यह खिडकी म बठी हुई होती और कभी कभी गली म भाँक निया करती थी।

रोज एक छाटा मा लडका वस्ता लिय गली का माड मुड रहा उसे निसाई देना था। वह काम छोडकर खिडकी म स उन देखती रहती। वह लडका भी कभी कभी ऊपर देखता और फिर अपने घर म चला जाता। उमर सीनियाँ चडन की टुप-टुप की आवाजें स्त्री के वाना म पडती। वह कभी उस घर म नही गई थी। पर उम उन सीनिया की गिनती याद थी। हर सीनी पर पड रह पीका की उनकी आवाज क साथ कई बार उसने अपनी छाती से घोटा था।

दूसरे घर मे कोई दरवाजा खुलता वह देखे बिना ही महसूस करती कि सामा की बठक के अदर कोइ गया है।

बस्ता एक तरफ रख कर वह लडका कुछ देर अपनी गिडकी खोलकर सामन की गिडकी की ओर लखता। स्त्री उस तरफ नहा देखता थी पर उम पता होता कि किसी का दो आख उस देर रही है जिसका रास्ता वह रोज देखा करती थी। और अगर किसी दिन लडक को रबूल से आते हुए देर हा जाती तो दूसरे लडको से वह पूछना चाहती थी वाका कयो नही आया? पर उसने कभी नही पूछा था।

वाका बठक का दरवाजा बन्द कर ऊपर कमरे म आ जाता था।

वाफी दिन इस प्रकार बीत गए। वाका अब तरह बप का होन लगा था। उस की निलचस्पी सामन की खिडकी मे कुछ ज्यादा बड गई थी। एक दिन उसने अपनी माँ से पूछा हमारे पर सभी आते है। पर सामने के घर से कभी कोई नही आया।

यह एक ही जनिया का घर हमारी गली म है। यह लीय मास से परहेज करते है। इसलिये हम से दूर ही रहते है।

‘और क्या यह घर में बाहर भी नहीं निकलत ?’

निकलत हैं। पर यह एक दुखी परिवार है। मौत ने इस घर को तबाह कर दिया है। एक ही एक बटा रह गया था, उसकी शादी हुई, पर दो ही साल में वह मर गया। मौत के बाद एक बच्चा हुआ, वह भी साल भर बाद मर गया। अब दोनों बचपानों रोने घाने को रह गई है।”

वह किस का बच्चा था ?”

‘मना का जिसे तुमने कई बार खिडकी में बैठा हुआ देखा होगा।’

वह हर समय खिडकी में क्यों बैठी रहती है ?’

यह नाग जवान विधवाओं की बहुत रखवाली रखते हैं। और फिर घर में काम ज्यादा है नहीं।

मा कभी यह औरत मुझे मिते तो इन क्या कह कर बुलाऊँ ?”

कौन—मैना ? वह तुम्हारी भाभी है। उस का घरवाला तुम्हारा गली के रिस्त में भाई होता था। बहुत अच्छा लड़का था।’

यह मना कसा नाम है ?’

तुम्हें अच्छा नहीं लगा ?’

नहीं अच्छा लगा है। पर मैं पहले कभी ऐसा नाम नहीं सुना। मैना बही जानती है न तो मामा जी के यहाँ पिजरे में बंद है और बहुत मीठी बातें करती है ? ताना इतना अच्छा नहीं बालता।

‘हा बही।

मा मुझे एक मैना ले दोगी ?

अपने मामा जी को कहना।’

कुछ दिनों बाद उसकी बठक में एक पिजरा टगा हुआ था। जब काका ऊपर जाता तो पिजरा साथ ही ले जाता।

अपनी मना को उसने बालना मिलाया, ‘भाभी मना खिडकी में बठी है।’ खिडकी वाली मना न उससे कभी बात नहीं की थी पर उस बहुत अच्छा लगता था जब पिजरा में की मना कहती भाभा मना खिडकी में बठी है।

सर्दिया की रात में भाभा मना अपने कमरे में सोती थी। परीभा नजदीक होने पर काका भी बठक में ही सोने लग गया था। भाभी मैना को कई बार उसकी सासा की आवाज सुनने महसूस होती। वह दर तक बिस्तर पर बैठी सुनती रहती।

उसकी उम्र अब पच्चीस वर्ष की हो गई थी। वह दिल में कहा करती थी— ‘अगर कभी मुझे इस बच्चे से बोलने की आजादी मिल जाए। कहीं मैं इन्हीं स्कूल से आने समय खिडकी में से बाहर सिर निकाल कर देख सकूँ, इस से बातें कर सकूँ और अब कभी बामार हो मैं उसके घर जाकर उसके पास बैठ सकूँ।’

फिर खुद ही कहती— मुझे कौन इतनी आजादी देगा ? मैं उसी कमरे में बूढ़ी हो जाऊँगी। मेरे बान मेरी साम के बालों की तरह भङ जाएंगे। काका शादी कर लया। यह खिडकी फिर इस तरह खुली नहीं रहेगी। फिर मैं किस की प्रतीक्षा में

अंधेरे जीवन का सत्य जिन और लम्बी रातें बानू गा ?

वह साँचा हवा उमक जिन में बुद्ध हुआ। वह बिस्तर पर में उठ कर गिन्नी में धाई। रात चीन्नी थी। सुना खिडकी में ग हन्ना-गा प्रवाण बाबा में मुँह पर पर रहा था। वह गहरी नाच में गाया हुआ था। उमका गीत सज था। मैना का मन में एक उवाच सा उठा— मैं उमके पास पहुँच जाऊँ। मैं उम जगाऊँगा मन्ना। दूर में उसका मुँह घूम कर वापस धा जाऊँगी।

पर वह पासना इनका छाटा नहीं था। और न ही उममें इनका हिम्मत धा रि गली पाँचकर उस घर में जा गव। वह बिस्तर पर लट गई। बुद्ध पर क बाँ धावाज धाई भाभी मना वह धीवकर फिर उठा। पर यह फिर बा मना का धावाज थी। बाबा उसी प्रकार सोया हुआ था।

उसी समय मैना की गाम किरा काम का निय उठी थी। उसने मना का कमर में बुद्ध घ्राहट सुनी थी। माय ही उमने जस भाभी मैना भी सुना था। उमने मना का धावाज दी। मैना धाँवर न भट बाल उठी। सास का गव पक्का हा गया।

तुम सोई नहीं थी ? रात आधी में ऊपर बीन गई है।

'यूँही आँख खुल गई थी।

सास कमरे में धाई। उस सामने की खिडकी में धाई साया हुआ\_दिगा। मन्ना का बेहरा।

तुम किससे बातें कर रही थी ?

किसी से भी तो नहीं।

सास न फिर सामने की खिडकी की धार देखा। फिर वह चली गई। बाबा यद्यपि अभी बच्चा था और अपनी उम्र में छोटा लगता था पर था तो\_वह मन्ना। विधवाभा का क्या काम कि बच्चों को भी इस प्रकार देखें।

मैना उसे स्कूल से आते समय देखा करती थी। बाबा भी आना तो पहल ऊपर बैठक में जाता और खिडकी खुली रखता था। वह पिछले सात सन्ध साल बड़ा भी लगता था।

इन चीजों की धार से आँखें बंद नहीं का जा सकती थी। यही छोटा टापी बदलिया कभी घटाप बन जाती है।

आज जब बाबा स्कूल से आया तो मैना की खिडकी बन्द थी। रात के समय भी वह बन्द थी।

वह खिडकी जैसे बाबा के जीवन का एक भाग बन गई थी। अब उमका खेल में दिल नहीं लगता था। माँ से पूछने का कोई फायदा नहीं था क्योंकि उम घर से उनका अधिक सम्बन्ध नहीं था।

आज रात अंधेरी थी। मैना की खिडकी के साथ घसर मसर की धावाज धाई जस कोई अलग अलग चाबियाँ लगाकर ताला खोल रहा हो।

फिर आहिस्ता से खिडकी खुली। मैना न उठकर दरवाज में से घर की घ्राहट ली। फिर गली में देखा। फिर बाबा की सास सुनी। वह साया हुआ था। उस अंधेरे में बुद्ध

दिल नहीं रहा था, पर मैना को जैसे सब कुछ साफ़ दिख रहा था ।

दूसरे क्षण उस एम लगा जैसे वह उसके बिस्तर पर बैठी हुई थी । और उसक वाना म उगलिया फर रही थी, और फिर उसे जगा रही थी । मैना के वानो म उसकी अपनी आवाज़ पडी । “काका, काका ”

वह अभी भी सोया हुआ था । वह उसे कह रही थी— ‘काका, तुम्हारी भाभी मैना । एक पल के लिये उठो । बस एक बात करो । फिर बस

काका हड़बड़ा कर उठा ।

मैना को बहुत शम आई । उस अब पता लगा कि वह अपन मन म नहीं, बल्कि मुह मे बोल रही थी और काका जाग उठा था । अगर कोई और भी जाग पड़ा हो ।

काका अपनी खिडकी म आकर बठ गया । उस भी खिडकी म बठी मैना अपेरे म मटमूस हा रही थी । उसन कई बार भाभी मैना म मिलना चाहा था । वह बहुत उदाम रहता था कि खिडकी क्या बंद हा गई ह ।

भाभी मैना भाभी मैना ।

हा काका मर अच्छ काका पर जरा होन वालो ।

तुम इनने दिन कहा चली गई था ?

मग कमरा हवानान बना दिया गया है । इस खिडकी को ताला लग गया ह ।

वह क्या ?

उस दिन तुम्हारी मैना न मुझे बुलाया था । मैं उठी थी । मैंने सोचा तुम हा । मेरी सास भी उसा समय उठ बैठी थी । उसन मोवा मैं तुमने बातें कर रही हैं ।

ता क्या हो गया ? मा न कहा था तुम मेरी भाभी हा ।

‘बहुत कुछ हो गया काका । फाटका का तान लय गए । इसलिए अब मैं यहा म चली जाऊँगी । इस घर म यह मेरी अन्तिम रात है । मैं तुममे मिल कर जाना चाहती थी । तुम किसी स बताआग ता नहीं ?”

‘नया बनाऊंगा । पर तुम क्या जा रही हा ? न जाआ । मैं बटा हूँगा । मेरी गान्गी होगा । मैं अपनी पत्नी को तुम्हार घर भेजूगा वह तुम्ह बुलाएगी तुम उसे मिनने आना । फिर तो कोई कुछ नहा कहगा । तुम न जाओ ।’

पर तुम अभी बन्न छोटे हा । तुम्हारी गादी दूर है । इनने बप इस बंद म बिन तरह विताने जाएंगे जब कि मग तुम्हारी आर देखना भी बंद कर दिया गया है ।

तुम वहाँ जाआगी ? म वहाँ तुम्ह मिनने आऊगा ।

नया काका । जहा म जा रही हूँ वहाँ कोई मद मेर साथ बात नहा कर नवगा ।

तुम वहाँ न जाआ ।

‘मग लिए और कोई रास्ता बाकी नहा रहा । मैं पुजारिन बनन का पमला कर लिया ह ।

पुजारिन !

अनी मित्रिया की तरह जिना गिर पर बाज गरी हाज और मुँह पर दाँतों  
बधी होनी है ।

न भाभी भना तुम बभी यह न बनना । मुझे उमर बहुत है मरणा है ।

बाबा मरे निग और पाई गत गत रत और उमर का पाज उमर  
घार फरी । यह मरी निगाना रगना । मुम दू ड मता । मर घाट मरकर का  
जाग पडगा ।

और मैना का बारी बत हा ग । तान म घानी धूमना हड बाबा न मुना । गत  
रात वह मा न सबा ।

दूमर निग जब वह मून ग घाया ता उम की मो न उम बाया कि मैना बत  
हु या थी । रात मास नडनी थी मर नग करना थी । वह पर ग निग ग है मर  
निखकर छोड गई है कि वह पुजारिन बन जा रही है ।

पर मो वह महा पुजारिन नही बन मरना ?

नहा । जिम पुजारिन बनना हा उम मरना गहर छाड कर किमा दूमर गत  
के बिहार म जाना पडता है । व ताम उमर वारे म पूछताछ करन है । और मर  
उसके वारे म भरामा हो जाए ता उसकी पूगी रगा करन है मरछा रिमान है  
मरछे कपड पहनने का देने है और कुद निग जा वह चाह करन दन है । निग उमर  
सिर के बाल काट देने है । उमर वाद वह न मरछा गा मरनी है न पहन मरना है  
और न मरों स बात कर सक्ती है ।

भाभी मैना कहाँ गई होगी ?

पता नग जाएगा । बाबद रावतपिडी गई हा जह, इन का बिहार है । वहाँ  
तुम्हारी मौसी रहती है । मर वहाँ गई हागी ता जाकर दन घाना । तब का पुजा  
रिन बनती है तो गहर म बहुत रौनक होनी है ।

सारी गली म मैना की बातें हाती थी । वनी मरछी औरत था । उमर बाज  
कितन मुदर थ । उस जान मे प्यारे थ । मर वह काट निग जाएगा । निग उसन  
एक एक बाल को उखाडना होगा । बचारी ।

मैना रावतपिडी ही गई थी । बाबा अपनी मौसी के पाम चना गया । उसकी  
मौसी मैना को दख कर मर थी । उमर वतन मुत्तर कपड पहन हुए थ । गहन भी ।  
यह गहन उसे लोग ने उधार दिए थ । मौमी हर रसम पर जाती रही और मरकर  
बताती रही कि उम बहुत रूप चढा हुआ है । फिर एक दिन उमर बताया कि का  
मैना की डानी म बठाकर गहर म मरगाया जाएगा । उस पर पून फेंक जाएगा मुताब  
जल छिन्का जाएगा ।

बाबा अपनी भाभी को देखन के निग वत वचन था । उसन उम एक हा तरह  
के निवास म देखा था । उम निवास म भी वह वतन मुत्तर लगती थी । गहन उम  
कम लगत होग ? उसन उम हसत हुए कभी नही दखा था । मौसी बताती थी कि  
उसकी मुक्कराट्ट देखन वाला का दिन माह लती थी ।

उसका दिया रुमाल, जा उसने उस रात को उसके कमरे में फेंका था, बाका की जेब में था। उसे उमन सम्भाल कर रखा हुआ था। वह उसे रोज़ दखता था। उस पर लिखा हुआ था बड़े प्यार का वाक्य — उसकी भाभी की ओर से।

दूसरे दिन दोपहर के बाद उसकी मौसी ने बताया कि मना की डोली निकलगी। वह सभी बाजारा में घूमगी। उसे हर कोई देख सकेगा।

उमन मौसी के वाग्य में बहुत से फूल तोड़कर रुमाल में बांधा। और उन उनके चौक में सड़ोली गुजरी तो वह घर वाले से कुछ अलग हाँ कर खड़ा हो गया। वह देखकर वापस जाना नहीं चाहता था। वह टाली के साथ माथे जाना चाहता था।

बड़े बड़े गृह थे। जनी लोग डोली पर सड़ोपय पमें फेंक रहे थे। पानी में मैना गहना से नदी हुई बैठी थी। उसका चेहरा यद्यपि और ही तरह का लगता था पर उसमें उसका पहल चेहरा की काफी भाव थी। बाका का उसकी हँसनी हुई मूरत का अप्रत्यासय उसकी उपासना करने जयाग अच्छी लगती था।

वह जब समझता था कि मैना का उस की ओर ध्यान है तो वह फूल फेंक देता था। वह हाथ जोड़ती थी पर वह हाथ उसका लिए नहीं जुड़ते थे। वतनी भीड़ में वह छोटा सा उस कम दिख सकेगा—वह साचता था।

एक मोड़ पर डाना अचानक उसका बहुत नज़दीक आ गई। वह उस समय फूल फेंकने का वाला था। मैना ने उस देखा और पहचान लिया। उसकी अचानक आँखें पूरा तरह खुल गई। उसने ध्यान से देखा। फिर माहस करके उमन डोली तकन के नियम कहा।

'वह हमारी गनी का बच्चा है। मुझ पर फूल फेंकना चाहता है पर पहुँच नहीं पा रहा। उस एक क्षण के लिए मेरे पाम ला दो।

यह रवया अनासा था पर पुजारीन वनन वाले की हर बात माने नी जानी है। लाभा, तुम्हारे यह फूल में लूँ। तुम वही दूर से आण हो।

बाका बहुत खुश हुआ। भाभी मैना ने उस देख लिया था बलाकर हाथ का छूकर फूल ल लिए थे। रुमाल भी धानस नहीं किया था। उमन सोचा भाभा निगानी रखगी।

जलूम विहार पर पहुँच गया। जाग बन गए। मैना और कुछ स्त्रियाँ विहार पर चले गईं। मीठी पर पाव रखन से पहने मना ने देखा, बाका सामने की दुकान के पाम पड़ा था।

ऊपर जान पर बड़े पुजारी के सामने मना का उठा दिया गया।

क्या तुमने अपना मन में निश्चय कर लिया है? पुजारी ने पूछा।

जा महाराज कर लिया है।

कपड़े पहने तुम्हें सब उतारने पड़ेगा। और फिर जीवन में तुम रह सगीं नही कर सकेगा।

जी महाराज, मुझे इनकी काइ चाह नहीं।

‘तुम वहाँ कुछ खाओगी और पियोगी जो हमारी श्रेणी के नियमानुसार होगा।’

‘जी महाराज, मुझे अच्छे भोजन की चाह नहीं।’

“मर्दा का छूना तो एक तरफ़ उनका ख्याल भी इस घम में पाप है जिस घम को तुम चुन रही हो।

मैना न लम्बा साँस लिया और उस को जेब में बाका का रुमाल खुलता हुआ प्रतीत हुआ और कमाल के सिरे जैसे छोटी छोटीबाहू बनकर उसके गिद लिपट गए। आखिर उसने कुछ सम्भल कर उत्तर दिया हा महाराज यह भी मैं परवान कर

अब तुम उस कमरे में जाकर यह कपड़े उतार दो और जो कपट तुम्हें दिया जाए पहन लो। फिर तुम्हें अपने सिर के बाल काटने होंगे। उसके बाद तुम्हें तुम्हारी माता बताएंगी कि किस प्रकार एक एक बाल को खींच कर निकाला जाएगा।

बालों का काटने की बात सुनकर वह अपनी आह न रोक सकी और बड़ा हीसला करके बोली पूज्य पिताजी मुझे बाल रखने की आज्ञा नहीं दे सकते ?

यह किस प्रकार हो सकता है ? पुजारी न हैरान होकर कहा।

मैं जानती हूँ यह मेरी अनोखी माँग है। पर अगर आप मान लें तो मैं आप को कभी किसी सिखायत या मौका नहीं दूँगी। मैं आप की बसी भक्ति बनूँगी कि सारी जाति आश्चर्य करेगी।

पर यह नहीं हो सकेगा। क्या तुम्हें पहले नहीं पता था ?

‘मुझे पता था। पर अब जब बाल काटने का मौका आया है तो मुझे लग रहा है जैसे मेरे यह बाल जीवित हैं। यह मेरी जान में से उग हुए हैं। जब मैं इनमें कभी फिराती थी तो यह झटके से मेरी टाँगों को छूने थे। इनके छूने में पता नहीं क्या बात थी। कई वषट् मैंने सिखाय इन के किसी में बात कहा की। हे परमपूज्य एक बार अन होनी कर देलिये आप का अपने कमल पर पड़ताना नहीं पड़ेगा।

पुजारी का स्मित स्मीयतता गया पर उसने सोचा कि पुजारिन के बाल देख कर लोग क्या कहें ?

आखिर उसने कहा नहीं तुम्हारी यह बात मानी नहीं जा सकेगा।

फिर पाँच मिनट के लिए मुझे अपने म अपने मन का समझा लो दाजिए मैंना न मन पक्का करके कहा।

हाँ आज्ञा मानन जाकर साव लो।

मैना उठी और होठ-धौन पर हँसना में सामन छलक फिर पर जाकर बठ गई। उसने वहाँ में नाच बाजना का धार देखा।

बुद्ध पर बाद मैना उठा।

यह स्त्री अनाथा है। मैं कई स्त्रियाँ का पुजाग्नि बनाया है। पर इन का हट बाल हैरान करत बाना है। अगर यह पुजाग्नि बन गई तो बरत नाम पण करेगा। यह पुजागी न बना।

पर वह वह स्त्री क्या है गद ? दूसरे पुजारा न धरग कर कहा।

यह पुजारा न ना गया। मैना न अरना उगना पूर में सुमान। ज्ञान गुन गया।

बान टागा को छूने लग। हल्की-हल्की हवा में वह लहराने लगे।

‘कितने लम्बे !’

‘ओह !’ सभी उठकर सीढियों की आरंभ भाग। उस समय मैना छत पर नहीं थी।

सभी नीचे पहुँचे। बाजार में हाहाकार मची हुई थी। काका मैना के सिरहाने बंटा था। उसने मैना को बिलर टुण बाल भाय पर से एक तरफ हटाए। काले बालों में बंटा बंटा मिन्दूर की तरह खून चमक रहा था। काका की आंखों से आंसू बह रहे थे और वह मैना की आंखों में देख रहा था। वह आंख खुली थी। पहले उन का रंग उमन कभी नहीं लखा था। वे उस काली रात जसी थीं जिसे रात मैना ने उमन जगाया था पर उस रात की गहराई में कोई सूरज हुआ हुआ था। तभी अंधेरे में भी वह उन्हें देख सकता था। वे त्रिंशें अब भी उतनी ही काली आंख उतनी ही चमकदार थीं। वे खुली हुई थीं। पर उस समय उन में कोई सूरज नहीं था।



# जर्जर खपरैल की एक स्लेट

नानकसिंह, १८९७

पंजाबी साहित्य में नानकसिंह का वही स्थान है जो हिन्दी में प्रमोद का है। पंजाबी में आधुनिक क्या साहित्य का प्रारम्भ नानकसिंह से ही माना जाता है। नाकप्रियता की दृष्टि से पंजाबी में जो स्थान नानकसिंह को प्राप्त है वह किन्ना दूसरे लख को नहीं।

नानकसिंह आज भी अग्रगण्य गति में लिख रहे हैं। उनका लगभग तीन दर्जन उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। अनक उपन्यास हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में अनूदित हो चुके हैं। कुछ वर्ष पूर्व उन्हें इक स्थापित दो तनवारों नामक उपन्यास पर साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

नानकसिंह के हनुमा द हार मिद्धे हाए फुलन तम्बीर दे दोवें पामे टडीया छावा आदि अनक कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

इस संग्रह में उन की एक नई कहानी मप्रहीत की गयी है।

वस से उत्तर ही उस १ मुझ में पूछा बगना चाहिए ? और उत्तर में मन कहा बगला नहा कमरा चाहिए।

उनहीकी भेद लिए कोई बगाना गहर नहा था। लगातार कई वर्षों में यह आना जाता है। इस जगह व चप चप में परिवर्तित है। आम तौर पर मैं पढ़ने का विराण का मवान नहा ले तना। पहन एक गान्ति किसी दान्त के महा ठहर जाऊ हू और सुविधा में कोई मनवाना ठिकाना दू हू तना हू। परन्तु उस व्यक्ति का वृत्त-

मिजाज। न धार उसकी भद्रनापूर्ण धोन-धान न मुझ पर जस जादू कर दिया। उमन  
अपना नाम बनाया मगू।

उन्हौजी की यदि मैं स्त्री के रूप में बपना कहूँ तो कहना पडगा कि मनसा  
मैंन दोना हालता में दखा है। पहन नव-वधू के रूप में फिर एक विधा का तरह।

मच पूछें तो डनहौनी का सौन्दर्य और महाग अगरेजा के साथ ही बना गया।  
मुझे वह दिन भी याद है जब उलहौजी पवत की चहल पहन अनन गिसर पर पत्ता  
धी। मलानिया की भीष् का यह हाव हाता था कि मन्त्र वातार स लेकर बकरा तत्र  
कथ में कथा टकराना था। कोठिया फलटा और होश्या क बमर ठनाठम भर हाव  
थ। मम पवत पर पहुचकर जिसका रहन क लिए मनचाही जगह मिल जाती सम  
लिए उमकी किम्मत जाग प ी है। हाटल वान खूब जी भर सलानिया का तूत ५।  
टाट म छाट कमरे का किगया भी पाच-मान रए राज म कम नहा हाता था। का  
दाना का दिभाग ता सानवें आसमान पर हाता था। रही-मे रही काठी का मानन  
का किराया हाता था डर-गे हजार और वह भी सारा पानी।

किन्तु यह ता तब की बात थी जब डनहौजी ताहब लागा और मम माना  
का ममर शिल था। अब ता वहा यह हाव है कि बडी-वनी आनीमान काशिया और  
हाटना म उल्ल वानत हैं। किगए घटत घटत आठ-दम खय तक पहुच गए ह। कि  
भा कार्ग्राहक नगर नहा आता।

मकान मालिका का दुगा म अब भी कुठ जमा थी ता उमका पूरा क दिया  
है निकासी जायगा न। मन मतानाम में पूव मुमनमान मालिका की ी काशिया  
हनारा खय सीजन पर चत्ता था अब वहा काठिया पदह-बीस खय भासिक ५२ टा  
ग रहा था। इतना सन्ता किराया हाव हुए भी किगएलर मुश्किल में मितना था।

जिम समय का मैं डिकर कर रहा हूँ वह मास १६७० या १६८० का मान  
था। उम समय डलहौजी का नाम हा गय रह गया था। तगभग नव्व प्रतिगन मकान  
खाला पड रहत थ। अग्रत चल गए थ। दग म हूण विभाजन के फनस्वरूप नाग  
अभी तक नाग म नहा आए थ। इम लिए जा कुल भी मन कहा जितना नी किराया  
नेना चाहा जा भी गने कहा मगू का वम एक ही उत्तर था तथाज्नु।

मगू न बनाया कि वह अरने मालिका की काठिया की चौकीगरी के अनिचित  
उनक लिए किराएदार खोन देन में भी थागी-बहुन मदद करता है। माग सामान  
उठवाकर वह मुझे मानी टिप्पे का एक कोठी क मानन ल आया। कहन नाग ना  
ना यह काठा बिल्कुल आनन हा मतनव का है। एकम एकान म्यान। उपर सामन  
रावा का नजारा दीखता है।

स्थान मरी पमद का था परन्तु काठी की हावत खन्ता थी। तान पत्ता धा  
जम वर्षों में उसका मग्मन की धार किमा न ध्यान नहा दिया। पवताय मकाना  
को उमर वष ही कम जाती है। यहा वषा और तूफान में अछे अछे मकाना न  
बकिए उठ जान ह। फिर भी यहा भीमरी भाग की दगा दनी बुरा नहीं था। पर  
अन य था कि सारी कागी वा लकर मैं क्या बन्गा? मुझे ता कवन एक कने

की ज़रूरत थी। पर मगू था कि मेरी किसी भी बात को सुनता ही नहीं। बाबा, अजी आप जितनी जगह चाह लें। बाकी कमरे रहन दें। और बिग्या जितना दिल चाहे दे दें।

पर हम दिल चाहे की भी तो कोई सीमा हानी चाहिए थी। जिन ता घाग्गा का चाहता है कि सब कुछ मुफ्त में मिल जाए। घाग्गिर जितना भी किराया मैन उमम वहां वह मान गया। मैन पातितपूबक कोठी व एक कमरे में सामान रखवा दिया।

मुझे मगू बड़ा ही अस्थिर आदमी लगा। वह मर लिए पानी लाता मकान की सफाई करता रोटी भी पका देता और यदि आवश्यकता पड़ता वपडे भी घाग्गा। इतना ही नहीं वह हर समय कोठी की मरम्मत भी करता रहता। अडाम पनाम का काठिया स वह पूना के पीछे भी न जाने कब ल घाग्गा और उनका लगान में लगा रहता। उस पर हमशा यह चिन्ता सवार रहती कि कहीं बिग्याएदार किसी बात पर नाराज होकर चला न जाए।

उस प्रकृत में मैंने सभी गुण देखे थे। पर उस में एक सब में बड़ा अवगुण भी था। वह यह कि वह बहुत लालची था। किराया पेशगी लेने की कोई गत नहीं थी। पर उसमें बड़ी युक्तियां स वह-सुनकर मुझमें कुछ-न-कुछ पेशगी ल ही ली। इन पर ही बस न करके वह हर दूसरे चौथे दिन मुझे घेर लता कोठी का टक्स देना है जी। मालिक की ओर स मनीआडर आने ही बाबा है। बस बात नहीं ता परमा आपकी लौटा दूंगा। ऐसी बात कह कहकर वह मुझमें अगने से अगल महान का बिग्या भी ल जाता। परन्तु न उसका कल परसा आया और न ही उसमें कभी कुछ भोगया। कई बार तो वह कम्बस्त एक या दो रूपए की परमाइश कर देता। मैन मन में कई बार सकल्प किया कि बस अब उसका एक पसा नहीं दूंगा चाहे रो रोकर मर जाए। किन्तु न जान उसकी बोनी और बरताव में कसा आकषण था कि जद भी वह कुछ मागता मुझमें इनकार न किया जाता।

एक दिन जब मैं सवेरे उठा तो बाहर कुछ गार सुनाई पडा। बरामदे में जाकर देखा तीन चार आदमी मगू को धरे बुरी तरह फटकार रहे थे। पूछने पर मानूम दृष्टा कि मगू उनके बगीचा स कुछ पीछे चुरा लाया है। यह मगू की पहली चारी नहीं थी। इसने पूव भी उनका काफी पीछे चारी हो चुके थे।

मगू का इस दशा पर मुझे दया भी आई और क्रोध भी। भला बकूफ स कोई पृथ कि कोठी किसी का रहन वाता कोई और वह किस लिए पाप का भागी बनता है?

मैन मिनत सुनामद करके मगू का पीछा छुडवाया। वे लोग मरे लिहाज पर बापस चल गए। बाप में मैन मगू को खूब लताडा। उसमें कहा नहीं सरदार जी गंग वरार मुझे परेगान करते है। साना पडी काठिया स में म नला दो चार पीछे ले ही लिए ता कौन सा प्रत्रय हो गया। बस ही सूख मन् जाएंगे। उन बगला में कोई बिग्याएदार भी ना नहीं है।

दूसरे मने उम पन्कारा किराएदार हा मा न हा चारी आक्कि चारी हा

है। फिर तुमसे ही किन्ने कहा कि मुफ्त म पाप की गठरी सिर पर उठा। अरे, मालिका को ज़रूरत होगी तो खुद ही पापे लगवा लेंगे।”

बहुन लगा ‘मरदार जी मालिका की बात कुछ नहा। मुझे इस बात का डर है कि कहा आप उदास होकर चले न जाएँ।”

मैन कहा “अच्छा अगर चला भी गया ता और कोई आ जाएगा।”

‘अरे, यहा कौन आ जाएगा? आधा सीजन बीत गया है। आपन ही आकर दरवाजा खुलवाया है। नही तो सारा सीजन खाली पडा रहता।’

अरे जा इस बात की जितनी चिंता मालिका को नहा तुझे है।”

मगू फिर नही बोला। मैन भी और फटकारना उचित नही समझा। सोचा नीकर वफागार हो तो एसा।

एक रात अचानक ही इतन जोर की बर्षा हुई कि जल-थल एक हा गण। आधी रात जब मेरी आंख खुली ता विस्तर का काफी हिंसा भोगा हुआ था। बत्ती जलाकर देखा ता छत कइ जगह मे चू रही थी। पास के स्टोर रूम म जाकर देखा, वहा भी काफी सामान भोग रहा था। बडा क्रोध आया उम मगू के बच्चे पर, जिसने चार सौ बीम करके यह निकम्मी जगह मेरे सिर मढ दी थी। मगू स भी अधिक क्रोध आया अपनी छबल पर। डलहाजी म जहाँ भवाना का आजकल कुत्त भी नही पूछते, मर लिए यही म्यान रह गया था। दिल चाहता था कि मगू का गला पकड़-कर घोट दू।

सामान को एक जगह स दूसरी जगह पर रखा। चारपाई इधर से घसीट कर उधर की। इसी काम म लगा हुआ था कि मुझे किसी के छत पर चलन की आवाज सुनाई दी। भय सा नगन लगा। सोचा मगू को जाकर जगाऊँ। कोठी के ही पिछले कमर म वह सोता था। टाच लेकर उसक कमर म पहुचा। मगू का विस्तर खाली था।

क्या मगू ही छत पर चन फिर रहा था? जैसे ही सामन की दीवार पर मेरी दृष्टि पवी कि मैन मगू का छत म उतरते हुए देखा। उसके सिर पर पत्थर की दा चार स्लटें और हाथ म हथोडी थी। सर्दी न उसका शरीर काप रहा था। आश्चर्य चकित रह गया मैं। इतनी सख्त ठंड बीच-बीच म झोला की बौझार और यह कम्बहन नग बदन छत पर चल फिर रहा था। मेरा मारा गुस्मा पानी हो गया।

आते ही मेरे सामने दापी की तरह खडा हो गया। सर्दी के मारे पूरी बात उमक मुह मे निकल नही रही थी। बोला, ‘आपको बहुत कष्ट हुआ होगा, मरदार जी! मुझे क्या पता था इस तूफान का। आनकल तो पानी बहुत कम बगसता है।’

मगू पर बरसने क लिए भने मन म जितना कुछ टकट्ठा किया था उसकी बिनम्र वाना क सामन वह सब कुछ बह गया। मैं केवल इतना ही कह सका अरे, पगले तरी यह स्लटें कब तक टिकेंगा वहाँ? यह तेज बौझार उह उडा ल जाएगी।

वह उसी प्रकार गिडगिडाया आज की रात किसी प्रकार निकल जाए। कल

मैं किसी चागीगर को लाकर मरना का पाती तरह मगना दूँगा।

भीतर जाकर देगा। मगू का पाठा बहुत परिश्रम मराने हो गया था। एतद अब मरना नही पू रही थी। दूसरे दिन वह फिर आ धमका मराने की वश मग घाती है मंगन हुए। मानिक की घात म मनीषापर अभी तक नही आया। पांच रुपय दन का टूपा पर मक्के ता वाई चागीगर बुना पाऊ।

उसकी मर तरफ की मोग मे हूय वश धुका हुआ। एक बार ता मराने हुं कि उमर वान की मिडिनियो मोन दूँ। क्या मर पाग वाई धैला जमा कर मगा है उमन ? परन्तु जे उसकी आँखो म मारना म गहन भाव म ता गुप्त वह न मना। नाट निजान कर मैंन उग पवडा ही लिया।

श्रीर फिर मैं मगू का सुवह म मारम तक छत पर चडा मगा मरगा रहा। न वाई चागीगर आया न मजदूर। श्रीर एत दिन मगू की इम मानिक परस्ता का म भा मुन गया। दोपहर का वरामे म बडा मुसा निम रहा था। तभी म्मुनिगिपलिया का म्ब चपरामी आकर पूछन लगा सरदारजी मगागम पहा है ?

वोन मगतराम ? मैंन प्रश्न किया।

जा वाठी का मालिक। उमर नाम मोरिम आया है प्रान्ति टकम का।

मैंन उत्तर लिया पर यहाँ ता नही रहन कोठी क मालिक। हाँ चौकीपर मगू है जो कहा इधर-उधर गया होगा।

चपरामी हस पडा तो आप नहा जानने सरदारजी। वही मगू ता है वाठा का मालिक। यह नाटिस ल लीजिए श्रीर उस द दीजिएगा।

मुझे चपरामी की बात पर विस्वान न आता यदि म उस नाटिस का यह वाक्य न पता— लाला मगतराम लीड लाड डलहौजी।

मन चपरामी से कहा अरे भाई वह बडा कजूम है।

मैं श्रीर बहना कि चपरामी वाला कजूम नही बनसीव। इस कोठी के सिर पर मगतराम का बुनवा कभी ऐग किया करता था। अब तो इसकी मरम्मत श्रीर टकल का खच भी नहा निबलता। चपरामी ने ठडी सांस भरी डलहौजी चली गई सरदारजी अगरेजे क साथ ही। अब तो वम नाम ही रह गया है इसका।

डलहौजी की बल्ली हुई तसवीर तो पहल ही देख चुका था अब मगू की बदली हुई तमबोर मेरी आँखो के सामने आ गई। मैंन पूछा भला यह हान है ता वह इस वच क्यों नही देता ?

चपरामी न उत्तर दिया 'वंचे विचारा किसको ? जायदाद का मूल्य तो आवादी से होना है मरानेजी इट परवरा से नही।

श्रीर एव लम्बी सास लेकर वह चुप हो गया।

# बल्हड़वाल

गुरमुखसिंह मुसाफिर, १८९९

शानी गुरमुखसिंह मुसाफिर पजाब के एक राजनीतिक नता के रूप में बहुत अधिक विख्यात हैं। वे गत अनेक वर्षों में मसद के सम्बन्ध में और कद वर्षों तक पजाब प्रन्ध काग्रस कमटी के अध्यक्ष रहे हैं। परन्तु उनका राजनीतिक व्यक्तित्व में वही अधिक प्रभावशाली उन का साहित्यिक व्यक्तित्व है। कविता और कहानी, दोनों ही क्षेत्रों में उन्हें सफलता प्राप्त हुई है।

मुसाफिर की रचनाओं में स्वतंत्रता संग्राम और उभरती हुई राजनीतिक चेतना का बड़ा प्रभावशाली चित्र मिलता है। पजाब के ग्रामीण जीवन में भी उनका गहरा तादात्म्य है। इस संग्रह में उन की एक ऐसी ही कहानी संग्रहीत की गयी है।

अनेक कविता संग्रह तथा अन्य साहित्यिक कृतियों के प्रतिरिक्त उनके बखरी दुनिया सम्ना तमांगा आन्दोलों के बोट आदि अनेक कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। हाल में ही उनका एक कहानी संग्रह हिन्दी में भी प्रकाशित हुआ है।

पूरा प्रकाश अभी नहीं हुआ था। दिन और रात का मिलाप हो रहा था। करमा ने धनना खाट घसीट कर मसासिंह की खाट के साथ मारी। मसामिह चाक कर उगा आँसों में गहरी नाद थी। वह करवट बदन कर फिर सो गया। अग करमा ने उस कथा में पकड़ कर भक्त्भीरा। वह ऊघाई लेने हुए एक बार करवट लकर फिर

उनटा लेट गया। 'अभी तुम्हें डोर के साथ जाना है हरो की तनिक आल लगी हुई है मेरे साथ बात कर ल। करमो की बात सुनकर अद्ध निद्रा म ही मर्मासिंह न हुबारा भरा तनिक सुस्ता तो लेन दे करमो।'

एक बप और पूरे सात दिन हो गय ह आज एव एक तिथि मँत गिन रखी है उगनिया पर जिस दिन से घर स उगड कर ठोकरें खा रह है। अन्नग बठकर बात करन का अवसर ही नहीं मिला। प्रात वात तुम्हें इस डोर के साथ चला जाना हुआ, अघेरा होन पर आधी रात का आना और आकर थके दूट नट जाना। आज हवा कुछ धीमी थी सारे लोग एक सिरे म दूसरे मरे तक सो रह थ। मरे दिल म आया तुम्हें जगाकर सारी रात बात कर लू। बात करने की चिन्ता करके मुझे ता आज नीद भी नहीं आई। परन्तु पहन तुम्हें नहीं जगाया मैंने कहा सार दिन का थका दूता है। अब तनिक मेरी बात सुन ल। है है, सुन रहा है, कर मँ वात ?

हा हाँ कर बात करमो मेरे कान तेरी बाता की और ही ह। उलटे सेटे हुए मर्मासिंह ने कहा। करमो ने मर्मासिंह का कथा भकभोर कर कहा हम नहीं एम मजा आता बात करन का। तू इधर मुह कर रोगनी म तेरा चेहरा देखे भी काफा देर हा गयी है।

ल देख ले चेहरा आज फिर सारा दिन देखती रह आज तो मेरा मन भी बई मान हा रहा था। हरो का जगा कर डार क साथ भेज दो वहा करना ही क्या है ? वहाँ पास बठकर पगुघो को देखती रहेगी और करना ही क्या है। बाढा ने फमल तो छोडी नहीं। जो कुछ बचा भी है वह भी दाना टाना मिट्टी म लघपथ हा गया है। पगु उह खुनी से खाने ही नहीं। फसल स अधिक यह सूखी घास पगु अधिक पमन करत हैं। जा जगा दे हरो का फिर हम दोनो जी भर कर बात करेंगे। मरा भा आज जान का मन नहीं कर रहा है। कितना देर हो गयी है मुसीबत पर मुसीबत आ रही है।

मर्मासिंह बातें करता करता अगटाई लकर पहन खाट पर उठ कर बठ गया, फिर उमन दाए हाथ का सहारा लकर बाए हाथ का करमा के हाथ पर आहिस्ता आहिस्ता फरत एक उगनी म पकड कर उसको अपना ओर खीचन हुए कहा आ जा यदि अभी वात करनी है ता आ जा मेरे पास आ जा।

मर्मासिंह ममभ गया था कि हरा का डार क साथ भजन की वात करमा का पमन नहीं थी इमीलिए उमन अभी वात कर लन क लिए कहा था।

करमा न चारा घर नकर डानी। हरा का खाट क नीचे बठ कुत्त क अतिरिक्त प्रभा मारे साथ माए पड थ। करमा न अपना दायी बाँ म आग का। मर्मासिंह न दाए हाथ का मटाग लिया। करमा न कुत्त का घर दया। कुत्त न अपना मन् तमान पर रखकर आँसे बान कर ता दुर् था। एक आवाज म करमा क कान खड हो गए। वट रम्मा ता क भागा जा रही भस का आवाज था। खना म आन-आम का भगिया क बस र मार साथ सा र थ।

माँ नैम भाग सा हरा अपना माट म उटकर आवाज दना दुइ भस का घर

भागी। करमा न अपनी खाट घसीट कर हंग की खाट क माय कर ली, जहा कि पहल थी। ममासिंह कुछ देर अपनी बाहा मे आत्मा और माथे को ढके लेटा रहा। अब उसकी आंखा म कोई नींद नहीं थी। एक बार चार दृष्टि मे उसन करमा की आर देखा। करमा हरा का दाव रही थी जो कि भस का कील स बाधकर करमा की आर आ रहा थी। अब हरो करमा के पास पहुंची ता करमा मसासिंह की कह रही था— अब ता बिनकुल ही दिन निकल आया है और मसासिंह उत्तर द रहा था दस समय राज ही दिन निकल आता है आज नया थाडा ही निकला है।

मरी बात तो बीच म ही रह गयी। करमा के मुँह से सुन कर मसासिंह न कहा— 'हरा को जान दे डारा के साथ।'

'यह बात नहीं करनी। करमा की न पर ममासिंह चुप हा गया।

अच्छा, आज मैं आपहर ही वापिस आ जाऊंगा। तो फिर कर लना जा बात करना चाह। मसासिंह न वानर की राणी का दास लस्मी स अदर पेंकत हुए कहा। करमा न सुबह हाने ही कुछ बारा पीमा फिर पकाया। हरा न लस्मी बनाइ। अब मसासिंह का सुबह का नाश्ता खिलान हुए करमा न पुन बात की 'तु खला को जाडा। ममासिंह न दापहर आन की बात दाहराई। हरा मटकी उठा कर छाया म रसन लिए उठी ता करमा न अपना मुह मसासिंह के काना के निकट करक जन्दी-जल्दी काद बात कही। ध्यान करमा का हंगे की और था। मसासिंह ने करमा का बात का उत्तर दत हुए कहा, 'य औरता के काम हैं। चली जा—भायक मा स सगाह कर ले। गोभी सती तरी दाना भाभिया बडी समझदार हैं। जिसके घर म दान उमक पगल भी सदान। सम्पन घरा की थी, आग ब्याह भी सम्पन परिवार म टूया, अपन आप सदानिया हा गयी। चली जा आज ही चली जा। रात को उमके पास रहना और सुबह वापिस आ जाना। करमा न मसासिंह की बात सुन कर कहा— बात तनिक आहिस्ता स करो तुम्हारी ता डोन पीठन की आदत ही हो ग है।

नहा नहा इसम भला डान पीठन की क्या बात ह तुम्हे अपनी लटकी के सम्बध क लिए भायक सलाह करन के लिए जाना है इसम गम की बात ही क्या है।

मसासिंह की बात सुनकर करमा न कहा हरा को पना नहीं लगता चाहिए कि हम उसकी ही बात कर रह हैं इसीलिए तो तरे कान म बात की थी और इन लिए ही ता मैं मुँह अघर ही उठी बठी थी। तुम्हें तो किसी बात की समझ ही नहा।

हंग भुगी क दूमरी आर कुत्त के माय खेल रहा थी। मसासिंह न कहा करमा फिर तू अभी चली जा, रात का वापिस आ जाना आज फिर जम्बर बठ कर बाने करेग तू उधर स भी सलाह कर आएगी। फिर हरा क हाथ पील करन क लिए का निगद करेग। रात का काफी दग स, जब हरा सो जाएगा सभी लाग सा जाएंगे कवल तू होगा और मैं। सब करमा आदमी बाहर मे हाकर आए तो बाने करन और भिनन का मजा भी बडा आता है।'

ता भना मुम्हे कही विलायन स वापिस आना है। परन्तु अब जाऊँ कम ? पहन कुछ सचें की व्यवस्था ना हा। बापू वान दिन अब नहा रह। हाय रात, चना



या बाटा भरा रहता था अब ता मुट्टी भर या भी नहीं है । जितो माताज हा गय है । रहा या घर नहीं बस का बोरी नहीं मर भी कोई जिन्गी है ? तनिक जोर की हवा बन ता मर भुग्गी उड कर पता नही बनी यी ताय । बागें करना करमा व घांगू बना मग । मायक की भा उग या घा गई । बरन सग ।

तुम जि = मपन कहा हा पता नहीं उतना क्या जान है । वर भा अग या विनाग है गुना है उपर भा बनी बाड़े घाई है । क्या पता व भा हमारा तरह बपर बठे हा ।

बरमा तुम्हे मग तरह टुगा दग बर मर तिन को बुझ हा मगता है । जिर भी टोच है यति उपर बाड़े घाई है तो गजी गुगी पूर घाता । हरा की बाट या ता उल्लग बाता म ही करना । घाज तात तन ता मू पत्तम भी बनी जाणा बनी म घमृतसर तब घाठ घान घाग गुरनामपुर तब डड । पता मगा है अब तिनानय तब मोटर जाती है । छ घान वहाँ तब व समभ सा । घाग मीनोमान तब ता पत्त ही बनना हागा । मसासिह न बात बरत बरत घपती तरहमद व जितारे म पांच का नोट गोना । पता नहा विना दग मभान बर रसा हूभा या । बटून मैला या और काफी पिस गया था । हग भा गई । दोना को फिर चुप हाता पडा । भंग पुन अपना रसा तोडन का काम कर रही थी । मसासिह न रम्बा और दात्री हाय म उठा कर चलन की बरी । बरमा ने घाम हासन बानी बारी भुग्गी म से उठा कर मसासिह को पबडान के बहाने फिर बात बरन का अबसर निवान लिया ।

उमर तो हरा की इतनी तहा पर जवान लगती है । मरी यह चित्ता अब हट जाए तो अच्छा है । घाजकल कोई भरोता नहीं घर घाट जो कोई न हूभा ।

हाँ हाँ मैं तेरी चित्ता को समझता हूँ । मरी बात मानो और अभी चली जाओ पर बसे हरो तो अभी मुश्किल से तेरह की होगी । जिस वय बटून बाड़े घाई थी न वह जब अम्ब नगल बह गया था रावी बल्हडवाल स चार भील दूर बहती थी हरो तीन साल की हागी उस समय मुझे यह बात याद है । ऐसे महसूस हाता है जस कल की बात हो ।

ठीक है पर लडकियो व बडन का पता नही लगता तेरह वय म ही देखता नही मेरे से भी ऊँची लगती है ।

पर यदि कोई सम्बन्ध बन गया तो गुजारा कैसे करेंगे ? मरे पास नकद तो यही पाच ही है जो मैंने तुम्हे द दिये हैं । या बीस फीजासिह से लेने है । वह कहता था इस बार मक्की बेच कर तुम्हारा निपटा दूँगा । पर मक्की तो दाना पडने से भी पहले समाप्त हो गई । अब उससे भी मिलन की कोई आशा नहीं बरमा । य दिन भी हमे देखने थे । छ सात हजार की आबादी । सारे इलाके मे सबसे बडा गाँव था । अब तो सारी कोई डेड हजार की आबादी रह गई होगी । इस आबादी का भी कोई पता नहीं । ऐसे अभियुक्त वाली हालत है जिसको फासी का आदेग हो चुका हो । नदियो के फेर से बचन के लिए भारी साधना की आवश्यकता होनी है । पर बरमा हमारे वे मुए बाग और कोठे तो अब वापिस नहीं मिलेंगे । पता नही कितनी देर इन खेतों

क आस-पास भुगिया म रहना हमार भाग्य म लिखा है। करमा बाता ही-बाता म मैं जिस तरफ चला गया ? असल वान साचन की यह है कि यदि हाथ-मल्ल मुठ न हथा ता हरो का वक्त कस निकलेगा ? फमल भी बाट की भेंट हा गई। हरो के नहर का सहारा भी जमे तू बना रहा है लगभग टूटा ही पडा ममभना चाहिए। यह तन ही अब हमार प्राण निकानन का वाग्य बन रहा है।”

बाना म तम मसासिह और करमा भुगी स काफी दूर निकल आए। दानी, खुरपा रम कर मसासिह हरी घास पर बैठ गया। धूप चमक रही थी। चारो ओर नजर दौड़ा तो आस पास दूर तक नागा के डोर चर रह थे। बल्हडवाल का यह किनारा जिस ओर रावी बह रहा थी सामन दिखाई दे रहा था। दूर-दूर तक लोग चलने फिरते दिखाई दत थे। मसासिह ने चारा ओर देख कर उच्छ्वास लेत हुए कहा 'करमा कहा म्याना पर हम बितनी कितनी दर बैठत थे। मा तुम्ह रोका करती थी बापू भी मना करता था नई बहू आई है, इम नास्ता दकर सेता की ओर मत भेजा करो। करमा तू कितन जोरा और प्यार स भागी हुई आनी थी। मैं तरे लिए अजनाल मे जूना लाया था। तू एक दिन पहन कर आ गई। तुम्हे याद है कि तू पत्थर पर से फिमल कर गिर पनी थी। मैं तुम्हे उठाया। बापू दखता था, मैं पसीना पसीना हा गया था। तरी रशमी मलवार घुटन पर मे पट गई थी करमा, तरे घुटन पर रगट ना तग गई थी। घर गए तो माँ न मुम्हे डाटा था। तीन-चार दिन तुम्हे खाना देकर नहा भेजा। एक दिन मा को साधारण-सा बुलार हो गया तुम्हे फिर खाना लेकर आन का अबमर मिन गया। याद है करमा तुम्हे अरे मेरा करमा।

भूनी यादा की याद म मसासिह एक बार अपन आप का भूल गया। उसन करमा का आलिंगन म लेन के लिए बाह फनाइ पर उसन अपन ही हाथ फिर बापिम छाती तक आ गय। दूर से आते हुए कुछ व्यक्तियों का देखकर करमा उठ कर खडी हो गई थी और दूर निकल गए अपन डोर की ओर देख रहा थी। 'बहुत दर हो गई है हरा का आजकल कभी इतनी देर मैंत अकेला नहीं छोडा। वह भी साचनी हागी मैं कहीं चनी गई। करमा की बान मुनकर मसासिह ने कहा, 'हा जा मैं अभी अभी थानी-मा घास काटकर आना हूँ। फिर तुम्हे मनावाल भेजूगा। अब काफी देर हो गई। रात का ता तू बापिम नहीं आ सकेगी। अच्छा, कल ही आ जाना।

इतनी बान कह मसासिह न फिर बात छेड़ दी सच करमा वह सामने वाला स्थान था जहा स तू फिमल कर गिर पडी थी।

करमा बापिस आकर फिर बठ गयी। हाँफनी हुई बोनी, पर उम समय ता यना आमाद और मावन की धूप भी बडी गीतन होती थी। ऊँची-ऊँची फसला की छाया ननी का ओर मे ठ डा गीतल पवन चलता था मक्की-बानरा चारा ओर इतना उचा हाता था कि कहीं आदमी को दख भी नहीं सकता था।

'बापू रानी के चार आस मार कर तम्मी का कटोरा पीकर दूसरा ओर मकई काटन चला जाता था और हम दानों कितनी कितनी देर यहाँ बठे-बैठे वहाँ करत रहते थ। एक बार माँ न पडासिया के लडके गमी को तरा पना लान भेज दिया

धर तन गाना गिना कर बापिन क्या नहीं छापी ।

हाँ मुझे सब कुछ बाद है पर उम समय हरा था ता चिन्ता नही था न । माप ही उम समय आपन का प्यार की बाधा न हम पर था भूत जात थ । धर पर की बात न सत्य रह है । उठकर तुम गुग घाँटा क निय भी न समय है घोर न स्थान ।

हाँ ठीक है बरमा मुझे उम समय बाद चिन्ता गरी थी । पर माँ का तरी चिन्ता थी ।

मसासिह की बात गुन कर बरमा न बहा कर बूना हा गयी है । घात्र जहर जल्ती घाना मीनावान की मसाह करेगे ।

बरमा धार तिन रन हा जाये । पता सगा है कि मरवार बाड़ पाहिना क लिए कुछ कर रहा है उम यवन ही हरा की समस्या हय करन की बात मावेंगे । बरमा दम बदम दूर जा चुकी थी । वहाँ ही उसन जोर स कह निया 'घर जहर जल्ती घाना जमी मसाह हागा दम लेग । मरवार क कुछ करन की वान मैन भा मुनी है । पर पातगाह क मामल घोर दरियाभा क फेर, कुछ भाग ही हिम्मत करन चाहिए ।

मसासिह न घाम वातन के लिए दात्रा उठाई बमर की तहमद सान कर वह पत्थर पर रखन गमा ता उम एक विनार म गाँठ-सा महगूम हुई । पता नहा किम समय वह पाँच का नाट करमा न उसकी तहमद क विनार म बाँध निया था । मसासिह आज गीघ्र ही घर आ गया था परन्तु बरमा क मदावाल जान की सलाह प्रभा स्वयित कर दी गयी थी ।

# भीनी-भीनी खुशबू

मोहनसिंह, १९०५

---

प्रा० मोहनसिंह पंजाबी के शीर्षस्थ कविया म ह । पंजाबी की आधुनिक कहानी के निर्माण म भी उनका महत्वपूर्ण योगदान है । सन् १९४० म अपनी कहानिया क पहल संग्रह के प्रकाशन के साथ उहोने पंजाबी क गिन चुन कहानीकारा म अपने आप का प्रतिष्ठित किया था ।

कहानी लेखन म पर्याप्त सफलता पाकर भी प्रा० मोहनसिंह न कहानी लेखन म विनाय रुचि नही दिखाई । परन्तु थोड़ी सी कहानियाँ लिखकर ही उन्हान इस विधा म अपना स्थान सदा के लिए सुरक्षित कर लिया है ।

---

रंगमा और नका दाना बहनें सारा दिन बनफशा तोड़ती रही थी । उनका पिता सतार मुहम्मद एक बडा जमींदार था । चाह पहाड पर जमीन बहुत थोड़ी हानी है फिर भी उसकी खुद की पाच-सात बीघा जमीन थी । हल चलान के अतावा उसन नभिप्रागली पहाड का ठेका लिया हुआ था । यू तो एबटाबाद से लेकर कोह भरी तक क सत्र पहाडा पर बनफशा उगता है पर इस पहाड जितना बनफशा कही नही हाता । वष म करान साठ-अत्तर मन बनफशा अकेले इस पहाड से उतरता है । अप्रल और मई क महीने सतार मुहम्मद के आगत म बनफशा की छाटी छाटी पहाडिया लग जाती हैं । उन बनफशा सूख जाता तो उसको बलगाडिया पर नादकर वह रावलपिंडी ल जाता जहाँ से सवा-सौ रुपय की मन क हिसाब से वह बिक जाता ।

सतार मुहम्मद डूंगन का रहने वाला था जो नभिप्रागली से तीन मील नीचे एक छाया-सा गाँव होता है । पक्का नमाजी और खुदा परस्त होने से उसन गाँव म एक

छोटी-सी मसजिद बनाई हुई थी। हाजीब उसन एक मुन्नी भी रखा हुआ था कि वह सुबह तड़के उठ कर नहाने के लिए हमाम गरम करता मसजिद में भाड़ू लगाना। कई बार नमाजियों के दरवाज़ ठोक ठोक कर उठ कर स लकर घाना। श्रीम श्रुतु म तो मसजिद में अच्छी चहल पहन रहती किन्तु मदिवा म जय बनी बर्फ गिरती ता लोग बर्फ कई दिन घरा स बाहर निर न निचालन पर सतार मुहम्मद म्ना मसजिद म ही नमाज पढता। लोग न अपनी खिडकिया म म कई बार उम बफ पर आनन बिछाकर नमाज पढते देता था। कई बार ता नमाज पढत पढत दा ग उगती बफ उमके बाना और पीठ पर जम जाती थी।

सुदा परस्त होन स सारा गांव सतार मुहम्मद की इज्जत करता था। पर लागा का भवने अच्छा वह इसलिय लगता था क्याकि उसन बनफगा का ठका लकर सार गांव को राजगार डूँड दिया था। सुबह तड़क ही औरतें भालियाँ बांध कर बनफगा चुनन निकल जाती और मध्या समय करीब सान-आठ घान की बमाई कर वापस आ जाती।

रश्मा और नेका भी बनफगा चुनने निकल जाती यद्यपि उह इम महनन की कुछ खास आवश्यकता नहीं थी। उनका पिता भी इस बात का पसन्द नहा करता था कि उसकी बटियाँ आम काम करन वातिया की तरह पहाडा म चक्कर लगाएँ। कई दफा जब वह सुबह सवरे भोलियाँ बांधकर बनफगा चुनने के लिय निकलती ता सतार मुहम्मद उनका रास्ता रोककर प्यार से कहता कहाँ चली य पागल लडकियाँ! तुम्ह इस समय जाने से क्या मतलब? अल्लाह ने बहुत दिया है। आराम स बठ कर खाआ। जब वे न रुकती और लाड स किनारा-म हाकर बाहर निकल जाता ता वह खामोश रह जाना और कुछ समय पश्चाद् जरा रोप से उनकी माँ स कहता रेनो की मा तुम्हे जो कहा है कि मेरे स लडकिया का कुछ न कहलाया कर। अदर हा समभा-बुभा लिया कर लडकियो का। मुह से रोचना बना करना बुरा गना है पर तुम्हे किसी बात की समझ हो तब न।

नेकाँ की उम्र बारह बप की थी और उसकी समझ म नहीं आता था कि गाँव की सब लडकियाँ बनफगा चुन तो वह क्या न चुन? माधूम नहीं उनका पिता उम क्या रोक्ता था हालाकि वह अपनी उमर की लडकियो म सबसे ज्यादा बनफगा चुनती थी। बनफगा के गात भी उमके बराबर कोई नहीं जानती था। अभी कल ही माडीए बनफगे जदए नाजुक बाला गात सुनकर हसनो बुआ ने उसका मह बूम लिया था। गायद उसका पिता इमलिय रोक्ता हागा कि कहीं पहाड म फिसनकर वह मर न जाय। एक बार जब पहाड की ढलान पर अपनी धकरी के पीछे सरपट दौड रही थी ता उमका पिता आवाज़ दे दकर पागल सा हो गया था। उमकी आवाज़ म कितनी धबराहट और याचना था यह सोचकर नका काँप उठती। पर वह आज तक गिरी तो कभा न थी। उसन अपनी माँ स भाडू की भी बन्त बानें मुनी था। पर वह तो अपनी लडकी को उठा ल जाने है। इसलिए वह अपनी बहिन के साथ बनफगा तोन जाती थी।

रेशमा की उम्र कोई सत्तरह बप की थी। उस मालूम था कि उसका पिता क्या उसे राकता है, फिर भी उसका दिल पहाड़ की ऊँची चाटिया की ओर भागन को करता था। नीची जगह और चीजें उमे भाती न थी। अपना छोटा-सा गाँव और उमके छाटे-छोट घरो से न मालूम क्यों वह उबती जा रही थी। दिन-ब दिन उस का गाव की गलिया तग-तग महसूस होती। रात को साते समय जब उसकी नज़र छत की ओर जाती तो उसे वह बहूत नीची लगती और फिर उम अपन पिता की अमीरी पर गव होने लगता। वह कई बार सोचती भला इन छता की क्या आवश्यकता थी? गायद सर्दी से बचन के लिय पर उसे तो कभी सर्दी नहीं लगी थी। न मालूम क्या गाव के बड़े-बूढ़े सिला पर बठ कर चरखी पर ऊन कातत रहते थ।

उन से गायद वह कम्बल । क्या इन सबकी जरूरत है? वह ता सिक सलवार कमीज से ही सर्दिया काट देती थी। उनका पिता न मालूम क्या गरम पानी स स्नान करता था। उसका तो ठण्डे पाना म हाथ मारन म आनंद आता था। उसन कई बार बफ के गोले बना-बनाकर गालो से लगाए थे, गालो पर मल थ। कुट्ट गरमी-सी निकलती थी बीच-बीच म चिगारियाँ भी। और उनका सफेद-सफेद रग कितना मुंदर लगता था! वह लोमड़ी के ममान उगलिया मे बफ खोद-खोदकर नीचे से सफेद दूध जैसा बफ निकालकर गोले बनाती थी। उसकी मा यू ही कहती थी कि बफ मुह पर न लगाया कर गाल फूट जायेंगे। हुह! उसके गाल तो कभी न फूट थे। अभी पिछले बप ही फजल बडई की लडकी न बनाया था कि बफ मलन म रग गोरा हो जाता है। भला वह क्यों न अपना मुँह गोरा करे। फजल की लडकी तो सारे बदन पर बफ मलती थी। तभी तो वह बफ जसी सफेद हो गई थी। वह कहती थी तू भी सारे बदन पर बफ मला कर। एक बार जबरदस्ती उसन बफ की मुट्ठी भर कर रेशमा क गले म से नीचे बहा दी थी। कुट्ट गुदगुनी सी हुई थी। पर उमक कुछ समय बाद ही फजल की लडकी का ब्याह हा गया और वह समुराल चली गइ। पिछल िना जब वह आई थी तो उसने बताया था कि उमकी समुरान का गाव पहाड की चोटी पर था। वह भी किसी पहाड की चाटी पर बसन बाल गाव म ही विवाह कवाएगी। उसका अपना गाँव तो बहुत नीचा था। नाच-ही-नाच नाचे-हा-नीच जम काइ कुआँ हो। उसका सब नीची जगहा की चीजा मे नफरत थी। वह उपर चटना चाहती थी उपर पहाडो की ओर बफ से टँकी चाटिया की ओर। इसलिए वह नका का लकर बनफगा चुनने जाया करती थी।

आज रेशमा और नेका दोना बहनें सारा दिन बनफगा लाडली रही था। नकाँ की भानी फूलो म भरी हुई थी पर रेशमा की भोली म यूँ ही घाड-न फून ब। आज उसका दिल काम म न लगा था। वह कुट्ट उदास-सी थी। आमतौर पर वह पनाड की चाटी पर खुग रहा करना थी पर आज ऊँची चाटी पर चढकर भी उमका िल नहीं उगा।

घाम छ बने के करीब उठोन नीचे उतरना गुरू किया। ननिआगलो की मन्क पर एक नीच रग का कार आकर खडी हा गई। उसम म एक अग्रज और उसकी

मम निकलकर नीचे घाटी का नजारा देखन लग। बीच अन्न न क गिन थ। बर पिघन चुकी थी। वही वहाँ किसी जगह बाईं डेग रह गया हा चाह। बाकी घग्ना ना चप्पा चप्पा हरा भरा हो उठा था। रंगमाँ न दमा कि गाँव की लडकियाँ मम-माह्य म कुछ माँगन क लिए खबर लगा रनी है। रंगमाँ न आज तक किसी मुसाफिर म कुछ न मागा था। वह छोट माय वाप थी बटी तो नहा थी पर गाँव की लडकियाँ ता चप्पा क दिनो म सडक का किनारा भी न छाती थी। पञ्जन की नडकी न एव बार किसी म अग्रजी साबुन की बट्टी ल ली थी। एक बार उसन वह साबुन रंगमाँ को भी मला था। बहुत अच्छी खुवाँ आती थी उसस।

आज उमका दिल भी किसी स कुछ माँगन को बग्ना था। उमन नकाँ म सलाह की और दाना जल्नी जल्दी सडक की ओर उतरन लगा। पर उनन पहुचन म पहत ही मेम और साहव माटर पर बठ कर गुम हो गय।

सडक पर पहुचकर रंगमाँ माना थक सी गइ। उसन नकाँ को कुछ समय तक सुन्ता का वहा। दोनो बहनेँ सडक म पाच-मात कदम नीच उतरकर एव पत्थर पर बठ गइ। सध्या धीरे धीरे उतर रही थी और अप्रैल का महीना हान म हवा भी ठडी होती जा रही थी। उनका गाँव मानो उनके पाँवा म बिछा हुआ था।

रशमा पत्थर पर चुपचाप लटी हुई थी। नेकाँ उसे कई बार पर चान को कह चुकी थी पर वह मानो कुछ सुनती ही न थी। एक-दो बार अक्ली चल चान का भय दिखा कर नेकाँ धर की ओर चल भी दी पर पद्रह बीस कदम जा कर फिर हसती हुई वापिस आ जाती और भोली म से पून निकाल निकालकर रंगमा के मुह और सोने पर मुट्टी भर कर मारन लगती। रशमा जरा न हिनी। न वह उपास थी और न खुश न आशावान और न निराग। उसकी आखो म न नफरत थी न मुहवत न शोखी न थकावट। मानो उमकी आँखा के सब रग पिघल कर एक हो गए हा। उसके समस्त शरीर का भी मही हाल था।

वह बनफशे की भीनी लुशबू की लहरो के साथ आख खालती बाद करती। नेकाँ ने इससे पहल कभी उमे इस हालत म नहाँ दखा था। वह हार कर रेशमा के पास बठ गई और फूला की सारी भोली उस पर उलट कर बोली 'य ल अगर थोडे फूला क डर म घर नही चलती ना मेरे सारे फूल ले ल।

कुछ समय बाद जब रंगमा न करबट बदली तो क्या देखती है कि उससे दस पद्रह कदम हट कर दो मुसाफिर सडक के किनारे बठे है। उनके नजदीक कोई लारी या मोटर न थी। हा कुछ दूर पर दो मजदूर पीठ पर बंधे हुए सूटकेस और बिन्तर स सहारा लिये सुन्ता रह थे। दोना मुसाफिर नवयुवक थे। लगता था जैसे वे एवटावाद स काहमरी तक पदन ही यात्रा कर रह थ। नभिआगली की छ मील साधा चगाई चक्कर के बहून थक गए थे। उनम स एक लम्बा और वेडील सा था पर दूसरा मध्यम क का बटून सुन्तर जवान था। रशमाँ लगातार उसकी ओर देखनी रही। कुछ समय पचात् जवान ने सिर स टापी उतार कर धुटना पर रख ली और वाला म गोरी-गोरी उँगलिया फेरी। हवा उनकी ओर स इस तरफ आ रही थी।

खुशबू का एक तेज भाका उड़कर रेशमा और नेका तक पहुँचा। नेका की इस ओर पीठ थी। उसे अभी तक उनकी उपस्थिति का ज्ञान न था पर खुशबू सूघत ही उसन मुड़कर देखा और फिर रेशमा की ओर पलट कर आखें फलाकर आश्चर्य प्रकट किया।

धस तो रेशमा रोज ही बनफशे की खुशबू म रहती थी, पर उस लडके की ओर स आ रही खुशबू की ओर ही लहर थी। युवक ने भी करवट बदली और उसकी नजरें रेशमा पर पडा। वह बहुत थका होने के कारण बहुत समय से आखें बंद किए लेटा था। रेशमा न मानो फिर स उसम ताकत पदा बरदी। उसकी आँखें नींद में जाग हिरन जनी छलागें भरन लगी।

रेशमा न धीरे से नेका के कानो में कहा, "आ, इनस खुशबू मागें।

"ठीक है आ।"

जा फिर माग।"

में अकली नहीं जाती।

क्या नहीं जाती? वे कोइ तुम्हे खा तो नहीं जायेंग?"

"तू कयो नहा जाती?"

"म बडा हू वे मुम्हे नहीं देंग। तू छोटी है, तुम्हे दे देंगे।"

"भई मैं ता नहीं जानी। मुम्हे तो उनसे डर लगता है। क्या मालूम व मार मार के भगा दें।

"हू! डरपोक कही की।"

'टरपाव हूँ तो डरपोक सही मैं तो नहीं जाती। कुछ समय के लिए दाना बहनें चुप हो गई। नेका वनफशे के फँस हुए फूल एकजित करन लगी और रेशमा युवक की ओर दखती रही। उसने भी दो-चार बार रेशमा की ओर देखा। लम्बा युवक अभी आखें बन्द किए उल्टा लेटा हुआ था।

"ना ना नका की बच्ची! डर लगता है क्या?"

"तू कयो नहा जाती? तुम्हे डर लगता है?"

रेशमा उठ कर बैठ गई और नका वनफश की भोली भँभालकर खडी हो गई।

आ दाना चलें।

अगर उहान न कर दी ता?

हम कौन पूरी शीशी मागने वाली हैं! कहूंगे थोड़ी-थोड़ी वालो म लगा दें।

युवक न उनकी बातें सुन ली थी। वह मुस्कराकर बोला 'खुशबू लनी है? आघा हूँ।

उमके सफे दाँत गाम के घुधलक म रेशमा को बहुत सुंदर लग। वह भी हँसी उसक भी दाँत सफेद दूध के समान थे। पर युवक देख न सका। वह अपने सिरहान तह परक रखे हुए कोट की जेबें टटोल रहा था। इतने म दानो बहनें उसके पास पहुँच गए। युवक ने जेब में रुमाँव निकाल कर रेशमा के हाथ म धमा दिया। उम म स एक भजाव मो भीनी भीनी सुगंध उठ रही थी। रेशमा न रुमाल दो बार नेका की नाक स लगा कर स्वय मूँघा। फिर उसे खोलकर रेशमा ने रुमाल को लपट कर एक बार



फिर मूधा। सुगंध बहुत अच्छी थी पर युवक के बालों से आई खुशबू जसी लहर डमम न थी। उसका दिल किया कि जवान के बालों पर नाक रख कर सूंधे। पर यह कस मभव था ?

इतन में दूसरा भी जाग उठा। नेका गाव की ओर मुड़ गई और रेशमा भी। युवक भी उठकर रस्ट हाउस की चढ़ाई चढ़न लग। दा तीन कदम चलकर रंगमा न मुं कर देखा दुनक भी मुडकर उसकी ओर दख रहा था। रेशमा मुडकर युवक की ओर बढन लगी और नकां क कान म वाती नकां, जरा खडी रह। मैं और घाडी खुशबू न आऊ।

ओर क्या करेगी ? चल चलें। रात घिरती आ रही है।

रमा ल स ता खुशबू अब तक उड ग् हागी। पूरी शीशी अगर दे दे तो !  
दे चुक पूरी शीशी !

कसम अल्लाह की मेरा दिल कहता है दे देंग।

इतने में युवक भी मुडकर उनक समीप आ गया और कहन लगा, 'अगर तुम्हें खुशबू पसंद आई है तो मैं शीशी भी द सकता हूँ पर वह सूटकेस में बंद है। अगर एक बगल तक चला तो मैं निकाल दूंगा। यहाँ सबक पर कौन सामान खालकर बढेगा ?

रंगमा न नेका की ओर देखा पर वह न जान क्या चौककर दो-तीन कदम गाव की ओर चल पडी और बोली मैं ता घर जा रही हूँ। रेशमा तुम्हे लेनी है शशी ता जा न आ। इतना कहकर वह गाव की ओर उतरन लगी और युवक डाक बगल का चढ़ाई चढ़न लगा। उसका लम्बा माथी और कुली बहुत आग निकल गए थे। रंगमा उसक पीछे पीछे चढती गई पर थोड़ी दूर जाकर रुक गई। उसका तिन कांप रहा था। युवक न पाछे मुड कर उनक कंधे पर हाथ रखा। वह फिर चढ़ाई चढ़न लगी।

नकां न दो-तीन बार विस्तर में उठकर द्वार की ओर नजर घुमाई पर रेशमा अभी तक न आई थी। नकां क तिन में आमा कि मां को सब बात बता दू पर फिर पाया दर और इनकार करन क मयान में वह तिहाफ में मह द्रिपा कर लट गई। बाहर बागिन हा रंग थी गायन मन्दिण ही रंगमा रुक गई हागी। उसका पिता भी अभी मन्दिण में बागिन नगा आया था। वह आमतौर पर नमाज पढ़ कर रात का काम करन तक बागिन आता था। तान का काम वह पन्त ही समाप्त कर जाता था।

नकां का मां अभी तक काम करन में लगी थी। करान में बज वह पन्त बगल बागिन नगा जमा कर और छाया माना काम करन आन आई। नकां हाथ लंब पला कर तिहाफ का कुद उँवा करन लता नुई या ताकि उनको मां समझ रि जाना बनें मा रंग है ? पर आमा न मान न तिहाफ गाव कर कहा आ रंगमा उन मन्दिण नगा माना क्या पर रंगमा का कान न पाकर वह मान भगा नमाना हुई बारा घरा कही रंग है ? नकां वही हाकर भा मां में समझरी करन है ?  
रंगमा न नकार मुन्दिण भी मन्दिण में बागिन आ गया और बागल बगल में हा

बोला—'घा रसो की माँ, यह खजीर का लकड़ियाँ तो अदर रख लेनी थी। मव भाग गई हैं।' यह कहकर वह अदर आ गया। नेका घबराकर उठ बठी और डर से रझासी हो गई। 'क्या बटा। क्या हुआ? तुम्हे माँ ने डाटा है क्या?' सतार मुहम्मद ने नका को अपने सीन से लगाते हुए पूछा, 'रेशमा तो नहीं तुम्ह से लडी? वहाँ है वह ठीक करू उम?'

आइशा और सतार मुहम्मद का खयाल था कि रेशमा ने नेकाँ का मारा है और अब डर से छुपी हुई है। उन्होंने आग पीछे देखा फिर बाकी के दा-तीन कमरा म, बाहर आंगन म, और फिर पगुआ के छपर म दूदा, पर वह वहाँ न मिली। फिर वह लालटेन लेकर बाहर चला गया। आइशा का डर से सास रक-सा गया। वह नका क कमरे में आई, नका नी डर से मुँह हुई बठी थी।

आइशा ने दिलासा दत हुए पूछा, 'बटा बता न क्या बात है? रेशमा का वहाँ छाड आई है?'

हम दाना साथ ही बनफगा तोड कर आइ। रास्ते के पास आकर रेशमा कहन लगी नकाँ, जरा मेरा बनफगा पकड। म पशाव बरके आती हू। मैंने बनफगा पकड लिया और वह पहाडी के नीचे उतर गई। 'नका ने भूठ बाला, 'फिर मैं अबरा होन तक उसका इतजार करती रही। पता नहीं उसे क्या हुआ, फिर मैं अकेली घर आ गई।

'अरे तूने आते ही क्या न बताया? जीभ पर फोटा हो गया था, हाथ-हाथ जालिम। आइशा न दुख से अपना सिर हाथा म दबा लिया और कितना समय यू ही बटा रही। उसक दिन म कई तरह के विचार आने लगे। फिमल कर किसी गडडे म तो नगा गिर गइ या काई भालू खा गया। फिर उम यह भी खयाल आया कि आन कल चनाई का रास्ता चालू है वही किसी मुसाफिर के साथ न चली गइ ह। पर नहीं-नहीं मरी बटी ऐसी नहीं हा सकता। उसन अगन क्षण हा परचात्ताप किया। आज तक किसी न उसकी आख ऊँची नहीं देखी। हा सकता है किसी न जजरदस्ती की हो या यू ही फुमना लिया हो।

करीब ग्यारह बजे सतार मुहम्मद हूँडता हुआ अदर आया। तल ममात हा जान के कारण लप बुझ चुका था। उमन लप एक और रख लिया और स्वय आइशा के पास एक भरी हुई वारी पर बठ गया। माला उमके हाथो म काँप रहा थी। काफी समय तक वह कुछ न बोला। कुछ समय पश्चात् आइशा वाली नका कहती है कि पहाडी के नीचे पेगाव करन उतरी तो फिर नहीं चडी।

सतार मुहम्मद ने आकाग की ओर मुह करके कहा "अरलाह! किसी लड्डु म गिर कर मर गई हो भानू ले गया हो मुझे कुछ शिकायत न हागी। पर मरी इगुन को दाग न लगा दिया हो। इसके बाद वह कुछ न बाला। आइशा भाँ कुछ न बोला। नकाँ भी खामोश रही। सतार मुहम्मद मारी रात बैठा माला फेरता रहा। आइशा भी बठी रही पर बीच-बीच म घुटना म मुह रख कर रानी भी रही। नकाँ न सिर पर निहाफ लपटा हुआ था पर मारी रात आँखें खुली रही और वान चौकन रह।

सुबह चार बजे व करोब नेकी न मह पर स लिहाफ हटाया । उसका बाहर स हलकी सी आवाज आई थी । उसकी माँ न धुटना पर सिर रखा हुआ था और पिता आँखें बंद किय माना फेर रहा था । नकी न आहिस्ता म जाकर द्वार खान लिया । रेशमा अंदर आ गई ।

‘बता लिया क्या ?’

नहा ।

रेशमा न नकी का सोन स दवा लिया और बाहर आगन म लडो रही । उसकी माँ न भी खटका सुन कर सिर उठाया । सतार मुहम्मद न भी आँखें खाना ।

कहा रही लडकी ?

रेशमा चुप ।

बोवती है कि नहा ?

रेशमा चुप ।

बोवती नही ? सतार मुहम्मद खडा हा गया । रेशमा चुप । सतार मुहम्मद चुप । आइगा चुप । नेकी चुप । सतार मुहम्मद न पीछे हटकर डडे को पकडा पर गादगा उसका हाथ पकड कर बोली ‘अल्लाह का वास्ता है यह काम न करना । लडकी की हड्डी पसली टूट गई ता सारे गवि म जिनोरा पिट जाएगा । फिर रेशमा की आर मुबर बोली तू बोलती क्यों नही ? फिर गद थी कि किसी न वाट लिया था या वारिग करके नही आई कुछ बक दे । क्या हुआ था ? क्या नही आई ?’

वारिग आ गई थी अभी रेशमा न वाक्य पूरा भी न किया था कि मुहम्मद ने खान खीच कर उसके सोने पर मारी रेशमा की वच्ची ‘इसके लिए अलग वारिग हुई थी ।’ रेशमा की छाती स खून के फवारे छूटने लग और साथ ही उसने कुरत स खुगनू उड उड कर कमरे म भरन लगी । खून क्या और मुगध क्या । पल भर व लिए आंगा हैगना म लडो रह गई फिर दौट कर उसन रेशमा को गोदी म उठा लिया । मगार मुहम्मद सब बात समझ गया था । उसन लाता स रेशमा को पीटना गुरु किया वारिग के कारण नहा आई तो नकी बस आ गई और यह खुगव कसी है सच न वरगी ? न बवेगी कस न बवेगी ? सच न बताएगी तो मार डालूगा ।

आंगा न अल्लाह का वास्ता खान सतार मुहम्मद के भाग हाथ जोड । कहा अंगर मर गई तो लाध की इज्जत खराब हो जाएगी । मरी माना मसजिद चल जाया । नमाज का समय हा गया है । लोग कहग क्यों नही आया पिछल चालीस वर्षा म तुमन एक दिन भी नमाज व बिना नहा काटा । मसजिद जाओ, पीछ स दिनासा देकर सप्त पूड लूगी ।

सतार मुहम्मद भग हुआ मसजिद की आर चल दिया । आइगा ने रेशमा की कुरता व बदन खोन छानी म इत्र की गीगी टूट कर चुभ गई थी और खून रवन का नाम ननी लता था । आइगा रेशमा के सिर पर प्यार स हाथ फेरती हुई बोली बना द बना अपनी मा को मव बुद्ध बना द । रेशमा न नका की और एम दसा मानो उनका मव बुद्ध बना दन की आना दे रही हा । आइगा का बुद्ध आंगा हुई । वह बोनी,

‘नर्वाँ वटा, तू ही वता दे ।’ नर्वाँ न सागी बात वता दी । आइगा को अपनी जवानी के दिन याद आ गये । उस याद आया कि कम वह भी मुसाफिरो से चीजें माँगती थी, पर वह तो चाजें लत ही एकदम भाग जाती थी । रेगमा के मिर पर एक लम्बा-सा प्यार कर पूछा, ‘पर वटा, तू उसके पीछे क्यों चली गई थी ?’

क्या कहूँ ? मुझे यह भीनी भीनी खुशबू लेनी थी ।” यह कहकर रेगमा ने अपनी आँखें माँ की गोद में छिपा ली ।

# हलवाहा

सतसिंह सेखी, १९०८

मानावक गायकार घोर कथाकार व प्रथम गणेश  
महा की गंगा पत्रिका व दीर्घम्य गायिका म का जगा  
है। पांचाय विविध घोर कथाकार भावभूमि म प्रायु  
निक पत्रावी काना का प्रभावित करने वाला म गंगा का  
नाम मय प्रथम किया जाता है।  
ममाचार काम म साथ घटा बाट बाग्यो ने तीका  
पहिर घानि घाय कहानी मय प्रकाशित हा चुक है। मय  
होन कहानी गंगा की एक प्रतिनिधि रचा है।

अठारह वरग की साह्या का गोन निरार रहा था। प्रतिनि उनसे जगती  
माता पिता चाचा-ताऊ उसका ब्याह कर देने व बारे म सोचन और कई बार इकठे  
वठकर इस बारे म परामग भी कर चुक थ। किन्तु साह्यो को कथा-ताऊ व लडा  
म स कोई भी पसन्द नहीं था। उसक ताऊ का बडा लडा कमीर दा बार यद भुगत  
चुका था और चाह वह मुदर और लम्बा-लगाडा जवान था साह्यो उग कायर  
ममभती थी। वह दाता बार संध लगाता पकडा गया था। और इन नए घावा  
कार जाटो व लडका ने उगे एक दो बार मारा पीटा भी था। यनि वह कायर  
अथवा कम स कम फुसफुसा न होता तो क्या वह पीछा करने वालो को मारता  
पीटता नहीं और डरा धमका कर संध से भाग न निवृत्ता ? आवाचार सिखो के  
नहके उस कायर ही समझते थे। वे कहते थे इसने पास शरीर तो है लकिन  
दिल नहीं। और साह्यो दिन की गाहक थी गरीर की नहीं। शारीरक दृष्टि से  
उसक पास खुन बोई कमी न थी पांच फुट छ इंच लम्बी थी वह और मक्कन

पर पना उमका गरीर मवसन सा ही सके और उमम भी अधिक् वामन था ।

श्रीर फिर साहवो पर इन जाट सिखा की छाप पढी हुई थी । य मुरब्बा वान थे । अग्रज न नहरें निवाल कर इम सालवार म इह ला बसाया था । साहवो क बाप-गणे ऊर्र यहाँ पीठिया से गृहते थे । यन् उमके पिता पितामह बलवान हाने ता क्या अपनी भूमि पर अय किमी को बसन दत ? साहवो तो मम्भवत इम तरह नही साचनी था, ही उमने अपन पितामह चाचा ताऊ को इम तरह की गिवायते करत मुना था । श्रीर फिर साहवो क पिता वा दस गांव म न अपना घर था और न हा धरती । उमके पान पगु गाम भस तथा भेड-बकरिया वतुत था । वह किमी क अघीन होकर धरती नही जोतता था । वह अपनी गाय भमो क घी स तथा बछड बकर, ममन आदि बचकर अछ्छा गुजर कर रहा था । रहन का घर उस एक आवाद वार मिस गुरनामसिंह न ही दिया था । उस सिख न साहवो के पिता वहाव का अपना आधा अहाना द रखा था । क्योकि इस प्रकार वह म्बभावत वहाव के पगुआ तथा रवड क गोवर वा स्वामी बन जाता था । साहवो का बाप, भाई मामा और गहजाग, अलू और गुजा, गुरनामसिंह स कोई भेंप नही खात थे और गुरनाम सिंह की पत्ना हरकौर साहवा की माँ, आइशा क सामन हमेशा मिनमिनाती और मनुहार करती गृहती थी । क्या हरकौर और क्या अय लोग इन जाटा म किसी को नी साहवा की माँ क नाम का ठीक उच्चारण नहा आता था और वे सभी आदग का एगा ही पुकारते थे । फिर भी साहवो इन जाटा को अधिक् कुनीन सम मन पर विवग थी ।

उन जाट सिखा की लडकिया म कोई भी तो साहवो जितना मुदर न थी । य साहवा की स्वय सिद्ध बात नही थी सारे गाँव की स्त्रियाँ साहवो तथा उसकी माँ के ममग यह बात बहती थी । पडास क दो चार घरा की लडकियाँ स्वय साहवा की रूप माधुरी की प्रसासा करती रहती थी । उन जमी लम्बी-पनली लडकी उम गाँव म कोई न थी । और कितनी मुदर साहवो कपडा के भीतर थी इसका अनुमान साहवा क अतिरिक्त भला किसको हो सकता था ? साहवो चाहती थी कि वह इन जाट सिखा का अग्र उनके भाई चार की रूपरानी बन ।

साहवो क घर स लगभग पाँच-छ कास दूर के गाव स जगली अतिथि आया करता था । वह पचीस वष का सुडौल दीधकाम युवक था । उसका पूरा नाम गहाबुद्दीन था । सब कहते थे कि वह अपन गाव म एक मुरब्बे का मालिक है गुर नामाह वधावा मिह, ईगर मिह तथा किगन सिंह की भौति । किन्तु साहवा को विवास नही हाता था । यदि शहाबुद्दीन जगली को अग्रजेा को मुरब्बा देना हाता तो साहवा के पिता चाचा-ताऊ म क्या दाप था गायद शहाबुद्दीन को अनिथि समभ कर ही ऐसा लाग कहत थे । कौन जान उसके गाँव के लोग भी यहाँ के जाट सिखो की तरह उस सामो क्कर पुकारत हा जसे उसे साहवो नही सामा कहकर पुकारते हैं । खर यदि वह गहाबुद्दीन मुरब्बे वाना था भी तो इसम क्या । साहवो क पिता आइशा ने तो कभी भी उसे साहवो के योग्य कर नही समभा था । शहाबु

वे लिए पास खाने की अधिक आवश्यकता नहीं पड़ती। माता और बरगदाता म पशुमा व चरन व लिए पास वग भी बनती थी। और फिर निरजन का माँ न कह लवा नजा था बटा मामा व पाप ही रहा दो सात महीना। वही दूध पा बन्न है तगठा हाकर घाना। दूध की अधिकता की बात का ता निर्य अन्न निर्य रहा बान निरजन का पता न था कि तु माँ की इस बात व निरजन व मामा व पास रहने की इच्छा का और भी दृढ़ कर दिया था। मग ता यह था कि जब तक साहबो उसकी माँया म माँये डानकर दग्गन का तयार था पर बाहर आते जाते एकाप चितवन दन का राजी थी तत्र तक निरजन की आरमा मामा व पाप म चल जाने को तैयार न थी।

निरजन रुक गया था और मग उसका हगो उदात्त प। किन्तु न जान क्या व साहबो को अब भी ध्याता लग जा रहा था उम अब भी पौनी मोनिया पगडा का खटखट करती चादर बाना निरजन ही सिगई देता था।

साहबो न एक दिन निरजन को गाबर का टोकरा उठवाने के बहाने बुलवा। लिया। पिछनी रात पानी बरसा था और निरजन और दूगरे हलवाहे हम चोने न गए थे। और साहबो को वह मुह अंधेरे ही भववाग म मित गया था।

—साहबो, अब तो मैं चला जाऊँगा—निरजन न उदात्त होकर पुसपुसाव बहा।

—तो मुझे भी ल चल अपने साथ—साहबो न साहस सचित करके यह ही दिया इस प्रकार आधी हसी और आधा प्यार बाडे दिनों म ही अगाध प्रेम बन गया फिर साहबो और निरजन की एक रात भाग निक्कने की सलाह हो गई। गाड़ी मील पर रसाले वाला के स्टेशन से प्रात चार बज छूटती थी। उसी गाड़ी म उ चढना था। और साहबो को स्वय आकर कीठ पर परिवार से दूर अकेल पडे निरज का जगाना था।

बचन की बंधी साहबो आई और निरजन को उसके कंधो से पकड कर धीरे भ्रमभोर कर जगाने लगी। निरजन ने ऊँ-ऊँ करके करवट बदली। साहबो ने दूस और होकर उस फिर उसी प्रकार जगाना चाहा लेकिन निरजन ने फिर करवट बद ली। साहबो ने एक दो बार फिर भ्रमभोरा किन्तु निरजन नहीं जगा। क्या करत साहबो निराग होकर अपनी चारपाई पर आ गिरी।

कुछ दिन उपरान्त एक दिन प्रात सारे गाँव मे समाचार फल गया कि साहबो किसी क साथ भाग गई है। दूसरे दिन पता लगा कि वह चक के गहाबुद्दीन के सा जो बहाब के महा प्राय आता जाता था चली गई है उसकी साँडनी की पीठ व पीछे बठकर। तीसरे दिन बहाब और उसके भाई-चपुओ के परामश से साहबो ल गहाबुद्दीन का ब्याह चक म ही हो गया।

बचारा निरजन। जाने उसे क्या हो गया कि जो भी मिलता है उस स रोव बहता है—मैन समभा मामा खेत पर चलने के लिए जगा रहा है। और खिसियान सा भाग बढ जाता है।

# कञ्चन माटी

देवेन्द्र सत्यार्थी, १९०८

---

भारत की लगभग ४० भाषाभाषा विभाषाओं के तीन लाख से अधिक लोक-गीतों का संग्रह करने वाले देवेन्द्र सत्यार्थी हमारे देश के शीपस्य साहित्यकारों में से हैं। उनकी पंजाबी, हिंदी, उर्दू तथा अंग्रेजी में लगभग ४० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

सत्यार्थी की बालाचरण प्रधान कहानियों में भारत के विभिन्न प्रान्तों के निरंतर भ्रमण में प्राप्त अनुभव की व्याप्ति है और उनमें बहुविध पात्रों का चित्रण है। स्थानीय जीवन का रंग और लोक-गीतों में आकृति हुई जिन्गी की झलक उनकी कहानियाँ में द्रष्टव्य है।

इसी प्रकार की एक कहानी इस संग्रह में संग्रहीत है। प्रकाशित कहानी संग्रह—'कु गणेश', 'सोना गाँधी', 'दत्ता डिग पिशा'।

---

कचन मर जानो माटी खानो !—अरी ओ खबरदार जो तूने कभी माटी डाली मह मे!—इधर दवयानी की माँ की यह फटकार, और उधर कचन नदी के नाव घाट की ओर से आनी हुई बत्तखों की आवाज क क, कँ क ! इधर दूबने सूरज की पीली पानों घुप में बच्चे गा रहे हैं—

भूरी बत्तख ! सफ़ेद बत्तख !

मरी बत्तख कहाँ गई ?

बुडिया के घर

उठ बुडिया दरवाजा खोल



क क क क

मेरी कहानी आवाज़ क दम पुल स गुजर गवती है । पर मैं न ता माफिया की कहानी सुना रहा हूँ न मण्डन माँभी की न प्रभात फेरी वाल बरागी बाग़ का, न डाक बाबू मुनार हुसन की बीबी चमनगानो की । मैं ता दबयाना की कचन कचन कसाय जी बहला रहा हूँ जो मर पास ही तुतली जवान म गा रही है —

हला समन्तल दोमी चकन

बोल मनी मछली तिनना पानी ।

क्या किसी ने मछली को भी तुतली जवान म गात सुना ? कचन भी ता मछली है । भील की मछली या नटा की ? गायद मन की मछना का बुनाया जा रहा है । और किसी न यह भी ता बहा है कि मछलियाँ बहुत दूर तक साथ दनी है और कभा कभा बीच म ही छोड़ जाती है ।

बाढ का पानी तो कभी का उतर चुका है और बस अब तो सूने आँसू बह रह है ।

एक हाथ म माटी दूसरे म कहानी । और कहानी के बीज सत्त माटी स फूटते ह । और कचन मेरी गोट स उतर कर भाग गई और घर के चमली वाल दरवाजे स उसकी आवाज सुनाई दन गी

महला थाल हतमताल

मली माँ ते लम्बे वाल

कचन को गात देखकर मुझे एमा महसूस हुआ कि यह तो देवयानी ही ठोड़ी पर हाथ रखे अपने बचपन म लौटकर गा रही है ।

कचन का कसे समभाऊ अरी तेरी माँ के बाल तो सचमुच लम्बे थे पर वह वाली सीढ़ियो वाली उस सफेद इमारत म तुझे जम दकर स्वय बहा से लौटकर न आ सकी ।

दर असल यह उस गीली लकड़ी की कहानी है जा जलती तो है पर धुआ छोटती सी । कच्चा धुआ ।

मरी लडकी देवयानी । काग तुमन कचन नदी की इन गीली रत पर अपनी इस नही मुनी कचन क पैरो के निशान देखे होत ।

तिलिया बेताली त्या तल

थदा पानी पी मले

चर चर चर चर !—जस चिन्धिया इस बात स इनकार कर रही है कि वह ठंडा पानी पीकर ही मरती आइ ह ।

यह भग पूरा घर बस एक देवयानी के न होने स बितना उजाड नजर आता है । और सामन की दावार पर देवयानी की जा तसवीर लगी है गायद यह कलाकार का ही चमत्कार है कि जब मैं गम्भीर होकर उसे देवता हू तो वह मुस्कराने लगती है और जब म मुस्करा कर दखता हूँ तो वह पता नही क्या गम्भीर हो जाती है ।

कचन की मोतियो की माला की सी मुस्कान मुझे देवयानी की उस नटखट हसी

की याद दिना नेता है जब एक दिन रमन ब्रह्मचारी बचपन में उसे सांभ पड़े गाय बना व नीचे कुचल जान में बचा गये थे। और अब मन में यह विचार आता है कि अगर रमन ब्रह्मचारी जीवन के किसी मांड पर मिन जाएँ तो मैं उह सीने से लगा कर तना कहूँ कि जिम एक दिन आप जान पर खल कर बचा लाए थे, उमे हम न बचा मर। पता नहा के रमन ब्रह्मचारी भी कहा हाग।

मैं अपना मिर हाथा में थामे दबयाना की तमबीर देख रहा हूँ। और मुझे यह बात आण बिना नहीं रहती कि वह बचपन में कई बार मेरे साथ कुट्टी कर देती थी, जैसे अब कभी कभार बचन कर देती है। वह तो जम कर लडाई कर घटनी थी, जिममें आरी भी घाती और नूफान भा आर देवयानी की मा पच बनकर हमारा मन करा तनी जने अब वह बचन के मामल में पच बन जाती है।

मुझे तो दबयानी की याद भुलाए नहा भूलती। जैसे वह मेरी पूरी दुनिया हो। चमनवाना भर मुह में देवयानी की कहानी मुनत-मुनत कहती है यह कहानी ता कुम्हार के बचन पर तैयार हान वाली मुगही की तरह है।

चमनवाना की अपनी कहानी भी ता किमी मुगही की तरह गीरी माटी से ही तयार हुई है। जमकी आप-बीनी पर मैं जितना विचार करता हूँ उतना ही गत की भीन में उतर जाना हूँ कि वह अब तक माँ नहीं बन सकी।

एक बार चमनवाना को बर्र में उतारा जा रहा था जब मौन के फरिस्त का अपनी भून को पता चल गया। वह चमनवाना जिसे बर्र में जाना था वह तो कई बच्चा वाली चमनवानो थी बचन नदी के उम पार। और जब गली की स्थियाँ कहा करती हूँ कि यह हमारी चमनवानो जा बर्र से जिंदा होकर चनी आई तब तन बर्र में नहीं जा सकती जब तक इमकी गाद न भर जाए।

न जान अंधेरे में कौन-भी किरण किम तम जली की कहानी लिख रही है। आज भी दबयानी का आटीप्राफ-बुक का वह पना खुला पडा है जिम पर मैं ही लिखना ता चाहा था कुछ और पर कांपत हाथो और हूबने मन से लिखा गया—नारी ता उम नती के समान है जो मांगी खाती तो है कही और, बिथरती है कही और। और यह मांगी कहाँ फमन को लहलहा दे, कहाँ उमे खा जाए यह तो जलघारा के बरने निगान ही बना सकते है। बचारी धरती माँ का भाग्य ही कुछ एमा है कि प्रामुखा री नदी का यह तग तम के भगीरथ के बट और पोता में तो क्या तस नदा के किनारा पर बसी हुई अनगिनत जानिया में भी अभी तक मिटाया नहीं जा सका।

एकमल दबयानी की आटाप्राफ बुक पर कुछ लिखन को जब मैंने बचन उठाई ता साचा क्या न आज उपनिषत्, की वही मुनहरी मूक्ति लिखकर दबयानी को सावधान कर हूँ—री तस निगान को मदा अमृत और स्मृति का विष मयभना पर इमके विष रोत जा निम गया उनका स्याहा भी अभी नहा मूखन पाई थी कि

मुझे याद है। मैं चौक पडा जब मैं तस कि दबयानी न मग लिखा नारी ता याद दिया है और उमके ऊपर 'जिन्गी निम दिया है। और साथ ही उमन कुछ एमा भगिमा में मरी आर दसा, माना कह रही हो—ना, अब देखो।

दरअसल मैं चींका नहीं था। बल्कि देवयानी ने मेरी कलम काटकर अपनी ही जो कलम चला दी थी मैं तो उसी पर फूल उठा था।

शायद देवयानी ने मुझे यह पहला मौका दिया था कि जरा सभल कर मैं भी सोचू, आखिर उसने मुझे कहा सँभाला कहीं मेंबारा और वह कौन सी बात रही है कि मैं उसके या वह मेरे सदा स ही क्या दाएँ क्या बाएँ क्या आगे क्या पीछे बस सदा साथ ही लगी रही है? कुछ सभलती सी भी रही है कुछ सबारती सी भी और जब मैं कुछ लिखते लिखते थक सा जाता तो वह चाहे निकट खड़ी हो या वही दूर स ही बोल उठी हो—क्यो बस थक गए? आखिर जिदगी तो नदी की तरह है न। भला कभी आपने यह भी सोचा कि यदि नदी रुक जाए तो क्या होगा?

आज देवयानी के उस सवाल को याद करते हुए सोचता हूँ यदि सचमुच नदी रुक जाए तो इस तरह भी और उस तरह भी, किसी तरह भी ठीक नहीं है। उधर बाढ़ है तो इधर रेत ही रेत।

नदी रुकी हो पर उसके जल प्रवाह को भी कोई रोक सका है? वह उधर वह चाहे इधर।

पतझड़ भी कितने क्यो न आए हो, बसंत भी तो उतने ही आकर रह।

सबोच आर भय के इस भवर जाल के बावजूद य प्यार की कहानियाँ तो आगे ही हो आगे बढ़ती रहीं हैं।

फूला की पाटी स दु स की चट्टानें गिरती रहीं। पर फूल ता चट्टाना पर भी खिलते हैं।

पहलीठी की कचन बिटिया को ज स देकर देवयानी घगनाई की माटी स सत्ता क लिए बिगा हो गई। माना कचन नदी का कोई टापू हूब गया हा या कचनजघा की उपा फिर स रास्ता भूलकर घसाम अघकार स खो गई हो।

देवयानी की माँ गम स हूवी रहती है और उसक चहरे की लिखावट यह कहती प्रतीत होती है—हाम उस माटी खानी को ता माटी ही खा गई।

मुड़-जार नदी वही चली जाती है और मरी आँखा स वह हूबत तिन का सा भाँकी घूम जाती है। माना नाव घाट वाली मगान भूमि की आर किमी की अर्धो जा रही हा और देवयानी कित्तब फेंक कर लिक्की स जा पहुँचा हा और अर्धो का मगन स सीन हा गई हा। जम किमी को माग्कर अर्धो स हुबककर जाना और डानी स नर् नवली दुलहन का सजीना विदा उसनी नजर स एक बराबर हा।

मुझे याद है। उस रात करनी माफिया करनी उस सत्त हमारत स देवयाना का घाँसा स थडा की आभा थी और उसका मिर उसकी हथनिया पर टिका था जज उगा पुसपुमान स्वर स कहा—जब मुझ दौरा पण ता उम समय किमी और न नग रमा माफिया न मरा मग भाल की घा जा रात भर जागता रही। और मैं पाम बटा माचना रहा—देवयाना का चाय मग समय माफिया क हाय क्या काँप उठ थ। उमन थबरा कर उमका आर क्या रमा? और मर मना करन क वात्रू उमन उमगा सकिय क्या नाचा कर निया था?

श्रीर आज इतने दिना बाद में सद ग्राह भरकर कहता हूँ—सोफिया, तुम यह क्यों नहीं बताती कि देवयानी का प्रतिम बोल क्या था। कहानी की अगनाई म खड़ी होकर कुछ तो कहो, सोफिया। जूही की सुगंध तो तुम्हें भी उतनी ही अच्छी लगती है जितनी देवयानी को लगती थी।

चर-चर चर चर। मानो चिड़िया मेरे ही मन की बात पूछ रही हो—सोफिया, तुम खामोश क्यों हो ?

चंदन चौकी की गुड़िया कचन के महेलपन की बाट जोहती रहती है। पर वह तो मन चहती गुड़िया को उठाकर ही खिलौने से बनाए मंदिर में बिठा देती है और जब खेल-खेल में वह मंदिर भी गिर पड़ता है तो वह चकित-सी खड़ी रहती है। श्रीर में कलम कागज मज पर रख कर मन ही मन कहता हूँ—यह तो देवयानी ही गुड़िया बनकर गोद में खेलने को आ गई है। वही उमरी हुई, कुछ पूछती-सी बड़ी-बड़ी आँखें। वही सुतवाँ नाक। वही मुस्कान—दिय की लौ की तरह काँपती सी। वही आँखों की भाषा, दुबकती सी चमकती सी। श्रीर वही लम्बे बाल। हाँ, एक पक जस्तर है। उसे तो नीली साड़ी पसंद थी, और उसकी इस कचन बिटिया के मन में फिराजी फाक बस गई है।

आज न जान कब से बड़ा सोच रहा हूँ कि कचन आए तो मैं उसे बसख की कहानी सुनाऊँ जो कचन नदी में बार-बार चोख डुवाती रही, और आखिर अपना सपना गँवा बठी।

वह कहानी चमनबानो ने सुनी तो उसने हँसकर कहा—जब दुनिया से मेरी डोली उठेगी तो मैं यह कहानी हूरा को सुनाऊँगी जो जनत के दरवाजे पर मरी राह देख रही होगी। श्रीर मैं उसकी बात पर मुस्करा भी न सका। श्रीर मैं लिखन के लिए कागज पर झुकते हुए यह सोच कर उदास हो गया कि गला के बच्चे—चमनो ताई कब से आई—बहकर चमनबाना को क्या छेड़ते हैं। कचन सुतलाती जवान में कहती है—‘चमनो ताई तबल छे आई।’

चमनबानो खुश होकर कहती—रग हसते भले, घर बसते भल। पर उसका सारा मुण्डापा धरा का धरा रह जाता है, जब वह कचन के साथ बात करत करत मिसकियों में खा जाती है। श्रीर उस समय मुझे बरागी बाबा का ध्यान आए बिना नहीं रहता जो किमी की कलाई पकड़ कर न तो रान के पक्ष में कुछ कहने हैं न राने के विरुद्ध श्रीर सदा भटकती गाय को घेर कर घर लाने का अंदाज में तान ध्यान पर तान तोड़ते हैं।

जब बरागी बाबा हमारी खिड़की के सामने स दिल का गुवार निवालत स गुजर जाते हैं तो यूँ लगता है कि कबीर आज भी है

माटी कहे कुम्हार ने तू क्या रोदे माहि।

इक दिन ऐसा आएगा मैं रोदूगी ताहि।

मैं मन के कबीर से कहता हूँ—क्यों कविरा क्या तुमन, बस अब तक इतना ही गुना है ? माटी भी क्या किसी का रोदती है ? उस तो कचन नगी वहाँ से चाटकर

रूर बहुत दूर जा बिखेरती है। मीने चित्र बनाना भी सीख लिया है बाबा। हू-व हू वह देवयानी की डोनी में बठकर वह राई ता नहीं थी पर पता नहीं उसने कसी परछाई देखी कि वह कुछ महम गई लाजवती व समान। अभी तो और न जान कितने चित्र बनाऊगा। एक में वह मुस्कुरा रही है तो दूसरे में वह कुछ विचार रही है। एक में उभर आई है तो दूसरे में कुछ डूब गई है।

कई बार मैं एक अनजाने से भय से कांप उठता हूँ—खिडकी बंद कर दो देवयानी की मा। दसकी खट खट तो मेरा ध्यान भंग कर रही है। और कभी रात को सान सोने पहरेदार की जागने रहने की धट्ठम सी आवाज में चौंकर मैं कहता हूँ—देवयानी की मा। सवेरा होने से पहले गायद रात का पहरेदार अंधेरे में डूब जाएगा।

—यह किसकी परछाई है देवयानी की मा ?

—कचन को अपनी छाती से लगा ला और उम अपनी दाहो में भींच लो।

बहानी सुनते-सुनते कचन मा जाती है और जब जाग उठता है तो घर का कोना कोना टटोलती फिरती है। जमे इस उधार से प्यार के बीच उमकी काई असली चीज तो मिल ही न रही हो।

चौराहे में पहुंच कर अचानक कोई आवाज सुनती सी कचन सोचती रह जाती है—मैं चमेली घाले दरवाजे से चौराहे की ओर आई थी या चौराहे से घर की ओर।

पास से गुजरती बत्तखा की दर्दाली सी पुकार यह कहती प्रतीत होती है—बत्तख बनागी हमारे साथ। तो चलो हम तुम्हें अच्छी अच्छी कहानिया सुनाएंगी। और धून उड़ाती बत्तखें आगे ही आगे निकल जाती हैं।

दरवाजे से कचन की आवाज मुनाई देती है —

दिल्ली है दो ताल तोड़

वहा पनी दल्लम ती तान।

माना मेरा अपना बचपन मेरा द्वार खटखटा रहा हा—दिल्ली है दो काले कोस वहा पडी दल्लम की चोट। क्या अब काल का वास्ता देकर सोफिया से कहूँ कि सोफिया अब ता वह बात छोड़ो ? दिल्ली है दो काले कोस दिल्ली है दो ताल तोड़

माफिया तुम ता जूही की सुगाव का वास्ता देने पर भी यह नहीं बताती कि उस रोज देवयानी कौन-सी आखिरी बात कहते कहते रुक गई थी।

वहीं वह यह ता नहीं कहना चाहता थी कि हम हर क्षण अपने का घोखा नेत्र रहते हैं और हमारा कफियत उस नवल की सी है जिमकी आधी वह एक निधन ब्राह्मण के घर में अतिथि-सत्कार के पुण्य प्रताप में कचन की तरह चमकीली हा गई थी और जा गप वह को कचन बनाने की लानमा में जीवनपयन भटकता रहा।

मैंने कई बार कागिग की कि कचन को नवल की पथा का अतिम भाग भी सुनाऊँ कि किस प्रकार पूरे जनन के बावजूद पापटवा के महात्मन के पुण्य प्रताप में भी उमका गप देना कचन न बन सका।

उन बाली सीटिया में उतरती-नी आवाज यह कहती महसूस होती है—आंसुघा की नगा ता बन्न पाद में चनी घा रही है और हम ता अपनी नाव लेकर उम किमा

न किमी घाट पर ही आ मिलते हैं, और मभधार म खा जाते है। क्या म तो क्या की आत्मा होनी है। क्या आपने कभी अपनी क्या की आत्मा को भी देखा है ?

और मैं अगनाई की ओर मुह किए पुकार कर बहता हूँ—अरे, मुनती हो देवयानी की माँ ! यह तुम्हारी कचन ता माटी पर लेट कर माटी चाट रही है। अर नहीं, नहीं वह तो माटी पर लेट कर माता का प्रणाम कर रही है।

क्या कहा नुमने ? कभी मैं भी अपनी आत्मा का देखा है।

मरी क्या की आत्मा तो मेरे सामने गुल आवाज की तरह मुस्करा रही है। क्या क घन जगल म कहा कहीं पडाव डाला, जब आज की कचन की तरह उही मुनी देवयानी हमारे साथ थी। कितने कठ म समा गए। कितने फासल गद बन कर उड गए। जगल पहाड, भदान, नदियाँ, समुद्र। आज अमरनाथ तो कल क्याकुमारी। आज द्वारिका जी ता कल जगनाथपुरी। गंगासरी जमनासरी अमरकटक। भाति भाति क आन्वामी। गीत-नृत्य, मेले त्योहार। कही चींटियों की तरह रेंगती बैलगाडियाँ, ना कहा भूमत भामते घोडोल हाथी। होठा पर वफ की तरह पिघलते गीत। इस यात्रा म टुख और भूख की कहानी भी सॉम लेती रही—भुखिया के मारे किरहा विसरिगा भुलि गई कजरी कवीर ! और कभी गुरुद्व की अमर वाणी सुनने का मिनी—कता अजाना रे जानाइले तुमि कनो घर दिले ठाई ! (कितने अपरिचिता स तुमन मरा परिचय कराया कितने घर म ठौर दिलाई ! ) और देवयानी के साथ रहन म एमा जगना था कि मैं ता यात्रा म भी घर का सा आनंद ल रहा हूँ।

मदनी का तो नदी ही तरना सिखाती है वह उल्टी धार तरे चाहे सीधी धार। पर इस घर से जो सुगंध कुछ बरम पहले उड गई लौटती नहीं दीखती।

उन कात्री सींटियों मे उतरती मी आवाज यह कहती महमूस होती—कभी आपन यह भी मोचा कि यात्रा के पुण्य प्रताप स आपकी आधी क्या कचन हो गई, उम नेवल का नेह के समान और जब यात्रा का आचल हाथ से छूट गया तो आप क्या के गाव घाट क हाकर रह गए, माना आपका विचार हो कि यहा की क्या-मोच्छियों के पुण्य प्रताप म गेप क्या भी कचन हो जाएगी।

मैं मन ही मन भेंप कर कहता हूँ—मैंने क्व चाहा था कि मेरी आधी क्या भी कचन हो जाए।

कचन खामोश है और गब्ग की गनी म अंधेरा ही अंधेरा है। वक्तल तो तैन्ती हूँ ही अच्छा लगता है जमे कलम निखती हुई। और मैं लिखता ही रहता हूँ—आग की कहानी पीछे की कहानी।

साफिया ! तुम मुझे वह बात बता क्या नहा देता ?

मुझे यह बात बताने का तो तुम्हें उनना ही पुण्य मिलेगा जिनना देवयानी का क्यागन करने मे मिला था या स्वयं देवयानी को पहेली बार मागर देवता को नारियल भेंट करन म।

तुम यह क्या गुनगुना रही हो सोफिया ? तुम्हारे गीत की कसम ! अब तो मुझे वह जान बता ही डाली।

यह किस के आँसुओं का गीत है ? भूरी और सफेद बत्तखें एक साथ क'क'क' उठती हैं। क्या तुम उसी समय वह बात बताओगी, जब य सारी बत्तखें सामान्य हा जाएँगी।

कचन की आवाज को तो गम छू तक नहीं सका। चमनवानो उम रात क' मज्जुआ की कहानी सुना रही है जो मोर होते ही पर लौट आते हैं।

कहानी न होती तो गीत अथा और बहरा ही नहीं गूगा भी रह जाता। वाला फूल। सफेद फूल। तुम कौन सा फूल लेकर बात बताओगी सोनिया ?

पहचान क' लिए दूरी बहुत जरूरी है। कहा वह मर जानी माटी खाना अपना पहचान कराने के लिए ही तो हम स दूर नहीं चली गईं।

यह विचार चट्टान के सीने म पटते बारूद की तरह मरे दिल म तूफान उठाना रहता है। और मन-ही मन कहता हूँ—क्या मरी वह यात्रा टल न सकती थी ?

अगनाई से देवयानी की माँ की आवाज सुनाई देती है—रोज दूर पार ऐसी लडकी ज'मे जसी यह कचन है। तीन बार गिरी आज और चार नील पड गए कोई इसमे पूछे—क्यो री बता मरी क्या करेगी इन बत्तखा का ?

—कचन की तो बात म हीरे जड है देवयानी की माँ ! और तुम्हे यही गिकायत है कि यह एक जगह टिक कर क्यो नहीं बठती। मैं कहता हूँ कचन इतनी सयानी है कि अकेली घर से दूर नहीं जाती। और नाव म बैठने का तो इस उतना ही शोक है

—जितना उस मरी को था।—मानो वेदिली से ही देवयानी की माँ भराए हुए कठ से मेरा वाक्य पूरा कर देती हो।

मै परेशान होकर नाव घाट पर जा बठता हू तो मण्डल काका नाव बाधत हुए आन बघारते हैं—नाव खेते-खेते हाथ रह गए। मछलिया पकडते पकडते जाल टट गए। लहरा का सीना दलते दलते नाव का पक्ष घिस गया और बिनारा अब भी दर है। नाव और काल म यही तो अतर है। नाव चलती है तो लहरो पर आवाज हाती है और काल चलता है ता एकदम दब पाव।

—हा काका—म इमशान भूमि से लौटती स्त्रियो का विलाप सुनकर कहता हूँ—काल चलता है तो दबे पाव।

मरे सिर क' ऊपर से कोई पक्षी चीखता हुआ गुजर जाता है। मैं किसी को कम बताऊ कि मेरी कफियत उस घायल पक्षी से किसी तरह कम नहीं जा सूनी दापट्टर म गिरता पडता उडने का जतन किए जा रहा हो।

मण्डल काका माना कचन की आत्मा मे भ्रूकते हुए कहत हैं—कचन मसुराल जाएगी तो बहुत सा दान दहज पाएगी। इसकी बाहा के तिल यही ता कह रह है।

मैं काका की बात अनसुनी करते हुए लाल माटी के ढलवा रास्ते पर फास्ता को उडन देखकर कहता हूँ—जब देवयानी के कचब पक्के दिन थे तो उसकी माँ उम सम-भाया करती थी कि पत्थर का निगाणा बत्ताकर फास्ता को घायल नहा करना चाहिए। अब मैं किस से पूछू कि कहा देवयानी ने किमी फास्ता को तो नहा मार डाला था ?

हर कहानी को पतमड के जगल से गुजरना होता है साफिया चुपके चुपक हा

सही पर उस दिन की बात जरूर बता डालो ।

चर चर चर चर—मानो चिडिया मेरे कान में वह बात कहने को उत्सुक है जो तुमने अब तक छिपा रखी है सोफिया ।

कागज कलम मज पर रखकर मैं खिडकी में बैठे-बैठे चिडिया को बड़े ध्यान से देखने लगता हूँ ।

कचन को अब चिडिया का बहुत ध्यान रहता है । कटोरी में ठण्डा पानी भरकर चन्दन चौकी रख देती है और चिडिया चुपक से आकर पानी पीने लगती है और कचन टकटकी लगाए खड़ी रहती है । और मैं मन ही मन कहता हूँ—वात बन रही है ।

चिडिया उड़कर कचन के कंधे पर आ बैठती है, तो कचन उसे पकड़ने लगती है । और चिडिया उड़कर मेरे कंधे पर आ बैठती है तो कचन मेरी ओर लपकती है । चिडिया फुर स उड़ जाती है और घोसले में जा बैठती है । और यह घेन इसी प्रकार देर तक चलता रहता है ।

कभी-कभी तो ऐसा भी होता है कि कचन सोते सोते बड़बडाती सी पूछती है—ठण्डा पानी पियोगी तिलिया ?

यह कोई साधारण बात नहीं है सोफिया । चिडिया को कचन स उतना ही प्रेम है जितना कचन को चिडिया में । इसीलिए तो कचन हथेली पर ठाड़ी टेके बड़े प्यार से चिडिया की ओर देखती रही तो चिडिया उसके सिर पर आ बैठती है । और कचन उसे पकड़ने का जतन न करते हुए चुपचाप बैठी रहती है । और देवयानी की माँ कहानी की अगनाई से भाँकती सी कुछ कहना चाहती है ता नहीं मुनी कचन की मुस्कान नोक कथा की राजकुमारी की तरह बोलती मुपारी और हँसती सबग बन जाता है ।

अब के कचन न पहली बार पाचवी दीवाली का पहला दिया जलाया ता मन-ही-मन मैंने कहा—दिय से दिया जलान की तरह एक कहानी के दिय स दूसरी मुँडर का दिया भी तो जलाया जा सकता है ।

दीवानी से अगले दिन तुम हम मिलन आड, तो मैंने कहा—सोफिया उस दिन भला उजाला भीतर आ रहा था या अंधेरा बाहर की ओर जा रहा था ।

—अच्छा ता सुनिय—तू न अनुकम्पा भरे स्वर में माना मेरे हृत् से लग आकर कहना गुरू किया—देवयानी न यही कहा था कि कचन को यह पता न चलन दना कि वह बिना माँ की चिटिया है ।

गायद वह कुछ और भी कह रही थी सोफिया । पर तुम अपन दुपट्टे से षडबाई आँसूँ पोछती हुई रोनी कचन को चुप करान की खातिर अपनी गाद में लकर दूमेरे कमरे में चली गई थी ।

गायद देवयानी यही कहना चाहनी थी कि वह केवल तीन वष का अक्का और चाटनी है । और मानो यमराज के फमल में उसने रजामन्दी जानि कर दा और बन रही हो—यह तो इस जग की रीत है । मेरे न हान के बावजूद कचन अब भी हमी



## पजाबी की प्रतिनिधि कहानियाँ

तरह बहती रहगी और य रसाम के कीड भी इसी तरह सुनहरे रुपहन जाल बुनत रह्य। नगी लती है नदी दती है और कचन भी तो नदी है।

माफिया मुझे वह दिन याद है जब देवयानी की मा तुम स कह रही थी—मैं क्या उस मरी की बातों में घ्रा गई। न तो मैंने सात मुहागिनो स उज्जद की दाल दलवाई जिममें पितरा क लिए बड पकाए जाते न मुझ कमजली को यह ध्यान रहा कि कचन नगा की माटी भगवा ल जिसके जिना कुलदेवता की पूजा का फल नहीं मिलता। न कुग की पूजा की गई न नाव घाट की। इतना अगुभ एक घोर और वह मामूली सा गुभ दूसरी तरफ कि भावरें जरूर अगिन देवता की सांभी म ली गइ। हाँ तो तना अगुभ उस मामूली स गुभ को वाट गया।

और उस राज तुम्हारे जान के बाद देवयानी 'फि माँ को उगास छोडकर मैं कचन का उगता पाड नाव घाट पर जा पहुचा।

वहाँ बरागी बावा मिल गए जो जल धारा की सीध में बगला की टार को उडते देखकर बोने—य तो भगवान क जीव है। जिस भगवान न मछलियाँ खाने वाल ये बगुल भगत बनाए। यह और बात है कि अब तक न तो किसी मछली न और न ही किसी बगुला भगत न बराग्य तन का जतन किया रमन ब्रह्मचारी की तरह।

और अपना नाम बताकर बरागी बावा न एक भटके स भूत और दतमान की लोड हुइ कचियाँ किसी वाजीगर की तरह जोड दी।

मैंने भर्राई हुई आवाज में कहा—क्षमा कीजिए बरागी बावा। आपका वरदान मर निरन हायो में न समा सका। पर आपन अपने उस रूप की पहिचान इतनी दर में क्या कराई?

और मडल काका अपने बने की बात ल वठे—कल रात मैंने फिर दीपक की आमा का मगान लिए भटकते देखा। कचन नदी की उस मभधार म उसी जगह टीक उमा जगह जहाँ आज स धीम-वास बरस पहल उसकी कुलहन डूब गई थी और फिर गम का ताव न तान हुए साने पर पत्थर बाँध कर वह नाव स तूट गया था।

कचन हमारे पास बठी रेत पर अटपटी सी आहृतियाँ बना रही थी।

और कहानी की अगनाई में चमनराता का चटरा उभरा। उमन कचन का प्याज बरत हाए राता गुरू कर लिया। और देवयानी की माँ क चकित हान पर मर्य ही बरत गया—हमारे डाक बावू लागा क घरा म गुगामवरा की चिटियाँ बाँत-बाँत बूट ग गए पर हमारे घर एसी किसी चिट्टा का कार्ड डाक बावू अर तक नहो आया।

और जब कचन पूछती है—ताई त्या लार् ?

म क्या जवाब दूँ माफिया ?

यह ना चमनराता भा मानना है कि अगुभ्या की तना न हो तो गग गम की चट्टान का मिर पर उठाए कभी न भूत सकें। वह अकमर देवयानी का माँ का गम नान बड जता—मन रनी हाँ देवयानी का माँ! देवयानी क ध्याए क मौन पर उमका पागाक का गाए म जरूर बान पर गया हागा जिमका तुम मागा न ध्यान नगा रता और वह बचारा और देवयानी का माँ तमा मन्मूम बरत तगनी है

माना वह वान स्वय उसी के हाथा पडा हो ।

चमनवाना का हर समय कचन के साथ चिपके रहना तो मेरी ममक न नही आता । वह ता कचन को कई बाल मिखाती रहती है । और कचन तुतनी जबान स कहनी है—तमनो ताई तबल छे आई, अल्ला मिया ती तिल्यी लाइ ।

मैं मोचता रह जाता हू कि चमनवानो अल्लाह मिया की कौन सी चिट्टा नाई हागी ।

देवयानी की माँ के पास बठी चमनवानो मौ मौ बनिपाँ बनाती चली जाती ह और घूम फिर कर इस बात पर तान तोडती है—अगर कचन एक बार भी भूल स तमना ताई तबन छे आई की जगह तमना ताई तबन को भाइ कह डाल, ता हमारे घर भी वह चिट्टी जरूर आ जाय ।

सबेरे-सबेरे डाक बाबू मुनीर हुसन हमारे घर के सामन म गुजरत ह ता कचन का आवाज दिए बिना नही रहत । खिडकी क पास मुह लाकर वह बडा प्यारी आवाज म कहने हैं—हमारे घर यह चिट्टी कब आएगी ? क्या, कुछ ता बाल, कुछ तो बोल ।

चर चर चर चर । माना चिडिया पूछ रही हो—कौन सी चिट्टी ? कि कचन नदी को कही माणी खानी कहत है तुम्हारी तरह और कही इसे सदामुहागिन कहते हैं ।

कचन मरा हाथ छुटा कर भाग गई । और दरवाजे म उसका आवाज सुनाई देने लगी —

हाथी घोडा पालकी  
जय तनैयालाल की  
हाथी फिले दाम दाम  
जिछना गयी उछता नाम  
बदना बनानी आएंगे ।  
हुन मछान लाएंगे ।

मैन उमक पास जाकर कहा—कचन ममुराल जानी, मिठाई खानी, एम नही, एन बोनन है—बगुला बराता आएंगे जुगनू मसान लागेंगे ।

बाहर स राज की तरह आवाज आई—हमार घर वह चिट्टी कब आएगी ? क्या कुछ तो बान, कुछ ता बोन ।

डाक बाबू की आवाज भूरी और मफेद बतखो की आवाजा म दूब गई और वह डाकघर का ओर चन गए ।

कचन ने हर रोज की तरह अपना सबान दाहराया—दान बाबू त्या वाना कहाना की अगनाई म तुम आज फूट फूट कर क्या रो रहा हो सोफिया ? मुझे मानूम है तुम्हारे आँसू अपनी ही आप-खीनी के आँसू नही हैं ।

आज सबेरे-सबरे कचन न आकर कहा—मेला निलिया त्या नही दागती

मन पोमन म चिडिया का उगन के लिए बाँहें फलावर कहा—टूग !

चिडिया घामल म न उडी तो मन घूमकर देखा, चिडिया ता पन पर पनी थी ।



उभरा । और फिर डाक वावू ने कहा—वह चिट्ठी आ गई जिसका मुझे इंतजार था ।

मैंने कहा—देवयानी की माँ, डाक वावू के नाम चिट्ठी आ गई । चर चर, चर चर । लो फिर आ गई चिड़िया । जून बदली तो बोली भी बदली । बोली बदली पर कहानी नहीं बदली । कहानी तो खुद कचन माटी है । देवयानी कहा करती थी कि कहानी की भी आँखें हाती हैं । कभी कहानी हम देखती है, कभी हम कहानी को । और देवयानी तो यह भी कहा करती थी देवयानी की माँ, कि कहानी क कान भो हल है जिसमें वह दूसरा की ही नहीं खुद अपनी आवाज़ भी सुनती रहती है । आग हवा पानी क्या कहानी । कचन माटी खानी । गदी लेती है नदी देती है । नदी तो सदा बहती रहती है ।

# सतहो से परे

डा० गोपालसिंह, १९१७

---

भारत के राष्ट्रपति द्वारा राज्यसभा के लिए मनोनीत डा० गोपालसिंह पंजाबी के गीपस्थ साहित्यकारों में हैं। उनकी लिखी रोमांचक पंजाबी कवि, साहित्य की परत पंजाबी साहित्य का इतिहास आदि आलोच्य पुस्तक पंजाबी में बहुत महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ मानी गयी हैं।

डा० गोपालसिंह का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण काय है गुरु ग्रंथ साहित्य का अंग्रेजी में पद्यबद्ध अनुवाद। इस महत्त्वपूर्ण काय के सम्पादन के कारण उन्हें अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई है।

आलोचक और अनुवाक होने के साथ ही डा० गोपाल सिंह एक उच्चकोटि के कथाकार हैं यद्यपि उन्होंने अपनी इस प्रतिभा का समुचित लाभ पंजाबी का नहीं पहुँचाया है। माया से ब्रह्म उनकी अमूर्ती कहानियों का मग्न है।

---

जब कभी मैं इस काफी हाऊम के समीप में गुजरता तो इनका भिन्नमित्त करता रगोन वातावरण मुझे अपना भार आवपित करता परन्तु मैं कभी अन्दर नहीं गया। तब मैंने चार चार महान ही हूए थे परन्तु यह समय यू गुजर गया था कि कुछ पता हा न चला था।

पत्न ता मरा हूय किसी क्षातकिक प्रमनता और सम्पनता में परिपूर्ण था। परन्तु अग्र धीरे धीरे कुछ बचना का अनुभव हान गया था। एकाकीपन खनन लगा था जीवन बरा नागम मा तगन गया था। तब उन भर गह्य में भा मनुष्य कभा नितान्त एकाकी हो सक्ता है।

जनवरी का महीना था, सर्दी बहुत थी और बाहर थोड़ी थोड़ी वर्षा भी हा रही थी परन्तु मैं मन में निश्चय कर लिया था कि आज शाम की चाय होटल में नहीं पिऊंगा और काफी हाऊस अवश्य जाऊंगा। कुछ बदर्शों का फासना ही ता था। अभी वह वठे अधिक समय नहीं हुआ था कि मेरे सामन की सीट पर एक बहुत सुन्दर युवती आकर बठ गई। देखत ही जैसे मेरे रग रग में विजली कीघ गई हा। उसकी मांगी काली आखा तथा घुघगल वाता से मैं अनुमान लगाया कि वह अंग्रेज नहा है। इस काफी हाऊस में या रूप के परदेसी लोग ही अधिक आत थ जम इतालवी स्पनी फ्रांसीसी जमन, पोल म्विस डब इत्यादि।

इमीनिय यहा पर रीतक काफी थी। हर व्यक्ति दूसरे से बातचीत कर रहा था, चाहे वह दूसरे का जानता था या नहीं। जम इटनी में पास बठी लडकी का हाथ चूमना आवश्यक है वस ही हमारे देग में मुह फेर सना। लदन में दल कर न मुसकराना अगिल जगता है विनेष रूप में जब दूसरा आप से परिचित हो या आप की आर टिक-टिकी बाध बार बार देख रहा हो जसे वह लडकी कर रही थी। वह काफी का घूट भर कर बार-बार मरी आर देखकर मुसकरा पडता और मैं भी ऐना हा करना। य जगता था जम मुझे कोई याद आ रहा था।

आध घट ५ कराव समय बीत गया। मरा मन उससे बात करन के लिय बचन ग गया। काफी हाऊस में साध्या समय लोग कबल चाय पीने ही नहीं जात ह वल्कि थकावट उतारने और दो क्षण टिककर बठन के लिय भी जात है। नय मित्र बनन हें कई नय या पुराने परिचित मिलते है। इमलिय योम्प में एमा गायद ही कोई मुन्ला हो जिममें एस काफी हाऊस न हा। लोग खाना भी रेस्तरा में ही खात है। एक, जो दिल में आया खाया दूसरा घर में सारा आडम्बर करने से बच गए आर स्त्री-पुण्य लाना काम पर चल गय। पर बच्चा में ही बनत है परन्तु बच्चे पना बगन की नवनी ज दी दन लागे में नही जितनी हम लोगो में है। मांगी के लिए भी जाग काफी समय तक प्रताक्षा करते है। मेरे दिमाग में अपने वाक में कई विचार आण और गए।

म अभी बाहर नहा जाना चाहता था। और मन साचा कि वह भी अभी जाना नहा चाहता थी। काफी पीकर वह सिगरेट पीन लगी और अपने वग में न एक पुम्नक निकान कर पढने के लिय सामने रख ली थी।

मरा जिन बात करन के लिय बचन था परन्तु मैं क्या बात कह समझ नहीं पा रहा था। रंगण्ड में लोग पहन मौसम की ही बात करत है—बना बुरा-बडा रही आर कभी कभी कितना अच्छा कितना मधुर। इमी से बात आग चल पती है परन्तु वह अफ्रज नहीं थी। पहली बार मरी यह साधारण सी बात सुनकर मेरा मन पर अचछा अमर नहा पडगा। तो क्या उसका भाडा काला आँखा की वाता का चम्कनी स्याहा की उमक रगीन पहराव की रग बिरगी फनी चूडियो की उसक सुडीन गारे गरीर की बात बरें? परन्तु इन वाता का सुनकर वह उबन मुसकरा दी थी और बात आ नहा चलेगी। यह मैं जानता था कि हमारे देग में यदि किसी मा के आगे उमक बच्चे की सू प्रतासा की जाए तो वह तीन बार उस पर खूनी है उसक माथ

पर वाला चिट्ठा लगाती है और साध्या समय उसकी तज़र उतारती है और यदि किसी नौजवान लड़की का पूँ बट्ट दिया जाए तो यह या तो स्त्रीपर उतार लेता है या चार आंगूठी धुँड कर लेती है या फिर कहती है 'पर म माँ-बहन नहीं तेरी ?' और सफ़्त बरमांग तू बगानी लड़कियाँ का पूँ छूँता है । उम क्या पता कि एम मजाब माँ बहन से नहीं बिय गात । और इम लक्ष्मी त ता प्रगन हानर मग धय वाट करना था—परनु बान प्राग कम चरगो ? राजनीति की बात कम् ? दगन की ? विताग की ? यद्यपि लक्ष्मियाँ पनती ता बूँन कुछ हैं और जाननी भी हैं परनु पंचिमी याग्य म किसी लक्ष्मी का मन बाता म लक्ष्मी कम ही जानती है । यह एक ही बात सुनना चाहती है मर पाम रूप है तुम्हारे पाग बितन पग है ? पुरुष की उम्र विद्या और उमर व्यवसाय त विषय म बाईं नहा पूछता । सब पग व हो मित्र है । रूप का मछी भरी पत्नी है और वहाँ हर समय प्रत्येक चीज़ विकती है । अब तक मुझ पग बान का काफी अनुभव हो चुका है । पूव म भी तो ऐसा ही जानता है । यदि धन दमीलिए महत्त्वपूर्ण है कि यह सब कुछ करीब समता है ता रूप क्या त विन जबकि यह विन सकता है । मनम भावुव हान की क्या भावययता है ?

स्तन म उम लडकी का लमाल नीच गिर पडा । मैं उठाने व लिये नीचे झुका वह भी भकी । हमार हाथ मनजान ही एक दूसरे का हल्का सा छू गए । बूँत-बूँत धयगा यह बोनी । मैंन लमान उठाकर उम दे दिया । स्तनी सी बात से ही हमारी पहचान और गहरी हा गई । प्रत्येक प्रकार का प्रेम दूसरों के सामे मान म ही पलता ह । अब उमकी मुसकराहट और गहरी हा गई और मेरी भी ।

तुम कहाँ स आई हा ? आखिर मैंन बात गुरु कर ही दी । इटली स ?

क्या ? नहीं मैं अप्रज हूँ । तुम्ह मायूसी हुई सुनकर ?

नहा नहीं । मायूसी क्या होगी । पर तुम अप्रज नहीं लगती । वितनी स्निग्धता है तुम्हारी मुसकराहट म । तुम्हारे बाल इन लोगों जैसे न तो सुनहरे हैं न सुख हैं न भूर ; न आँखें ही इन जसी नीली और भूरी । तुम्हारा रंग भी इन लोगों जसा प्याजी नहीं है गहरा अश्वि है ।

बड़ी पहचान है तुम्ह रंग की । तुम्ह में इस रूप मे अच्छी लगती हूँ ?

बहुत अच्छी लगती हा । मैंने स्वाद का जैसे घूँट भर कर कहा । मेरे होठ धीरे से इन गानों के लिए हिल । मेरी आँखा ने उसकी ओर बड़ी कोमलता और अनु रोध स देखा । वह मुसकराई । अब वह मुझे और भी अच्छी लगी । एक बार मन म विचार आया कि यहाँ से उठ चलू । किसी का भी स्तना अच्छा लगना खतरनाक हो सकता है पर मन अदर से मान नहीं रहा था ।

पर म इटली की नहीं चाहे मैं वहाँ रही जरूर हूँ । गार्गिक मैं त्रिटेन की हूँ पदा बलगरिया म हुई थी एक यूनानी पिता और तुक माँ स ।

उसने मेरी उत्सुकता मिटाने के लिये जस सब कुछ एक साथ ही बता दिया ।

तभी तुम स्तनी सुंदर हो । मिश्रित खून व बच्चे सग सुंदर होने हैं ।

“धन्यवाद ! वह बोली ‘और तुम तो पूव स ही आए हो, या तो अरब से या हिंदुस्तान से ठीक है न ?”

‘बिल्कुल ठीक । मैं हिंदुस्तानी हूँ, पैदा पाकिस्तान में हुआ था । अब दुनिया का नागरिक हूँ पणिया की तरह आज यहाँ बल बहाँ ।’

उस लड़की ने मुझे सिर से पर तक एक हाँ नज़र में फिर से देखा बड़ी आशा और रीझ स, जिसे हम पूव स भूख कहेंगे । गन्दा, चिहो आदतो, कामनाओ के साथ भी किस प्रकार स्थान स्थान पर बदलते रहते हैं । कोई एक काय न किसी धम का न समाज का न भाषा का न फलसफे का यहाँ काम आ सकता है । मेर पाव स जगी की जूती थी—बिगली की रोगनी स वह खूब चमक रही थी—शेप सूट अंग्रेजी, सिर पर सफेद बलफ लगी पगडी और ऊपर से थोड़ा शमला (पगडी का एक लड) किमी सपमुखी के पूल की भाँति खिला हुआ । मह पर छोटी छोटी दाढी, मेरी कीमती हार की भारी अगूठी—प्रत्येक वस्तु को उसने गौर स देखा, प्रत्येक चीज़ अजनबी सी थी और अजनबीपन पश्चिम स बहुत खीचता है । मेरा सारा पहरावा उसे अद्भुत सा लग रहा था—जम अरब के किसी अमीर नेख का या भारत के किसी शहजाद का । परंतु ये यूँ अकल थोड़ा ही घूमते हैं—एमे साधारण स्थाना पर और न ही वे साधारण लोगों से यूँ बातें ही करत हैं ।

सम्भवत वह मेरे बारे स भी ऐसा ही साच रही थी । मेरा दिल एसी ही गवाही द रहा था । साबती रहे, मैंने दिल स कहा आखिर मेरा क्या लेगी ?

तभी उसन पूछा— तुम यहाँ पर कब स हो ?’

कोई चार महीने स ।

पत्ते हो ?”

‘नहा काम करत हूँ ।’

‘तुम मुझे काम करत नही लगते यह कह कर वह खूब हसी ।

‘क्या ? मैंने आश्चर्य स पूछा ।

तुम्हारी बाल-बाल उस तरह की नही बड़ी ठाठ वाली और शाहाना है । नही ? तुम्हारा रंग भी अ य भारतीयों के समान काला नही । तुम पर धूप का प्रभाव पडा लगता ही नही । तुम्हारे हाथ लडकिया की तरह पतले हैं—तुम काम नही करत—मैं शत लगाती हूँ । साधारण मनुष्य कितना भी बहाना करे, शेप लोगो पर उसकी अमीरी ठाठ और बड़ाई का प्रभाव उसे बहुत स्वाद देता है । ऐसा ही मेरे साथ भी हो रहा था । हम बटुन कुछ दिखावे के लिये ही तो करत है प्रशंसा प्राप्त करन के लिये । प्रत्येक मनुष्य स जान जान की यह प्रवृत्ति है और जितनी भी इस बात की कमी होती है उतना ही प्रयत्न वह और अधिक करत है । तभी कहत हैं कि गरीब बडे दिल के होते हैं कान लगड की एक रंग अधिक होती है ।

नही नहा । सचमुच मैं तो काम करत हूँ । मैंने फीका सा मुसकरा कर कहा । मेरा तब तो चान्ना था कि उससे ये शक न करूँ । मैं जानता था कि भारत स भी यह कुछ बहना कितना गज्जा की बात है । अपना काम, अपना कमाई अपना जीवन,



अपनी समझ-बूझ—इनका हम दुनिया में मूल्य ही क्या है ? परन्तु मैं यह भी जानता था कि यदि मैं अपनी अमीरी का भूटा राक्षस उस पर जमाया तो वह मर पीछे पट जाएगी ऐसे ही जैसे गहद पर मक्खी या और अधिक रोमानी अलंकार प्रयोग किया जाए तो जस पून पर भवरा । इनका यह अधिक अत्याग प्रम उतना ही अत्याग या अद्भुत है जितना हमारा प्रतिदिन नय खाने या खुराक के लिए कांटा लगा कर मछली पकड़ना । और मैं उस अपनी मछली बनाना चाहता था स्वयं को उमकी नहीं । इतना ही व्यावहारिक बात तो पूरव के लोग भी जानते हैं ।

क्या काम ? मैं पूछ सकती हूँ ? उसने पूछा । वह मुझ कुछ अधिक बतकल्लुफ होती हुई लगी । परन्तु मुझे उसकी बात का बिस्तुल बुरा नहा लगा । मुझे उसका मामीप्य अनाद दे रहा था ।

वा ऐसा ही काम है—लिखना पढ़ना पत्रकारिता वगैरह । मैं गर्मिला सा चेहरा बना कर कहा यदि भारत में किसी लडकी में बह—मैं आर्टिस्ट हूँ तो वह भटस मह फेर लती है ।

कितना दिलचस्प काम है ! लिखती मैं भी हूँ परन्तु कुछ बनता नहा लिख कर फाट डेती हूँ । पूरा नहीं कर पाती किसी भी चीज का । वास्तव में लिखने में पहल बहुत गहरी और यापक पढाई तथा अनुभव की आवश्यकता है । कला भी बड़ी मेहनत में पकती है । मर विचार स्थिर रही रहते मरा अनुभव किसी एक दृष्टिकोण की ओर मुडता ही नहीं । यू ही शब्द लिखे जाने के क्या मान ? वास्तव में मेरे लिखने का अभी समय ही नहा । पढ़ने देखने सुनने चुनने चखने अनुभव करने का समय है । मैं बन्धी सी ही तो हूँ । नहा ?

क्या नहा क्या नहीं मुजिल में तुम बीस वष की होगी ?

सच ! एक अद्भुत सी प्रस नता मुझे उसके चेहर पर दिखाई दी । सम्भवत वह कुछ अधिक आयु की हो पर तु लडकी की आयु जितनी बीस के लगभग बताई जाए उतनी ही उस प्रम नता होती ह । लडकी फूल ही तो है । जबानी ही उसकी सम्पत्ति है ।

परन्तु हमारे देश में तो लोग छपवा छपवा कर ढर लगाए चले जा रह है । न उनके पास पढ़ने का अवकाश न शाना का न अनुभव करने का न ही कोई दृष्टिकोण स्वयं बनाने या ग्रहण करने का । वहा सब कुछ बासी ही बिकता है । जिधर हवा चली या जा प्रकाशित हाना बिकता देखा उसी की ओर आकर्षित हो गए ।

तभी तुम्हारा आधुनिक साहित्य कभी कभी ही योरप में पटा जाता है । गप सारा प्राचीन है लागे न जसा जीवन बिताया वसा ही लिख दिया । कितना महान् है तुम्हारा सारा कुछ पुरातन यद्यपि मैंने वह सब बदल पटा हा है विचार नहा । मैंने पूरव देखा भी नहीं है । मेरा दिन चाहना है कि कुछ देर वहा जाकर रहूँ गावा में गहरा में भापडिया में बियावान में बीरानो में बफ स ढके पवता पर घूमू तुम्हारे जिमाना की भाषा सीखू उनके साथ रहूँ प्रठ किसी मजदूर की पत्नी बनकर दखू कि वह जिदगी में कस सघप करता है फिर भी कितने सतोप में रहता है । अभी ता मैंने पूरा पश्चिम भी नहा देखा । उसने ठठा आह भरी । कितनी भूख थी उसका

जानने की ।

‘तुमने सारा मारप ता घूम लिया हागा ?’

हा याहप बहुत सारा घूम चुकी हूँ—पश्चिमी भी, पूरबी भी । हर म्यान पर कम स कम वय भर रही हूँ । जहा कही गई, काम भी डूब लिया । कही रिसप्लानिस्ट कही कुक कही मास्टरी कही बच्चो की देखभात पर, कही गाइड या दुभापी, कही काऊण्टर पर, कही वनक कई सहजादो और राजनीतिना लेखका, कनाकारा के साथ बठकर खाना भी खाया है । मैं गरीब घर म पैदा हुइ थी परन्तु मैं गरीब तो नहा मरुगी । अब तक मैं मात भापायें सीख चुकी हू और मने इनक प्रामाणिक साहित्य तथा गान का भी अध्ययन किया है । पर अभी तक न ही मैंने पूरब का कुछ देखा और न हा अमरिका गई हूँ । तुम्ह मुनकर आश्चय हागा कि मुझे हवार्ड सफर स भय ना लगना है—अब तक नही किया । सबट बहुत कम देख है । जबानी म सब प्रसास करते हें रूप की । रूप धन क पीछे घूमता है पर जम दोनो एक दूसरे का सतह पर ही चाहत है या भमभो एक साधारण उत्साह या धीमारी की सी हानन म उन से एक दूसरे क भीतर नही धुसा जाता । रूप की बात काम की बात पस की बात—मुझे अब सब बहुत साधारण सा लगता है । परन्तु मुझे बुद्ध धम समझ म नही आना, और न ही हिंदू धम । ईसाई धम सरल है और वस्त्राम भा उसी तरह अधिक सासारिक हान क कारण मरी समझ म आ जाता है । परन्तु यह पूरब की गहराई समझ मे नही आती । लिखन क लिए जीने के लिए गिप्ट बातचीत करन के लिए भी इसका पान आवश्यक है । म नय अनुभव स अपने आपका भग्ना चाहती हूँ । मैं मन ही मन सोच रहा था । कित्सा लडकी स मन आन तक एमी बात नही सुनी ।

‘हिंदू और बौद्ध धम म तुम्ह कौन सी बात समझ म नही आती है ?’

‘पान क लिए कम का सिद्धांत मुझे अच्छा लगना है । मन टिका रहता है रगस । जो हाता है इसीलिए हाता है कि उसका कमी प्रकार हाना लिखा था—पान किए का पन है, यही हम आवागमन के चक्र म डानता है परन्तु दसस छुट्टी पान के लिए मुक्त होना जरूरी है । पर मुझे मुक्ति की कोई इच्छा नही । यदि आवागमन आवश्यक है तो मैं बार-बार पदा हाना और मरना बार-बार बदलना अनुभव करना चाहता हूँ—एक मिररे म दूसरे मिर तक । मुक्त होन के लिए जीवन क कई स्वाप्न न मन माडना पडता है । मैं यह बलि जीत हू नही दे सकती भूख तग ता खाऊ नहा । यह ठीक है कि म अधिक न खाऊँ न ही किसी दूसर का खाऊँ न ही किमी भय की भूख मारन का कारण बनू पर इतना निर्मोही निष्काम जीवन मुझे विभा नता है निजल कर देता है । नही-नही यह जीना नही मृत्यु है और भूख बोड भी हा मैं उम पूरा करक खुश हूँ न कि उमे न्या कर ।

परन्तु तुम देखती हो पश्चिम म लोग इननी जल्दी जल्दी इतन अनुभव कर लेत है कि उनके लिय कोई नवीनता नही रहती । कही मूख वही भोग । रस प्रकार गिधि लना ता खाना स्वाभाविक ही है । धीरे धीरे रक रक कर स्वाद म घूट भरकर निचें ता जीवन भर प्रतिदिन नया सूप उदय होना देखें । मरी मां चाय पीने समय छूट

स्वाद लती है क्योंकि विस्तर पर वठे वठे इस गुत्तापे की उमर म किसी नौकर का हर सुबह गम गम चाय लाकर देना उम बहुत आनन्द देता है। उसने सारी आयु यह नहा देखा था। बेचारी पति का बच्चा का, घर-बाहर का काम करके ही बूढ़ी हा गई। मैंने कहा।

पूरब के देशा की किसी वस्तु म यदि मुझे सब म अधिक धृणा है ता वहा की स्त्री स। पुरुष उनके सिर हर समय यू सवार रहता है जस मजदूर के सिर पर बागी। पर्दे म पडी रहती है। कभी पुरुष क साथ चिता म जल रही है। उसके आश्रय क लिए हर समय उसका रोव सहती है। विधवा या परित्यक्ता हो तब तो उसक लिए यह जीवन मृत्यु के समान है। वह एक भटक क साथ म बसहारेपन म क्या नहा छुटकारा पाती? क्योंकि वह काम करने स घबडाती है। समाज मे डरती है। वास्तव म उस जीवन का स्वाद लेन का चाव ही नहीं है। उस मालूम ही नहा कि जीवन ह क्या—अनुभव किस कहते है? मन रोटी स नहा अमीर होता है अनुभव स गह राई स स्वतन्त्र चित्तन स आत्म स्वास मे अमीर हाता है। नहीं? वह वाली।

हर प्रकार क अनुभव से गुजरना वटा दु खदायी है। तुम नहीं जानता? समभदार दूसरा क अनुभव स लाभ उठात है स्वय अनुभव नहीं करते। मरी यह वान सुनकर विदक सी गई। वाली—

मेरा विचार था कि तुम लेखक हो तो विचारवान भी होगे। पर तुमन यह कितना घटिया सी बात कह दी? क्या हम शर्तार्थियो मे बनी कहावतो पर ही जीवन जियेग? यह तुमने क्या कह दिया? दु ख तो जीवन का हिस्सा है। मुझे उसकी यह डाट बठी बुरी लगी। आखिर वह लडकी ही तो थी। पुरुष को यू सुना रही थी जस मे उसकी पत्नी हू। परन्तु उसका यह आत्मविश्वास और स्वावलम्बन मुझ माह रहा था और वह कितनी रूपवती थी। उसकी समभदारी इसलिय मुझे और भी अच्छी लग रही थी। मेरे मन म मे कई तरह के विचार गुजर रह थ।

तो तुम दु ख पान के लिय सत्व तयार हो?

हाँ यदि वह मरे अनुभवा को ताजा करते रहे। यही तो मुख का स्रोत है। दुख म से वहादुरो की तरह गुजरन म ही मुख का स्वाद है तभी हमे मुख की वास्तविकता मालूम होती है। दु ख ता सीनिया है मुख की मजिल पर पहुचन क लिए। बहुत से मुखी दिखाई देते लोग इसीलिए भीतर से दु खी है क्योंकि उनको भविष्य मे भय लगता है कि जो है वह शायद न रहे। और बहुत स दु खी लोग मुखी बनन म डरत हैं क्योंकि और दु ख उनस सहा नहा जाता। अत के दु ख म ही मुख मनान का सिद्धांत ग्रहण करन है। इसीनिय कहा जाता है कि हर कई अपनी अपनी सतह पर दु खी है। वास्तव म दु ख का भय ही दु ख का कारण है। भय उतरत ही मन हल्का फूल हो जाता है जम पूरबी अन्धा म कहत ह कि कमल की तरह खिन उठता है। एक पन दिल बाधने की बात है पर सारा जीवन भी तिन नहा बांधा जाता। एक पन के लिए भी। कसी टूजेडी है यहा।

वास्तव म मेरा दिन अन्तर डोन रहा था। एक भय एक भ्रम एक परछाई भी

मुझे आदर से कुरेद रही थी। एक विचार आता, एक जाता पर दिमाग कहाँ किना नहा था। हर तरह का नया विचार मैं समझन का यत्न अवश्य करता था, उस पर वाद विवाद करने के लिये, उसका उल्टा-सीधा पथ जानने के लिये, परन्तु उसे ग्रहण करने या उसमें ज़मने के लिये नहीं। परन्तु इस लड़की ने तो जैसे मेरे भीतर में सारा भय एक ही भटके से पाछा दिया था। अब मैं अपने विचारा के लिये, हर प्रकार के अनुभव, दुःख म म से गुजरने के लिए तैयार था।

इतन में वह लड़की अपना छाटा मोटा सामान मज पर स सनटन लगी। छाग सा आदना निकाल कर उसने अपने सुंदर मूढ़ को देखा। यूँ लग रहा था जम वह स्वयं को प्यार करती है अपना आदर करती है तभी वह स्वयं का इतना सम्भाल कर रखती है। अपने हीठो की लाली का लिपटिका से उसने जरा अधिक गहरा किया। अपने बाल हाथों से सँवार और मुसकराती हुई बोली— 'अच्छा अब मैं चूँ। काफी समय हा गया है एक ही जगह बठे-बठे।'

बड़ी जल्दी है तुम्हें? बहुत मजा आ रहा था परस्पर विचारा का आदान प्रदान करने में। और तुम कितनी सुंदर हो। कुछ देर और नहीं बठ सकती?'

वह मुसकराई अवश्य यदि तुम ऐसा चाहते हा तो मुझे बाइ जल्दी नहीं परन्तु कही और न चलें?

बाहर पानी गिर रहा है। इसीलिए मैं कह रहा हूँ।

कोई बात नहीं, हम टक्की ले लेंगे।

'अच्छा।' और मैं उसके साथ-साथ चल दिया। काफी हाउस से बाहर निकल कर मैंने पूछा, 'कहाँ चलें? किसी पब में या मेरे पलैट में। वहाँ मैं तुम्हें हिन्दुस्तानी खाना बनाकर खिला सकता हूँ।'

'इसमें अच्छी बात और क्या हो सकती है। मिच ममाल मुझे स्वादिष्ट लगन है और मैं कुछ मुक्त भी होना चाहती हूँ। हर समय कपडा में लिपट घुटन महसूस हानी है।' मुझे उसकी यह बात सुनकर बहुत गम आई। आखिर वह लड़की ही तो थी और एक पराये पुरुष से कुछ समय की पहचान पर ही इनकी छूट लन गयी थी। खर! टक्की लकर मैं उस अपने फ्लट में ले आया। उसने अपना बाट उतार लिया और एक अद्भुत नग्न से ब्लाउज में मेरे सामने खड़ी हो गई। उसका आधा वस्त्र नगा सिर नगा बाँह और टाँगें नगी। मेरा अंतर भावुक हान लगा। एक कपकपी सी भरी रग रग में दौड़ने लगी। मैं चौंधिया सा गया। जैसे एकाएक अचानक में न गुजर कर चटक रोगी दिखाई दन में होना है। वह कितनी गोरी थी—रक्तिम सजीव ताश मास के स्वस्थ शरीर की मालिक और कितनी सुडोल मेरे कितनी ममीप कितनी एकाकी में कितनी चंचल और हर नवीन अनुभव की ग्राहक और परिचित। मैं चूल्हा गम किया। वह बीच पर मेरे सामने लेट गई और सिगरेट सुनगा कर पीने लगी। एकाएक वह मेरे समीप आकर खड़ी हो गई। 'मैं भी देखूँगी हिन्दुस्तानी खाना कम बनता है। फिर कभी मैं तुम्हें बनाकर खिलाऊँगी। ठीक? वह मुसकराई। मेरी ढकी हुई बाँहें उसकी नगी बाहों से झू रहा थी। थाड़ा सा व्यंग्य

भरी आवाज म मीने कहा—

विल्कुल ठीक ।

तुम्हारा नाम क्या है ' वह बानी में पूछ ही नहीं सकी ।'

गोपाल "

गो पाल गा पाल । क्या मरन सा नाम है । गीध्र यात्र हा सकता है और बड़ा प्रिय है पाल क मान प्यारा गो क मान जाओ । जाया मर प्यार ।

वहाँ जाऊ ?

जहाँ इच्छा हो जाओ, आओ । रोकन वाला बोन है ।

तुम मन देगचा म बलही बलानी छोड दी और उसकी दाना बाँहा का हाथा स दवाया ।

मच ? म कुछ नटा कहनी ।

भूटी मी उसके गाता बा हल्का सा छुआ ।

मच उसन मरी बाँह अपने हाथो स जोर स पकड ली ।

तुम तो मुझ कभी प्यार नही करागी । तुम इतनी गोरी हा मैं इतना बाला हूँ ।'

गोरी ? गोरी ? मन यह नाम कहा सुना हुआ है ।

गोरी गिव जी की रूपवती पत्नी है गिव जी जो जिदा करते है नाग करत है नाचते है साँपा से खेलत है जिनकी जटाओ से गगा निवलती है ।

हाय गोरी ! मुझ यह नाम बहुत प्रिय है ।

तुम्हारा अपना नाम क्या है ?

पहल चाह कुछ भी था अब स गारी हू ।

और मेरा ।

गा पाल जाओ मेरे प्रिय आओ मेरे प्यारे । वह मुसकराई ।

मुझ म मुसकरान की हिम्मत न थी । वह मेरे साथ आ लगी । म उसक माथ को कितना समय चूमता रहा । उसके बाला म हाथ फेरता रहा । उसकी गालो को अपन गाता स मनता मसलता रहा । एक अप्रुव गीतलता मेरी रग रग म फँल रही थी । न जान कय खाना बना और कय खाया गया अब उस जाने की जल्दी न थी । न ही मुझ धान करन की । न ही मुझे उस अपन स दूर करने की आवश्यकता थी । न हा गायन उसकी विस्तृत की नीयत थी । सारी रात हमारी दोना की मू ही बीत गई । मुझे मानूम न था कि म कहाँ हूँ कौन हूँ यह नडकी बोन है और हम क्या कर रह हूँ । दुःख कहा है ? सुख की वास्तविकता क्या है ? पूरब का सिद्धांत ठीक है या पश्चिम का ? रूप विकता है या धन पुन्ता है ।

मुबह हात ही वह उठ खड़ी हुई । वह मरे लिये चाय तयार कर लायी । जब हम दाना चाय पी चुक ता वह बड़ी मिन्नत स बाला गापाल ।

हाँ मी गोरी ।

न अब जाऊँ ?

‘वहाँ ? मरी मुद्दर गौरी मैं भी तुम्हारे साथ जाऊँगा ।’  
गम ?

‘वहाँ क्या ? और आज ही क्या ?’

उसने अपने बग मे म मुझे गाडी का टिकट निकालकर दिखाया । मेरा दिल जैम  
चैठ गया ‘नही ननी मैंन रखासा होकर कहा मैं तुम्हार बिना नही रह सकता ।  
मैं भी तुम्हार साथ जाऊगा ।’

‘तुम जम्ह आना मरी सिर आगवा पर । मुझे तुम बहुत अच्छे लग हो भान स  
माठे स जिमके मन म गाठे बहुत कम है और जा जीवन म मरी तरह ही पल पल जी  
कर गुजरना चाहता है, सब कुछ देखकर परख कर चख कर । पर अभी नही—मेरा  
पति मरी प्रतीक्षा कर रहा हागा ।

पति ? तो तुम विवाहिता हा ? मेर हाथ पाव ठडे हा गय । मेर माये पर पसीना  
फूट निकला मेरा चेहरा पीका और पीला पड गया ।

हा, पर मैं बचन खरीदी हुई नही हूँ । पति द्वारा चाही हुई प्यार की हुई लडकी  
हूँ मेरा पति भी तुम्हारी तरह कलाकार है । वह भी ऐसे ही मोचला है जैम तुम और  
मैं । वह भी हमारी तरह धूमना घुमाता जीवन के अनुभव मधुमक्खी की तरह कण कण  
करके चबुटा करता रहता ह । हम एक दूसरे क साथ रहकर बडा स्वाद आता है । जब  
उमका भेर रूप से मन भर जाना है या मेरा मन उमके पीका होल लगता है तो इसकी  
ताबा करन क लिय हम अत्रने सफर पर चन पडते है और फिर जब दिल चाहता है  
ता दकट्टे हा जात है ।

‘पाप ! पाप !’ मेरा अतरर बिलनाया परन्तु क्या करता । वह जान के त्रिए  
वि कुन तयार खडी थी अखि उमकी गीली थी । भरे गल से मैंन उम विदा किया ।

जान म जाक आ गइ । उसम मेरी पत्नी का पत्र था । कितनी म चुनकर मैंन  
उमस विवाह किया था । उमने अपन पत्र म पिछनी कई स्मृतिया का उल्लेख करते हुए  
दू विटाह और बिरह की बनी प्यारी तस्वीर खीची था ।

मैं उमी समय उम पत्र निखन बठ गया और विटाह की लम्बी गतो के सभी  
भिम्म निख लने ।

खून

गुरदयालसिंह फुल्ल, १९०८

पंजाबी व प्राध्यापक आनोचक और नाटककार प्रो०  
गुरदयालसिंह फुल्ल वट्टमुखी प्रतिभा व सख्त है। नाटककार व  
रूप में उन्होंने विगपरूप में अपना भाषा व साहित्य में स्थान  
अर्जित की है। प्रो० फुल्ल ने कहानी क्षेत्र में भी अपना विगिष्ट  
स्थान बनाया है।

एक मगह में सप्रहीन उनका कहानी वा हि दुग्गान  
टाइम्स द्वारा आयाजित गावभाषित कहानी प्रतियागिना में  
पुरस्कार प्राप्त हो चुका है।

मानसिक का ता श्व तत्र आ जाना चाणिक या प्रतापसिंह न चाप वा प्याना  
उगत हुए बना।

सम्भारत्रा वट्ट हमगा अपन वचन का पानन करना है समिति करर आणगा।  
उगत विगत जीवन में मैं वट्ट सारना हूँ कि उगत व्यक्तित्व अतिथि है। उगतकी  
आगनिदन का काई सुनना नहा। जब मैं वट्ट हग सुनन में आया है उगत एग एग  
बना सिदा है।

वग मखमुख विगना आमुन अस्ति है। दूगर न बना।  
एगम काई एग नहा कि उगत हमारी एग आना-ना दुनिया में आ-वजनक

परिवहन विग है। यदि काई बीमार एगना है तो वट्ट रात निन एगका तामारगारी  
में सगा रहना है। यदि विना व सामन आधिक अतिना-दी आना है तो वट्ट आना ख  
में एग एग एग दूर बनन का चाणिक करना है। यदि काई बजार है तो वट्ट काई  
एगना-ना विगारर उग रात्रा बसने सा-क बना एगना है। वग माने काय है। करना

है? हम ता ६ घण्टो म बडी कठिनाई से अपना ही काम कर सकत ह। वह इन मारे कामा को करता है लेकिन उसके रोजाना के काम म कीइ रकावट नहीं आती।'

इसका रहस्य यह है कि उसम परिश्रम करन की अपार क्षमता है। दूसर ने कहा। वचपन म भाई ने उसे बडी लगन और प्यार मे पाला है। उसन उसक त्रिएबटूनसी कुरवानिया की हैं। उसन उस दिलायत भेजा आर उनका खर्चा चलान के लिए अपनी जमान बच डाली। इन बलियुग म कौन ऐसा है जो रूपन भाई की इस तरह प-वाह करे?'

वाम्भव म इसम कोई स-देह नहीं कि उसक भाई न उसक त्रिए बटूत कुछ किया है। तुमने भी उसकी सहायता करन म कुछ उठा नहा रखा। तुम्हारा भी उसके प्रति अत्यधिक स्नह है। तुम उसे रूपना वेतनभोगी नहीं समझत बल्कि उसके साथ पुत्र जमा व्यवहार करते हा।

जमासुसिह म उमे क्या स्नह कर सकता हूँ? उसका अपना भीठा स्वभाव ही ऐसा करन के लिए मजबूर कर देता ह।

'हा उसक भीठ स्वभाव के साथ तुम्हारा स्नेह भी जुड गया है।

'भाग्य ही ऐसे सम्ब धा की रचा करता है। जिसका वह अधिकारी है वही उम मिल रहा है। वह मरे जीवन का आधार बन गया है।

'जो भी उसक सम्पक म आता है चाह वह दपतर का आदमी हो या काइ और उसके हृदय म उमके प्रति स्नह ढाने लगता है। मुह-ल के लोग ने चुनाव म सत्या हाने के लिए उम पर जोर दिया है।

'वह इसके लिए तयार नहीं हुआ हागा। क्याकि इन चीजा म उसकी रचि नहा।'

'हाँ तुम ठीक कहते हो इसकी कल्पना भी उमे अरचिकर लगती है। वह कहता है—म तो ममाज का सेवक हू इसलिए सबक हा कर ही रहूगा। मैं आदेश देने के लिए नहीं हूँ।

कितने ऊचे विचार है।

लागा ने फमला किया है कि वे उम ही वोट देंग और किसी को नहीं।

तब उमे खडा होना ही चाहिए।

'नहा, वह नहीं होगा। लेकिन यदि चाहो तो तुम उमके बदले खडे हा सकत हा। वह सारी वोटें तुम्हारे लिए प्राप्त कर लगा।'

वह खुद ही उपयुक्त व्यक्ति है।

'यदि वह खडा नहीं होता तो तुम्हें मच पर आना चाहिए। तुम दोना एक ही हो एक-दूमरे स अलग नहीं।

जब वह आयगा तो हम इस पर विचार करेंगे। जमानसिह ने अपनी घडी निकानी और कहा—'मुझे ६ बजे अदालत हाजिर होना है।' इसलिए वह तुरत उठकर चन लिया।

प्रतार्पामह की पत्नी पास के कमरे से यह सब सुन रही थी। वह अ-दर बठ ग-।

'यह ठीक है आप खड हा जाएँ। उमने कहा बहन का भी यही विचार है।



## पंजाबी की प्रतिनिधि कहानियाँ

उसने विश्वास दिलाया है कि उसका पति आपके पक्ष में प्रचार करेगा। सोहनसिंह क पास भी कई वोट ह और वह अवश्य ही उन्हें आपको दगा क्योंकि वह खुद इमग लिए खाना नहीं हो रहा है। फिर आपके अलावा और कौन उस अधिक प्रिय हा सकता है ?

यह ठीक है लेकिन हम इस बारे में पहले ही सोच लेना चाहिए था। अब भी कोई दगा नहीं हुई। फाम भरकर अज्ञानता में पसा कर दें। साहनसिंह और जीजाजा वाकी सब कुछ कर लेंगे।

इतने में सोहनसिंह ने बाहर से आवाज दी।  
सोहनी अदर आओ।

मत श्री अवाल सोहनसिंह ने अदर आने ही कहा और वह बठ गया।  
क्या तुम चाय पीओगे ?  
नहां मैं पीकर आया हूँ।

सरदारजी चुनाव के लिए खड़े हो रहे हैं सरदारनी ने कहा।  
माताजा बहुत अच्छी बात है। यह बात आपके दिमाग में कब आई ?  
मन साचा तुम खड़े होग प्रतापसिंह ने कहा।

नहां सरदारजी इस काम के लिए मैं अभी वच्चा हूँ।  
क्या तुम सरदारजी की ओर से प्रचार करोगे ? सरदारनी ने हसते हुए कहा।  
जर जरूर।

मन एसा करने का कोई विचार नहीं था लेकिन जमालसिंह ने मुझे दसक लिए प्रेरित किया क्योंकि उस आशा है तुम मेरे लिए काफी वोट कट्टा कर सकते हो।  
म दिनों जान में कोणिंग करूंगा।  
मिफ लिओ जान से कोणिंग करने से हा कुछ नहीं बनगा। हम पहले पूरा विनास हा जाना चाहिए तभी सरदार जी खड हांग सरदारनी ने कहा।

सरदारजी मैं आपकी मवा में हाजिर हूँ।  
क्या सरदारजी अपना नामजदगी पत्र भरकर दाखिल कर दें ?  
हां यदि दूसरे लोग सलाह देते हैं। मैं अभी ऐसी सलाह दन लायक नहीं हुआ

मनाह नहीं केवल बात क्योंकि सरदारजी ने कहा।  
दही आगा हम तुमसे करते हैं सरदारनी बोली।

सरदारजी तब हम नामजदगी पत्र दाखिल करने के लिए चलें सरदारजी ने कहा।  
माहनी क्या तुम भी हमारे साथ चलोगे ?  
नहां मैं आकर के पाम जा रहा हूँ।

किस विषय ? प्रतापसिंह ने पूछा  
ममार मुल्त में एक मरीज है।  
नो चंगा की अपन हाय में बनाए रखा। हम गात्र हा उन की मदापना का

नो चंगा की अपन हाय में बनाए रखा। हम गात्र हा उन की मदापना का करना पया सरदारनी ने बड़ प्यार में कहा।

मरणाग्नी न डार्डवर को बुलाया। वह कार लेकर आया और व अगलत की आंग चल दिये। साह्नामिह दवाई खरीदने के लिए चला गया।

डाक्टर के पाम जाने हुए सोहनसिंह न अपन से बहा— यह मेरे लिए कितना बरी बात है कि मैं बोटा को आशा म बीमार लागा की सेवा करता हूँ। मिया बटी तेज हात्री हैं। लकिन कोई बात नहीं। मुझे मरदारजी की महायता करन का मुअव-सर मिनगा। वह मुभमे बहुत स्नह करत हैं। मैं उह कामयाब बनान के लिए काम करूंगा। इतन म अचानक पीछे मे एक कार आई।

“कहा मे ?” एक आवाज न पूछा।

पीछे मुन्त हुए उसन उत्तर दिया—“मैं डाक्टर के पाम मे आ रहा हूँ।”

क्या ? क्या प्रनापसिह के घर कोई बीमार है ?

मुहल्ल म एक मजदूर बीमार पडा ह। उसे जेवगन की आवश्यकता ह।

‘यह अच्छा है तुम्हारी सेवा हमारे लिए लाभदायक सिद्ध होगी’ भाभी न कहा।

‘किस बारे म ?’ सोहनसिंह न पूछा और वह उनक साथ कार मे उठ गया।

मैं चुनाव क लिए खडा हो रहा हूँ। तुम्हारी भाभी तथा उसके भाई न मुझे ऐसा करन क लिए मजदूर कर दिया है। उनका कहना है कि तुम हम कारखान क बाटा क अनावा अय बाटा का भी प्राप्त करन म महायता दोग।’

हमन नामजदगी पत्र अभी दाखिल किया है भाभी न कहा।

यह सुनकर सोहनमिह पीना पड गया।

‘तुम्हें क्या हुआ ? क्या तुम्हारे भाई ने ठीक कदम नहीं उठाया ?’ भाभी न पूछा।

भाभी मैं अभी एक और बीमार के बारे म साच रहा था जो कि मौत क साथ भयानक मघप कर रहा है। मुझे उसकी तोमारदारी भी करनी है।

सोहनमिह कार स उतर गया।

य दवाईयाँ बोट प्राप्त करन म हमारी मदद करेंगी। जिनके विस्तर के पास वह मारी रात बटा रहना है वे बोट उमे देन मे इकार नहा करेंगे।

हमन उमी पर आगा रखकर यह निगाय किया है। आजकत मजदूर धनिया का खून चूमने ह ‘आग बडन पर भाई ने कहा।

साहनमिह मोचता रहा अब क्या होगा ? दाना ही पमे बात ह दाना का मुझ पर दावा है। क्या मैं दीना हुआ जाऊँ और प्रनापसिह को नामजदगी पत्र दाखिल करन म रोक् ? किन्तु खुद उह अपनी सहायता का विश्वास दिलाया है। फिर मैं उनमे किस म म कहूँ कि आप मेर भाद के पत्र म बठ जायें।

फिर भा मुझे उनके पास जाकर उह मनाना चाहिए कि वे मेरे भाई क उह म अपना नाम दाखिल ले नें क्याकि मेर भाद न उनम पहल अपना नामजदगी पत्र दाखिल किया है। वह हम बात पर गजी हो जायेंगे और मुझे इम मकद से—भाद क स्नह तथा उनके स्नह के बीच हान बाने मघप म बचा लग।’

उन आशरहीन विचारा न उसम एक नई आगा जगा दी। उसन अनामत जान

क विना तब विद्या किया ।

उमा समय पर वहाँ पहुँचा क विना क्या जगो की सजित घणना उमर पहुँचने म पत्र ब र हा चुकी थी । फिर भी उमा मर विनाग क घणना का तमनी रा रि सरदार प्रतापगिह घणना म घणना नामकग्या पत्र शक्ति करने क विना समय पर वहाँ नहा पहुँच गन हाग । कि तु लोकी बाव जब प्रतापगिह राग म मि तब उम वना धारा लगा । वधाति व घणना नामकगो पत्र शक्ति करत क बाव उम ईइ र म ।

साहनगिह भारी मर सर पर सोच घोर बिना कुछ गाण विचार पर जा लग । जब उमा भाई तथा भाभी त उमर घणन गाव गाना गात क विना कहा तब उमा क पत्र पर घणना पीछे रुकाया— मिन प्रतापगिह क घर म भाजन कर लिया है ।

हगिह तथा प्रतापगिह का इस बार म दुमरी गुव पता लग गया । साहन गिह क विना दाता ही उमा घातगीव तथा प्रिय थ । कि तु गाता का उमर घणन घनग घागाण था । दोता क सलाहचारा त उह बंधनूण ब्यापा था । यदि क इन पर विचार करत ता दाता म म एक बठ जाता कि तु उा पगमगगतगमा त उह यमा करन नग लिया । यदि य गुन मिलकर मामला तय कर सत ता फिर चुनाव क पत्र पराभोशिया का तीत गिलाता पिलाता ? यदि उाकी चाले भपन न हाता तो य भूना मर जात । दाता म म एक क नाम बापग तन पर प्रत भूना मरता भ्रष्टाचारा भूना मरत घोर गराव यत वात भूना मरते । रात को उहान घापम म पदव किया श्रीर मुवह उम्मीदवारा क बगला म जावर मारचा बांध लिया ताकि क घणन मकग का कामयाव बनवाने म सपन हो सकें ।

साहनगिह दाता म से एक को घणना नाम बापस लो क लिए मनान क बार म माच रहा था । कि तु जब कभी वह उनम स किसी एक से इस बारे म कुछ कहन का साहस करता तब वह सारी जिम्मवारी उसी के सिर पर म देता ताकि वह उमक स्नह घातर तथा कुरवानी के बदले म उस कुछ मदद दे । उसने उह मनाने के लिए हर तरह की कोशिश की कि तु उस सफलता नही मिली । समस्या घोर भी उलभती गई । इसने अदावा दाता उम्मीदवार उस सदेह की नजर स देखने लग थे ।

कुछ समयका तथा चुगलखोरा ने ता उसक भाई को यहाँ तक उक्ताया कि सोहनगिह को उसके अपसर न घूस दी है । लोग जब उस पर व्यग्य की बौद्धारें करते तब उमे चोट लगती । वह किन्त य विमूढ हो गया । उसकी बुद्धि उसकी प्रतिभा, उसका धय सभी उस छोडकर चने गए ।

कभी कभी वह अपन को अपन ही तरीके से तसल्ली देता । जो कुछ भी हा में किसी का वोट नही द्या । उह खुद अपने बोटो से ही अपना मामला तय करने लिया जाए । मिन मजदूरा को किराए पर नही लिया है । वे अपनी इच्छानुसार किसी को भी वात देने क लिए आजाद है । वोट देना उन का व्यक्तिगत अधिकार है । इस बारे म उनकी रहनुमाई करना मेरा काम नही । यह ठीक है कि वह मेर भाई है और उहान मेरे लिए हर तरह की कुरवानी की है लेकिन यह भी तो उनका फतय था कि चुनाव

म खड होने से पहले मेरी मलाह ले लते ।' उसने अपने को अपने भाई तथा अफमर दाना म अलग रखने की कोशिश की, किंतु उसका कोमल तथा भावुक हृदय ऐसा करने म असमथ रहा ।

मर भाइ का मुझ पर दावा है, मेरी आमदनी व जरिए पर दावा है यहा तक कि वह मेरी भावनाओ पर भी दावा कर सकत हैं, लेकिन वह मुझे अपने वचन स हटने व त्रिए मजबूर नही कर सकत । यह उसकी अंतरात्मा की आवाज थी । वह इन विचारा के सधप म पिमा जा रहा था ।

दाना आर म इश्तिहारवाजी हुई । सम्पात्को को खरीटा गया, टेकेदार, माम वेचने वाते तथा शराव की दुकानें तय कर ली गइ मतदाताओ की सूची की जाच हुई । और दास्ता तथा रिप्नेदारो के पास पहुंच की गई ।

प्रतार्पसिंह के सन्देशा तथा स्मृतिपत्रा के वावजूद भी सोहनसिंह काम पर नही गया । वह अपने अफमर क तौर-तरीका से भय खाता था । चुगलखोर उसे सोहनसिंह क खिलाफ उक्सा रहे थे । वे उसके अफसर स कहते—“सोहनसिंह अपने भाइ की आर स प्रचार कर रहा है । यदि उसकी आपके प्रति जरा भी आदर भावना हाती ता क्या वह अपने भाई को नाम वापस लेने के लिए न कहता ? उसे कहना चाहिए था कि उनका अफसर चुनाव लड रहा है । यह अनुचित है कि वह अपनी रोजी तो यहाँ कमाए और अपनी सहायता किसी और का दे । आपने ही तो उसे अपने पुन क आसन पर बिठामा है । अब आप अपने प्यारे पुत्र क व्यवहार को देखिए ।” इस प्रकार की बातें धीरे धीर प्रतार्पसिंह के हृदय को सोहनसिंह के प्रति विपैला कर रही थी ।

सोहनसिंह के भाई न भी उसे अपने पक्ष म चुनाव के लिए काम करने को पुसलाया किंतु वह काई न कोई बहाना करके दस मामले को टाल देता । उसके भाई को पूरा भरासा था कि यदि वह उसकी ओर से प्रचार नही करता तो वह अपने अफसर की आर म भी प्रचार नही करेगा । वह चतुर है और दोना पक्षा का मतुष्ट कर रहा है । अत म वह अपने भाइ की ही मदद करगा ।

प्रचार खूब जारा से होने लगा । दोना पक्षा की सम्भ्रात महिलाआ की वइज्जती हान गयी । परिवारो क रहस्य उद्घाटित हुए । अखबारा तथा प्लेट फार्मों ने माता-पिताआ पर काचड उछाली गई । सोहनसिंह आधुनिक चुनाव की इन अन्धुन लीलाओ को चुपचाप देख रहा था । वह इस प्रकार कीचड उछालने से बच निवृत्तना चाहता था ।

ऐसा हुआ कि उनके पास का बगला खाली पडा था । सोहनसिंह ने यह कह कर कि उसकी तबीयत ठीक नही, उस बगल म रहने की अनुमति प्राप्त कर ली ।

उसन नाना उम्मीदबारा से प्रार्थना की बार-बार आग्रह किया कि व ममभीता कर लें, किंतु किमी ने भी उसकी परवाह नही की । दोना पक्षो क चुगलखोरो ने अपने अपने पक्ष के उम्मीदवार को विश्वास दिनाया कि वह सोहनसिंह के दोना क बिना भी जीत सकता है । इस प्रकार दाना का बहकाया जा रहा था । वे छत्रे जा रह थ, अपनी नेता बनने की प्रबन लालसा के कारण ।



भाई के प्रति आन्तर दिखाओ और उह इस मधय म सहायता दो। उसन उसका हाथ पकडा और उसे अपन भाई की सहायता के लिए जाने को मजबूर किया।

साहन्सिंह अपन भाइ क चुनाव गिविर म नही गया। उसके पर उम सीधे प्रताप-सिंह के गिविर म ल गए। वह प्रतापसिंह के परा म गिग्कर बच्चा के समान गन लगा। किन्तु प्रतापसिंह न केवल यह कहा—“साहन मैं यह निणय तुम्हारी अनुमति लकर ही किया है लेकिन मैं अब भी अपना नाम वापस लन के लिए तयार हूँ। किन्तु मैं अपन सहकारिया सहायक तथा हितचिंतका की कुरवानिया म कम इनकार कर सकता हूँ? तुम स्वयं बताओ मैं क्या करूँ? मैं अपन हृदय को किस प्रकार खोल कर रखूँ?”

“भरदार जी, मुझ पर दया करा। साहनसिंह न विनती की।

‘सोहन तुमन पूरी तरह कोशिश नही की नही तो तुम्हारे भाई अपना नाम वापस ल लेत।’

मैंन उनकी पूरी तरह से मिनत की कि वह अपना नाम वापस ल लें। किन्तु अब काम की बात पर आया और चाह उधर हा, चाह उधर अपना आखिरी फसला करो। कहा, तुम मेरी सहायता कराग या मैं तो तुम्हारे भरण पर ही इस विगाल एव कठिन मधय म उतरा हूँ। लेकिन अब तुम पीछे हट रह हो तब साहनसिंह ने अनिच्छा मे जली इट के समान अपना मिर हिलाया और बट वाहर आ गया। रात को जब हरिसिंह घर पहुचा तत्र उमकी पत्नी न उमे बताया कि उमन सोहन का उसके पास भेजा या। क्या उसन दखा है?

नही’ हरिसिंह ने कहा।

‘तब कहा गया?’

वह जरूर प्रतापसिंह के गिविर म गया होगा।”

वह उस नाम वापस लेन के लिए मनाग गया होगा।’

‘अगर वह चाहता तो अब तक ऐसा कर भी लना।

‘तब वह क्या गया?’

किस लिए? यह साफ है कि वह उसकी सहायता के लिए गया है। वह उसत जितना हो सके खमोटना चाहता है।

‘वह ऐसा नही कर सकता।

‘मानव हृदय क बारे म कुछ भी कहना नामुमकिन है। अब वह पहन जसा प्यारा साहनी नही रहा।

अब वह कहां है?

‘गामद वह अपने अफसर म डरता है।’

उम जरूर अपना दुरभिसिधि क कारण भय लग रहा हागा। उम रिग्वन दी गइ है।

इम प्रकारकी अनुसाहित करने वाली बातचीन मे अगात होकर दोना मान के लिए चग गए। हरिसिंह स्वप्न मे बडबडाना रहा था—भाई सचमुच खून चूमन वाले

हाते हैं सहोत्र भाई भी एक छोटे म जमीन व टुकड़ व तिरा एक दूगरे का मून बहा देते हैं हत्या में एक साँप को पालता रहा भ्रमुन साँप का इस जटरील साँप पर ६० ००० रुपये खच किए इसलिए द्रगका जहर उतना ही तीसा होगा वह वैसा क्या करता है? इसलिए कि वह इम प्रकार मरी कुरबानी का बदला देन म बच जाण मरे बच्चा की सहायता करन स बच जाण रग प्रकार यह अपनी जब बचा लेगा इन्ने थलावा उसने अपने अपने दपतर म ७० ००० रुपये की मोटी रकम लेकर जरूर अपने को सठ बना लिया हागा यह आज का तरीका है किन्तु उस मरे भयानक क्रीष का पता नहीं तलवार जहाँ आदमी को रगा करती है वहाँ उस मार भी डालती है वह नरूर मरे पक्ष म वोट दगा वह मरे आप को जानता है।

यह २६ तारीख की बात है और २७ को चुनाव प्रारम्भ होने वाला था। मुहम्मद के सभी मजदूरो न सोहनसिंह की सलाह के मुताबिक वोट देने का फैसला कर लिया था। सोहनसिंह अनिच्छा स सभा म पहुँचा। लोगों का सम्बोधित करके वह बोला— भाइया मरी तबीयत अच्छी नहीं मुझे इस चुनाव के चक्कर म मत खींचा। मेरा मत उकता गया है मैं अपने आप को खो चुका हूँ। मुझे किसी म भी दिलचस्पी नहीं। आप जिसे चाहें वोट दे सकते हैं। वोट आप का है। वोट किसी की सम्पत्ति नहीं है मुझे आप को निर्देश देने का कोई हक नहीं।

वह अपनी प्रातरिक व्यवस्था को किसी प्रकार भी नहीं सह सका और जमीन पर गिर पडा। उसके अपने लुद व शब्द उसे किञ्चित्तय विमूढ़ की दशा से वाहर निकालने म सहायता देने के वजाय उसकी उम्मीदो पर पानी फेर रहे थे। उसका दिमागी ढाँचा बिगड गया था। वहाँ प्रेम तथा मित्रता के बीच भयानक सघष था— रोटी और लून का बचन तथा भाई के प्रेम का। उसने पानी की कुछ बूँद पीकर कहा— भाइयो आधा वोट एक को दो और आधा दूसरे को।

एक सयुक्त आवाज जोर स आर्य— आप ने स्वयं खड न होकर हमारी भावनाओ को चोट पहुँचाई है। आप वोटो की विभक्त करके अपने को बचाना चाहते हैं किन्तु यह हमारी श्रद्धा पर एक क्रूर प्रहार है। हमारे वोट केवल एक पक्ष मे जाएंगे। हम बताइए कि हम अपने वोट किम दें।

उसे महसूस हुआ कि वह वेहोश हो रहा है। उसने चेहरे पर ध्वराहट थी। वह इससे अधिक कुछ नहीं कह सका— प्रतापसिंह को।

भी-छट गई। लोग अपनी राह लग गए लेकिन कानाफूसी होने लगी। इस कलियुग म रोटी ही सब कुछ है।

शायद ।

आखिर उसने अपना वचन रख लिया

अनिच्छा स सोहनसिंह घर लौटा और बिना कुछ खाए ही बिस्तर पर लट गया। उस रात हरिसिंह न अपनी पत्नी स कहा— यदि सोहन व वोट तटस्थ रहे तो मैं जरूर जीत जाऊंगा क्योंकि मरे पास ३५० ठोस वोट हैं जबकि प्रतापसिंह के पास केवल ३०० ही हैं और व भी अनिश्चित। सोहन व पास ५०० वोट हैं अधिक-मे अधिक

यह होगा कि व तटस्थ रहगा ।'

इम झूठी आशा के साथ हरिमिह अपन बिस्तर पर जा लटा । अभी वह पूरी तरह म सो भी नही पाया था कि उमे बाहर से आवाज सुनाई दी ।

सोहनसिंह न फसला किया है कि उसका सभी ५०० वोट प्रतापसिंह को जाएँ । जम ही यह आवाज ऊँची स ऊँची हाती गई उसका क्रोध उमर आया । उमे लगा कि उसके शरीर को साप न डस लिया है और उसका विष उसके शरीर मे फैल रहा है । वह अत्यधिक थका था इसनिए फिर मे गहरी नीद सो गया । आवाज फिर म उठी । वह उठ बैठ खिडकी पर जाकर नीचे देखन लगा । प्रीतमकीर गहरी नीद ल रही थी । वह स्वप्न म बढबडा रही थी—'चिन्ता मत करो मेरा देवर सोहनसिंह गुप्त रूप स अपन वोट आप के पक्ष मे डालगा । यह उसकी कूटनीति है । हरिमिह भी स्वप्न देख रहा था—'बल वह चुन लिया जाएगा वह जलूस निकालेगा मेरी हार का कारण प्रतापसिंह नही मेरा भाई है—पुत्रवृत्त्य भाई, सहोदर भाई । मैं न साप एक लालच का कीडा पाला है ।'

वह सो नही सका । आवेग म भर कर चहल-चदमी करन लगा । साप साप, साप का—इनसान के दुश्मन को मारना आदमी का सबसे पहला काम है साप इनमान का जहरीला दुश्मन उमन चुपचाप अलमारी खाली, एक बानल निकाली और उस स कुछ बूँदें मूह म डाली । जैसे ही वह पट म गइ उसकी आत्मा साप से लयन के लिए लोहे के समान कठोर हो गई । उसन पिस्तौल निकानी किन्तु उमे फिर वहा रक्त दिया । लकिन यह ठीक नही मेरा चुनाव चिह तो तलवार है । इसलिए उमन तलवार उठाई और चोर की तरह चुपचाप बाहर निकलकर वह साहनसिंह के कमर की आर बढ़ा । रास्त म उस पहरेदार मिला— देखो य चुनाव के दिन हैं, उस आर का गन करो, मैं इस और स्वय दख लूगा ।"

पहरेदार न सिर हिलाया । मद्यपि वह हरिमिह के बरताव स डर गया था । फिर भा वह वहा म चला गया ।

हरिमिह सोहनसिंह के कमर म पहुचा । दरवाजा बिल्कुल चुना था । सोहनसिंह गहरी नाद सा रहा था । हरिमिह न टाक जलाई सोहन मुरद क समान लटा था । 'उम पहल हा विष दे दिया गया है । धाखवाज अपनी मौत स पहल मरता है ।'

सोहनसिंह चिल्लान लगा । हरिमिह धीरे स पीछे हट गया ।

चुनाव चुनाव है

इसका कोई परिणाम नही निकलेगा ।

रखनपान निश्चिन है

कोई भी बचकर नही निकल सकगा

चगुन म और साइया म ।

हाँ, अपराधी अपनी मौत क बारे म जानता है' यह कहकर हरिमिह न पूरे हाथो म तनबाग उम के गले पर चलाई । उसका प्राण एक भास क माथ बाहर निकल धीर गाम की छाया की तरह न जान वहाँ घटन्य हो गए । उमन सोहनसिंह के मृत शरीर



पर कमलत डाला और धीरे से कमरे का ताला लगा दिया। वह वहीं स लीग। पहले दर उसे फिर रास्ते में मिला। देखो सरदार सोहनसिंह यहाँ नहीं है। उसक कमरे को ताला लगा है। तुम होगियारी में इस बगल की रखवाली निगरानी रखना। यह कहकर वह अपने घर वापिस आ गया और अपने बिस्तर पर लेट गया। सुबह मतदाताओं ने उस जगाया।

सभी ने सोहनसिंह को ढूँढने की कोशिश की। किसी ने कहा वह प्रतापसिंह के गिबिर में होगा। दूसरों ने सोचा वह अपने भाई के साथ होगा। कुछ बुद्धिमान् पतिल एम भी थे जिन्होंने सोचा कि वह इस स्थान से वही बाहर चला गया होगा। सघप चलता रहा। बध और अवध सभी तरह के मत डाले गए। जब पहले मजदूरों का छाया सभी भय खाते थे वे उनसे अब मता की याचना कर रहे थे और उनका गाने तथा वृत्त बच्चा से खेल रहे थे। हरिसिंह सघप में हारता जा रहा था उसका पक्ष कमजोर होता जा रहा था। उसके गिबिर में भयानक निरस्त-धता छाई हुई थी। हरिसिंह पर आया और बिस्तर पर चित लेट गया। परिणाम घोषित हुआ। प्रतापसिंह के मत में मालाए पड़ी। वह सोहनसिंह के प्रयत्न की सराहना कर रहा था। उसके आत्मी उम अपने कंधा पर बिठाकर सोहनसिंह के बगने में ले गए। प्रतापसिंह उनकी भुजाओं को अपने गरीर में हटाकर सोहनसिंह के कमरे की ओर बढ़ा। कमरे के बाहर खून का दूँ पड़ी थी वह डर गया। हरिसिंह जल्दी में ताल को खुला छोड़ गया था। प्रतापसिंह ने ताला निकाला और दरवाजे पर धक्का दिया द्वार खुल गया। उमने कमलत खींचा और वह चीख मारकर सोहनसिंह के मृत गरीर पर गिर पड़ा। खून खून खून ! आवाज मारे वातावरण में फल गई। सभी डर गए थे इसलिए धीरे धीरे वहाँ से निकल भागे। प्रतापसिंह बहागी की हालत में उमी स्थिति में पड़ा रहा। जब उम हाँगा आया तब उमने दया कि लान पगड़ी वाला ने उम हथकड़ी और बड़िया में मजा रखा है।

# रजाई

सुजानसिंह, १९०९

---

सुजानसिंह पंजाबी वं गीपम्य कहानीकार है। 'कला जीवन के निय है उनका विश्वास है और यथाथ जीवन की यथाथ समस्याओं का चित्रण उनकी कहानियाँ की विशेषता है।

सुजानसिंह के लगभग आधा दर्जन कहानी-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'दुख सुख', 'दुख सुख ता पिच्छा', 'सभ रग', 'पूत आदमी', 'नरका दे देवत और 'नवाँ रग' आदि।

इस संग्रह में संग्रहीत कहानी रजाई उनकी बहुचर्चित एक प्रशंसित कहानी है।

---

छुट्टी के समय जब स्कूल मास्टर स्कूल से बाहर निकलता तो वह लड़कों की एक गण में होता। बहुधा उसे अनुभव होता कि लड़कों की बाढ़ में एक बंधन है। आज उसने माना यदि लड़कों का प्रवाह सदैव इसी प्रकार न चलता रहता तो उसका जीवन भी सूखी नदी के रेतीले तट पर व्यर्थ पड़ी नौका के समान नीरम होकर रह जाय। पुन उसने साचा वास्तव में वह नौका ही है। प्रति वर्ष विद्यार्थियों के समूह पर-समूह परीक्षा की किनारा में पार उतारता है। उसकी समझ में न आया कि विद्यार्थी जन-प्रवाह और यात्रियों का सघ दोनों वस्तुएँ कस वन मकत हैं? आखिर प्रवाह ता गति गीत ही था जिसके सहारे उसकी टूटी फूटी जीवन-नौका तरकर एक काम किये जा रहा था चाहे कठिन-म-कठिन गणित के प्रश्न मिनटा में हलकर लेने वाली उसकी बुद्धि उस अदृष्ट प्रवाह का समझ सकने में असमर्थ थी।

मास्टर ने सहज में ही अनेकों परिचितों की सलामों का उत्तर हाथ जोड़ कर दिया। अनेकों की नमस्त सत-श्री भक्ताल जय राम जी की भुज भुजकर व्याज ममन गीत। परन्तु भीतर से उस कोई चिन्ता खाय जा रही थी। बाजार में तो वह यंत्रवत्

क्रियाएँ करना चला जा रहा था। सहसा एक भागी ध्रा रही गाय उसे बाह्य चेतना में न धाई। वह चकित था कि वह किसी स वयो नहीं टकराया अथवा एक और वह गहर नाल में क्यों न जा पडा।

मोड धूमत समय उत्तन नवाडी की दुकान पर एक रजाई लटकत देखी। मन ही मन कापकर उमन इधर उधर देखा कन्नी उस किसी ने पुरानी रजाई की और लल चाई हुई नजरो स देखते हुए न देख लिया हा। वह तेजी से मोड मुड गया।

मास्टर पाँच बच्चा का निता है। आजकल वह इह पाँच गलतियाँ कहता है। पुरान जमन और आजकल के रूस में शादद उसकी पत्नी का अधिक बच पदा करन का मैडल और पुरस्कार मिलता। वह सोच रहा था कि बस परिस्थितियाँ गलतियाँ का गुदियाँ और गुदियों को गलतियाँ बना देती है। काग कि परिस्थितियाँ हर यकिन क वम न होना। परिस्थितियाँ की कजी नेवल धनिका क हाथ में ही न होती।

पाकिस्तान में गरणार्थी होकर आए तीन सम्बन्धी भी उसक पास रहते थे। कभी उहान भी उसक कठिन समय में उमकी सहायता की थी जब वे स्वय सुखी थे। मास्टर का बतन भव सब कुछ मिलाकर एक सौ साठे सत्ताइस रुपय है। बडा बतन है। कउन वह आटा जो उन सहायता श्रिय जाने के समय दो रुपय तरह मान मन था, भव तीस रुपय मन रिक्ता है। परन्तु मास्टर का बतन तो उचित है। एक सौ साठे सत्ताइस रुपय प्रावाडेंट फंड काटकर। अतएव वह उह कठिन समय में कन प्राथम न दता ? कृतान न कहवान का भी ता मूल्य हाता है न।

रागन डिपो पर कई लोग टहरे थे परन्तु मास्टर साहब का डिपो स भी कुछ नमीड न हाता था। मास्टर साहब का बतन एक सौ साठे सत्ताइस रुपय है। निदिष्ट रकम स एक रुपया अधिक सन वाता भी डिपो स सत्ता रागन लन का अधिकारी नहीं और मास्टर साहब तो पूरे डार्फ रुपय अधिक न रहे थे। उमन मायी किराण्टारा में एक बक बनक भी था। वह एक सौ पन्ध्र बतन पाता था। उमकी पत्नी और वह—बम यही उमकी परिवार था। उमकी रागन मिनता था। परन्तु मास्टर जी का परिवार भी ता देवन की तरह बना था। अतएव वह किमी छूट का अधिकारी नना था।

मास्टर न रेगा उमन कई गुना अधिक हैमियत वा न साग डिपो स रागन स क है। परन्तु क ता टुकानगर थ चाई नौकरी पाता ता न था। बचारा मरवा क पाग भी ता उनकी स्वय निमी हई बहिया क अतिरिक्त प्राय मापन का फार्ड मात्र अथवा मापन न था। मास्टर भूट नहा बा न सचना। उम ह न चाई भू युग कहता है। कई व्यय म भी—अन अचरित या बईमान हाता चाई गुण हाता है। मास्टर कानून का पूरा मानन बाता था। पढ़े निय कानूमी का कानून क उल्लंघन की बम भी अरिक्त सत्ता मिन सचना है। मास्टर ता न्नाभवन ना है। अतन या अतन कानूनीय का बाग्य वह न्ना और जति का हाति महन नहा क न सचना।

मास्टर निरकन गया—सब कुछ मना। उम माग न पुन रजाई का व्यत हाता। नई रजाई क निल कम न कम बाग म्म की काव न सचना है। रिमाव मग्गा—इई मन काग नोय हुता लड और पन्ध्र कानून न्ना या बनामनि बाग्य हन मय

पन्द्रह रुपये और बड़ी रकम उस बाद में बाद आई—किराया तीस रुपये, दूध चाय के लिये तेरह रुपये और भाग इसी प्रकार। कुल जोड़ एक सौ छियासी रुपये। बजट में प्रति मास लगभग साठ रुपये का घाटा। उसे बजट को चलेंज करना चाहिये। परन्तु उसको गृह विज्ञान के अनुसार नई पुस्तको एक पत्रिकाया पर व्यय की जा रही सात रुपये की राशि के सिवा कुछ अनावश्यक न मिला। वह मन-ही मन इस खर्च पर उकीर सीचन लगा था, परन्तु उसे अनुभव हुआ कि वह खर्च उसकी खुराक पर ही है खर्च से भी अधिक अनावश्यक है। आखिर उसने सोचा—'मैं मुग्याध्यापक की आत्मा में एक ट्यूगान रखूंगा। तीस की आय बढ जाएगी। तीस का व्यय जैसे तैसे कम रहेंगा। परन्तु रजाई के लिए बीस रुपये वहाँ से आएँगे ? रजाई मर्दी के लिए बहुत अनावश्यक वस्तु है। अतिथिया को अलग अलग चारपाई और विस्तर देना भी अनावश्यक था। तीन लडकिया इकट्ठी सोती थी। एक ही चारपाई और एक ही रजाई में सोने से कद नाटे हो जायेंगे। लडकियों के शरीर नाट ही जान में उन्हें आज के ममार में पहले ही कोई नहीं पूछता। कल उसने अपनी धरवाली का उनमें से बड़ी का अन्न मुलाने के लिए कहा था।

'थोड़ी चारपाईया हैं कलाश ? फिर इन्हें अलग अलग क्या नहीं सेटन का कहती तुम ?

कलाश ने विनम्र उत्तर दिया था— चारपाई तो एक और है परन्तु और रजाई नहीं है। अभी बिल्लू भी मरे साथ ही सोता है।'

बीस रुपये की रजाई पहले ही बजट में घाटा है। तीस की ट्यूगा तीस खर्च में कम करने ही पडेंगे। परन्तु रजाई के लिए बीस और कहा से आएँगे ? उसे स्मरण हुआ कि उसने परसा ही अपनी पुस्तकें और रद्दी बेचकर सात रुपये बारह आने पाए थे। परन्तु रजाई के लिए बीस रुपये। ओह ! कवाडी ने पुरानी रजाई ! हा ठीक है कल पूछा जाएगा।'

कई दिन वह प्रातः समय की तक में रहा। दिन में वह कवाडी में पुनः पूछन का साहस न कर सका। एक दिन रात के समय गया बाजार बंद था। बेचारा नगन बिल्डर बीम का उस्ताद निराश लौट गया। बनाने वाला स्वयं बनाए जाने वाला हाथों से क्या बन रहा था।

उसने पुनः विचार किया—आखिर प्रातः ही दौब लगाकर काम बनगा। निगाडी रजाई भी थी जिसे कोई खरीदता ही न था। किसी के सामने खरीदकर अपमान होना था—यदि उसका नहीं तो अध्यापक की श्रेणी का। परन्तु राट का बेचारा अयापक क्या कर रहा था ? वह किसी से क्या छिपा रहा था ? उसने पुनः विचार किया—वह इज्जत को आंच न आन देगा।

रविवार का दिन था—छुट्टी का दिन। वह अपने बड़े लडके को साथ लेकर उम दुकान पर गया। रजाई पूबवत वही पडी थी। वह एक ही छनाग में दुकान में चला गया। सात रुपये में सौदा पट गया। रुपये देकर वह भीम्र वापस लौट आया। दस बदन ही चना होगा कि किसी ने आवाज दी— मुर्दों से उनागी हुई रजाई खरीद ली

है।

उस्ताद घूमकर देने बिना न रह सका। कहन वाला एक दरजी था। पास ही मास्टर का एक गिप्य था जिसने आज म उसवे घर पढ़न आना था। उसने भी मास्टर के पास आकर कहा— यह तो मुदों से उतारी गई रजाइयाँ बचता है मास्टर जी।

मास्टर सब का सा भूठ बोला— हाँ बटा, परन्तु किसी आवश्यकता वाल की आवश्यकता ना पूरी हा जायगा।

कहन का ढग बुद्ध एसा था कि जिम से सक्षम हो सकता था कि उसन रजाई किसी अन्य व्यक्ति के लिय खरीदी है। आखिर यदि यह भूठ भी था तो घमपुन युधिष्ठिर क बोल भूठ से बुरा न था।

दिन भर रजाई घूप म पडी रही। गाम हो जान पर रजाई कमरे म नाई गई। दीपक जलन क बाद वही लडका पढ़न क लिए आ गया। उसन रजाई पडी हुई देख कर नमस्ते कहन के बाद पूछा— क्या मास्टर जी यह वही रजाई है न ?

मास्टर म दूसरी बार भूठ बोलने की सामर्थ्य न थी। उसन कहा— बही है बटा परन्तु आज मै तुम्हे पना न सकूगा मेरी तबीयत खराब है तू बल आ जाना।

सचमुच उसकी तबीयत खराब थी लडका वापस लौट गया।

मास्टर न रसाई म काम कर रही घरवाली से कहा— 'बलाश, नई रजाई मुम्हे दे दे। मेरे बानी पहली रजाई लडकिया को दे देना। हाँ सब—गोमती को अलग सुलाना।'

'क्या आप खाना न खाएंग ?' —बलाश न रजाई परा पर ओंते हुए कहा।

नही —मास्टर न कहा और मुनों से उतारी रजाई अपने परा पर खीच ली। कितन समय तक वह सोचता रहा कि कौन मुदों से रजाई उतार लेता है और कौन जीविता से। वह अशांत था।

# वापसी व वापसी

बलराज साहनी, १९९३

---

बलराज साहनी हिंदी रजतपट व बड लोकप्रिय अभि-  
नता है। फिल्म जगत म प्रवेश करने से पूव वे अपन आपका  
साहित्य-संज्ञक के रूप म प्रतिष्ठित कर चुके थे।

बलराज साहनी अपनी मात भापा के उन प्रेमिया मे है  
जिहान पंजाबी को साम्प्रदायिकता के सेने से निरन्तर न  
महत्वपूर्ण काम किया है। फिल्म जगत की अत्यधिक व्यस्तता  
व वाद भी पंजाबी मे उनकी रचनाएँ नियमित प्रकाशित होती  
रहती हैं।

बलराज साहनी न हिंदी और पंजाबी दोना ही भाषाओ  
म कहानिया लिखी हैं।

काश्मीर जीवन पर आधारित उनकी एक कहानी महा  
संग्रहात की गई है।

---

लगभू नूरअहमद न सर्गी की नमाज पढत वकत कुद तापें दगती मुनी थी। उसक  
बाप अपराधिया का नई वदियां पढत अघर-उघर दोन्ने हुए देखा था। लेकिन परवर-  
गिार की दरगाह मे यह पूछन की बाशिग न की वि माजरा क्या है। नियमानुमार  
मुगल ताला मे सारे काश्मीरिया की और बिगपकर दरोग की चमडी मुत्ता  
व भाग टालन की दुआ करके यह चुपचाप अपनी नोई की तहा म सिमटकर बठ गया  
और बइ घट बठा रहा।

नियमानुमार बारह बज नोत् का बग फाटक फक्कडाया और दरगाा साहब न  
अपना छना घुमान हुए प्रवेश किया। उह देखत ही नूरअहमद न नियमानुसार अपना  
छ पुन चार इच नम्बा गरीर एक टांग व भार उभारा और बड परिश्रम स गना

साफ करने हुए तोला भर बरगम दानान म धुक दी । इम स्वागा करग पर भाज दाण-बाए की बाठडिया म हसी की बजाय प्रतिवाद उठा जिगम लखानवाया नू महमन का पना पना कि भाज महागात्र कर जमनि है घोरे गायन मुध करे हु

यदि घाट साज इन तापा म दगन बा मुध अमर नरी हुपा ता भाज हागा इगम। तगह को भागका न थी । लकिन जब पिछन तापा की तरह करे काठिया म म ताइयां सगहा-त निषल ता नूर मोचन पर बाधित हुपा नि अय उमकी पना का जवाना पर एक मान और पड जायगा ।

और जब उसकी कोठरी क भाग म गुजगन हुए दगागा साटव क कम्म मरमा म गय ता उसावा लिन भी रक गया और उगका मान भागें बयखा म ।

बाजी ताल म फिरा और उन बातर तिचनन का भागे हुपा । तिचनन हा दरोगा गाहव न एक एमा औरस कण्ड उसकी गन म या कि उमका टापा मिठी म जा पडी । लकिन उस उठाकर नूर अपनी मलमौला तान म चवता गना । वह लिन पूरे हो चुन जब कण्ड उसा मलन पर बल छान सचन थ । नमसुगकिम्मत कैदी अपनी अपनी काठरिया स पूरी हादिकता के साथ उम अलिख कह रहे थ लकिन उसन न मुना न ही यह सोचा कि उसन जान क बातर उनका बकन कम गुजरगा । किसी न जमान की हास्यास्पद रीति क अनुसार एक पुरानी कपडा का पैती उम ला दी । किसी ने पस दिए किसी न अगूठा लगवाया किसी ने मगीन पर कन का कहा । नूर मात्र मुध की भांति सब कुछ करता और अपनी बखडाहट म पमवारिया का दिलबहालव करता रहा । फाटव के बाहर पहुचकर उसन जाकिया म भाग कर कर छाती पर हाथ रखा और अपनी गुस्ताखिया क लिए दरोगा साटव क भाग सिर मुका दिया । अपने इस प्रतिम मसखरेपन पर लोगो का हास्य मुनता-मुनता वह पहाड स नीचे उतरन लगा ।

दस-बदह कम्म उतर कर वह ठहरा । एक बार श्रीनगर के गहर पर और चारा और की फसल पर नजर घुमाई । अपने मुहल्ले की पहिचानने की कोशिश की । भील पर नट्टे नट्टे शिकारा को रगत हुए देखा । फिर आश्वरत हो अलगाव का गुरु कर उतरने लगा । सडक पर बंदियों के सम्बन्धियों का जमघट सा लग रहा थी । की कपड का बाजार गरम था जिस देखाकर उस नफरत हुई । स्वतन्त्रता की कल्पना करते समय उसने यह कभी न सोचा था कि बाहरी सत्कार म रोना धोना भी होगा । फिर भी उसकी गदन जनमग्रह स ऊपर उभरी हुई घूम घूमकर किसी को खोजने लगी । किन्तु थोड़ी देर बाद निराश हो गई और वह चल निवृत्ता । यह देखकर भीड के सम्पक स दूर पुल पर बठा हुआ एक नव-युवक उठा और नीरू की ओर चला । उसकी दानी पान के पत्त की तरह तरापी हुई थी रंग गोरा था और वह हरे कोट क सफेद लाल पट्ट वाली पगडी म सुसज्जित था । नजदाक आकर अक समात उसने नीरू के पाँव छू दिये । नीरू सटपटा गया और आवश्यक वार छुस सर छुस के बाद खिसकन लगा । स्वच्छ कपड़े पहनने वालों से उन सन्त नफरत

थी। लेकिन नवयुवक ने उसकी बाह पकड़कर कहा।

लाला मुझे पहचाना नहीं ?

नूरु तब न कर सका कि यह विनोद है या यथाथ। उसने नवयुवक को मिरर में पर तक देखा। न, न यह छेड़खानी नहीं थी। नवयुवक की आँखें सरल थीं और उनमें कुछ न कुछ नाटक उसे अपनी ओर खींच रहा था। नवयुवक न कहा

लाला मैं हबीब हूँ।

आ हबाब ? आ बशरम ?' नूरु ने नवयुवक को छाती से लगा लिया। उसकी लाल आँखें फिर उमड़ गईं और उसकी मुसकराहट मुख और दुःख का सीमाश्रम में निष्पन्न सी पवित्र खींचन लगी। लेकिन नवयुवक का यह भावुकता अच्युत न लगी, क्योंकि इसमें कई महीना के बिना नहामे शरीर की वृद्धि थी। वह अलग होने की कागिग करन लगा।

हबीब ? आ बशरम ? तू इतना बड़ा हो गया। पिता न पुत्र को फिर स निहारते हुए कहा।

नामा आठ साल हो गया।

हा आठ साल हो गया।' नूरु ने सास छोड़ते हुए कहा और दोनों आग बटे।

कुछ देर की चुपचाप के बाद हबीब ने गम्भीरता के साथ पूछा।

लाला अब तुम क्या करोगे ?

नूरु को यह शब्द भद्दा सा मालूम हुआ। आठ साल की पाशविक कद में छटकारा पाकर दाऊल की पहाड़ी से अभी उतरा हूँ और भरे पुत्र के पास स्वागत करन का बंसल यही साधन है कि मुझ से पूछे कि अब मैं क्या करूँगा ? क्या इसे किसी न नहीं मिलाया कि ऐसी बात नहीं कही जाती ? नूरु खिन्न हो गया। यह वह हृदय नरु था जो पुलिसवालों के जतन करन पर भी बाप के कंधे से नहीं उतरता था जिसके रात हुए चेहरे की स्मृति न उसने जीवन में तूफान पदा कर दिया था। दस पान के बान्शाह की सी लाठी और अकडे हुए कपडा वाल का अपने बाप में गरम आती थी। गायद रहती भी इसी कारण नहीं भाइ। क्या आय ? कभी चोर के घर आने पर भी किसी को लुशी हुई है ? लेकिन नहीं नहीं। उमन प्रेम भरे नरु स अपने पुत्र की ओर देखा। कितना सुंदर चेहरा था कितना पौरुष डील टोन। कुछ निना तक य लोग स्वय ही देखेंगे कि नूरु कितना बदल चुका है। लेकिन रहती क्या नहीं भाई ? कही बीमार न हा कही मर ही तो नहीं गई ? भना पूछो तो ? फिर रुक गया। हबू सोचेगा बाप कितना निलज्ज हो गया है। उमे अब यह अबस नहा चाहिए। उसने पुत्र के सवांन का जवाब सवाल में लिया

'तू अपना भहवाल मुना।

हबू का चेहरा तमतमा गया। वह इसी इतजार में था। उसक बरदी पहनकर आने व बाकी रोगों में प्राण हाकर चैठन का अभिप्राय ही यह था कि मसार जान न कि वह मामूली घातमी नहीं है। गायद उसे देखकर बाप का भी उपदग मिल कि स्वच्छता और पारसात्री बुरी बगु नहीं। अट्टारह वप की अवस्था में ही उसक



जीवन की महत्वाकांक्षाएँ घर भाई थीं यत् श्रय किस विगधा हासिल होना है ? वह एक प्रभावशाली अग्रज था घेरा है । जिन रात जीवन का एक एक क्षण साह्य का मवा म व्यतीत करता है । घर जाना अपने सम्बन्धियों के मुहल्लन तक म धम्म रखना उमे मुमीवत है । कई सडकेँ ऐसी हैं जिन पर म गुजरने की बजाय दो मीन का चक्कर बाटना उम ज्याना भजूर है । ऐसा बाप और अब ऐसी माँ विराररी तो उमे कच्चा चवा डाल ।

मैं राममु नी चाग म गिटमैन साह्य की चाटी पर नीकर हूँ । दो साल हुए काम शुरू किया था । पहन माट पूव व बूट पाणिग का काम मिला फिर साह्य न मरा ईमानदारी और परिश्रम की दादा दकर मुझे अपने कारखाने म चपरासी लगा लिया । अब दो महीने से बरे का काम कर रहा हूँ । थोम रुपए तलब मिलती है और राटा कपडा साथ म । साह्य बहुत ही नक भादमी है । उसकी फकटरी म दा सी आदमी काम करने है लाला दो सी । महागज क साथ पानो चलता है । दा माटरें रखी है उसने जिधर म निबल जाती हैं जहान देखता है । पिछन हपन मुझे अपने साथ बिठाकर मुहमग ल गया था । कहा तो कुछ जाता नहीं पर लाला अल्लाह रहम बरे और मेरे ईमान को बरकत बरे साह्य भाग और भी मेहरबान होगा । खुदा जानता है कि रात को तीन-तीन बज बलब से आता है और उसकी जेबा म सबडा रुपये हात है । अगर चाहूँ तो पाँच-दस रोज इधर उधर कर दूँ लेकिन हराम का एक पाई मुझे मजूर नहीं

लगडू नूरअहमद को और मुनना असह्य हो गया । देखो लर की तरफ । बजाय इसक कि मर्यादानुसार पहले अपनी माँ का फिर दूसरे सग-सम्बन्धियों का कुशल समाचार दे इम अपने साह्य की पडी है और फिर इसकी जुरत कि अपने बाप को धम ईमान का उपदेश देना शुरू कर दे ? लातत है । उसने काटकर कहा— खर बन्त अच्चा । लेकिन बटा जो शहस बाहर से आए पहले बुजुगों का हाल अह्वान दना चाहिए अदब यही सिखाता है ।

उह उनका क्या है ? हब्ब ने उपेक्षा से कहा— जिन गदगी म भाग सड रहे थे उमा म अब भी पड ह । वही गढा पानी पीते ह मान भर नहाने नहीं सारा दिन फिजून बकबक म गुजार देत है । बाबा अहदजू के पास जो कुछ था वह गराव और जुग का नजर हो गया है और अब घरवाणी को तारें जडने के सिवा उह कोई काम नहा । लाला इन रोगो से मुझे नफरत हो गई है ।

चिनारा म घिरी हुई अब वह पुगनी सडक न थी उनका स्थान चौड चौड चिबने मदाना न ल लिया था जिन पर चर चर करती हुई मोटरें इधर से उधर भाग रही थी । चौराटो पर सिपाही कौनुक्पुग अलज से हाथ हिला रहू थे और बार बार नूह का आम पास के घडा पर चबने का आदेश करते जिन पर उतरन चाने म उसे त्किक्न होनी । हर तरफ परिवतन स्वच्छता की बू आ रही थी । नती क आस पास वत क वह जगन जिनम कई दोपहर उसने डिपकर चरवाही मुबनियों के सग त्रिनाय दे अब वही नजर नहीं आत । आठ साल क आदर नूह का कागर देग बिल्कुन बन्ल

गया। मैंने सुना है कि गंगी हराम की चीज भी खाते हैं क्या यह ठीक है? नूरू न विप भरे स्वर में कहा।

हबीब का उनत मस्तक इस प्रश्न पर गिर गड़ा। बागक खाना पकाना खानमामा का काम था, लेकिन प्लेट पर धर कर लाता तो वही था। उसके जी में आया कि स्पष्ट कह द कि चारी के मुकाबले में यह काम बुरा नहीं है लेकिन आखिर बाप था। यह यह धृष्टता न कर सका। नूरू को नी पदचात्ताप हुआ। यह माना कि उसने अपन पुत्र के लिए मदद किसी उज्ज्वल और स्वतंत्र जीविका की कल्पना की थी लेकिन इस वक्त की लक्ष्मी अनुपस्थिति न सब बरवाद कर दिया। इसमें हब्बू का क्या कसूर?

बुद्ध दूर तक फिर दोना चुपचाप चलत गए। आखिर नूरू से रहा न गया—  
रहनी क्या नहीं आई, ठीक ता है न?"

'हा ठीक है—हब्बू न गुनगुना कर जबाब दिया— मुझे काम ज्यादा था इस लिए कोठी स सीधा इधर आ गया।

अब वह मडक के द्वार पार बनाय गये एक ऊँचे फाटक के पास पहुँचे जो टहनिया और फूला स लदा हुआ था। इसस आग रंग विरगी भड़िया का एक ताँता सा लगा हुआ था। द्वारों सजी हुई थी और म्यान-स्थान पर सुनहरे अथरा में जटित कपड़े लटक रहे थे।

जमोसब की इन निगानियों को देखकर नूरू को पहले मन्ताराज की याद हा आई। तब मोटरों भी न थी और यह चौड़ी मडकें भी न थी। फौजी डागर एक कंधे पर बन्दूक और दूसरे पर चिलम धामकर पहरा दिया करते थे। कितना गरीब था बूझ महाराज। जात-जाते हजारों खरापन कर जाता था। जिस दिन घाड पड, डयोडी म जा घुम। दाल भात नसीब हो जाता था। मिपाही का चौथे-पाँचवें दिन एक बिना यना मिगरेट पिला दा, फिर चाहे बज्जीर की जेब कुतर लो। आह व दिन

अकम्मान् हबीब ठहर गया और बनाई पर लगी हुई घड़ी का देखते हुए बोला  
ताना अब इजाजत दो मुझे काम है। काम को आऊँगा।

नूरू का मन किसी न नक्षत्र चुभो दिया हा। इस बाप को घर तक छोड़ आन की पसन्द नहा। उसके हाथों में जलन हुई लेकिन पढ़ने दिन ही कान पीस दना ठीक नहीं हागा। बन मही।

इसक बाद लगडू नूरुअहमद अपनी मट्टम चाल से चलकर अपन मुहल्ले में पहुँचा। पान बाचड बाकरखानी तथा सडी हुई मछली की बदलू एक साथ सूँघन ही उसन अपन गरीर में एक नयी जान महसूस की। किसी बजूस बनिय का तरह जिस परन्तम में मौन ममय हा आगता बनी रहती है कि मरा घर कहा लुट न चुका हा वह घडकन ए स्तिन स ठहर कर प्रत्येक स्थान का पहचानता। उस तमलनी नुद कि उमका बाई समध्यवगायी मुहल्ल के दा एक मकान उडा नहा ले गया।

अपनी गनी के सिरे पर पहुँचकर उसन रिस्मिन्ला कहा और अन्तर प्रकण किया। लेकिन, न जान क्या वही दावारों जिनकी द्वार कभी उसन आँख उठाकर दगन की परवाह न की थी, आज उस स्थान को दोडी। उनकी हँसे उन अपरिचित-मी मानूम



बकि अपनी गुडगुठी छोड़ लोई के आराम को स्थगित कर उस पर लपका, लकिन कुछ छग वाद उसी तेजी के साथ लुत्कता हुआ सीटिया से बापस आ गिरा और कुछ माचकर फिर तम्बाकू पीने लगा ।

नूरू एक बंद से विलास-गृह में दाखिल हुआ । फग पर लाल गद्दा बिछ रहा था, और कम दर कोन में तबियो स सजी हुई एक सफेद चादर । खिडकिया बंद थी और बत्ती जल रही थी । कमका प्रकाश खिडकिया के आग लटकी हुई रंग विरग मोतिया की भांनरो दीवार के साथ टगे हुये एक चौड गीने, कुछेक अघनगी तस्वीरो में छलक रहा था । उसकी रहती सिरक की रजाई ओढे, आखा में हलका सा काजल डाले सिरहाने कुछ फूल रखे हुए चौडी शय्या पर सो रही थी ।

नूरू अपनी सालम टाग क बल खडा होकर वहीशी के आलम में उसे देखता रहा । यदि वह इन समय उस छुरे से काट देता या उसके साथ जा लेटता तो यह दोनो ही घटनायें अनभव न थी । लकिन वह निश्चल खडा रहा । ऐसी परिस्थिति का उमे स्वप्न में भी मामना न हुआ था । बेश्याआ के पास वह जा चुका था लेकिन उनमें से कोई भी इतनी सुंदर न थी जितनी उसकी पत्नी थी ।

हठात् रहती ने आखें खोली । विश्वास न कर सकी और उठ बठी । उसके आतक में अपनी भार्या की भनक नूरू को मिली, उन दिना की जब सडक ही पर वह उसे पीटने लग जाया करता था । पहचान से मुहब्बत और चाह जागृत हुई । चिल्ला उठा

ओ हारमजादी खजीर की बच्ची लुभम इस नापाक कुतियापन के बगर रहा न गया ? ओ तेर बाप की नसल दोखल में जाय । मैं वहा आग में जलता रहा और तू महीं गुनउरें उगती रही । और

पेतर इसके कि अपनी आवाज से अधिकाधिक उत्तेजित होने का पुराना सिलसिला जारी हा जाता और क्रमश नौबत हाथ उठाने पर पहुंचती रहती न रोना शुरू कर दिया । यह राना वास्तविक था या नहीं कवल रहती ही जान । वह कुछ-न कुछ बदल चुकी थी । उसके चेहरे का अलहडपन बदस्तूर कायम था लेकिन अब वह उसस काम लती थी । यह भी जान गई थी कि जितना थोडा काम लिया जाय प्रतिक्रिया अधिक होनी है । जीवन में पहली बार उसे अपने खाविद के प्रति इम धारणा से प्ररित होने का मौभाग्य मिला कि वह बबकूफ है ।

आधा घण्टा बीता । नूरू उमें क्षमा कर चुका था । वह पास बठी रुंध कठ स अपनी अगण्य विपत्तियो का हाल कह रही थी । नूरू सहानुभूति क साथ फिर हिना रहा था । बेगक वह भी सच्ची थी । वह क्या करती ? लोगो ने उमे यह नहीं बताया कि उनक अजीब को किश्तवाड में ले जाकर बंद किया गया था बल्कि यह बताया कि उमें कलकत्ते ल गय हैं । सम्बन्धियो ने मुह मोड लिया खाती कहा में ? पुन भी ऐसा फामर निकला कि साहबी क चकमे में बाकर अपनी मा तक को भूल बंठा । दो बार वह दरिया में बूद पडी लेकिन ददनगीव को लोगो न निकाल लिया । उसके वास्ते और क्या चारा था ? फिर भी उमने किसी काफिर का अभी तक नहीं छुआ, हांकि पमें ज्यादा दत है । पांच बार नमाजें पढती थी ।

घाँछा जो दृष्या सा दृष्या नूरु न पान म न्यामनाई करत दृष्ट कहा त्रिन भव खया बन्ना होगा । गीजूग हालत मोना ही व गुनाहा का नतीजा है करना बटा एमा गवार न निवन्ता । रहना का शरीफ ज्ञानिया का तरत् फिर म मल कपड पन्नन होगे और मह धोना भी दस-बीस दिन व त्रिण म्यगिन करना हागा । मिर म राय डालकर वान मीध व डालन हाग ताकि जमान का बटाग न रह । रहती महमत हो गई उठी और मोध हो वष बन्कर पुरानी हा गई ।

उमक बाद वही दृष्या जिमकी गली मुन्ला मय तव प्रतीक्षा म था । वगम प्रस्तरा जान नागतव के चवारे म भवस्मान् बला की चीर-मुवार गुरु हुई । तमवारें और मोतिया की भातरें गमिया की वारिग की तरह यकायक बाजार म टपक पडी । धाताम्रा ने न बवल म व बच्चे व प्रचड गजन की दाद दी बकि कितवाड स प्राइ हुई कई गालियाँ अपने गळ कोप म जोर ली । प्रस्तरा जान नोगलव का चीत्कार मुहल के दरो दीवार की कम्पायमान वगन लगा । टफ टफ जूनियो की, यपना की छडी से पीटन की आवाजें आन लगी ।

फिर लोगा ने देखा कि वगम नग सिर सीटिया म लुठक कर नीच आ रहा है । उसक पीछे लगडू पलग का एक रगीन पाया हाथ म लिय हुए जेदी स उतरन म मस फन हो रहा है । सडक पर पहुँचते ही वगम एक कोन म सर पटक पटककर लगा विलाप करने ।

नूरु न उस तो वही छोडा अब कितव्यविमून् चारपाई पर आसीन दलाल व सवारे हुए बालो की घामा । सडक पर घमोटकर उसकी खोपडी को ऊबड-खाबन् पत्थरा पर ठोका और कमर म तीन चार घूम लिय । दा क्षण ही म उस सगारहित लोथड की तरह चित कर दिया ।

अब नूरु न वगम को चुटिया स पकडा और ले चला उसका वितस्ता नदी म प्रतिम सस्कार करने । जनता तिनम कई वेगम व प्रेमी रह चुके थ अब बरदारत न कर सके । सकडो की तादाद म लोग जमा हा चुके थे । अब वे तमाशा देखने की वजाय छुडाने के लिए प्राग बडे । स्त्रियाँ घडा पर खडी होकर अपनी कीमती राय प्रकट करने लगी । लेकिन जितना लोग आप्रह करत उतना ही नूरु अपन नशमक इरादा पर कटिबद्ध होना जा रहा था । जब बोलाहल और गमघट अपनी तनाम पुरानी मर्यादाओ को पार कर चुका तो नूरु की छाती ठडी हुई । वही माटे डोल का मी गदे सेव की सी आँखा वाली हतबी वेगम को अपने नरपिशाच नागराई के हाथा स छुडाने के लिए आई और आन की आन म सफल हो गई ।

फिर वहा पुराना घर जिसकी तिकोन छत पर प्याज की खेती थी । नूरु न मतोप की सास ली । रहती के साथ विवाहित जीवन को पुनरारम्भ करने म अब कोई रका बट न थी बशकि रसम पूरी सजीदगी के साथ निभा दी गई थी । रहती न भी मुह से नबली लहू पोछा और देखा कि मोटा का पुलिदा आजारबद म सुरभित है फिर घर के काम म लग गई । नूरु साथवाल घर की छत पर बठकर एक बुजुग नी चित्रम की साभी करने लगा । उसी घर के एक नवयुवक ने बाजार स उसक लिए मलमल की

सप्रेम पगडी ला दी जिसे अपन उही मल कपटा पर मजाकर और रहनी का धार एक लोलुप नजर फेंककर वह अपन नय जीवन की समार को मूचना दन व निग निकल पडा ।

गाम हो चुकी थी । बाजार म भीड बन गई थी । घरा म मे चीड व घुण का खुगडू बन रही थी । नूरु व मन म दा भाव इस समय प्रजनना म उद्दीन थ । एक ता यह कि उसे भूख लगी है और दूसरे यह कि जेन के फाटक म से जा समार इतना सुखमय और बहुमूल्य नजर आता था, वह अभी तक बहृत विगान और पीका जान पडता है । जल म वह कुछा महत्त्वपूर्ण निदचय करके निकला था लेकिन अब उनक प्रतिफलित होने की आगा कठिन सी जान पडनी थी । रहनी व गरीब व लिए उमर रकन म जबरदस्त भूख थी । गायद रात को वह चुपने चुपक उमे फिर उसी तरह माप होकर आन व लिए इगारा कर । लेकिन उसक जीवन का भविष्य ह्यू पर ही अब लम्बिन था । वह कितनी उपेक्षा के साथ कनी काट गया ? गाम हो गई लेकिन अभी तक नहा आया । क्या ही भ्रष्टा हो कि उमे कुछ जिना के लिए जल ही म सान दिया जाय । अभी कुछ गण्टा की आजादी ही काफी है ।

कुछ इसी प्रकार सोचता वह लंगडाना हुमा चला जा रहा है । उसका ध्यान एक खान पीने की दुकान के बाहर पड हुए सडूक की ओर गया । इममे से किमी नडकी व गान की आवाज आ रही थी

चुल हमा रोगे रोगे  
पोगे मति जाना नो ।

नूरु ठहर गया । यह कौन गा रही थी ? उमने दखा कि सडक के किनारे बीस आठवीं वान पर हाथ रखे बडे हुए हैं लेकिन किसी के मुह पर तरस की रेखा तक नहीं कि गानवाली को इस तरह बंद किया गया है । और सडूक उसकी कोठरी के मुकाबल म कितना छोटा था ? इतन म गाना बंद हा गया । दूकानदार न सडूक का ढक्कन खाला और उसम से एक घाती भी निकाली । नूरु लपककर आग बढा और आदर भाँक कर पूछने लगा हनवी कहाँ है ? सभी लोग हँसन लग । इतन म एक पुरान हमजोनी ने उसकी बाह पर हाथ रखा और उमे दूकान के आदर से गया ।

रान व दम बज चुके थे । जब नूरु लडखडाता हुमा दूकान म से निकला । लडकी फिर वही गीत गा रही थी

चुल हमा रोगे रोगे  
पोगे मति जाना नो ।

नूरु न हँसने-हंसन ढक्कना उठाया और आदर भाँक कर फिर रख दिया । लेकिन अब कोई न हँमा । मन्क खाली थी ।

अपने मित्र स विदा लेकर नूरु आहिस्ता आहिस्ता अपन घर की ओर चला । लेकिन साथ ही साथ उसका मन घर की ओर स उचाट होन लगा । क्या रखा है वहाँ ? बीसिया के साथ प्रेम कर चुका है । ह्यू के घर न आने का कारण भी वही है । न जान अब भी किमी यार को बगल म लिए बैठी हो । नगे म आकर किसी की प्रवृत्ति सामसिक

ने जाती है और किसी की सात्विक ।

नूरु वापस लौट पडा । पूरब दिगा म आवाग लाल बलिया व प्रकाग से अगारे की तरह जगमगा रहा था । अभी अमीर कुदल म जनसमूह का बोलाहल मुनाई ने रहा था । नूरु के दिमाग म गराब की मस्ती कुछ बर रही थी । कदम चुस्त करके यह भी अमीर कुदल की ओर चला ।

बड बाजार म भीड सडक के दाना ओर रकी हु थी और महाराज की मोटरें गुजर रही थी । नूरु को भीड म ठहरना पमद न आया । सरकता-गरकता लागा की गालिया आर धकरे जाना हुआ वह पुल के पास पहुच गया । भीड म से निक्लकर वह पाम ही के एक बाग म चिनार के नीचे जा बठा । उमका हाथ उठकर उसकी आखा के सामन आया । उमम सोने की घडी तथा जजीर थी और एक चमड का बटुआ । नूरु ने उम खालकर देखा । पद्रह रूपय थे ।

इनकी तरफ देखता हुआ नूरु हसन लग गया । हँसता गया और घडों को उलट पलट कर रखना रहा । उसकी उगलियाँ अनभ्यस्त होकर भी तनी शिथिल नही हो चुकी । यकायक उसन बटुआ भी और घडी भी घृणा क माय दूर फेंक दी और उगलियो को बन्द-खोल कर सराहने लगा ।

लेकिन उसके मन की बेचनी दूर न हुई । उठकर वह फिर बाजार म आगया । मोटरें गुजर चुका और भीड तितर बितर हो रही थी । नूरु को ऐसा लगा कि उसके मनाविनोद क लिए बनाई गई वस्तुएँ बिखर रही है । और वास्तव म जो लोग एक व्यक्ति को मोटर म गुजरते हुए देखने के लिए घण्टा खड रह और फिर चुपचाप घर चने जायें व और ये ही क्या ?

भीड एक स्थान पर गठ गई थी । एक माटे पटवाला व्यक्ति कभी पुल पर इधर और कभी उधर जाता था । जिधर वह जाता, भीड उसक पीछे जाती । नूरु को पता चना कि उमकी सोन की घडी चारी हो गई है । उसके बाद एक और टोनी एक थाने दार माहब की निगगनी म आ पहुची । इनम स एक का बटुआ गुम हो गया था और एक का कतम एक हमरे व्यक्ति का जेब बट गया था । नूरु पहले ता विम्मित हुआ । फिर उसनी बाँटें पिन गइ । यह अकेल जादूगर का काम नही है । कोई और भी खेल रहा है । पुत्र क नीचे-नीचे करिया अपनी मस्त चाल से वह रहा था । दूगो म हतवियाँ किसी आगामी शाणी क गीत गा रही था । तस्तण सुलेमान पर चाँद अपनी पूरी ज्योति के साथ चमक रहा था । पुत्र के जगन के साथ टक लगाकर नूरु ने गुनगुनाता शुरू किया

‘बुन हमा रोनो रोन

पाग मति जाना ना ।

भीरु आहिन्ना प्राहिन्ना खत्म होन को आई । लगड भी उसकी एक गाथा क साथ साथ पाद चना ।

वह नया जानता था कि वह किम जिगा म जा रहा है या क्या । कभी कभी राह गीरा का तान दे देना उनक बम्पा पर बगल करता लेकिन वह गम्भार सा मुह

बनाकर आग चले जाने, जैसे घर नहीं दफनर जा रह है ।

अब उमे रवाहिश हा रही थी कि घर लौट जाऊँ लकिन एक एक कदम के साथ उम ऐसा प्रतीत होता था कि वह बीस-बीस काम आगे बढ़ रहा है । हबीब खान पर पर नहा होगा । रहती कितना के साथ लेट चुकी है । नापाक औरत । अब भी किसी की बगल म बठी होगी ।

इस उधेडबुन का आखिरी फसला करत हुए नूरु ने तय किया कि वह आज ही रात दूसरी गादी करेगा । रहती और हबीब को भविष्य म शकल तक न दिखायगा । स्त्रिया डूगा म बैठकर उसके गीत गाएंगी और वह सडूक से भी मगीत बरवायेगा । लकिन इमक लिए पसा की जरूरत होगी । हूँ ? पैसो क लिए ही ता वह भीड के पाछे जा रहा था ।

हजुरी बाग के चिनारो के समीप पहुचकर उसन राह बदल ली । बाग क बाइ और तीन चार सफेद कोठिया चाद की घूप म सो रही थी । उही म से एक पर उसकी नजर जम गई ।

कोठी की बगल म एक पेड था । नूरु उसके साथ सटकर खडा हो गया, जैसे किमी प्रयत्ना क गाढ आलिंगन म हो । आहिस्ता स उमन अपनी सफेद पगडी को जमोन पर रगडकर भला किया, और फिर उमे रस्सी की तरह गठ कर बाह क नीचे दाव लिया ।

कोठी के आगे सान फुट ऊँची दीवार थी और उसकी चोटी पर काँच के टुकड जडे हुए थे । मडक की टाह लेकर नूरु बडे आराम के साथ दीवार के पास पहुचा और छाँटा म लुक गया । थोडी देर भिखारिया की तरह उठकर दायें-बायें देखता रहा फिर उठकर उसने पगडी को ढीला किया और काँच के ऊपर जवरदस्त भटके क साथ पटका । बट फौगन बठ गई । स्थान-स्थान पर उमने उसमे गाठें बाधी । इस प्रकार पगडी की दाहगई म नूने समेन कदम रखकर वह सहज ही दीवार पर पहुच गया । वहा म बिजली का तरंग पगडी सीडी उठाकर अदर की ओर फेंकी और फिमलकर बागीचे म आ रहा ।

फिर पगनी खोलकर उसने इम ढग से फला दी जस काई कपडा मूखने के लिए टाना जा रहा हा । उसके एक छोर के नीचे अपना जूना छिया दिया ताकि डूटना न पड ।

मकान क आग एक छोटा सा बरामदा था जिसके गीने के सभी दरवाजे बन्द थे । गाना क बाटकर दरवाजा खोलना असम्भव था क्योंकि नूरु के पास कोई औजार न थे इसलिए वह मकान की पिढली तरफ गया । ऊपर की छत के एक कमरे म बती जन रनी थी और इसमे नौरु बतन माज रह थे । मकान के एक तरफ लकडी की तग सीडी थी जिसका दरवाजा अभी बन्द नहीं किया गया था । यदि फौरन ही उसने इसका फायदा न उठाया तो यह भी बन्द कर दिया जायेगा । नूरु दब पाँव ऊपर चड गया और रसाई पर की खिडकी मे से अन्दर भाँवन लगा । एक नीकर बरतन धो रहा था और दूसरा प्लटा को पोछ रहा था । कम अज कम आधे मिनट के लिए उनके मुह फेरन का सम्भावना नहीं । यह ठानकर नूरु ऐन उनके सामने ~~होकर~~ **बुकर** गंगा और



एक अंधेरे कमरे में प्रविष्ट हुआ। लेकिन सभी उसे एक नौकर के गाने की आवाज अपनी ओर आती सुनाई दी। नूरु एक दम सटकर दीवार के साथ खड़ा हो गया। नौकर अंदर आया। नूरु का कलेजा धड़कने लगा लेकिन नौकर ने बिजली का बटन नहीं दबाया। कोई चीज उठाकर वह फिर बाहर चला गया। नूरु फिर दूसरे दरवाजे से होकर मकान के भीतर जा घुसा। यहाँ एक गली सी थी जिसके साथ साथ साड़ियाँ ऊपर नीचे जाती थीं। पक्ष लकड़ी का था और चिरचिर करता था। लेकिन नूरु हल्के कदमों से ऊपरवाली सीढ़ियों पर जा चढ़ा। फिर अपने हाथों की मदद से जगल पर जोर डालकर तीन छतों का भूतसरी छत पर जा पहुँचा। एक मजिद बाकी थी वह भी चढ़ गया। उसने जांच लिया कि इस मजिद पर कोई नहीं रहता। आश्वस्त होकर वह सीढ़ियों पर बैठकर दम लेने लगा।

सीढ़ियों के दाएँ बाएँ के दरवाजों में चंद्रमा का प्रकाश छलककर अंदर आ रहा था। इसकी सहायता से नूरु ने अपरिचित घर के दाएँ बाएँ नज़र फेरी। सब सुनसान था। नूरु को अपना बहा होना बहुत ही विचित्र सा लगा।

उसका मन चुटकिया लेने लगा। मैं क्यों यहाँ आया हूँ। इसलिए कि मैं रह नहीं सका। मुझे दूसरे के घरों के वह हिस्से देखने की लत पड़ गई है जिन्हें वह स्वयं नहीं देखते। धन खर्च करते हैं मकान बनवाते हैं फिर उन्हें भूल जाते हैं। सुबह उठे काम पर चले गए रात को लौट चिटखनियाँ चढ़ाकर सो गये। कभी इस तरह सीढ़ियों पर बैठकर उठाने चंद्रमा नहीं देखा। वास्तव में मकानों का स्वामी तो मैं हूँ। मैं पास आते ही उनकी दीवारों से मित्रता पदा कर लेता हूँ। मैं उनकी छातियाँ चीरकर चला जाता हूँ और वह मुझे याद करती रहती हैं।

एक सफेद बिल्ली किसी कोने से निकली और उस देखकर भाग गई। नूरु भी सटकर गया। फिर हसने लगा। खुदावाद् ने उसे गहुर की सजा दी।

नौकर अब सो गया होगा यह अनुमान करके नूरु उठा और शनैःशनैः निचनी छत पर उतर आया। यह उसने एक किवाड़ को धकेला और दाखिल हुआ। चंद्रमा की रोगनी कमरे के अंदर आ रही थी। कमरा खाली था। दीवार के साथ एक मेज पर कुछ बोनलें पड़ी थीं और बाकी कमरा भी एक बड़ से मज और कुसिया से पूरा था। नूरु ने एक बोनल खोली और नाक में लगाई। फिर गटागट पाँच दस घूँट पी गया। इसके बाद वह कुसियों से बचता हुआ मायवाले कमरे में पहुँचा। यह भी खाली था। क्या सारा मकान खाली था?

इस कमरे के एक तरफ मज पर कुछ वस्तुएँ पड़ी थीं। नज़दीक आने पर मात्रुम हुआ कि यह तन की बोनलें व कपड़े बुरा इत्यादि हैं। नूरु ने दरवाजा खोलकर देखा। यहाँ उस साने की चार चूड़ियाँ और दो अंगूठियाँ मिलीं। नूरु ने इस बहुत ही अच्छी मंगुल समझा। उसकी भावी पत्नी के लिए जवरा का इतजाम भी सहज ही में हो गया। उह जेब में डालकर उमन दरवाजा को फिर टटाना लेकिन और कुछ न मिला। वापस चोटल बवन उसने देखा कि उसकी टांग कुछ न कुछ लहलहा रही हैं। यह अनुभव करके कि गाराब अब भी ठीक वही वस्तु है जो आठ बरस पहले थी उसने

प्रसन्नता हुई इसलिये उमन पहल कमरे में वापस आकर बाकी बीतल भी समाप्त वा। अब उसे स्थाल आया कि दुलहिन के लिए जेवर तो ल लिये, लेकिन अगर तैल कधी और शीगा भी ल चनू तो क्या हज है। जमाना बदल रहा है। मुझे भी अपने विचार बदलन चाहिए। मैं अपनी दुलहिन को वेस्थाओं में भी सुंदर बनाकर रखूंगा और वह किसी दूसरे मंद को और देखेगी भी नहीं। केवल मुझे प्यार करेगी।

अब निघडक होकर उसन बिजली का बटन दबा दिया। रोशनी ने उसकी आंखों का चुधिया दिया। उसने देखा कि दीवारों से सटी हुई दो-तीन आत्मारियाँ भी हैं। वह खना रकता उनके पान पहुँचा और किवाड खोल दिये। देखा कि आत्मारियाँ गिल्ब और उन के मुलायम कपड़ों से लदी पड़ी हैं और उनमें अत्यावक गंध आ रही है। उसने कपड़ों पर फेंकन शुरू कर दिए। फिर कधी शीगा लेन ड्रेसिंग रूम पर पहुँचा। गीगिया के बीच में एक चाँदी की छोटी सी अति सुंदर, कादमोरी मुग्गादानी पर उसकी आँख पड़ी। उसका दिन बाग-बाग हो गया। अगर दुलहिन सजी धजी हानी चाहिए तो दूल्हा का शृंगार भी तो लाजिम है। कपड़ों के ढेर के दर नियाँ आईना अपने सामने रखकर वह बठ गया और 'गंगा आँखा में सलाई फेरन।

दूर में पहरेदार की आवाज उसके कानों पर पड़ी 'खबरदार ! खबरदार हो ए ' यह नूर की बड़ी मुसीबी लगी विदेप कर हो ए वाला हिस्सा, जैसे पहरेदार न केवल उसी के मनोरंजन के लिए निकाली हो बडे आराम से उसने अपने नेत्रों में सुरमा डाला और कोशिश की कि आँखा में ही पडे।

पहरेदार की फिर आवाज आई।

खबरदार हो ए ?

नूर का फिर बहुत आनंद आया। बच्चा की तरह नकन उतारकर उसने भी ऊँचे स्वर में पुकारा

खबरदार ! खबरदार हा ए ?

मुहल्ल का पहरेदार इस प्रतिध्वनि को सुनकर बहुत सन्तुष्ट हुआ। कलाविदी को कलाविदा का अभिनय, पाकर प्रसाहन मिलना है। उसने लट्टु किसी दीवार के माथे पटककर एक नय ढंग से ललकारा

हट हट अहहहह खबरदार हो ए ?

शहर से भी प्रतिध्वनि हुई

हट हट अहहहहह खबरदार हा ए ?

लेकिन साथ ही एक दारुण चोत्कार भी उठा। बजीर-मान माहब के बगले से पवराई हुई आवाजें आनी शुरू हो गईं। पहरेदार भागा और फून में छुप हथ काँटे का तनाग में, फाटक बूदक मकान के ऊपर घुसा। घुसते ही उसने एक फायर बन्दूक का आकार में किया। निचली छत पर बजीर माहब और उनका कुटुम्ब बरामते में खड़ा बाँध रहा था। ऊपर से लगातार आवाजें आ रही थी

हट हट अहहहहह खबरदार हो ए ?

हट हट अहहहहह खबरदार हो ए ?

# सौ मील की दौड़

वलवन्त गार्गी, १९१६

---

पंजाबी में वलवन्त गार्गी की प्रतिष्ठा पहले एक नाटककार के रूप में बनी और अब उन्हें पंजाबी का प्रमुख कहानीकार भी स्वीकार किया जाता है। हिन्दुस्तान टाइम्स द्वारा आयोजित सावभाषिक कहानी प्रतियोगिता में इस संग्रह में संग्रहीत कहानी सौ मील की दौड़ पुरस्कृत हो चुकी है।

गार्गी ने भारतीय रंगमंच की दृष्टि से महत्वपूर्ण काम किया है। अपनी बहुचर्चित कृति 'रंगमंच' पर उन्हें साहित्य अकादमी का पुरस्कार भी प्राप्त हो चुका है।

---

हम सुभक उठा रहा था कि एक दिन में ही सभी गावों का वस सूचना भेजी जाय कि बल शाम को जिला किसान कमटी की मीटिंग हो रही है। न कोई तार घर, न टेलीफोन न मोटर और न चारी। समीपवर्ती गावों का कोई सड़क भी तो नहीं जानी थी—बस चारों ओर जंगल, रेत और टील थे।

एक कच्चे काठे में जहां रात के समय लगडा हारमोनियम मास्टर नदलान रत्ना था और जा दिन के समय जिला किसान कमटी का दफ्तर बन जाता था हम अब दम बारह आदमी बैठे हुए सलाह मगाविरा कर रहे थे कि इस आकस्मिक मीटिंग की सूचना सभी गांवों में कैसे भेजी जाय।

मरे चारों ओर घनी कड़ी दाढ़ियों वाल जाट रंग विरग साफे धाँने जाँ जोर से बातें कर रहे थे। वह तरह-तर्ह की रायें दे रहे थे। एक कोलाहल-सा मचा हुआ था। किसी को काम की बात सूझती नहीं थी।

सहसा एक धीम-स स्वर न हम चौंका दिया— जी मुझे दा यह पाँचवाँ मैं पक्का

आता हूँ मिनटा म ।'

बास-बादस वष का एक युवक, जिसकी भर्में भीग रही था, सामन खड़ा था—धूप और वर्षा स मटियाला कुत्ता, और पैदल लगा गाजर रंग का जाँघिया ।

मैने उसकी आर देखा और पूछा— तू किस गाव म पकड़ा आयागा ?

'जी सभी गावो म द आऊंगा ।'

सभी गावो म ? तुम्हे पता है कि हमारी मीटिंग कन गाव को है ?

हा मुम्हे पता है ।' उम्ने कहा— 'रात ही रात चक्कर लगा आऊंगा । कौन सा समय लगना है ? मुस्किल स दम-वारह ही तो गाँव हैं—माठ काम म ऊपर फामला ता हागा नही ।

मैन उमकी और पुन दया । उमके हाठ माट माट थे और उन पर मुरमइ रंग की भर्में भीग रही था । घोड़ का आला जसी उमकी आर्ये निरछा निरछी जग नग लोह जसा रंग ऊँची गदन चीते जसा पनला पेट और डान जम धुटा । उमकी उभरी हुई पिण्डलिया और जाघो पर काई बान नही था । माटनियाँ मुदी हुई था । साठ काम का फामला यह कुछ ही घटा म कम तय कर लेगा ? इमका पता भी है या नही कि यह क्या कह रहा है ।

इतने म बूटा इद्रसिह वाला— 'यह तो अपना बूटासिह है—भागू गाव का । आपका पता नही ? सौ मील दौड़ लना है यह ता ।'

सौ मील !

हा सौ मील ! दौड़ता क्या है बस हवा का फाकता है ।

मुम्हे बड़ा अचरज लगा । सौ मील ! भला यह भी कोई मानन वाली बात है ।

इद्रसिह न मुभमे पूछा— आपन इमम पटने कभी नही सुना बूटासिह का नाम ?

'कभी नही ।

'ना बूटासिह की यह बात तो सभी जगह मगहूर है । इद्रसिह ने कहना शुरू किया— यह मेरे गाँव का है—सतो का पुत्र । इसका बाप चम्बा तामीरदार क खत का रखवाला था । बूटा उसी खेत म जन्मा । खेत के किनारे फूम की एक छाटा भी भोपडा म ही सारा कुटुम्ब रहता था । चम्बा फमल को मही और जगनी जानवरा मे वचान के लिए राती को खेता की रखवाली करता था । एक रात का जब जाहरा जम रहा था उसकी ठंड लग गई और तीन चार दिना क ऊवर क बाद बह मग गया । इमक बाद सतो अपन पुत्र क साथ खेत म ही रहने लगी । बूटा की बाल्यावस्था मटिया गाण्डा और जगली जानवरा के पीछे भागते हुए गुजरी । बह जागीरदार क बड़ना क पीछे दौड़ता और उनम आग निकल जाता । घाना और ऊँटा क पीछे दौड़ता-दौड़ता पूरा जवान हुआ । नेही अधिक मे अधिक चार काम दौड़ सकती है गीण्ड आठ कोम घाना चानीस और तज स तज ऊँटनी पचास कोम स अधिक नही पर बूटा सौ मील दौड़ सकता है—एक ही सास म ।

इद्रसिह न सभी पचिया बूटे को दे दी और सभी गाँवों का नाम और पता ठिकाना बना कर उससे कहा—' बूटा यह पचिया मव गाँव म बँटि आ । जा मर बहादुर

घेर ! हवा हा जा ।

दूसरे दिन बारह क बारह गाँवों के सक्तर (सेक्रेट्री) गाम को एन वक्त पर मीटिंग के लिए पहुँच गए । मैंने सबसे बारी बारी से पूछा, आपके पास सक्तेस लेकर कौन गया था ?

सबने एक स्वर में उत्तर दिया— बूटासिंह ।

मीटिंग के पदचात् मैं बूटासिंह से मिला । लालचन्द बकील जिसने भुजारी के कई मुकद्दम बगर फीस के लड़े थे हेडमास्टर नत्थूराम जा अपने जमाने में क्रिकेट का बहुत अच्छा खिलाड़ी था अजमरसिंह रिटायर्ड जज और कस्ब के तीन चार अथ सम्मानित व्यक्ति इकट्ठे हो गए और बूटासिंह के साथ बातें करने लगे । हम उसकी स्फूर्ति और गति पर विस्मित खड़े थे और हम इस बात का दुख ही रहा था कि इतने आरक्ष्य जनक दीर्घ वाले को इस गाँव से बाहर कोई नहीं जानता था ।

आखिर जज ने साचकर कहा— अगर बूटा सौ मील दौड़ सकता है तो दुनिया भर की गाहरत हासिल करने में इसको कोई ताकत रोक नहीं सकती ।

एक बूटे हवलदार ने कहा— 'महाराजा पटियाला क्रिकेट और खेलों के बड़े गोवीन है । उनकी फीज में मामूली आदमी जो थोड़ा-सा अच्छा खिलाड़ी था, अब कप्तान या मजर बन गया है । अगर हम किसी तरह बूटासिंह की बात उनके कानों में पहुँचा दें तो वह जरूर बूटासिंह को विलायत भेज देंगे ।

एक चालाक अर्जिनवीस बोला— किसी ने देखा भी है बूटा को सौ मील दौड़ते हुए कि सभी सुनी-सुनाई बाता पर हवाई किले खड़े कर रहे हों ?'

हेडमास्टर ने राय दी— क्या न पहले यही इसकी दौड़ करवा लें । इससे गायब कुछ रुपये भी इकट्ठे हो जायेंगे । बड़े खेत का भेरा पूरे चार सौ गज है । अगर बूटा इसमें चार सौ चक्कर लगा लें तो सौ मील हो जायेंगे । इसके बाद ही इसके भविष्य के बारे में मोक्ष विचार सकते हैं ।

यह गय सभी का पसन्द आयी ।

मैंने बूटा में बड़ सत में दौड़ने के बारे में पूछा । उसने अपनी छाँसें झपकी और बचन सुनना कहा— 'जसा आप कहें ।'

माझू महार ने सब गाँवों में डानी पीट दी और एतान कर लिया— इतवार को सुबह मान बज बूटासिंह की सौ मील दौड़ होगी । गाँव के सभी लोग बड़ सत में यह मज सुनने के लिए घायें डम डम डम ।

रविवार को प्रातः ही बड़े सत में बूटासिंह की दौड़ के लिए तहमान के चपरसी न चून में लौड़ने वाली जगह पर निगान लगा लिया । बूटा न जाधिया और मरियात रम का कुर्ता पहना हुआ था । मिर पर लम्बे कान बाना का जूहा करके उसके चारों धार बसने के लिये तैयार किया था ।

मान बज हेडमास्टर नत्थूराम ने, जा रफरी बन कर गया था मीठी बजाई और बूटा न लौटना शुरू किया ।

सारा घाट बज तक धान रह । नत्थूराम हेडमास्टर बग हुमा बूटा का दीहता

देखता रहा। बूटा एक मास, एक रफ्तार में मुह बढ़ किये मनीन की तरह खेत के चारा ग्रार दौड़ रहा था। स्त्रिया आर खेत की भेड़ पर बठ गइ। वे बिवाह-गाने और सग-मन्वधिक्यो की चुगलिया करती रही और बूटासिंह को लटटू की भाँति घुमने देखती रहा।

गाम तक वह इमी प्रकार दौड़ता रहा। साटे छ बजे ही (निश्चित समय में आधा घटा पूव हा) उमन खेत के चार सौ चक्कर पूरे कर दिये। सूरज की हूबती हुई लालिमा में बूटे के विखरे वालों की लट्टें रक्तिम पत्थो की भाँति लगती थी। उसकी छाया घाकना की तरह चल रही थी और उसके इम्पात जमे शरीर पर पसीन की धारा बह रही था।

जब उसने दौड़ खत्म की ता लोगा न नाग स उमका स्वागत किया और उसको बचा पर उठा कर सारे गाव में उमका जुलूस निकाला। बूट ने सब लागों के आग हाथ जोड़ कर कहा— 'यह सब बाहगुरु की कृपा है। उसकी मेहर हृडिडयो में दौड़ रही है। इमी कारण मैं सौ मील दौड़ सका हूँ। अगर वही मुझे एक बार कोई लण्डन भेज दे तो मैं दौड़ में पिछना रिवाट ता हूँगा।'

हमने बूट की खबर उदू और पजारी के अक्बारी में भेज दी और महाराजा पणियाता से उसकी भेंट करवान के तरीक विचारने लगे।

एक दिन बूटामिह न कहा— 'मरा एक रिश्तदार फरीदकोट में डयोडी अफसर है। उसकी महाराजा तक बहुत पहुँच है। अगर मैं उसके पास जाऊँ तो वह मुझे जल्द महाराजा साहब से मिला दगा। फिर शायद कोई राह निकल आये।

एक सप्ताह बाद बूटा उस आदमी से मिलन फगीदनाट चला गया।

इसके बाद मुझे पता लगा कि बूटा पटियाला चला गया है। कई लोगों की चिट्ठियाँ लेकर और बढ़िया में मिलन-जुलन घन्त में वह महाराजा साहब के ए० टी० बार्ग तक पहुँच गया जिसने बूट की महाराजा साहब से जल्द से जल्द मुलाकात करवान का वायदा किया।

इसने परचान बहुत सी घटनाएँ हुई। मैं लाहौर अपने काम में व्यस्त रहा, इस लिए काफी समय तक गाव न जा सका। फिर फमाद फूट पड देश का विभाजन हुआ और मैं लिला घा गया। इसके बाद बूट को काफी भ्रमों तक कोई सूचना नहीं मिली।

१९४८ की बाप है। सरदार पटन रियामना के महाराजाघा को भारत की यूनियन में सम्मिलित करने के लिए दगा का दौग कर रहे थे। मैं उस दिन पटियाला में था। बूट नम्बा जुगूम था। सरदार पटन और महाराजा साहब चादी की बग्घी में साथ साथ बठे हुए थे। भीड़ में एक स्थान पर मैं बूटासिंह का भी खडे हुए देखा।

जब सरदार पटल की सवारी गुजर गयी ता मैं बूट में मिला और पूछा कि उसकी महाराजा से मुलाकात का क्या हुआ ?

उमन उत्तर दिया— 'इस समय ता सरदार पटल दिल्ली से आये हुए हैं। महाराजा और बाकी सभी अहमदार व्यस्त हैं। जब महाराजा का अक्बारा मिलेगा तो वे मुझे मिलन का अवसर देंगे।

उमकी पत्नियाँ म काफी ममय प्रतीगा बरनी पड़ी । हर वक्त कोर् न काई जरूरी काम महाराजा साहब को धरे रहता था । महाराजा क १० डी० काँग न बूट म कहा कि बार बार गाय म धान-जाा की धरणा यही मर्यादा है कि वह पत्नियाँ म कोई छापी माटी नौकरी कर ल । पहनी फुरमा म उमकी महाराजा गान्ध म मुलाकात करवा दा जायगी और फिर वह अंतर्राष्ट्रीय गेना म भज निमा जायगा । यह बात उम को तब गयी और वह सरकार क सम्मानान म श्रदान के तौर पर नौकरा करन लगा ।

कई बार वह बटा-बटा उवना जाता ता बाजार या ममीपवती मण्णी का चक्कर लगान चला गना और कई-कई घण्टे घूमने फिरने क पन्चान चोत्ता । एक दिन वह पशुघा की मण्णी म जा घुमा और गाम का चोत्ता । मारा दिन ड्यूनी म अनुपम्यन रहने क कारण लम्बी-गान क अफगर तक उमकी गिरायत पहुच गयी और इसक बात बडे अफगरा तक भी धान पहुच गयी । बूट की पेनी हुई । उम पर मूय पन्कार पना और अतावनी दो गयी कि यदि भविष्य म वह गिना बनाय अपनी ड्यूटी छोडकर बहा गया तो उसका नौकरी म जवाब भिन जायगा । यदि इस प्रकार वह नौकरी म निवान दिया गया तो उसक नाम का घप्पा लग जायगा और उसको कभी भी अंतर्राष्ट्रीय देगा की दीडा क मुकाबल म नही भजा जायगा ।

इस दुपटना मे बूटा सहम गया और ड्यूटी पर पुर्नी स हाजिर रहने लगा ।

एक वप के उपरात मुझे एक मुकदमे म गवाही देने क लिए पटियाना जाना पडा । सारा दिन बचहरी भुगता कर थका-हारा जब मैं किसी ताग या रिक्शा की प्रतीगा म खन था तो सामन स धीरे धीरे एक रिक्शा आता दिखाई दिया । उसके साथ-साथ छड़ी टकती हुई एक बुनिया चली आ रही थी । जब रिक्शा निकट आया तो मने उसम बडे हुए बूटासिंह को पहचान लिया ।

मुना भई बूटासिंह ! क्या हाल है तुम्हारा ? मैंने पूछा ।

वम जी वाहेगुर की कृपा है । महाराजा साहब मर्मी के कारण वाहर गये हुए है । जब लोटिंग तो उनसे मेरी मुलाकात होगी । मरा नाम सब म ऊपर है बस पहना नाम मेरा है मुझे पता लगा है कि असूज म दौडने वालो की एक टीम लणन जा रही है । पूरी उम्मीत है महाराजा साहब मुझे अवश्य चुनेंग और भेज दगे । मा उसकी और देखा और पूछा कि वह रिक्शा मे क्यों बठा है ।

बूटी ने दीध निश्वास छोडते हुए कहा— 'अरे बेटा ! मरा बूटा तो आजान पछी था । यहाँ इस लकडी के स्टल पर बांधकर बठा दिया गया है । इसकी टागा म तो बिजली थी बिजली ! कस तरह बडे-बडे इसकी जाँघो और पिण्डलियो का लहू घुटना म इवटठा हा गया है । देख तो तनिक इसक घुटने कस सूजे हुए हैं । हायरी दया !

मन बूटे की ओर देखा । उसके डाल जस घुटने अब उपला की तरह फूल हुए थ । उसको इस प्रकार रिक्शे म एक अपाहिज की भाति बडे हुए देख कर मरे कलज म एक कसक सी उठी ।

रिक्शा धीरे धीरे चलता हुआ आग बढ गया । मैं तब तक वही खडा माँ बटे को देखता रहा जब तक वे दोना दूर—सडक के मोड को घूमकर मेरी आला स ओभन न चो गये ।

# लिखतुम लाजवन्ती

करतारसिंह दुग्गल, १९१७

पंजाबी कहानीकारों में दुग्गल अखिल भारतीय श्यानि क लेखक हैं। पंजाबी लेखकों में उन्होंने सबसे अधिक कहानियाँ लिखी हैं और वस्तु तथा शिल्प की दृष्टि में सबसे अधिक प्रयोग किए हैं।

सबेर सार पिप्पल पत्तियाँ और कुन्नी कहाणी कहिंदी गइ दुग्गल के पहले दौर के कहानी-संग्रह हैं। अगले सात साल 'नवा घर' और 'नवा धाम' दूसरे दौर के। अगले सात साल संग्रह की सभी कहानियाँ शैली के विभाजन से सम्बन्धित हैं और गहरी मानवीय पाँखा में उत्पन्न सफ़्त कहानियाँ हैं। तीसरे दौर में 'करामात', 'गोजर' और 'वाले भरे' 'इक छिट चानण दी आदि कुछ कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए हैं। मानिसा वाले शीपक से दुग्गल का एक कहानी-संग्रह हिंदी में भी प्रकाशित हो चुका है।

सन् १९६५ का साहित्य अकादमी पुरस्कार दुग्गल को उनके नवीनतम कहानी-संग्रह 'इक छिट चानण दी' पर प्राप्त हुआ था।

संग्रहित कहानी लेखक की बहुप्रशंसित कहानी है।

'अग्नि न मृत्ती का मीरे अग मुहे मुडि जाद ।

भाईजी ने अपना फटी हुई आवाज में फरीजी के आँसू का पहरा पढ़ना पढ़ा । फिर धीरे बंद कर ली और फिर उसको दाहराया । तामरी बार फिर गाया एक नया म एक सप्तर म ।



उसका पटियाला में काफी समय प्रतीक्षा करनी पड़ी। हज़ वजन बोर्ड न कोई जरूरी काम महाराजा साहब को धरे रहता था। महाराजा व १० डी० फींग न बूटे में कहा कि बार बार गांव में आन-जान की अपेक्षा यही अच्छा है कि वह पटियाला में कोई छाटी मांगी नाकरी कर ल। पहला फुरमान में उसकी महाराजा साहब में मुनाफा करवा दी जायगा और फिर वह अंतर्राष्ट्रीय सेना में भर्ज किया जायगा। यह बात बूट को बच गयी और वह सरकार व सम्मीमान में दरबान के तौर पर नौकरी करन लगा।

वई बार वह बटा-बटा उकता जाता तो बाजार या समीपवर्ती मण्ठी का चक्कर लगाने चला जाता और कई-कई घण्टे घूमने फिरने के पश्चात नीतता। एक दिन वह पगुआ की मण्ठी में जा घुमा और गाम को लौटा। सारा दिन ड्यूटी में अनुपस्थित रहने के कारण उसी खाने के अपहरण तक उसकी गिनायत पहुच गयी और उसके बाद बड़ अपहरण तक भी बात पहुच गयी। बूट की पेगी हुई। उस पर खूब फटकार पड़ी और शैतानी दी गयी कि यदि भविष्य में वह बिना बताय अपनी ड्यूटी छोड़कर गया गया तो उसका नौकरी से जवाब मिल जायगा। यदि इस प्रकार वह नौकरी से निकल लिया गया तो उसके नाम को धरवा लग जायगा और उसको कभी भी अंतर्राष्ट्रीय दंगा की दौडा में मुकाबल में नहीं भेजा जायगा।

इस दुषटना में बूटा सहम गया और ड्यूटी पर फुर्ती से हाजिर रहने लगा।

एक बप के उपरांत मुझे एक मुकदम में गवाही देने के लिए पटियाला जाना पडा। सारा दिन बचहरी भुगतता कर बका-हारा जब मैं किसी ताग या रिक्शा की प्रतीक्षा में खडा था तो सामने से धीरे धीरे एक रिक्शा आता दिखाई दिया। उसके साथ साथ छत्ती टक्ती हुई एक बुडिया चली आ रही थी। जब रिक्शा निकट आया तो मैंने उसमें बठे हुए बूटासिंह को पहचान लिया।

मुना भई बूटासिंह 'क्या हाल है तुम्हारा?' मैंने पूछा।

बम जी वाटगुरु की कृपा है। महाराजा साहब गर्मी के कारण बाहर गये हुए हैं। जब लौटेंगे तो उनसे मेरी मुलाकात होगी। मेरा नाम सब में ऊपर है बस पहला नाम मेरा है मुझे पता लगा है कि असूज में दौड़ने वालों की एक टीम लण्डन जा रही है। पूरी उम्मीद है महाराजा साहब मुझे अवश्य चुनेंगे और भेज देंगे। मैं उसकी ओर देखा और पूछा कि वह रिक्शा में क्यों बठा है।

बूडा न दाध निश्वास छोड़ते हुए कहा— अरे बेटा। मेरा बूटा तो आजाद पछी था। यहां इस लकड़ी के स्टल पर बांधकर बठा दिया गया है। इसकी टांगा में तो बिजली थी बिजली! उस तरह बठे-बठे इसकी जाघो और पिण्डलियों का लहू घुटना में इकटठा हो गया है। दख ता तनिक इसके घुटने कैम सूखे हुए हैं। हायरी दया!

मैंने बूटे की आर देखा। उसके डाल जस घुटने अब उपला की तरह फूल हुए थे। उसका इस प्रकार रिक्शा में एक अपाहिज की भांति बठे हुए देख कर मेरे कनेज में एक कसक-सी उठी।

रिक्शा धीरे धीरे चलता हुआ आग बढ़ गया। मैं तब तक वही खडा मा बटे की देखता रहा जब तक व दानों दूर—सड़क के मोड़ को घूमकर मरी गाँवों से ओभन न हो गये।

# लिखतुम लाजवन्ती

करतारसिंह दुग्गल, १९१७

पंजाबी कहानीकाग मे दुग्गल अखिन भारतीय ह्यानि क लेखक हैं। पंजाबी लेखकों मे उन्हान सबसे अधिक कहानिया लिखी हैं और बस्तु तथा गल्प की दृष्टि से सबसे अधिक प्रयाग बिच हैं।

सबर सार पिप्पल पत्तिया और कुडी कहाणी कहिंदी गई दुग्गल के पहले दौर के कहानी-संग्रह हैं। अग लाग वाले नवा घर और नवा आदमी दूमरे दौर के। अग लाग वाले संग्रह की सभी कहानिया दश के विभाजन मे सम्बन्धित हैं और गहरी मानवीय पीडा मे उत्पन्न सपन कहानिया हैं। तीमरे दौर मे करामात गाजर और पारे मरे इक छिट चानरा दी आदि कुछ कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए हैं। मोतिया वाले शोषक मे दुग्गल का एक कहानी-संग्रह हिन्दी मे भी प्रकाशित हो चुका है।

सन् १९६५ का साहित्य अकादमी पुरस्कार दुग्गल का उनक नवीनतम कहानी-संग्रह इक छिट चानरा दी पर प्राप्त हुआ था।

संग्रहीन कहानी लेखक की बहुप्रशंसित कहानी है।

‘अजन न गुती कच सिउं अग मुड मुडि जाद ।’

भाईजी न अपनी पटी दुई आवाज मे फरीदजी क दरार का पहना पत्त अनाया ।  
फिर धीरे बंद कर भी और फिर उसकी दोहराया । तासगी बार फिर गाया एक नग  
मे, एक सहर मे ।

## पजावी की प्रतिनिधि कहानियाँ

उमको पटियाता म काफी समय प्रतीणा करनी पडी। हर वक्त कोई न कोई जरूरी काम महाराजा साहब की धरे रहता था। महाराजा क ए० डी० बगि न बूट म बहा कि बार बार गाँव स भ्रान-जान की भ्रपणा घरी भ्रच्छा है कि वह पटियाता म कोई छोटी माटी नौकरी कर ल। पत्नी पुरसन म उमकी महाराजा ताज म मुनाकान करवा दी जायगी और फिर वह अंतर्राष्ट्रीय मंत्रा म भज किया जायगा। यह बात उर को नच गयी और वह सरकार क सम्गीताने म दरबान क तौर पर नौकरी करन लगा। कई बार वह बटा-बटा उवता जाता ता वाजार या समीपवर्ती मण्गी का चक्कर लगाने चला जाता और कई-कई घण्ट घूमन फिरन क परवान जोता। एव तिन वह पगुमा की मण्गी म जा घुमा और गाम का जोता। सारा तिन च्यूटी म अनुपमियन रहने क कारण उसी खाने क भ्रपणर तब उमकी गिरायत पहुच गयी और इसक बाबूत बड़ भ्रपमरा तब भी बात पहुच गयी। बूट की पेगी हुई। उम पर मूज पत्कार ली और चतावनी दी गयी कि यदि भ्रिप्य म वह जिना वताय भ्रपनी च्यूटी छोडकर बहा गया तो उसको नौकरी स जवाब मिल जायगा। यदि इस प्रकार वह नौकरी स निकार दिया गया तो उसक नाम का भ्रजा नग जायगा और उसको कभी भी अंतर्राष्ट्रीय देगा की दौडा के मुकाबल म नही भजा जायगा।

इस दुघटना से बूटा सहम गया और च्यूटी पर पुर्ती स हाजिर रहन लगा। एक वय क उपरात मुके एक मुकदम म गवाही देने क लिए पटियाला जाना पडा। सारा तिन कचहरी भुगता कर थका हारा जब मैं किसी ताग या रिक्वा का प्रतीणा म खडा था तो सामन स धीरे धीरे एक रिक्वा आता लिताई दिया। उसके साथ माय छडी टकती हुई एक बुनिया चली आ रही थी। जब रिक्वा निकट प्राया तो मैंने उसम बठे हुए बूटासिंह को पहचान लिया।

मुना भई बूटासिंह! क्या हाल है तुम्हारा? मैं न पूछा।

वस जी वाहेगुरु की कृपा है। महाराजा साहब गर्मी के कारण वाहर गये हुए हैं। जब लौटेंगे तो उनसे मरी मुलाकात होगी। मेरा नाम सब से ऊपर है वस पहना नाम मरा है मुके पता लगा है कि असूज म दौडने वालो की एक टीम लगन जा रही है। पूरी उम्मीद है महाराजा साहब मुके अवश्य चुनंग और भेज देंगे। मा उसकी और देखा और पूछा कि वह रिक्वा म क्यों बठा है।

बूटी न दीघ निश्वास छोडते हुए कहा— अरे वेटा। मरा बूटा तो आज्ञाद पडी था। यहा इसे लकडी क स्टूल पर बांधकर बठा दिया गया है। इसकी टांगा म तो बिजली थी बिजली! उस तरह बठे-बठे इसकी जाँघो और पिण्डलियो का लहू घुटनो म दबटटा हो गया है। देख तो तनिक इसके घुटने कसे सूजे हुए हैं। हायरी दया!

मन बूटे की और देखा। उमके ढाल जस घुटने अब उपला की तरह पून हुए थ। उमका उस प्रकार रिक्वा म एक अपाहिज की भाँति बठे हुए देख कर मेरे कलज म एक कमक-सी उठी।

रिक्वा धीर धीरे चलता हुआ भाग बढ गया। मैं तब तक वही खटा मा वट को देखता रहा जब तक के टाना दूर—सडक क मोड को घूमकर मरी धाँखो स द्योभल न हो गय।

# लिखतुम लाजवन्ती

करतारसिंह दुग्गल, १९१७

---

पंजाबी कहानावागे म दुग्गल अखिल भारतीय ख्याति क लखतार हैं। पंजाबी लेखका म उहों सवम अधिक कहानिया निखी हैं और वस्तु तथा गल्प की दृष्टि म सवम अधिक प्रयोग किय है।

सवेर सार 'पिप्पल पत्तिया' और जुडी कहाणी कहि दी गई दुग्गल के पहले दौर के कहानी-संग्रह ह। अग खाण वाले नवाँ घर और नवा आदमा दूसरे दौर के। अग खाण वाले संग्रह की सभी कहानिया दंग क विभाजन म सम्बन्धित ह और गहरी मानवीय पीडा से उत्पन्न सफ्त कहानियाँ हैं। तीसर दौर म करामात गाजर और 'पारे मरे इक छिट खानण दी' आदि कुछ कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए हैं। मोतियो वाले' गोपक से दुग्गल का एक कहानी-संग्रह हिंदी म भी प्रकाशित हो चुका है।

सन् १८६५ का साहित्य अकादमी पुरस्कार दुग्गल का उनक नवीनतम कहानी-संग्रह इक छिट खानण दी पर प्राप्त हुआ था।

संग्रहीत कहानी लेखक की बहुरंगमित कहानी है।

---

पान न सुनी कन मिउ अग मुड मुडि जाइ।

भाईजी ने अपनी फटी नुइ धावज में फरीदजी के दनाक का पहना पद बनाया। फिर धाँचें बन्द कर ली और फिर उसको लाहराया। तीसरी बाग फिर गाया एक नग म एक सफर म।

## पत्राची की प्रतिनिधि कहानियाँ

दूर पीछे महिनाघा की मगन म घाटना घाई बँटी हुई मात्रवती का हृदय जग बच गा गया। एक था एक एक घर मानो उगत था म चुभ सा गया। उगत जीवन क सनादग बग बंधारपन म ही काज निय था। कभी उगत जावन म काई बन न घाया। तिय नियमबूदन वर राना बना गुणारे घाता रहा। गार के गार पाठ बचपन म ही उगत कठम्य था। कभी कियों की तरफ उगत घांग उठाकर नहा रहा। एक म दूसर जान मच कभी उगतकी घावाज नहा पहुँचा। घातन कंधारेतन का सम्भानन सम्भानन डबन-डबन उगतकी घोड़नियाँ कण कण जाता।

प्रातः प्रभुत की बजा कभी पुग घापरा हाता नि का उठ जाता घात जाश हा घात गर्मी। नहा गार पाठ भी करती जाती थी घोर दूध-रहा घूँघ घोर का काम भी निपटानी जाता थी बटवों म घोगारा म घांगना म भाद-मुठार दनी घाता माटी घाता की घारा तरफ गंधारती-संभानती। फिर उगत घात घात भाई-बहन जाग तात। उनको यह साताती-मवारती। घोर फिर राती-मज्जी क काम म लग जाता। रापहर म घात लकर बठ जाती कगीन भी घुन कर लता। पिघन पहर उगर पगुमा क चार पानी का प्रबोध करती। फिर रात की राती-गान का काम। माने स पान बच्चा का नेवपरिया की कहानियाँ घोर इग तरह पना नहा बच उगतकी घातन गत जाती। टीक इसी तरह एक मगीन की मानिण उसन घपनी पूरी डिगगी बिना ती थी।

—घरी लाजो गधिये तू तो भूमो क भाव ही जाण्यो। —उसकी पास पडोस की सानियाँ उग चिडाता।

—माँ रोंड पदा किय जाती है घोर लडकी बचारी का इन बुबुरमुसा का पालन करन म लगा रखती है। कुछ घृदाए लाजवती को हर वकन काम म व्यस्त देखकर बड़बडा दती।

गाँव क जवान छावरे उसक महनत से कमाय हुए गरीर घोर घण्टन कुभारेपन की आचपक स्मूलता स डरते हुए उसकी सिहनी पुकारत थे घोर वस भी उनम मगहूर था कि एक बार इसने पीछे पीछे गाँव का एक लडका इनकी एकात हवेली म पुस गया। लाजवती न हीला किया न दलील उसको गाय के पगहे म बाचकर भूसी बाल कोठे पर दे फँका। तभी स इसने ब्यक्तित्व से डरता कोई भी ब्राल उठाकर इसकी घोर नही देखता था।

लाजवती को माता पिता बहन भाई पास पडोसी भाने जान बाल सगे सम्बन्धी सभी भरपूर सरकार देते थे। कभी किसी को शिवायत करन का भवसर वह न देती थी। न ही कोई उसकी कही हुई बात या विरोध करता। घर म से कुछ निकाल कुछ डाल स्याह करे सफेद करे सबकी वह मालिक थी। घर म से कुछ निकाल कुछ लाजवती को स्नून भी भेजा गया था। गाँव का स्कूल असल म गाँव का पुस द्वारा हा था जहा वह सिप छोडा बहुत पढना घोर दूटे पूटे दो चार अक्षर लिखना ही सीख सकी इसत ज्यादा नही।

गम्बी सी 'याख्या क बाद कि कत का अय इस चरण म पति परमेश्वर है घोर

माने का अभिप्राय है उसकी भक्ति करना, भाई जी ने पुनः इस चरण को अपनी पट्टी हुई आवाज में गाया ।

‘अग्न न सुनी कत सिर्जे अग मुड मुडि जाइ ।

लाजवन्ती के वक्ष में अन्दर ही अन्दर मानो एक टीस सी उठी । उसमें अब गुरद्वारे में बठा न रहा गया । आठ-दस स्त्रियाँ की देहानी सगल के पीछे बैठी वह उठ खड़ी हुई और धीरे से निःशब्द बाहर निकल गई ।

भाई जी की मदी आख एक निमेष के लिये खुली और फिर पूबवत् मुद गई । क्या कहन हुए यदि कभी चिड़िया का पख भी फरक जाय तो भाईजी की वृत्ति एकाग्र नहीं रहनी था और फिर लाजवन्ती को तो उठाने पटाया था, इस तरह की अशिष्टता वह कभी नहीं कर सकता थी । उसको यह मालूम था कि जब तक भोग न लग जाय समाप्ति न हो जाय, गुरु का कोद भी सिक्ख गुरुद्वारी का निरादर नहीं कर सकता । लाजवन्ती न फगद जी के इनोक का केवल एक ही चरण सुना था, अभी तो भाई साहब का दूसरा चरण पढ़कर सुनाना था उसकी व्याख्या करनी थी फिर पूर श्लाक का भावाय बनलाना था । फिर उन्हें भूत चूक कभी-बारी के लिये क्षमा माँगनी थी जैसा कि वह रोज ही माँगा करता थे । फिर उन्हें प्रतिदिन की ही तरह शाम का गुर विलास की क्या का पाठ करवाना था । फिर भोग लगाना था । अरदास होनी थी और तब कही एकत्रिन लोग अपने अपने घर जा सकते थे ।

न केवल भाई जी एकत्र सगत का भी लाजवन्ती का इस तरह उठकर चला जाना बहुत खटक गया । गाँव के इस गुरुद्वारे में ऐसा कभी कोई भी न करता था ।

—री बहन, आज तेरी लडकी कितनी भरी हुई सगत में से उठकर चली गई है ? एक स्त्री न लाजवन्ती की माँ से बाहर निकल कर पूछा ।

—बुद्धतबीयत ठीक-सी नहीं है—बृद्धा माँ ने सयानेपन में बाग का खरम कर दिया ।

—री आज लाजा को क्या हुआ गया ?

—यह अघेर कभी नहीं देखा था ।

—ग अभी बल की छोकियाँ •

—तासा तोबा ।

अभी लाजवन्ती की माँ न जूनी पहनी ही थी कि और तीन चार स्त्रियाँ आकर उसका चिपट गईं । कई बहाने बनाकर, कई झूठ बालकर बड़ी-बड़ी मुद्रिकला में कहा उनका टाला जा सका ।

—री लाजवन्ती, आज तुझ पर क्या मूखता सवार हो गई थी ? माँ न माँचा—पर जाकर वह उससे अच्छी तरह इस बारे में पूछेगी । पर अपनी जवान बेटों की मुघ डारि का देखकर बुद्ध कान्ने का उसका साहम न हुआ ।

क्या कहन हुए भाई जी न सोचा, अरदास के बाद इस प्रकार सगल में से उठ जान की अशिष्टता पर वे कुछ बोलेंगे । पर जब समय आया तो वे टाल गये । लाजवन्ती इनके बगैरे में नियमपूर्वक दोना बेना गुरुद्वारे आती थी । सार गाँव भर में मिय एक लाजवन्ती ही थी जिसे ‘मुखमना साहब’ पूरा कहल्य था ।

## पंजाबी की प्रतिनिधि कहानियाँ

फिर उठान सोचा जब परसाह रोट्टी लने के लिए उनके घर जायेंग तो लाज बनी स खुद ही इस विषय म बात कर लेंग। उस समय पर परसाह लेजर वह नोट आये उनका साहस न हुआ।

फिर उहाने सोचा शाम को रहिरास साहन के पाठ के बाद सही। पर पता नही वह कसे मौका न निकाल सक। वह खुद बडे हैरान थ।

आखिर उहान निराश किया कि कभी किसी गली-बूचे म मिल गई तो गिवायत कर नग। पर दिन म कई बार वह लाजवती को देखते। वह देखते रहते और वह आँखें भुनाय आगे स गुजर जाती।

कुछ दिनों स भाई जी एसा महसूस करते जस आँखें मूदकर कया कहते कहते एक दम उनके नयन नपाट खुल जाने और वे एक नजर म तसल्ली कर लेते कि लाजवती कहा उठनर तो नही चली गई। लाजवती वहा बठी होती तो भाई जी की क्या म एव रम एक स्वाह एक उल्लास चमक उठता।

यह क्या ?

आखिर क्या ?

उसको मने पगया है भने खुद सिखाया है।

पर नागी धी भए बलाए। ( पर स्त्री पुत्री वहन व समान जाने )

मै ?

मै पातगाह का हज़ूरिया उनका चरण रोवक।

भाई साहब गुरुदित्तसिंह पानी गुरुदित्तसिंह सत गुरुदित्तसिंह।

दूसरे दिन भाई साहब ने साबुन से मल मल व दुग्ध सम श्वेत वस्त्र धोकर पहने। कया कहन की वेला उनकी धवल टाढी कुछ कम बिल्ली हुई थी। उच्च स्वर म उनम बोना ही नहा जा रहा था। अपनी फनी हुई आवाज उनको बहुत गट रही थी मानो उनका भ्रग भ्रग आज यथित था। उनको एक कमजोरी एक कमी सी महसूस हो रही थी।

जिबे तारिआई जाग्यासिध ताइ •

मारी रात बरा व चौकीदार प्रीतम।

( जन पार कर लिया जोग्यासिह की भी सारी रात बनकर चौकीदार प्रीतम। )

फिर उहान जाग्यासिह का आख्यान सुनाया किस तरह भाई जोग्यासिह दगमग पिता दगम गुरु गोविन्दसिंह की आज्ञा मिलत ही विवाह की भाँवरों पर स उठकर घर म चल लिया था। माग म एक बेया व बटाशा का गिवाह होकर कलगीधर दगमगुरु का फमान भूत गया और लगा चौबारे व नीच खडा होकर प्रतीगा करने। रात भर जिस समय भी वह आग जान व लिए जाता था चौकीदार आग स उसको रात ला था और इसी तरह सबरा हा गया।

जिबे तारिआई जाग्यासिध ताइ हा जोग्यासिध ताइ जिबे तारिआई ।

अथधिक बराय स भरकर भाई जी न इस चरण का फिर फिर दाटारया।

उनको अपनी पत्नी हुई आमाज का ख्याल ही न रहा। उनकी आत्मा म म आसू फूट फूटकर निकलने लग। उनकी आवाज सजलना म लयपथ हो गई। मजबूरन आज समय म पहल हा उनको भोग लगा देना पडा। अरदास करत समय वकनव्य म कुछ घुमाव जानकर उहोन रोकर गिडगिडाकर परिमार्दे की—हम प्रमादी जीव है आप मनतागील पिना है क्षमा कीजिए वे कम कराइए जा आप जी को भल लमें।

असा खन वदुत कर्मानदे कुछ अन्त न पारावार।

हरि किरपा करक वखग लभो हम पापी बडि गुनाहगार ॥

(हम वदुत दुष्कर्म करते हैं, उनका अत और पारावार नहीं। ह हरि कृपा करके वग्य तीजे हम पापी और बडे गुनाहगार है।)

जेता समुद सागर नीर भरिआ, तेत श्रीगण हमारे।

त्रिआ करा कुछ मिह्र उपावो, दुबदे पत्थर तार ॥

(शिवाल सागर म जितना जल भरा है उतन ही हमारे अवगुण है। दया कीजिए कुछ अनुग्रह कीजिए। आपने डूबते पत्थरो को भी पार लगाया है।)

इस प्रकार अरदास की समाप्ति हुई सगत को आज बडा आनन्द मिला। और सब जन अपन अपन घर लौट गए।

परगाणियाँ सन के लिए आज जब वह लाजवन्ता के घर गए तो एकाकी धूप मे बठी हुई उसकी मा से उहाने पूछा—माई आप बच्ची की शादी क्यों नहा कर देती ? मुल स अब तो वह खूब जवान हो गई है।

—हा हाँ, माई साहब जी मुझे भी तिन रात इसी की चिन्ता खाए जाती है। क्या करें काई अच्छा वर ही नहीं मिलता दूट दूढकर थक गए हैं। और इधर लडकिया है दिन म बालिस्त-बालिस्त बढ जाती है।

लाजवन्ती का मा का उत्तर सुनकर माई जी चुपचाप वहा स चल दिए। उहान फिर बात न छेनी।

परगाणिया वह इकट्ठी कर लाए थे पर वापस आकर उनम कुछ भी खाया न गया। गाम को क्या न हा सकी। सध्या की बेला रहिरास के पाठ के लिए वह उठ न सक। दूसरे दिन सबेर वह धीमार थे।

माई साहब की कोठरी गुरुद्वारे के बगल म ही थी। पूरा-पूरा तिन उसी म पडे रहते। गाँव के लाग उनकी सँ-खबर पृछ जाने, जो कुछ उनकी जरूरत होती ने-ने जान थे। माई जी का खिचडी, दूध दवाई इत्यादि देने की लोगो न आपस म बारी बानि भी थी। छोट छोट लडके-लडकियाँ आकर उनकी मुट्ठी चाँपी करते उनके कमरे का मफाई करते उनका मुह धुलात उनकी दागी मे कथा फेरते।

लाजवन्ती के छोट माई म एक तिन बात करते समय उनको पता लगा कि गुरुद्वारे का मत्र काम-काज उसकी वहन मे सम्भाल लिया है वही प्रकाश करती है वही पाठ करती है वही समाप्त करती है सिफ भाइ बारी-बारी आकर दूसरी त्रियाँ दे जाती हैं।

—और तेरी वहन घर का काम-काज आजकल नहीं करती ?

—नहीं, वह भी करती है।



बालक भाई जी की छोटी छोटी बातों का उत्तर देता जा रहा था।

—तेरी बहन ने कभी तुझे मारा है ?

—हु-ऊ, बालक ने सिर हिलाते हुए कहा—कभी बहनों भी मारा करती हैं ?

—तेरी बहन का ब्याह कब होगा भाका ?

—हु ऊँ हम नहीं उसका ब्याह क्याह करना।

भाई जी ने बालक को अपने पास स माल्टा दिया और इस तरह छोटी छोटी खाने पीने की चीजें प्रत्येक बार जब भी वह उनके पास आता वह उसको देते रहते थे।

जब अकेल होते पूरी-पूरी रात जागकर रो रोकर गिड़गिड़ाकर, भाई जी त्रिन्नितियाँ करते अरदासों करते—हे रब मैं किस मह मे आपकी दरगाह में हाज़िर होऊंगा। किस मुह से आपकी हज़ूरी में लोगो को फिर फिर यह कह सकूंगा —

बेख पराईया चगिया। माका भरां घीघ्रां जाणे।

(पराई स्त्रिया को मा बहन और पुत्रियाँ समझे।)

मैं नीच हूँ मैं कपटी हूँ मैं कृमि हूँ बिच्छा का मरा लोक परलोक नष्ट हो गया है।

और वह फिर कितनी कितनी देर तक रोते रहत रोते रहते।

एक दिन सध्या की बेला रोते राते भाई जी अद्ध चेतनावस्था में पड़ गए थे कि अकस्मात् उनकी कोठरी का द्वार खुला। इस समय कभी उनको देखने के लिए कोई नहीं आता था। आँखें उठाकर उहान देखा तो द्वार में लाजवती खड़ी थी। उस क्षण तो भाई जी को जैसे विवास ही नहीं हा रहा था। पर जब लाजवती उनके समीप पलंग के पास आई तो वह अपने रुतन को रोक न मने। उच्च स्वर से कदम करने लग, उनका एक एक अंग परियाँ कर उठा।

दूसरे दिन भाई जी की तबीयत में काफी अंतर पत् गया था। भिन्नसार ही लाजवती फिर आई दोपहर को भी एक चक्कर लगा गई सध्या की बेला वह फिर आई। और इस प्रकार पाँच-सात दिन में ही भाई जी उठन-बठन लग। लाजवती उनके लिए दूध लाती दही लाती मक्खन लाती पनीर लाती लस्सी लाती और भी कितना ही कुछ।

भाई जी आखिर बिल्कुल स्वस्थ हो गए। फिर क्या आरम्भ हुई फिर ग पाठ हान लग सबरे, गाम और रात। उसी तरह मगन एकत्र हाती उसी तरह दीवान सजाए जाने थे।

किमी का पता भी न लगता, लाजवती भाई जी के बठन लग जाता, उनका निरा ध्याता भाता मीन पिरान का काम कर जाती गुहदार की चान्दरा के साथ-साथ उनका कपड़ भी धा लाती। उनका पगला में खुन्नत शानती उनका जूना का भाड दती उनकी सडाऊँ धा दती।

जे तूँ मग हा रहें मभ जग तरा हा।

जब लाजवती जाता ता कभी-कभी नग में मकर में एक तिनार में भाई जा ग उठन।

भाइ जा बठ परगान य कि उठाने माग उम्र एम हा क्या काट या ? एक आत्मा

का उम्र क पचास साल । सब स्त्रियाँ उनके लिए माताए थी, बहनें थी, पुत्रियाँ थी । मन मार घान भर जाए उनके इष्ट ने उनको मिलाया था । और उहाने अपन मन का मार कर भस्म कर दिया था । एक रात का बुन चरता रहा, उपदेश दना रहा, खाना रहा पीता रहा लोगो के परनाक मवारन का दावा करता रहा ।

कथा करवे बाल बाहर फेंक दती है, भाई साहब जी न कही देख लिया तो जूडा तरा उखाड लेंगे, गाँव के लाग अपन दनिक जीवन म भाई जी के बनाए हुए आनेसों का ही सामन रखने थे । कोई भी गुरद्वारे म माथा टक बगर काम-काज नही कर सकता था । भाई साहब गुरु-मंत्र देन थे मतान के लिए वर्षा के लिए फनला क लिए । भूत आदि रोग भाई साहब क बुद्ध पढकर यूक दन मात्र म ही ठीक हा जात थ । नए मकान के उद्घाटन पर भाई जी जरूर उपस्थित हात थ । कोई पदा हा भाई जा जरूर हाते । कोई मर जाए भाई जी अफर हात । लोग अपनी मुसदें भाइ साहब का क पास ल-लकर आते और व किसी को भी खानी हाथ नही लौटात थ ।

लोग मानत थे कि जिन भूत को भाई जी अपने बग म किए हुए हैं । एक बार भी किसी न उनका निरादर किया तो रात म कोई शक्ति आकर उमका चांगपाइ स नटा कर नाचे दे मारेगी । भाई साहब जी चाह तो दूर दसा क फन, बीती अगुआ क मव भोगवा लिया करते थे । जिनका कभी कही कोई चुहैल पकड लेती थी या उस पर काई भूत चर जाता तो भाई भी भाडू फिरा दिया करते थ और व लाग बिबुल भले चग हा जात थ । बच्चो की बना तो भाई साहब जी एक मिनट म उनार दने थ ।

—सब तरी ही सीला है —जब लाजवती भाई जी मे इन सब कौनुका का रहस्य पूछनी तो व सग एक ही वाक्य कहे दिया करते थे और लाजवती लजा जाया करती थो ।

एक दिन भाई जी ने लाजवती स कहा—लाजवतिए, आ चले चनें महा न ।

लाजवती को भाई जी का आगय समझ मन आया । वह खानी-खानी नजरा म उनकी आर तावनी रही ।

भाई जी भी फिर टाल गए ।

पर उनका जी मही करना था कि अब वह लाजवती को वहा ल जाएँ जहा वह भाइ जी नहा मिफ गुरदित्तिसिंह रह जाए और लाजवती गुरद्वारे म आने वाली नित्य नियम का पालन करन वाना न रहे जिसको उहाने लिखना पटना मिलाया था, जिसक सामन एक्त्र सगत म पठकर अनक बार उहाने चिन्ता चिल्लाकर गाया था — अनक कवाड देइ पडदे म पर दारा सग पीने ।

चिनर गुपत जब लखा मंगे तब कऊग पडना तरा ढकि ॥

५ (अब ता पदें म अनक कवाड दे, परनारी का भोग करत हो पर जब चित्रगुप्त निसार मांगगा तो कौन तुम्हारा पदा ढाक मकेगा ?)

वह चाहते थे लाजवती को वहाँ ल जाएँ जहा गहन अयकार हो, लाजवती उनका न दख सक वह लाजवती को न दख सकें और उन दाना को दूमरा काई भी

न पहचान सके। घोर अंधकार म खो जाएँ, डूब जाएँ, बह जाएँ, कुछ और हो जाएँ और फिर कुछ और होकर पुन आविर्भूत हो जाए दो चीजें जो एक दूसरे को पहचान सकें, एक दूसरे को अपना सकें, एक दूसरे की होकर जिएँ एक दूसरे की हो कर मरें।

गांव म एग दिन शोर मच गया। राजपूता का लडका एक खत्री की लडकी को लेकर भाग निकला था। खत्रियो ने भाले और बंदूकें लेकर उनका पीछा किया, और पन्द्रह कोस पर उनको एक शीशम के नीचे सोए हुए जा पकडा। राजपूतो ने उधर कमरें कस ली और मरने मारन के लिए तयार हो गए। इस फसाद को खत्म करने के लिए मामला भाई जी के सामन पेश किया गया। भाई जी ने फसला राजपूता के हक म कर दिया और लडकी उनको सोप दी गई। पूरे गांव म, सारे इलाने म एक भीषण आन्दोलन उठ खडा हुआ। खत्री माने ही न। आखिर उनका धम ही वहाँ रहा? पर भाई जी अपने फसले से बिल्कुल न टले।

लाजवती सुबह तडके ही उठ जाती थी उसको घर के अनक काम निबटाने होने थे। भाई जी सवेरे-तडके उठते थे। उनका यह धम था।

एक दिन लाजवती का जी चाहा भाई जी को वह भी एक चिट्ठी लिखे। दूसरे सभो नाग पत्र भेजते थे। पूरी की पूरी दोपहरी वह कागज, कलम दवात लेकर बठी रही। उसन लिखा लिखनुम लाजवती पास म मेरे परम प्यारे, एक एक पल याद आन वाल। और वह लिखती गई लिखती गई। एक अल्ट्रड सी ग्रामीण बाला अपन हृदय का निरावरण कर रही थी। उसने सब कुछ लिख लिया जो भाई साहब के भीतर का पुरुष भी कहने म मकोच से लजाता था। एक नारी ने एक पुरुष की देह का उन्नतव किया एक नारी न अपन आप को एक पुरुष की आत्मा स देखा। एक मन पत्र भी झोरत जिसने कभी कतम हाथ म नही ली थी लिखने बठी तो निसली गई, निम्नी ही गई।

सप्या की बेना उधर म जान हुए उसने वह चिट्ठी भाई जी के हाथ म रख दी। जब अपनी काठरी म जाकर लम्प की रोगनी म उसको उहाने पडा माना उनकी समूची लत्र म प्राग तग गई। गुरुमुग्गा म य बातें गुरु अगण की बनार्द त्रिपि म यह बकवास। मैं उमर भर गनिया म स गुरुमुग्गी म छत्र अन्नबारा के टुकड उठा-उठाकर दावारा म टूटना रहा हूँ। यह धनप सगुरु के तब म यह कोन। घरा समुरी साज बनाना मुझ नहा पता था कि तू इतनी खुदम है यह जुलम यह धधेर।

भाई जी यह कभी गाब भी नहा सकत थ कि त्रिन अगारा म समग्र गुदराणी त्रिनी हूँ उनको कान ऐग विचारा की अभिभ्यक्ति का माध्यम भी बना सकता है। लाजवती के भीतर की नारा ने मुक्तिव म वही कुछ त्रिया था जा भाई जी के भीतर का पुरुष साग बार बनता आता था। पर भाई जी का एमा लगा जन समूषा दुनिया डूबत मनी है अब मूय नहा उर्य हाग अब तारे नया चडेंगे अब आवाग पत्र आवाग लव भूकम्प आवाग समुद्र धरता का निगाव ताण्णा नाचे की धरनी उतर हा जण्णा।

घौर उहान घपने बान नोच लिए उनकी सम्भान-सम्भाल कर रही दाढी बिलर गयी । नग घडग होकर वह बाहर निबल भाग ।

गांव वाला ने उनकी बाबत फिर कभी कुछ न सुना ।

कभी-कभी कोई राही आकर बतलाया करता है कि उसने एक बूढ़े जजर को दूर, बड़ी दूर सडक पर बिलखता देखा है, जो इस गांव का नाम ल-लेकर गालियाँ दिया करता है ।

# छमक छल्लो

अमृता प्रीतम, १९१९

कवयित्री के रूप म अमृता प्रीतम बहुत लोकप्रिय हैं परन्तु कथाकार के रूप म भी उनकी लोकप्रियता कुछ कम नहीं है। वस्तुतः हिन्दी पाठक उह कथाकार के रूप म ही अधिक जानते ह क्योकि उनके अनेक उपमास और कहानी-संग्रह हिन्दी म प्रकाशित हो चुके हैं और हिन्दी के सभी पत्रा म उनकी कहानियों के अनुवाद निरन्तर प्रकाशित होते रहते हैं।

अमृता प्रीतम की कहानिया म नारी जीवन की विपमता के मार्मिक चित्र हाते हैं। एक एसी ही कहानी यहाँ संग्रहित की गयी है।

पंजाबी म प्रकाशित अनेक कहानी-संग्रहो म से कुछ हैं—  
छन्वी बरे बाद कुजिआँ, आखरी खत जगली बूटी आदि।

तनिक निकट घाना छल्लो की माँ ! देखो न जरा आज तो मेरा घुटना बहुत ही सूज गया है। और माथ छल्लो के वृद्ध पिता ने अपनी टाँग को पन्ना कर देखा। टाँग म जार की टीस हुई और उसने पुन अपनी टाँग समेट ली।

वृद्ध हुकमचन्द की पहली पत्नी का देहांत हो गया था। वह थी छल्लो की माँ। उसके पश्चात् हुकमचन्द ने अपने धन के जोर से एक युवती करतारो स शादी कर ली थी। विवाह के एक दो दिन बाद ही वह उसे छल्लो की माँ कहकर पुकारने लगा था। करतारो का यह अच्छा नहीं लगा था और उसने कुछ गुस्स म आकर उसम कहा था सीधी तरह मरा नाम लेकर बुलाया करा मुझे। नहीं अच्छा लगता हर समय छल्ला की माँ छल्ला की माँ ।

“भाग्यवान में जो ठहरा छल्लो का बाप, ता फिर आप ही बना तू हुई कि नही छल्लो की माँ ? मैंने कोई बुरी बात कही है ?” वृद्ध हुकमचंद कई बार करतारो के कहने पर मोघा तरह उसे उसका नाम लेकर ही पुकारने लगा था, परंतु फिर भी कभी कभी भूले भटके उसके मह से निकल ही जाता था, ‘छल्लो की माँ !’

छल्लो उमकी बड़ी लाडली बेटी थी। उसने उसका नाम कौसल्या रखा था। परंतु लाड से वह उम छल्ला’ कह कर पुकारा करता था। ‘छल्लो की माँ का मन्वा धन मुन करतारो क्रोध में आ जाती थी और तब हुकमचंद हँसता हुआ उसे कहा करता था, एक बटा पैदा कर दो फिर मैं तुम्ह उसकी माँ कह कर बुलाया करूँगा। बेटा, क्या नाम रखोगी उसका ? चनन नाम रखना उसका। फिर मैं तुम्हका आवाज दिया करूँगा, चनन की माँ आ चनन की माँ ! यह सुनकर करतारो चाह वितना हा गम्भीर बनन का प्रयत्न करती फिर भी उम हँसी आ जाता।

वर्षों व्यतीत हो गये परंतु ओ चनन की माँ कहकर हुकमचंद करतारो का सम्बोधन न कर सका। करतारो के घर कोई चनन पैदा ही न हुआ। हुकमचंद उसे ‘सावी तरह करतारो ही कहना रहा। हाँ कभी-कभी उसके मुह में निकल ही जाता था छल्ला की माँ !

फिर देग का विभाजन हो गया। पश्चिमी पंजाब में रहने वाला हुकमचंद पूर्वी पंजाब करनाल में आ गया। हुकमचंद ने जिस धन के जोर से करतारो का जीवन को अपनी वृद्धावस्था में बाध रखा था वह जोर भी अब टूट गया था। पति पत्नी के सम्बन्धों का घागा तो अभी उसी प्रकार था, परन्तु अब इसी घागे को स्थान-स्थान पर गाठ दनी पन्ती थी। हुकमचंद के हाथों से अब धन की लाठी छूट गई थी, अतः उमका बुलाया बदन कांपने लगा था। छुटनो की पीडा ने उसे और भी बेकार कर दिया था।

ए छल्ला की माँ !” इस बार हुकमचंद ने थोड़ी जोर से आवाज दी।

न छल्ला की माँ मरेगी और न उसका छुटकारा होगा ! बाला क्या बात है ?” करतारो अपने दुपट्टे से हाथ पाठनी हुई रसाई से बाहर आई।

य ही बुरे बोल न बोला कर। एक छल्लो की माँ तो मर गई—मेरी लाडली बच्चारी छल्लो की माँ ! अब दूसरी का भी क्या मारनी है !”

हा पहली को भी जन्म मैं ही मारा है—तुम्हारी लाडली छल्लो की माँ का। न वह पहनी मरनी न यह दूसरी आती। आप तो वह मर कर सुख की नाद सा गई और यह सब काँट बटोरने के लिए मुझे छोड़ गई !’

तू काट न बटोरा कर भाग्यवान, यह तेरे बस का बात नही। तू अपना काम किया कर—काँट चुभोया कर।

मैं तुम्ह भी काँटे चुभोती हूँ और तुम्हारी नाजुक छल्लो को भी। तुम्ह चार पाई पर बने का पानी परोस कर देती हूँ, तुम्हारी इतनी बड़ी बेटी को खाना बना कर खिलाती हूँ। यह सब मैं बाप-बेटी को काँटे ही तो चुभोती हूँ।

‘तुम क्या कष्ट सहन करती हो करतारो। मैं तुम्ह कई बार कहा है अब आप

ही लडकी चार रोटियाँ बना लिया करेगी ।'

"रोटियाँ बनाने की उसकी नियत भी हो । चार टोकरियाँ लेकर जाती है और सारा दिन घर से बाहर ही व्यतीत कर आता है ।"

मैंने तुम्हें कई बार कहा है कि अब उस टोकरियाँ बेचने मत भेजा करो । स्थान स्थान के यात्री खरे खोटे सभी । यदि उसके साथ अच्छी बुरी हो गई तो ।'

छल्लो के बापू मैंने तुम्हें कई बार कहा है कि यह नसीहत तु मुझे उस समय देना, जब चार पस कमाकर मेरी हथेली पर रखो । यहाँ चारपाई पर बठे बठे एगे ही बोनते रहते हो । मैं । और करतारो सिसकियाँ लेकर रोने लगी ।

"सच कहती है करतारो । मैं इसे किस मह से कुछ कहूँ । पसे ने भी पीछा दिया और गरीर ने भी । अब यह मीठा बोले अथवा बडवा दो रोटियाँ तो समय पर सेंक ही दती है । हुक्मचन्द के मन में टीस उठन लगी । फिर उसने बड़ी नम्रता से करतारो से कहा मेरे लिए लहसुन डाल कर तेल गम कर दे । मैं बठकर घुटना का मतलता रहूँगा । साथ ही ईश्वर के लिए उडद चने की दाल मत बनाना । यह साली मेरे गरीर को खाए जा रही है ।'

उडद चने की दाल क्या ? मैं आज मास पकाऊँगी ।

'माम ! सच तुमने तो आज मेरे मन की बात पकड़ ली । गायद एक वष हो गया मास की गवन नहीं देखी । प्रति दिन यह जली हुई दाल बच भी कहता था 'हुक्मचन्द' यदि तन्दुरस्त हाना है तो गारवा पिया करो । जहर पकाया आज मास ।' फिर हुक्मचन्द ने अपने घुटना की ओर देखा, और उम एसा महसूस हुआ जन उमके मुह की जगह उसके घुटना को मास का स्वाद आ गया हो ।

'हाँ हाँ आज गोरवा पीना । मैं अपना सिर काटकर उवाल दूँगी ।

शायद तुम जब भी बालोगी गुर शब्द ही कहागी । शायद मेरे भाग्य के चार के स्थान पर घात बीस टोकरियाँ बिक जाएँ । अरी छल्ला मेरी छमक छाना । स बग आज नू मरी बात रख लना । पूरी बीस टोकरियाँ बेचना पूरी बीस, और घात समय कान वाली दुकान से पूरा आधा सर मास ल घाना । जा घटा जा । मोटरा के घाने का समय हो गया है । और दगना घात समय प्याज, लहसुन अरक हरी मिच सब कुछ लेकर घाना नहीं तो यह तरी माँ माम को उवान कर एमा ही रख दगा ।

एमा लगता था कि छल्ला घपन बाप के मुह से यह बातें सुनकर बहुत हँसगी परन्तु छल्ला उमी प्रकार मिर नीचा बिय टोकरियाँ का निहारती रही ।

बिना का टाकरा अरानी भी हा ता वह उमकी मूलत देख कर नया गरीरना । हर समय पिन्ने की तरह मह बना कर रखता है । करतारो के मौनन गुन्य न जग अब हुक्मचन्द का पीछा छल्ला निवा हा और छल्ला के पाछ पर गया हा ।

कदा श्रुता है मक्की की मूलत का करतारो ? तुम ना हर समय इसका टाकनी रहती हा । तुम से तो अरानी हा पर है इसका । हुक्मचन्द ने जग करतारो के मार गुन्य का फिर अरानी घर मोचना चाहा ।

परन्तु करतारो का गुमा इतना जम्मा सुनन बाया नहा था । वह जमा तरह लम्बी

की ओर देखकर कहने लगी, "जरा हँस कर किसी से बात करे तो कोई एक की जगह दो चीजें खरीद ले। इतनी मोटरें यहाँ से गुजरती हैं! अदर भी सामान और वाहर भी सामान। क्या वह लोग दो टोकरियाँ खरीद कर नहीं रख सकते? इन टोकरियाँ का भी कोई भार होता है? फिर ऐसी रंग बिरंगी टोकरियाँ। पर यह कुछ मुझ से बोलने तभी न। जितनी देर मोटरवाले बाहर खड़े हाकर चाय पानी पीत है उतनी देर यह जरा उनसे भीठी बात करे, हँसकर बोल, तो कौन टाकरी नहा खरी दता।"

छल्ला सब कुछ इस तरह सुनती रही जैसे उमन अपने काना म रद्द नहा कपडा ठूम रखा हा। आगे वह कई बार कह चुकी थी, 'मा, काई नहीं खरीदता यह टोक रियाँ। यह लारी और बसवाले तो चाह कोई टोकरी खरीद भी लें। परन्तु यह माटर वाले तो इन की ओर देखते भी नहीं। इनके पास जाग्रो ता खान को दौडत ह और कहते हैं हाय मत लगाग्रो शीश को मला हो जायेगा जरा दूर चडी रहो। उनके पास जान की काई कस हिम्मत करे?' परन्तु मा ने छल्लो की कोइ दलीन नहीं सुनी। जा गुस्सा उमे मोटरवाले पर आना चाहिए था, वह छल्लो पर ही आ जाता था। वह हमेगा यही कहती, 'तुम्हे ढग भी हा बेचने का। थोडी हँस कर बात किया कर। तू तो लाटे की तरह मुह बना कर खडी रहती है। कौन तेरे हाथों टोकरी खरीन्गा?'

छल्लो न सचमुच कई बार कोशिश की थी कि उसका मुह लाटे की तरह न बन। और मोटरा के गीग क पास खडी हो वह कितने ही दिन मुसकराती रही एक बार नहीं, पूरे तीन बार। उससे किसी न किसी मोटरवाले न कहा था, 'एस क्या दान निकाल रही है। आजकल कौन खरीदता है इन टोकरियो को। कोई जाट-नौवार लत हाग। और अब कई दिना से छल्लो लाख यरन करती, परन्तु उसका मुह लाटे का तरह ही बना रहना।

"वह खसमखाना क्या नाम है उसका? वह जो अखबार बचता है? राना रला। उस देख कर तो इसके होठ अपने आप फडक उठते है। उस समय इस कम हँसने का ढग आ जाता है?"

करतारो! यूँ ही मुँग की तरह मिट्टी न उडा। हुकमचन्द ने धमका कर कहा।

मैं कोई बुरी बात कह रही हूँ? रानी को शीश ता चढा है इन्क करने का पर अपन आंगिक का घर-वार तो देख लेती! टके-टके के अखबार बेचता है वह। कल को कहीं न खिलाएगा इने?

करनारा की बात अभी समाप्त नहीं हुई थी कि छल्लो न फिर पर चुन्ना ली और टोकरियो का ढेर सिर पर उठा वह बाहर मोटरा क अड्डे की ओर चल पडी।

टके-टके के अखबार बेचता है! माँ की बात छल्लो के काना म एक फुसी की तरह दग करने लगी। पर जब वह मोटरा के अड्डे पर पहुँची तो उमे आनी नानी और खडी मोटरो का ध्यान न रहा। वह अपनी टोकरियो के ग्राहक ढूँढने क स्थान पर उसकी सूरत ढूढने लगी जो टके-टके के अखबार बचता था।



आज तू दर स आई है छन्ना ? रत्ना पीछे की ओर भ्रम कर छन्ना व सामन खडा हो गया ।

म छन्ना चीक गई फिर रत्ना व मुह की ओर दखकर उम भटमूम हुआ कि अब उसना मुह तोट की तरह नहीं रहा । मैं एक टाकरी चुन रही थी । यह दख, आज मैं इमम हरे पून डाल है । कितनी सुन्दर है यह टाकरी ।

छन्लो ।

हा ।

टाकरी तू हमना ही सुन्दर बनाती है परतु ऐरे-गरे व पास जाकर तरी टाकरा लियाना मुझे अच्छा नहीं लगता ।

तू भी तो ऐरे-गरे व पास जाकर अखबार दिखाता है । और छन्ना हँस पडी । मेरी जान और है छन्लो । मैं मन् हूँ । मेरा अखबार कोई खरीदे या न खरीने पर मेरे मुह की ओर कोई नहा भाकता ।

और मेरे मुह की ओर कौन भाकता है ? मेरा तो लाटे जसा मुह है ।' छन्ना विनखिलाकर हस पडी ।

इस प्रकार किसी पराए के सामने मत हँसना । टोकरिया के स्थान पर वह । हा । और फिर छन्लो का हसता हुआ चेहरा गम्भीर हो गया । क्या करूँ रत्न लोगो के सामने तो मेरा मुह लोटे की तरह बन जाता है और मैं कहती है कि तू मद्र के साथ हसा कर ।

रत्ने ने छन्लो के हाथ स सब टोकरियाँ छीन ली । मैं तुम्हे नहीं बेचने दूँगा य टोकरियाँ । एक बन्द दुकान की ओर इगारा करके वह बोला तू वहाँ चुपचाप बठ जा । मैं आज सभी अखबार बेच लूँगा ।

और फिर उन पसो से तू मेरी टोकरियाँ खरीद लेगा । आग भी तू कई बार इस तरह कर चुका है रत्ना । कब तक इस तरह करेगा ? क्या तुम्हे घर में टोकरिया का अचार डालना है ?'

हाँ हाँ, मुझे टोकरियो का अचार डालना है । नहीं तो किसी दिन तेरी माँ तेरा अचार डाल दगी । यह एक लारी आई है तू यही ठहर मैं अभी आता हूँ अखबार बेचकर । रत्ना गीघ्रता स टोकरियाँ छन्लो को पकडा कर उस लारी की ओर चला गया ।

छन्लो क मन म आया कि वह भी उसके पीछे पीछे उस लारी की ओर जाए । 'गाम' वहाँ बाई टोकरी का ग्राहक भी हो । पर छन्लो स रत्ना के हुक्म जसी बात टाली न गइ । वह टोकरिया को एक ओर रखकर उस बन्द दुकान के तस्ते पर बठ गयी ।

ताराचन्द नाम के आदमी न छुरी स अपनी औरत की नाक काट दी । बादस वप की मुदरी की नाक काट दी । पूरी खबर पन्िए । दूर रत्ना की आवाज आ रही थी ।

'गाम जग जल्नी रत्ना म अखबार खरीन रह ये । छन्लो की हँसी पून रही थी । ' गरम गरम खबरें साइंस की एक नयी ईजा' । कई बार रत्ना कहा

करता था और वह तिथिन के दलाई लामा की और रुम के राकेटा की बातें जैनी-जैची आवाज में सुनाया करता था परन्तु आज छल्लो की हँसी फूट रही थी 'भला यह कोई मुनन लायक बात है ? किसी बक्कूफ न अपनी सुन्दर पत्नी की नाक काट दी ।

डाक्टर न लारी का हान दिया । सभी सवारिया पुन लारी में बैठ गयी । रत्ना गीधना में छल्लो के पाम वापस आ गया और बोला, आज बहुत स अखवार पहली और दूसरी लारी में ही विक गय ।'

'तू तो प्रायना करना होगा कि राज कोई मद अपनी औरत की नाक काट दिया करे ।' उल्लो हँस पड़ी ।

'औरत की नाक काट या अपनी अरुल, अखवार तो इसी तरह की खबरा में बिकना है । दख नहीं रही थी योग कमे मेरे हाथों में अखवार छीन रहे थे ।

भना रत्ना लागी को यह बात बड़ी मजेदार लगी ? औरत की जान कोई गनती थी भी कि नहीं । अगर हो भी तो इसमें क्या मदानगी है कि औरत का दिल न जीता गया तो उसकी नाक ही काट दी । ऐसा लगना है, जम यह खबर सुनकर इन लोगों के मन में भी मदानगी जाग उठती हो ।

रत्ना हँसने लगी । दोनों गायद इसी प्रकार अभी वाता में ही लगे रहते, परन्तु इसी समय एक लारी और आ गयी साथ ही एक-दो मोटरों भी आ गयी ।

मैं तनिक चक्कर लगा आऊँ' रत्ना ने कहा ।

मैं भी जरा माटर देख आऊँ गायद कोई ।'

रत्ना छल्लो तू नहीं ।

पागल हो गया है रत्ना । ऐसे हाथ पर हाथ धरकर बठी रहूंगी तू ।

मैंने जो तुम्हें क्या है । आज मैं तुम्हारी छ टोकरीयाँ खरीद लूंगा मेरी छमक छल्ला । और रत्ना न प्यार से मुह चिदाया ।

नहीं रत्ना नहीं । राज रोज ऐस नहीं । और आज तो बापू ने कहा था कि पूरी बीम टाकरीयाँ बेचना । यह कहती हुई छल्लो मोटर की आर चली गयी और रत्ना लारी की आर दौन गया ।

पूरा आध सेर माम प्याज लहसुन, अरुल । छल्लो सोच रही थी कि कितना अच्छा हा आज यदि वह अपना बापू के निग यह सब कुछ खरीदकर ले जा सक ।

किमी का टोकरी खरीदनी भी हो तो वह इसकी सूरत देखकर नहीं खरीदता । तनिक किसी में इस कर बात करे तो कार्द एन की जगह दा खरीद ले । यह ता गप्पे जमा मुह बनाए रखती है । माँ करतारो के सभी बोन छल्लो के कानों में तिनको की तरह चुभ रहे थे ।

छल्लो ने मोटरवाने बाबू की ओर दखा और सोचा यदि सामने मोटर में रत्ना बैठा हो तो वह उम दख कर कितनी खुश हो ! साथ ही छल्लो न महसूस किया कि अब उसका मह लाटे की तरह नहीं था ।

बाबू बहुत सुन्दर टोकरी है ।

कौन सी टोकरी?" बाबू गाड़ी में बड़े-बड़े ही बोला और फिर कहने लगा 'मुझे तो सिर्फ सोडा चाहिए, टोकरी-बोकरी नहीं। जाओ सामन का दूकान से एक गिलास में साडा और बरफ डलवा लाओ।'

सोडा और बरफ" छल्लो ने सामन वाले दूकानदार का बाबू का सदेश दे दिया। वह फिर मोटर के पास वापस आ गयी। "बहुत सुन्दर टोकरी है बाबू, छल्लो ने गिडकी के खुल गींग में से अपनी सबसे सुन्दर टोकरी बाबू के आगे करत हुए कहा।

बाबू ने टोकरी की ओर नहीं देखा। वह छल्लो को देखने हुए कहने लगा 'टोकरी है तो बड़ी सुन्दर।'

सरीद लो न बाबू। सिर्फ छ आने। साथ ही छल्लो ने बड़ा मन किया कि उसका मुह नोट जसा न बन जाए।

सामन की दूकान का लडका साडा-बरफ ने आया। बाबू ने अपनी गाड़ी में पडा हुई एक टोकरी खोली और हिस्की की बातल निवाल उसमें साडा मिलाया। फिर वह एक घूट पीता हुआ छल्लो से कहने लगा 'सिर्फ छ आने?'

ह। बाबू सिर्फ छ आने और दो ल लो तो दस आने।

अगर चार ले लू तो?'

चार। छलो अपनी उमलियो पर पगे गिनन लगी। साथ ही उसे स्थान घायी माँ करतारा सब ही कहती है कि यदि मैं हसकर किसी से टोकरी सरीदत के लिए कहूँ तो।

बाबू अपना गिलास खत्म कर चुका था। खाली गिलास और साडा के पास सामन वाले दूकानदार के नौकर का देकर उसने गाड़ी स्टार्ट कर ली।

बाबू टोकरी?' छल्लो की आगा बुझने लगी।

टोकरी तो मैं ल लूँ लेकिन मेरे पास टूट हुए पस नहा।

मैं सामन किसी दुकान में नोट मुडवा लाती हूँ। छल्लो ने बची जानी स कहा।

इन छोटी छोटी दूकानों पर नोट नहीं टूटगा। मेरे पास कोई छाटा नाट नहा सभी सौ-सौ के नोट हैं। छल्लो ने निराग होकर अपनी बांह पीछे करती। 'हाँ एक बात हा सकती है बाबू ने मुछ सोचकर कहा।

छल्लो की आगा जाग पडी।

बाहर की बड़ी सडक पर पट्टान का एक पप है। मैं वहाँ में पट्टान भी ल मु मा और नाम भी मुडवा लू गा।

वरिन पना नही वह कितनी दूर है। मैं ।'

तुम वहाँ तक आना में बठ पनी। बन्न मुन्टर टाकियाँ हैं। मैं बनुन-मा मरींग मु ग। और साथ ही बाबू ने शर का दरवाजा खोल दिया।

छल्लो के पाँव बुद्ध दर परल्लु उमर पिता का आगा उमर पीछा का आग परल्लो गग— आग छल्लो मरत छमक लल्ला। न बग आर लू मरत बाग रल लना। दूरा बाग टाकियाँ। और छल्लो गोभना में बाग में बठ गयी।

बाग चला नत्र आ और नत्र हा रल्ला। फिर पनकी सन्न पर जाती हुई बाग

धीरे धीरे कच्ची सड़क की ओर हो ली ।

बाबू कहा है पेट्रोल पंप ?' छल्ला ने घबराकर पूछा । फिर उसकी मास बाबू की बाँहों में घुट गयी । छल्लो के सिर में कुछ खबर आए और फिर उसकी बाह बाबू की बाँहों से हार गयी ।

जब छल्लो को हांग आया तो वह एक बक्ष के नीचे अस्त-व्यस्त सिकुड़ी पडी थी । वहाँ बार नहा थी । कोई बाबू नहीं था । छल्लो ने अपने कपडा की ओर देखा । सामन पडी हुई टोकरिया की ओर देखा । सब कुछ मिटटी में लथपथ हो रहा था ।

टोकरिया छल्लो से उठाई न गई । मुश्किल से उसकी टागा न उसका ही भार उठाया और वह कच्ची सड़क पर मन-मन के कदम धरती पक्की सड़क तक पहुँच पाई । एक राह चलती लारी खड़ी हो गयी । कटवटर ने पूछा 'कनान ?'

छल्ला ने एक बार लारी को देखा, फिर सिर हिलाया, 'हा ।

और जब छल्लो से किसी ने पूछे मागे तो वह चौंक पडी । उसके पास तो लारी का भाडा नहीं था । एकाएक उसे याद आया कनान जब मैं तीन-चार आन थे । उसने अपनी जेब टटोली । जेब में पैसे तो नहीं थे परन्तु एक दस रुपए का नाट था ।

छल्लो के मन में आया कि अच्छा हो यदि वह लारी से कूद जाए गिरकर मर जाए और नोट के भी टुकड़े टुकड़े हो जायें ।

कटवटर ने छल्लो का सोच में पडी देख खुद ही उसका हाथ से नाट ल लिया और बोला, 'भाडा तो कुल पाच ही आने है, लेकिन मैं तुम्हारा नोट तोड देता हूँ । और फिर उसने जितने पैसे छल्लो को वापस दिए उसने चुपचाप जेब में डाल लिए

'गिन लो अच्छी तरह कटवटर ने कहा । छल्लो शायद उस समय खिडकी में अपना सिर रखकर सा गयी थी ।

लारी कनान के अड्डे पर खड़ी हो गयी । कुछ सवारियाँ उनरी, छल्लो भी उनरी और फिर अनमना सी अपने घर की गली की ओर चल पडी । गली के कोने में मास की दुकान थी । छल्ला के पाँव रुक गए ।

'आधा सर मास' छल्लो ने धीरे से कहा और जेब में पैसे निकाले ।

छल्लो ने घर जाकर जब रमोई में मास रखा और साथ ही ध्याज लहसुन अदरक और हरी मिच भी रखी, तो उसकी माँ कर्तारो पुलकित हो उठी "आज तूने कितनी टोकरियाँ बेच ली ?

'सभी, छल्लो ने धीरे से कहा और फिर वह नहाने के लिए बाल्टी भरन लगी ।

वह रत्ना आया था तेरी तलाश करता ।'

अच्छा ।' छल्लो ने आगे कुछ नहीं पूछा । माँ ने भी और कुछ न कहा । छल्लो

दयानी का दरवाजा बंद करके नहान लगी ।

छल्लो जिस समय नहा धोकर कपडे बदल कर रमोई में आई कर्तारो हाडा में माम भून रही थी ।

देख लो आज घर बसता हुआ दिवाइ दे रहा है न । जिन घर में छोक का मुण्डा नहा आती घरम की वान है वह घर घर ही नहीं ।' छल्लो का बापू बाना और

फिर छल्लो का आर देखकर उसने बड़ लाड़ से कहा 'भरी छमक छल्लो !

छल्लो ने जलत चूल्ह की ओर देखा । चूल्हे का सारा बदन आग की तरह जल रहा था । ऊपर हाँडी रखी थी । छल्लो का महसूस हुआ, जम उस हाँडी में उसकी मुस्कराहट भूनी जा रही है ।

उठ मरी बेटी नई टोकरी बनानी शुरू कर दे । मने पत्त पानी में भिगो रमे है । जिस प्रकार करतारो ने छल्ला को आज बेटी कहा था इस प्रकार पहले कभी नहीं कहा था ।

दुवम की बँधी छल्लो मूठे पर बठ गयी उसने हाथ में पत्त पकड़ लिए और मुझा भी । परन्तु उस महसूस हुआ कि आज से खेतों में वे पत्त नहीं उगेंगे जिन से टोकरिया बनाई जाती है आज से रत्ना के बेचने के लिए अखबार नहीं छपेंगे और मह खबर भी कहीं नहीं छपेगी कि एक दावू ने एक लडकी की हत्या कर दी ।

# परी महल की चीखे

जसवन्तसिंह कवल, १९१९

---

जसवन्तसिंह कवल की गणना पजाबी के गिन चुने उपवासपारा म का जानी है। पजाब के ग्रामीण जीवन और उसमें उभरते हुए जन-जागरण का चित्रण कवल की रचनाओं में मिलता है। भारत विभाजन के भ्रवसर पर गणगांधिया के बीच किए मेवा कार्यों द्वारा उनकी गमम्याओं को समझन का इहें अक्षय भ्रवसर प्राप्त हुआ और तत्त्वकी अनेक सुंदर रचनाएँ इहाने लिखी।

कवल के प्रकाशित कहानी-संग्रहों में से कुछ हैं—'कण्डे जिंदगी दूर नहा, मधूर आदि।

---

सूर्यास्त समय भूले खाने हरियाली के बीच में यह कोठी जहर गुलाब का पीला फूल लगता होगा जिस चाँदनी की भरपूर अंगड़ाइयों में परी महल दीखता है। गहर से कोई दम कास तथा गावों में भी भीला दूर उजाड़ में इस परी महल की भगवान जान किन्तु चाब में बनाया गया होगा। सुंदरता के दम निवेन तथा शान फिजा के लिए मैं श्रेय ही आत्मा की गहराइयों तक खिंच गया था। उस दोपहर को अपने साथी पनालान को मैं साइकिल महल में नाले पर डान करने का इशारा करने हुए कितना लम्बा सॉम भरा था तब पनालान ने मेरी तरफ भृकुटी चढाकर देखत हुए साइकिल नाने का पटरी पर उतार भी था। मुझे लगा जैसे पनालान डर गया है या उन मरे ऊपर कोई सपने हों गया है।

नाला गाव खानी तरफ से चाण्डीवारी के अंदर की कोठी को गान्नी मीठी कैंप कपी में छेन्-छेड कर गुजरता है। कोठी के गेट के सामने पनालान ने साइकिल की

घण्टी को खतर के अलाम की तरह बजाया। भट पीछे से राखी बर्दी वाले चौकीदार न हिरा और परशान होते हुए पाटक खोला। शायद उसके विचार में परी महल में आदम जात नहीं आ सकती थी। मैं प्रतीभा कर रहा था वह हम देखकर पहले हँसेगा और फिर रोएगा पर उसने ऐसा नहीं किया। अधपकी दाढ़ी को बाँधने में उसने जागीरदारी ठाठ की नकल की हुई थी।

माहने ! हमारा दोस्त तुम्हारी कोठी देखन आया है। नया-नया पचायत-सदस्य बनने में पनालाल का और भी रोज हो गया था।

आम्ना आम्नो प्यारो भाग्यवान हो शायद यह शपित जगह आपके चरणों के स्पर्श से साते से जाग पड़े। माहनासिंह के अदर शायद पुराने दद न करवट ली थी। उमका माया भी कोठी के पीले रंग की तरह एक पल चमका।

मैंन ख्याल किया माहनासिंह किसी अहिल्या की बात तो नहीं कर रहा ? फिर मुझे सहसा अपन और पनालाल के राम-सङ्गम होने का भ्रम हो गया। अवश्य इस कोठी के साथ कोई अहिल्या जसी अनहोनी घटना गूथी होगी नहीं तो आबादी से दूर उजाड़ में इतनी शानदार तिमजली कोठी कैसे आ सकती है ?

सरदार जी चाय बनाऊ ? चौकीदार ने पूछा।

जरूर बाबा जी ! अगर दूध हो तो।" मैंने पनालाल के नहीं करने से पहले ही अपन गौक की हामी भर दी।

पनालाल न भरी और देखकर सिर मारा। वह वहाँ चाय नहीं पीना चाहता था। शायद वह अपन को जबदस्ती घसीट कर लाया महसूस कर रहा था। इसके विपरीत में घास फूला नाले में कोठी की नाचती परछाईंयो साफ-सुधरे बरामदा तथा लम्बा में लिपटा लताआ को देख देखकर इतना खुश हुआ कि खुशी समा नहीं रही थी मुझ में। जम ही मन काठी के बरामदे में से गुजर कर कोठी के पिछवाड़े अण्डे की शकल के तालाब में अगडाई लेती औरत की सफेद सगमरमर की मूर्ति देखी आश्चर्य ने मेरे सारे अंगो का जगह जगह से अकडा कर एक मूर्ति बना दिया। यह अहिल्या तो नहीं शायद बीनम है जिमको हमारे देस में सरस्वती कहते हैं। पर इसकी बीणा ? इसका बाहन हस ? शायद विद्युड गए हैं। हो सकता है छीन ही लिए गए हों। प्यार की तरल स्थिति में भी बीनस की आत्मा भरी दोपहर में बीमार-सी लगती थी। पता नहीं इसने कितने समय से कुछ भी न गाया हो। कला की देवी का गाए बिना बीमार पड़ जाना अव्यम्भावी है।

मुझे छानी भर भर कर श्वास आ रही थी। मैं उस समय शत लगाने के लिए तयार था कि यहाँ हर तरह का बामार, विरोध रूप में आत्मा और प्रेम का किसी भी तरह की दवाई के बिना अच्छा किया जा सकता है। ठीक यह वही जगह है जिसकी हर मनुष्य में सामाजिक बंधना में पर कल्पना की थी। प्रेमियो ने दुःमनो में दूर 'श्व' बगना बन सारा में जीना चाहा था और मैं खुद एक उपमास निखन के लिए शोर गुन में दूर एकान दूना फिरता था। मैंन सोचा सौदय के अगडाई भरने का नाम ही ता बना है। मुझे अपनी कला को साकार करने के लिए इससे अच्छी जगह नहीं

मिलगी। मैं बीणा का मुर करके सरस्वती के हाथ म दूंगा फिर प्यार की मादकता म उसके हाठ फडकेंगे, और उन मुरा को मैं अन्तर दूंगा। पहली मजिल पर जाकर मैंने पिजा को बाहा म भरते हुए पुकारा—

“पना ! मैं किसाना के सघष बाना उपयास यही लिखूंगा। कितना एकांत है आत्मा बोलती-सुनती है हवा कितनी निमल है कि आत्मा जन्मा की मेल उतार कर विगुद हो रही है। मैं इस खूबमूरती को शांति को और महक को अपना आप देना चाहता हूँ।”

पना इतनी जोर से हँसा कि साय ही काठी हिल उठी। पना नहीं उमन मुझे पीवाना समझ लिया था या स्वय हो गया था।

पता है मेरे यार, यह कोठी किस महाराजा ने बनवायी थी ?

ताज भी एक गहनशाह न ही बनवाया था। मैं उस समय अपनी बपरवाही म पनालाल मे कहा ऊँचा था।

तेरी दलील बकवास है। पनालाल एकदम घृणा स भर गया। ‘यह कोठी कभी हमारी अम्न की कलगाह रही है।’ उमका मुह जान हो गया जैन किसी सूनी इकनाव के दिन भूरज रक्ताम हो उठता है।

पनालाल के मन की भडकी गर्मी को मई नजर रखत हुए मैं उपरी बारादरी तक कुछ न वाला। मैं समझता था महाराजाभा और जागीरदारा के समय म आधिक नौच खसोट के साथ अस्मते भी लूटी जाती थी और यह कोइ अनोखी बान न थी। बारादरी म आस पाम और भी खूबसूरत दीखता था। दो कोस व फासले पर पनालाल के गाँव म स घुआ उठ रहा था जो ऊँचा चडकर बायु की गति दिशा मे फैलना जा रहा था। गुरू भादा म लगता था, जैसे उमडती आ रही हरियाली न कोठी को अपन आगाग म समा लिया है। मैं यह भी सोच रहा था कि पनालाल का जागीरदारी युग की कला और खूबमूरती से क्या चिन् है। मैंने नाक की और भाक्कर पीछे हट्ट हुए कहा —

भाई मेरे महाराजा के कुकर्मों के लिए हम इस कोठी को कैसे दापी ठहरा सकन है ? एक गिलास म आप शराव पियें या अमृत वह हर हालत म खामोश रहेगा।

बाह मेरे यार ! तुम मरुम्यल को भी उनना हो प्यार करोग जिसने मस्मी को पूजा, जितना कि उस ऊँटनी को जिस पर पुन्नू को उठाकर ल जाया गया। पनालाल और भी चमक उठा।

यद्यपि पनालाल की दलील सही जबाब नहीं थी पर मैं उसका भाव हर पथ से समझता था।

गायद उसन मुझे महाराजाभा का पिटहू ही स्थाल कर निभा हो।

‘देख, बचत म पहने अगरे सस्ती जाग पडती वह दाना उम ऊँटनी पर चडकरकही भी मन भाता जगह पर जा सकते थ इस लान्बीबाग जसी कोठी म आ सकत थे। क्या उस हालत म ऊँटनी चलन स इनकार कर देती ?

अग्रन म तुम कलाकारों को मार ही यह है कि मानवीय हिता की अपना घूर



पड गये थे, और रात की रानी की सुगंध से पलकें अपने आप बंद होती जाती थी। मैं रेलिंग पर कुहनिया टेककर नीचे झाँगन म देखने लगा। अब चाँदनी बुत की कमर तक उतर आई थी और छत म देखने पर ऐसा प्रतीत होता था, जैसे वीनस अंधेरे म डूबती जा रही है। मैंने सुगंधित हवा से छाती भर कर दिमाग खुला छोड़ दिया। इस समय मैं हर तरह का बोझ उतार कर औपचारिक दुनिया में ही विचरण करना चाहता था। पर मरे दो विचारा को एक और ददनाक चीख न ताड़ पाड करके रख दिया। मूर्ति बर्मान की तरह भूक गई जैसे उसकी आत्मा खिंची जा रही थी। मरे सीन म बुरी तरह उथल पुथल जाग पडी। खडे रहना डूबर हो गया चेतना को चक्कर आ रहे थे।

गायद यहाँ अनुभूति रखने वाली आत्मा पहले कभी न आयी हो नही तो खामोशी इस तरह कभी चीखें न मारती। फिर कितनी ही और चीखे उठने लगी। हाय भगवान! यह क्या हुआ। गायद अब कोठी का हर कोना जाग उठा था जहाँ एक नोज वान किसान औरत खुल वाला पट कपडा और नगी छानिया का बाहो से ढकती अंदर ही अंदर गम स मरती जा रही थी। मैं जिस तरह भी देखता था एक नई जबदस्ती का अस्थिर माटल चीखें मार रहा सिसकियाँ भर रहा और वास्ते दे देकर दम तोड रहा था। काग मुझे यह कुछ न दिखाई दे कुछ न सुनाई दे मैं चीखो स छुटकाया चाहता हूँ। मैं एक दम मुह धुमाकर भाग खडा हुआ और सीनियो चडता हुआ उपरी बारादरी म पहुच गया।

मैंने एक क्षण विचार किया गायद महा वह चीखें न पहुचें। पर अब तक मेरे उपमास के सभी नहा तो आधे पात्र चीखो स डर कर भाग गये थे और बाकी के मृत्यु का प्राप्त हो चुके थे। मरी चेतना का बुरा हाल हो रहा था। मैंने थककर चाँद की तरफ मुह घुमा लिया और टाँगें पसार कर रेलिंग के साथ पीठ लगादी। यह रेलिंग डेर फुट ऊँची सगममर की जाली का बना हुआ था। सिर उचका कर मैंने नीचे नाल का झार देखा। उसकी सतह पर समल म स उतरती चाँदनी नाच रही थी। पर मरी छाती रकबर होन स भर गयी। यदि यहाँ म गिर पडूँ अबक्य मेरी एक चीख निकल जो काठी की दीवारें फाडकर सुगंधित चाँदनी को चीरकर गायद पनालान के गाँव तक ही पहुच जाय। हाँ सक्ता है वचारा माहानामिह सुनकर भी उठन का हौसना न कर सक। मरे काना न साँिया म एक दगड दगड की आवाज चडती सुनी जस कोर्न पशु भागा था रहा था। परा की आवाज स मैंने अनुमान लगाया हो न हो यह घाड की टापा का आवाज है। भट चीख स एक भारी भरकम गरीर वाला सवार कान धोडे पर बारादरी म था घुमा। मरा सारा अंतर एक क्षर ही लरज गया। नीच का मुनायम पना भी बाँध जा रहा था। मैंने अपने को जल्ना जल्नी माहस न्बाना कहा। मैं नूना प्रेता का बिन्नाता नहा था और न ही उम समय मुझे उमडी-उमडी हातन म दग्मवार क मामन हाना चाहिए था। हाँकि तब मरी भागन की सारी गतिन मुन हा चुकी था फिर भी मैंने माहम नही छोना। सवार इतन डार म हँसा कि अँगन का फुनवादी का हर क्या भावर ही भावर तिबुट कर रह गई और आध म

प्रथिक् कुम्हल गई । शायद उसने मेरे अदर की हालत का भाप लिया था । उसका हाग मुह काले कपडे म लिपटा हुआ था केवल दो आखें ही मशालो की तरह जल रही थी । शायद वह अपना मूह दिखाने से डरता ही हो । फिर वह रोब म गर्जा —

मुझे जानते हो ? उसन सोन की मूठ वाला चाबुक फिजा म मारा । चाबुक की गूक स बारादरी तूफान मे आपी किशती की तरह डोलने लग गयी । हा सक्ता है उसन चादनी को चीरन की कोणित की हो । उसके घोडे को मक्खी काट रही थी और वह बार-बार पर भाडता पूछ हिला रहा था ।

“तुम्हे और तुम्हारे कारनामो को कौन नही जानता ?” मैंने काले राक्षस का भय त्याग कर आहिस्ता से मुह तोड उत्तर दिया और उमे एकटक दुश्मना की भाति देखने लगा ।

नीचे कब्रों देख आये हो ?” वह अपनी तरह की ही डरावनी-गम्भीरता म घोडे म उतर पडा ।

हाँ, अब सबसे गहरी तुम्हारी कब्र खाने आया हूँ । मैं अपनी जगह उसी तरह टँग पसारे बठा रहा यद्यपि अदर सरज रहा था और दिल छाती से बाहर आया चाहता था । उसन मर चाबुक दायें-बायें घुमा कर इतनी जोर मे मारा कि सारा गरीर एकदम निर्जिव हो गया । कोई बिजरी गन् से नीचे को करट मारती गुजर गई । पर मैं कराहा बिल्कुल नही बल्कि मुकाबले के लिए अपन को इकट्ठा करके उठन का यत्न किया, किन्तु उस जालिम न पुनी स दूसरा चाबुक बारादरी के एक खभे म मारा, और मैं छत समेत नीचे लुटकन लगा । उस राक्षस की भूकप जसी हँसी की एक हा-हा मैं सुनी और नीचे-ही-नीचे लुटकता गया । एसा प्रतीत हुना था मानो मरा दिल छाती म नही और न ही सिर म अकल है । कोठी के नीचे मैं एक भयानक गहर म आ गिरा । फिर उमम डूबने लगा । कागिग के कावजूद भी मेरे पर कही ना न गग । मैंन साँम लेन के लिए अपना आप ताडा और मच्छली की तरह जोर लगा कर उभरा पर मैं चारो ओर से घुटा जा रहा था । अन्त म इधर-उधर हाथ मारते किमी की बाँह न मुझे अपनी तरफ खींचना गुरू कर दिया । बाह की दो बूडिया बना रही था कि यह कलाई किसी गडकी की है । पर उमका चेहरा मुझे क्या नही दिखता ?

मुझे निश्चय करना पडा कि यह सडकी दीपो ही हो सक्ती है जो मुझे एक तरह म भवसागर म स खींच ला रही है । फिर वह बाँह इतनी ऊँची उठ खडी हुई कि उमने मुझे मेरी कमली जगह पर ला बैठाया । अब वहाँ न घोडा था और न उसका सवार बल्कि सीडिया पर स उतरती दगड-दगड भी समाप्त हा गई थी ।

मैंन सिर हिलात अनुभव किया तब यह वही घुडसवार महाराजा है जिसन खेतों का रोगी ल जानी दीपो का घेरा था । पना क कहन के अनुमार दीपो बुझारी थी । उरूरी है कि वह खेता म अपने बाप की रोटी लकर आ रही हागी या भाइ की । यदि वह बग्न गारी नही तो खनो की मक्खी कमका गवती गेहूँ जसी तो अवश्य हागी । उमका भरी ज्वानी और नाक-जवगो की मुदरता न दैत्य-कद महाराजा का उरूर पागल बना दिया हाथा । मामूनी रग-रूप वाली औरत पर एक महाराजा याड ही

छानना है जिसके पास एक म एक मुन्ना चिता ही गनियी है। बुद्ध नहीं बन जा सकता महाराजा को यह रिज बागग भा गर् वि यर उमका रागना राह कर गना हा गया। दीपो न राह रोकन बान की गरफ गन भर जाग विमाना धानी छान-बान ग रसा हागा। फिर उमन घोरत तान घोर रंधारी हान क बारण धपन का एक मूढ़ मन् ग उनभा टोक रहा ममभा हागा। घोर राह द्वाडकर एक तरफ ग निरन चली होगी। यह बात एक महाराजा का गा बनती है। चाप उमन धपना धपमान भी मह्यूस किया है कि उमकी धपनी प्रजा थागा हा गयी है। राजा न दूमग बार उमकी राह रोक सा हागी घोर रगता धरमन ग परत नमी ग बुमाया हागा—

तू मुन्ना ही मही दा पल दग ता मन ।

इतना मुनकर दीपो न नपरत म धपय गाग भरकर फकारा हागा घोर बिना उत्तर लिय पहनू बघाकर धाग बड़ चती हागा। यह भा जचना है कि महाराजा न धान उमक पाय गाय बड़ा किया है। क्योंकि एक मयाना राजा बस चलन हाय म जल नही गवाता, भल ही एग ममय म उमकी बुद्धि ही भ्रष्ट क्या न हो गई है।

मुंदरी ! एक गन ता घाँसे मिता। यह फिर बावन पर मजबूर हुआ हागा। चापद दीपो न घृणा म दग ही किया हो। पानी तर ह्याँ दा पीना कच्चीग कुमार गदने। महाराजा न धपनी बुझीनी का न दखने हुए हा मकता है बीम बप का धना वनन की कोणिग की हो।

यह भी स्वाभाविक है कि उस समय लडकी का भरा घोर रका मन उद्यन ही पडा हो।

तेरे घर माँ-बहन नही। घोर उसन एक लुच्चे तपग स पीछा छुडान क लिए कदम तज कर दिय हाग।

मा बहन की गानी मे महाराजा को जरूर गुम्म म भा जाना चाहिए। पर गना है उसन यह भी पी लिया हागा। क्योंकि एसी स्थिति म मद की एक जवान उडकी की गानी फूल की मुगध की तरह लगती है। उमन डीठ हाकर फिर कहा हागा—

‘मेरी जान ! म एक महाराजा हूँ तुम्हे सबसे बडी रानी बना दगा परन्तु मेरी तरफ आँस उठाकर तो देख हमकर तो बाल। तुम्हे सोने और रगम स लाद दूगा मुच्चे मातियो का हार अभी तेरे गल म हागा।’ चापद अपनी अपनी प्रम-वामना पूरी करन क लिए उसन हर लडकी मे यही बात कही हो।

पूर विश्वास म नहा कहा जा सकता कि दीपो चुप रही होगी या मह फाडकर कह ही दिया हा जस कि भान मयाना वाली गवाई गाँव की लडकियाँ बदजात मद के मह पर कह मारती ह—

मैं तो यूकनी नहा तेर हारा पर। यह भी हो सकता है उसने मुह फेरकर थूक दिया हो।

इतना अपमान एक महाराजा कस बरदास्त कर सकता है। उसने ताब खाकर थोड स दीपो का सारा रास्ता रोक लिया हागा।

‘ऐ लडकी ! खबरदार जो आग पर उठाया नही तो उस समय महाराजा

की आँखा म स बाध भाँक सकता है जिसने सामने हिरनी को देख लिया हो।

नहीं ता क्या करण ? किसान लडकी की आँखा म नी जवाबी आग जँन मक्नी है। उमकी इतनी आन-वान वाली और निघडक हाने का कारण उसके बाप का दमनक हो सकता ह या भाईयो का पीरप जिनके सामन मारा गाव चू तक न करता हा।

नहा तो तुमे साम ल चलूगा। नायद वह गुम्म म भरी उसे और भी हमीन लगन नगी हो। वह नम पडकर हँस भी सकता है। मद की खामियत है कि वह ययामभव औरत के साथ सक्त नहीं हाता जिसका उन प्यार करता हो। सच जान, अब ता तुमे छाने क काबिन ही नहीं रहा।

तना बात मुनकर एक कुआरी नटकी का सरज जाना जरूरी है। उसके अदर एक नय ममा गया होगा। भय और उवसी म म पैदा हद दिलगे के साथ उमन मभव है गस्ता राक खड घोड क मङ पर मुक्का ही मार दिया हा। घोडा चोट खा कर एक दम पाछ हट सकता है और महागजा काई उपाय चनता न देख अतिम उपाय काम म लान के लिए क्रोध म पाड पर म उतर पडा हागा।

आन वाली औरत का छो-दना मरा घम नगे। अत म महागजा बिपर भी मरना है। जवनस्तो काइ भी कर दिल निमाग की भूमि सनुलिन नहीं रह सकती।

यरीनन उस समय लकी न आम राम मदद क लिए निहारा होगा। वहा कोई नहा हागा। काई हुआ भी न हुआ हो गया। उम जलनाद को कौन रोकता। पर उसके बाप का नन वह। से अवश्य दूर होगा, उमने महार भाई निकट नहीं हाग, नहीं ता वहन की दृजत तक पहुचन म पहन वह महादत्य का गना परी क्या क ताने की गरान की तरह मरोड देन पीछ देखी गनी, जो हाता।

महागजा न आग बढकर उम लडकी का पकडन का प्रयत्न किया हागा। लडकी पर कर उरर पीछ हटी होगी। उसके मिग पर ऐमी हायापाई म रोटिया और लम्बी वाली दाडा क तिक रहने का सवाल ही नहीं पैदा हा सकता। राटिया जरूर गिर पग हागी जा कौवा न उनाइ हागी और हाटी टूटकर लम्बी बह गयी होगी जिम आवाग कुत्ता न चाटा हागा। दत्य कद महाराता स एक चिडिया-सी लडकी भाग कर पग जा सकती थी। उमकी लम्बी बाँहा न इन गिग घेरा डालकर भूमे बाड का तरफ चिडिया को मराड लिया होगा। पकड और मराडे जान की हागत न दीपो न चावें भी जरूर मारी हागी जो किसी क मुनकर भी अनमुनी कर दी होगी। नायद मन जल्लाद म दाता से अपन आनका छुटान की कोगिग का हा। और राजा अपन नम्र रेगमी रुमाक म दीपो का उजबान भी कर सकता है। वह उसका रेगम फानन न लिए छटपटाता रही होगी। इस तरह की हायापाई म बहन बुद्ध मभव है।

आन म बुदरत की सारी मदद के उमस हा जान पर लडकी न अवश्य राकर मिनते की हागी। यह भी किस तरह हा सकता है लकी हर हागत म हठ ही पकड रक्ता। उसन जरूर बास्ता दिया हागा—

तुम मर बाप हो, राजा दग की मत्र वशिषा का बाप हाता है। तुम्हारा हमारा

गोत एक है, तुम्हारे पुरखे और हमारे पुरखे कभी सगे भाई थे। आप राजा और हम आप के आसामी हो गये। मैं हाथ जोड़ती हूँ गुरु का वास्ता देती हूँ, मुझे छोड़ दो, मैं कुम्भारी हूँ मासूम हूँ तेरी प्रजा हूँ। तुम सबके पिता हो बापू! मुझे छोड़ दो।'

यह जाहिर ही है कि पत्थरों और राजाओं के दिलावर कोई अमर नहीं होता। उस राक्षस पर क्या होना था विजय चाह भूठी ही हो एक लालची राजा क्या छोट्या है।

यह भी हो सकता है, दीपो के साथ महाराजा की ऊपरी चर्चा न हुई हो इसमें अलग तरह की भी हो सकती है। ऐसा भी हो सकता है कि गिबार् खेल कर आते महाराजा न लडकी को किसी तरह की बातचीत का मौका ही न दिया हो। और भट्ट ही उसको चादर में लपेटकर घोड़े पर डाल दिया हो।

पनाताल के बहो क मुताबिक दीपो घोट पर डालकर कोठी लायी गई थी। यह सफेद चमकता सत्य था जो कि दिन दहाड़े घटित हुआ था। इससे आग क्या हुआ होगा जरूर महाराजा रोती चिल्लाती या विलकुल ही सहमी सिकुड़ी दीपो को लेकर बारादरी में चढा होगा और घोडा माहनासिंह अथवा उस समय के कारणासिंह ने दस्तूर मुताबिक भट्ट आग होकर पकड़ लिया होगा।

बारादरी में जाकर महाराजा ने उतावली न की होगी। उसने दीपो को रेशमी पलंग पर फेंक कर सबसे पहले अपनी धडकन शांत की होगी। शायद उसने डगी सहमी दीपो को मुस्करा कर हौसला देने का यत्न किया हो। इसके विपरीत लडकी साप की फुकार से मोमबत्ती की तरह बुझ भी सकती है। महाराजा न अपनी मरी जमीर का गहर पाताल में दबा देने के लिए पीना गुरू कर लिया होगा। शायद उसने जमीरो जमीरा से सक्डो फोस दूर अपने को बलवान सरूर में देखना चाहा हो।

स्वाभाविक है कि लडकी महाराजा से दूसरी तरफ देख रही होगी और अपना किम्मत को रो रही होगी—कोई चिडिया गिबारे की ओर कैसे देख सकती है। वह अपने उदारत्व के बारे में भी सोच सकती है। अपने भाष्यो की उडती धूल दण्ड सकती है। हा सकता है उसने बारादरी में अपने प्रनाज भरे खतो को निहारन हो अपने बाप का हल चलात पहचानन की कोणिग की हो जिस तक उसकी चीख नहा पहुच सकती थी। उसने जरूर रोकर पुकारा होगा 'बापू! तुझे क्या पता तरी बेटा पर हम समय क्या बीत रही है। तू हल का गोनी मार इस घरती को आग लगा ने जहाँ में तरी मीना उठाई गई। बाँभे मारते, बक्स होसर अत में उसन कहा हागा 'बापू' और नहा तो तू इस कोठी का ही आग लगा द।

बहुत सम्भव है महाराजा न दीपो को राने ही न दिया हो। इसमें उसका मूड खराब हो सकता है। शायद उसने दीपो का गाराव पीन के लिए कहा हा। और पिलान के लिए तो अवश्य ही मजदूर किया हागा। वह गाराव की घेतन और गिलास लवर आग बढा होगा और दापा डरती या मिन्नते करती पीछे हटी हागी। यह भी हो सकता है महाराजा न धीमासुन्नी करना चाहा हा। वान क्या लडकी न अपना मनीष बचाने के लिए पूरी कोणिग का हागी। पर भाविक उमन कोई भी कोणिग सफन न

हाने देख पनालाल के कथनानुसार बारादरी से नाले वाली तरफ छलांग लगा दी। यह सब मानना पड़ेगा कि दीपो ने छत से गिरते एक ददनाक चीख मारी जा खेता और रास्तो को चीरती उसक बाप क पास पहुच गई, उसके भाइया के दिमाग को जुनून बनकर चढ गई जा बीछे पनालाल और भाई नाहरसिंह का नारा और ललकार हो गई और इस कोठी म प्रेत बनकर छा गई।

दीपा महाराजा स डरती पीछे हटती भी बारादरी से गिर सकती है। यह भी हा सकता है कि महाराजा ने गुस्से या किसी भगडे के कारण उसका खूद बारादरी स नीच फेंक दिया हो। नाल की नानकशाही इटो के फा पर गिरकर दीपो का मारा मिर पन सकता है। यह भी ऐन कुदरती है कि उसके सिर और मुह मे से लहू के परनाले बहकर नाल म मिल गए हो जिसका पानी उसके बाप के खेता को लगता है और जिन खेता की मैं आज रोटी खाकर थाया हू।

फिर एकदम मेरी टागो के गिद से बाहो की कधी टूट गई। और मरी बठे-बठे को सुन्नियाँ निकल गइ। मुझे लगा दीपो मेरी अपनी बहन थी जिसकी चाखें सुनने मे मैं कान बंद कर लना चाहता था और सत्य दबने से आखें मीच लना चाहता था।

## उपकार

महेन्द्रसिंह जोशी, १९१९

---

महेन्द्रसिंह जोशी भारतीय व्यापकालिखत व एक उच्च पत्राधिकारी है और पत्रापी का प्रीत पाड़ी व एक प्रमुख लेखक है ।

जीवन व व्यापक अनुभव विगत मम्पक वृत्त और न्यायिक दृष्टि विवचन व कारण महेन्द्रसिंह जोशी न पत्रापी को अनछुए घरातला की कहानियाँ दी है । उनके तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हा घुर है—

‘प्रीता त परछावें’ ताटी त त्रिप्लीआ और दिल तो दूर ।

---

गपने ही घून की पत्थर चीर देने वाली चीख सुनते ही एक बाला-बसूटा मरि यल सा घूटा कच्ची कोठरी व धक्काट दरवाजे म से लडखडाता हुआ लपका और उसके शगुन बाग लाल सातु म त्रिपटे कंधो स चिपट गया । जरी व कमीने वाली न जुती लडकी के हाथ स निम्लकर उसक महदी रग परा के पास गिर पडी और उसकी बाँह बाप की टेडी मेडी उभरी नमा वाली सूती गदन स चिपट गइ । फिर न तो पिता व अस्थि पित्रर वा भूनसाता धूप का सेक लगा और न बेटी के छाने भने नलवे जलनी हुई रेत स उक्ताए । दर तक कुठ पूछे-बताए बिना फूट फूटकर बे दोना रोने रहे ।

यह घटना उस छाटे-म गाव पत्ता जलहर का है, जहाँ खाने वाले मह अधिक थे और कमान बाल हाथ कम । लोगो ने जुनाई कर ती मचानें साफ की मुडेरें बांध ली परंतु धरती की भूत म कमी न आई उपर से सेम आ गई भीत की बाली परछाड की भाति सरकती हुई । धरती पिटी और हडबडाइ गई, वास्तव म चादी की

बनाय रहा का जन्म देने लगी । खेत जिस जल की ईद के बाद की भांति प्रतीता किया करत था, वही पानी उनकी छाती पर नाग का भांति कुटनी मारकर बठ गया । भर पूर मना का म्यान दो दैत्या न रोक दिया—चौह की उलभी तारा जसी अडियन घाम श्री हन क फन जमे पत्ता वाली निदयी बूटी । बना क सीग भुनम गए थोथे पिजर म रह गए । छाट छोटा किसाना के छोटे छाट सेनो ने मिलकर बड बड तानावा का रूप धारण कर लिया और वे मजर साहब क लिए मुर्गाविया क गिकार के अतिगिकन किना काम के न रह ।

हर एक अपन कुनत्रे को जीता रखन के योग्य अन पैदा करन के लिए गाव के बडे मग्या का आर देखता था और जीवन कहार का तो कहना ही क्या जिसक पाम अपना बिन भी न था । जिन गाय भसा का वह चराने वाला था व भूख म सूख सूखकर मर गइ था फिर अस्थि पिजरा की कीमत पर व्यापारिया क खंटो म बग गइ था । विमाना के लट्ट जैन अपने पूत बकार बठ अगटाइया लेत थे । जीवन को बगद पर कौन रखता ? जिदगी मौत क घुघलके म गुगा जमे कई असीम वर्षों तक भूख अपनी तुल चाच स उसकी आता को म्वाती रही । अत म गाव से दूर धरती का एक टुकडा कर मजर साहब न उसका आथय दिया और जब कुट्ट समय पश्चान् चार एक धरती जानन क लिए कह दिया तो उसन अपनी जवान बेटी उनके घर काम-काज करन क लिए भेजन म एक बार भी च चरा न की । जीवन को अपनी बटी पर बहन गव था । तीतर मोर लिखती है मेरी बलो । —वह अक्सर कहा करता और जग विवास था कि जब लडकी सुख देन लगी तो सरदार मजर उमके लिए जमीन और बग दगा ।

बना का रग अपन कुन म अलग न था—काता । पर नख गिख सूब थ । मोटे हाट चपटा नार, चौड औरे कान ब-द सी आखें नाना दाग के इस सब कुट्ट स वह ब रहो थी । कलो बन (कापन) थी बरा की लम्बी और मुडोल —नरमा कपाम की न पतियो-जसी कोमल कामन निखरी उजली ! निल क तेल की धार-जमी कामल गभीर भूक । पकी हुई मक्का जसी जवाना थी उसकी ।—मीठी मीठी सहमी-सहमी । तत्र पानी का घडा लेकर वह गाव स निकलती नडका क हाथ म पक सूत की फिर किया घूमन न रुक जानी बारह गीटी क ककर वही पड रह जाते, हुकम के पत्तो पर पान और इट क पत्ता पर चिडिया गिरन लगती ।

जम सफलता लेकर वह मेजर साहब के पास गई हो—कुछ ही दिनो म कलो न सब क मन माह लिए । थक कर चूर हान के लिए वहाँ चूल्ह चौके के बिना भी बटुत कुछ था । (घर क पाच छोटे-बडे लाडन बच्च काम ही ता पदा करन के लिए थे ।) मेल कपड गद फग बूटे बरतन विखरी हुई वस्तुएँ । और तो और सरदार क अपन छाट छोटा काम हा समाप्न न हाने थे । कभी सीगा लागो कभी पान बनाओ कभी टिकी पक्या दा और कभी विस्तर लगाओ और वह हर समय नगी ही रहती क गिनापन क गिकवा । भिक्किया मिलती गालियाँ भी । वह ऊँचा साम न लेती घामू न गिराती । जब प्रात काल वह सरदारनी की चाय बनान के लिए उठती तो सब सा



पत्थरी की प्रतिनिधि कहानियाँ

रह हीन और जब राग को गल्लाए धारों निराल रूप का सींग म लगा ता माग लीं  
 ता बुला हाता । खग जग मशीं दुखरले मग उमरा मीता खग मूलने हू मूलने के मय  
 पीता म मया और मयक की तरत पुनने हू उमने गुप हू धन मूमता की धार  
 डारन मग। जीवन मल्लार मने क मयक का शिमा धारने मया तो कउ उने मयक का  
 गई मारा शिमागी—रंग बोई निराज बरिता कमाई क मने म बरपी हा  
 हाय र बापू को धाराय उमर कउ म निकरने म मग ही शिबिना म मयक लीं ।  
 भयभीत हू मीशन को टांके कांन मरीं भय। धंपताई धागा म बर धाग बडा। कता  
 बहि मगारे लीइती हूई कई मीइयां उमर लीं । मने म मयक मारव न जा। मीन-म  
 मीशार म निकरन धाग । कंवा क पर गिता मयक म हाकर रर ल। मेरर मारव न  
 जीवा का कपा धापपाग हू कता— मीइया की बिना मय कता मीवा मग ।  
 इ त म मल्लारनी त धरम को बिबिना बना निदा है ।

जीवन धरता या शिबन धरनी उमर मा मा हा। कता के मल्लार हया क बर  
 मग उमर बय क मारत या । कडकता मल्लारी पू म कंवा त कमा म ऊपी मल्लार  
 म म पाग पूग मार बिना या । मरीं की बरनीं मी राता म पागी का-मल्लार मिवार  
 की थी । कठार मुरग का टकरने जीवन का धानी म मगपी था । बरनि जेन म उमरा  
 मरीर पुन पुनकर बहता या । जगा भुगा ता बर धाग पर कुपन कर मरा जग भूग  
 न उम। इन कु क मरीर म इनना मी हार ता मनवा हा मी थी । परनु धव ब्या क  
 भाय का नितारा मयक उठा या । जा ह्या बनी की धार म धानी उमम मरतूत के  
 हर पता को टडक थी और नाम क ताका पूर की मुगध । जीवन म बर पट्टी बर  
 पुपटी हूई ता रही थी और भाइकर परा रही थी । ममारी त हाय पकडा था और  
 मय उसकी नाक निमी अक्षय धार पर मगने वाली थी । मुग म रह रही ब्या का धार  
 ध्यान जात ही जीवन को क ट म-मनग ध्यारे मगन जो बनी क जाने पर उमर पल  
 पड गय क और उसकी धाँसें किसी अनुपम आयुवता म सजम हो जाता ।

दिन दिन करके साल ध्यतीत हा गया । जीवन का ताँस फूलता मया उमरी  
 गकित कम हाती गई । उसम मूज हू धुन-दसन धाँच की भक्ति धमकन लग । उमर  
 जाडा की पीडा पूता जती तीव्र हा गई—जग त्वचा हड्डिया को दाड गई हा । उमर  
 धात्मा भी मरीर म पयक हान को तत्पर थी । वय दिन म एक भागा निर बह जा  
 रहा था—बही मरी धाली क सामने ही बटी का काग हो पाय ।  
 तय मजर साहब न एक दिन बह दिया कि निजला एवांगी को बनी की  
 वारात धायगी तो उसकी यह इच्छा भी पूरी होन को धाईं । सरदार क दोल घुटे घु  
 बाक से त्व हूए स थ । यह क्या धन है बेनी का भी—जीवन ने मोचा । न रली  
 जाय न भेजन म चन । मजर साहब ने दूसरे की घोसली म सिर दिया था और  
 मय होग भूली हूई थी । व्याह तो पूरा भभट हाता है और फिर तडकी का ।  
 जीवन क अक्षय जी म धाँसुधो का मीन था । मेजर साहब ने कहने ने वह जग  
 हलका सा हो गया हो—जस किसी ने उस धरती से उठाकर चाँद पर रख दिया हो ।  
 कली का काज क्या हुआ बस कमान हो गया । बहारा की बागत का कोठी म

आगमन हुआ। निवार बुने पलंगो पर घोड़ी में धुली चादरें और तबिया वाले बिस्तर। पानी के प्यासा का बरफ वाले दूध। मेजा पर भुगों की प्लेटें। साडे म ह्लिस्की। घर घर चर्चा हुई। 'सरदार ने धन का एक ही काम किया है।'

ढोली वाले रथ के अभी चिह्न भी सड़क से न मिट थे, जब क्ला उल्ट पात्र गाँव लोट आई। समुराल उमे बसान के लिए तयार न थी—उस कई महीनो की गभवती बो।

# अंधो पोसती है

सन्तोखसिंह धीर

---

पजाबी के नई पीढ़ी के लेखक में सन्तोखसिंह धीर का स्थान विंगिट महत्व का अधिकारी है। पजाब के ग्राम्य जीवन और उनमें आती हुई सामाजिक आर्थिक क्रांति का चित्रण धीर की कहानियाँ की विशेषता है।

प्रकाशित कहानियों संग्रह सिटिटिया दी छा सवर हीए तक आदि।

---

टांगा, बाहा सिर और कंधो पर भालो-गडासो के धनगिनत घाबो के कारण अमल्य पीछा और टीस अनुभव करता आठ नम्बर का मरीज अजुन उठ बैठन की कोशिश में एक बड़ी गाली देकर बुडबुडाने लगा यदि भेरे बस में हाँ ली गेली में उडाई धरक सबको मव-के सब तेल डाल कर फूकने लायक है भरे साले के।

द्वार बड़े छतीस जहमो से छिदा खोखलवाने का बाका अजुन सवा महीने से चारपाई पर पडा था। वह तग आकर दुःखी हुए दिल से बोल रहा था फिर भी उसकी गतिना मुनकर दूमरे सिर तक वाट में पडे मरीज हस पडे। जिनके पाव स्पग मात्र मरते थे और जो हम नहीं सकते थे वे भी हस पडे।

उस हसन से उसने चहरे से भी पीडा के गड बल साफ हो गए और उसकी आँखें खिल उठी। उसी समय सामने के पाच नम्बर के बट में एडरसिंह का भाई उमक मट में निवाल डालना छोडकर कमजोर कुहनियाँ पर बाँपने अजुन का देख नट उतनी तरफ आ गया और उस बिठाकर तह की हुई रजाई उसके पीछे रख पाठ उम पकना दिया।

एक भूठ नहीं बडी ही धीमी और बरण आवाज में सहारे से पाठ टक,

अजुन की आर देखता इ दरसिह बोला । रेन के नीचे आकर उमक दाना पांव कट गए थे । सारी-की सारी रेल उसक ऊपर स गुजर गई थी । वम उसका भाग्य था कि उसकी जान बच गई नहीं तो बोटी-बोटी कट जाती । पिछन दो महीन म अमनाल क पलग पर बेजार पना वह इम प्रकार के जीवन से तग आ चुका था । कई बार वह आमुआ के बिना ही रो लेता—'अच्छा होता मैं मर जाना अब जीता रहन क्या करेगा पैर ही न रहे मेरे जब । पनाम वप का आयु म उमन पाव कट गए थे । वह सान पुत्रिया और दो पुत्रा का पिता था । बडा लडका तो वचारा भगत ही था और दूसरा लडका जो सबसे छोटा था, उसके जवान होन म अब देर न थी । बडी दो लडकिया की ही शादी हुइ थी बाकी ढेर सी लडकिया अभी पडी थी कि उमके पांव कट गए । वह मारा दिन निरास आखो से बाउ की दीवारा और छत का दगता रहता । कभी भी किमी से खुलकर नही बोलता था । केवल अजु न के साथ ही कभी—'हूँ हूँ कर लिया करता था क्योंकि दानो के पलग आमन सामने थे दाना लम्ब दिनी क मराज थे और दाना का ही अभी और काफी दिन यहाँ रहना था ।

मैन कहा भाड म भोकन लायक है सारा अमला, इ दरसिह । लान कबल म पाट' लेकर इ दरसिह का तरफ देखता अजु न कहन लगा तिनका तोडन का भी कष्ट नही करता कोई । और ता और साना भगी भी कम नहीं जस अफनातून का वच्चा हो । हराभी अपन आपकी निबिल सजन का बाप समभता है मुबह स चालीस बार कहा ह भाई मुझे उठाकर पेगाब करा जाओ लेकिन सुनता ही नहीं ।

क्या कहता है ? यह तो ट्यूटी है उमकी ।' छ नम्बर स अखबार आसा के आग से हटाकर नये आये सरदार मुखवर्तसिह न पूछा जिनका कन कोई छोटा आपरेगन हुआ था और जो किसी कालिज म प्रोफेसर बताए जात थ । अब तक इस सारी बात चीन पर वह अखबार के पीछे धीरे धीरे मुस्करा रह थे, पर अब वह भी उसकी बात म आ गामिल हुए ।

कहना क्या है सरदार जी वम टालमटोल । उसने बिनी हुई आखो स टगर कर कहा, जिनके कोना पर कौए के पजा की तरह भूरिया का जाल खिंचा हुआ था न्नी टांग घुमाता साना इधर उधर घूमता रहता है करता कुछ नही ।'

सामने पडे सरदारजी का हलकी हँसी आ गई । साथ ही दद की छोटी-सी लहर उनके चौंके चौंकार माधे पर रेखाए बिखेर गई ।

सच्चा बात है पर दस नम्बर के बड पर सीधा पडा पहनवान बोला जो चार दिन हुए गाव की एक लटाई म चारों खाकर आया था ' नीच वाले भी कटी उंगुनी पर नीन नही डालत ऊपर वाना की ना कोई बात ही नहीं । वह कहता गया क्योंकि अब तक वह भी सबक स्वभाव स परिचित हो चुका था ।

ऊपर वान ता बन्कि अच्छे है हाजिमा जसी कानी और कतगी हुइ दागी म सहज स्वभाव से खजलात हुए अजु न ने कहा ' पर भगी तो बडा ही हराभी है

गुरबचन भगी अजुन क निकट ही कही वाहर बगमद म सफाई कर रहा था और जानीदार लिडकी म स उस सघ कुछ मुनाई दे रहा था । वस ता सभी मरीजा

की चिड़ चिड़ करन की आदत होती है और यहाँ सभी नवाब बन बटते हैं पर अजुन ता कुत की तरह हमेशा भौंकता रहता था। सारे मरीज इसी ने बिगाड़ दिए थे। तभी तो साना गाव व पटटीदारो स वधे तुड़वा बन आया है। धीरे से जाली का दरवाजा छोड़ते हुए वह लगडाता जल्नी-जल्दी वाड म आ गया और अजुन की ओर बढता हुआ उठन लगा ओ तू क्या बनता रहता है सारा दिन अजुन ? तुम कहा नहा था कि अभी आता हूँ। तू तो एक मिनट म आसमान सिर पर उठा लेता है। आओ पक-आओ पाट फेंक आऊ। हँ। बेकार जबान चलाता रहता है सारा दिन उसने कटी हुई दाढ़ी के ऊपर घुंटे सिर को हिनाया जिस पर से नीचे गदन तक पटनी बधी हुई थी।

आ अब आये हो न। आसमान उठा लता हूँ दो घंटे हा गए। मेरी जान निकल रही थी लो पकडो हँ। अजुन ने बात को हसी म ल जाकर बतन उसे पकडा लिया।

मैं डाक्टर स कह दूँगा। सारा दिन गालियाँ देते हो। वृत्रिम क्रोध स बुड वृत्त करता जोर स दरवाजा बंद करता गुरबचन बाहर निकल गया।

वह दे जिसम कहता है लगा ले जोर बलकटर बना है। अजुन कमजोर और दयनीय था पर दिन पर दिन स्वस्थ होने के हौसले म घोडा अकडकर भूठी डाँट व साथ एतन ऊंचे स्वर म बोला कि बरामदे से परे शौचालय की ओर जाता गुरबचन अर्द्धी तरह सुन सने।

जो न देला सो ही भला। इंदरसिंह के बडे भाई चनरसिंह ने उसकी छाती पर बन्धन टोफ करने हुए अजुन की बात का एक तरह से समथन किया और फिर जूठे वतन साफ करन के लिए वह बाहर चला गया।

वाटर स अजुन के लिए खूब कढी चाय बनाकर लोट पर लोटा रखे उसकी पत्नी धायी। डानी व पास भाकर वह चाय का लोटा रख रही थी कि एक बडी सी गानी दकर तनम छिपाकर अजुन उसे धूरने लागा वहाँ मर गई थी तू री ? इतनी देर हगानजानी कुत्ती है। ऐसा लगता था कि वह आँखो से ही उस ला जाएगा।

बता को न तो गाली लगी और न धूरना ही। अपना पीला-सा मह ऊपर उठा कर आवा स म द मंद मुस्कराती वह कटोरी म चाय उडेलने लगी— चाय बनाकर ही ता आती। लडका बडा रहा परा पर देख तक। चाय की कटोरी उसन हठा के पास करती वह धीम धीम बुडबुडाई।

लख को दवा देती खडड म मेरे सान का। गरम घूट नीचे करता वह फिर घुटका हा हा मैं पगाव करन को तग बठा रहा

बता बुद्ध न बोनी। वह अपन पति व टड स्वभाव म परिचित थी।

मिलगट निकाल। अजुन ने घोंस व साथ हुक्म दिया।  
रिन म न सिग्रट निकालकर बतो न आप उमक हाठा म पकडाई और फिर उय जना लिया। दो-तीन कग खींचने व वात बतान मिग्रट अननी उगनिया म ल ती।  
अप धार थाड समय पश्चात बनो उसक हाठा स सिग्रट लगा दनी और अजुन न कस

खीच कर घुमा छत की तरफ उड़ा देता। उसकी दोनों बांह दुश्मनो ने तोड़ दी थी, जिनके ऊपर पट्टियाँ बँधी हुई थी। वे अभी किसी ओर हिल नहीं सकती थी। अपनी तरफ न तो दुश्मन बांह काट कर हींगए थे।

अधीम की गोली ने ऊपर कड़ी चाय और उससे ऊपर सिग्रेट, अजुन का नशा बुझ खिल गया। एक लम्बा वग खींचकर सिग्रेट को सिर से तक उलाकर, तसल्नी व साथ घुर्गे को सरसरी छाड़ता वह बोला 'लडका वहाँ है ?'

वरामद म खेलता छाड़कर भाई थी। "

जाया उम नेकर आया ? हुकम हुआ।

छोट-बड़ कई वतन कपड़े म बांध कर बतों बाहर चली गई और सफेद, दूध-सी पोशाक म शिप्रन्दार दरवाजे की धीरे से बन्द करती नम अन्दर आ गई। माथ पर रीव की हल्की-सी सिक्कुडन और कंधों के ऊपर पत्र रहा चौड़ा बगुल मा सफेद स्काफ निमन आधा सिर और उसका भारी और शानदार जूडा डक लिया था। बाड़ के पक्ष पर नाख से चलती यह भेज की तरफ जाने लगी। एपरन के घर व नीचे सफेद म जा म भरी और गोल पिडलियाँ हलके-हलके घिरक रही थी।

सारे बाड़ पर मानो हुसन की छाया पड़ गई। आस पास मानो एक लपट-सी उठन लगी। दूसरे निरे पर छ नम्बर के पास पहुचकर मज के ऊपर उसन कागजरम फिर बापस एक नम्बर से बारी बारी टैम्परेचर ल ले वह चाट भरन लगी। चार नम्बर व डेड के पास जब वह आकर खड़ी हुई तो अजुन ने मह खोल ही दिया। काई मच्छरा का व दाबस्त ता कीजिए धीधीधी। नित कहते है आपसे। एक पल की अर्थ नहीं लगता। सारी रात कानों व पास धीन बजती रहती है। हम ता फाड फाड क सा गए मर साले व।

उफ / ओ समुरे। 'धारियो वाल सूट म पड सरदार ने अबान काटी ' वमवस्त किनना अगिष्ट है। न अदब न सलीका। आँवों के आग अखबार करता वह दिल म खिसिया गया।

'आज दवा छिटकती है सारी जगह सिक्कुडन उसन माथे पर उसी तरह पड़ी रहा मच्छर यहा है ही बन्दूत। मूस अजुन की गुस्ताखी को नजर नग्न करत हुए वह अपने प्रवाल म कहती गई दवाई तो मिलती नहीं बाड़ व लिए पूरी ऊपर से हुकम देने रहन है मक्खियाँ मारो मच्छर मारो। दवाई कोई नहीं देता। सुना-मुनाकर कहते हुए उसने जरा मुह बनाया और साथ ही कतखियों से छ नम्बर की ओर देखकर ऊचाँ पर मुरीली बोली म आवाजें दे लगी जगतमिह। बसीनाल। आगुर बचन। उसका अभिप्राय था कि कोई जना अन्दर आ जाए कोई भी।

जगतमिह बाड़ का नौकर था बसीलाल आपरेगन धियटर का नौकर था और गुरवचन स्वीपर था भगी जिसकी जिम्मदारी वाटों-बरामदों को साफ रखने से लेकर ननों-कम्पाउंडरा के बच्चे खिलाने साग-सजी लाने डाक्टरा और सजना के बूट साफ करने और बाड़ के मरीजा के मल-मूत्र साफ करने तक थी। नस की आवाज पर न जगतमिह बोला न बसीलाल चोका जहाँ एक के ऊपर दूसरा और दूसरे के ऊपर

तीमरा हृषम करने वाला होता है। वहाँ एक किंगी का दिन पाठा चला करने कापना।  
 हरिम समभन और प्रसंगत करने का ज्ञाना हा है। यगापान गभभना था कि उगताग  
 उगव नाग है। जगतमिह मागता था कि नमो उमव अधीत है। नगां व दिचा ध  
 कि डाकरा का छोडकर व हर किमा ग काम न गना है। पर मुक्वचन ग्याग का  
 दम तरह का कोई भम नहीं था। यह छादी तरह जानता था कि जिनना भा म  
 दुनिया है सारी उगत ऊपर है। और पाप यह किंगी ग भी उरर नहा है और न  
 वान का बला यह सबकी अवहवना करन मना था। मरिन इग समय मुक्व-मुक्व  
 हान व फारग प्रीतपाल नम की उगा अवहवना नग की और माद टांग म मगडाग  
 यह छात्र भावर पूछन लगा हा क्या हुआ ?

भा जरा जाकर पीरन पिक्क न था मन्दर मारें। बसी व पाग पडा है।

धसी व पास फिन्ट नहीं है बीच ही म उगत बात काट दी।

फिर वहाँ है अगर उमके पाग नहा है ? टान रह हा ? उमन धर्मामीटर को  
 भटककर पांच नम्बर बड व पास धान हुए मन्त हाकर कहा।

नहा जी राँह गऊ की टानता नहीं मडीकर वाला व पाग गई हुई है  
 भूठ नहीं कहता। बिना धाल नीच किए उगत ठीठ होकर कहा।

सर्जिकल वाड की चीज मडिकन वान क्या ल गए ?

रा न प्राण वे तगड है। जो तगडा हागा ल जाएगा।

साता। नाक पर मक्खी नहीं बटने मता। अजन उसक मुह की धार देतना  
 धातिर हसन लगा।

'अच्छा राउड हो चुका है या नहीं ?' नस बेचारी ने बात का रय मोटर  
 अपनी प्रतिष्ठा बचाते हुए पूछा। क्या पता यह उत्तू का चर्खा एम ही कोई गुस्ताखी  
 कर बडे। उमे तो छ नम्बर पर पडे पेंट का लिहाज मारे जाता था।

राउड ? वह थोडा चौका और फिर मह खोकर खडा रहा। उम यात्र ही  
 नहीं था कि आज राउड हो चुका है या नहीं।

तभी बडी ही प्यारी और सत्वार भरी आवाज आई नहीं सिस्टर अभी तक  
 नहा प्राय राउड करन डाक्टर साह्य !' छ नम्बर व बेड से अखबार को हटाकर  
 स्वच्छ आँख उसकी तरफ देखन लगी।

जी ! एकदम चौडे और सुन्दर माथे पर से भूठे रीब की बनी सिक्कुडन साफ  
 हो गयी और उसने स्थान पर काना तक सच्चा हुस दौड गया हाँ-हाँ उसन एक  
 अग स घडी देखी और प्रकटत अपने आपकी पर भीतर से किसी और को सुनाने  
 व निण जरा मह बनाकर बोली अभी तक राउड नहीं हुआ अग ? सवा दम तो  
 हा चले है।

दरवाजे का स्प्रिंग चौका। बगन म लडका सभात मले कुचले कपडा वाली  
 बता आ रही थी। नस मद्यपि धानती थी कि यह अजुन की पत्नी है सबक उस्ता  
 की फिर भी उसने निर्लिप्त भाव से कडा हाकर कहा 'बीबी, बाहर रहा बार  
 बार दरवाजा न खोलो गदगी आ रही है मक्खियाँ आ रही है' दिल म उस

खयाल था कि क्या कहेंगे देखने वाले कि यही उमका प्रवच है ?

पर वती बिना उसकी ओर ध्यान दिय अदर चली गई। वह जानती थी कि यहाँ तो बरानि ऊट ही लदते हैं।

सब चाट भरकर नम मेज के निकट कुरमी पर बठ गई। और टाकरी म न स्वेटर निकालकर घुरे डालन लगी, खाली बठा क्या आदमी मक्खियाँ मारे जाए ?

दरवाजा फिर चीख पडा। प्रोफेसर साहब का कोई दोस्त फना का लिफाफा पकड आ रहा था। गाति से सनाइयाँ घुरे डालती गइ।

दरवाजा फिर चीख पडा और बार-बार चौखट पर ठक ठक बजने लगा। कितने मे लोगा का समूह अदर घुसा आ रहा था।

‘भाई, अदर मत आओ। आना ही है तो एक बार ही नही बारी-बारी आओ, एक एक कर आओ। समझ भी जाया करा।’ तेज हाकिमाना आवाज म वह बानी।

किन्तु समझ किने थी ? गाँवा के साधारण लोग कभी कभी ही तो एसी जगहा पर आते है। भीड भाड म ही वे अपन अपने आदमिया के पलंगो के पास खडे हा गए।

बुछ नही, भाई आराम आ जाएगा

दुप आत हैं घाड की चान जाते हैं चीटी की चान ” आन घाल मरीजा का हीसला बढाते थे।

दरवाजे की आर दृष्टि करके एकदम अजुन कहन लगा, ‘लडका सँभाल ला मरे पट स एक फूक लगवाकर सिलगट बुभा दा भट स। उसने पास खडी वती को सकत किया सामन धीरे धीरे, बगल म गठरी दवाए उसकी सास चली आ रही थी।

नाती का प्यार देकर गोद म लती बुढिया कापते मुर्माए हाथा से दामाद का सर सहलान लगी, ‘क्या हाल है मल्ल, अब तुम्हारी चाटा का ?’

माथा झुकाकर प्रणाम करता अजुन बोला ‘अब तो अच्छा हूँ पहले स, अब। अब तो मैं बच गया समझ, अब मैं नही मरता।’

गुरु है पुनर। बुढिया ने पाटी छूकर माथा नवाया। बाहगुरु तुम्हे उमर द, कुछ लिया दिया आ गया सामन नही बाकी कुछ न छोडा था हरामियो ने।

कोई नही, बेवे, तू कुछ फिक्र न कर जरा हडिडयो म जोर आने दे देखना एक एक का कान के छोडूंगा।

‘वे काहे पुत्तर ? जो कोई करेगा, आप ही बरेगा। अब तू बर न करना।’

ना बेवे, बदला तो मैं जरूर लूंगा और सीना ठाक कर लूंगा।’

बुढिया चुप कक् देखती रही, आग कुछ न बोनी। अजुन की उलटी मति स उसका कलेजा दहल रहा था।

रुककर अजुन फिर बोना और ता मुझे किसी पर श्यादा गुस्सा नहा पर मबरा को नही छोडूंगा। उसने भाई बनके दगा दिया। आना था तो लनकार के आता। मैं ता उम समय नग म धुत आ रहा था।

बुढिया ने एक आह भरी और फटी हुई नजर सारे कमरे म दीगान लगा ह बाहगुरु। उसके मुह से निकल गया। कितने बडे बड जवान अस्पतान क पलगा



पर लाल कम्बल ओढ़े गदनें गिराए पड़े थे। “दुखा का अंत नहीं।’ उसने दद भरे स्वर में कहा और एक क्षण के लिए उसे लगा कि सारी दुनिया बीमार पड़ी हुई है। फिर उसकी दृष्टि घूमकर नस पर आ रकी। रूप और जवानी ऊपर से सुंदर सफेद कपड़ दखकर वह हकशी बबकी रह गई। लकुड़ यह भी तो किसी की लडकी है हाँ भाई क्या पार है दुनिया का। उसने नस और अपनी लडकी के बीच पूरी एक दुनिया का अंतर जानकर दिल में कहा।

अब तो बहुत हो चुका था, इसमें अधिक अन्न हो भी क्या सकता था ? डाक्टर अभी आजाए तो कोई कुछ नहा कहेगा जिम्मेदारी तो उसी की है सारी। और नस में अब पूरी तरह कठोर होकर ऊध स्वर में कहा “भाई एकदम बाड़ खाली कर दो सब। कोई न रहे अंदर, फीरन बाहर हो जाओ। डाक्टर आन वाले हैं।’ हल्की-सी सिफुडन फिर उसके भांये पर आ गई।

सब धीरे धीरे खिसकने लगे। प्रोफेसर का दोस्त चप्पलें पटकता सीटी बजाने लगा। अजुन की सास गटरों में स सिवई और आटा खोलती अपनी बटी के साथ बाहर चली गई।

‘आज डाक्टर लेट है शायद कलाई को देखकर नस ने कहा कौन सा खास वक्त तय होता है उनका। वह अपने ही आप लेकिन जस किसी का सुनावर बोली।

बाहर बरामदे में, परे बूटा की खट-खट हुई। जानी पहचानी पद चाप थी। डाक्टर आ गए है शायद सलाइया के ऊपर स्वेटर लपट टोकरी में फेंकनी वह नुरसी से उठ खड़ी हुई। जगतसिंह दौडकर फनाई कितार हाथ में पकड़े तल्दी जल्दी बाड़ में मखिया मारने लगा। दसीलाल बरामदे में तेज-तेज धूमने लगा और वही गुर बचन फिलट लकर बाड़ की दीवारों पर डी०डी०टी० के फवारे छोड़ने लगा।

अजुन मुस्करा पडा सी भारे जो जोर से मरे सालो को, गिने एक ना, अब आना है ना वाप न। धीरे से होठों में वह बुडबुडाया।

भट दरवाजा खोलकर स्टथस्कोप गलो में डाले प्रफुल्ल प्रसन बेहरा वाले डाक्टर अंदर आ गए। सिविल सजन, साथ में डाक्टर कुबरमन और सजन इद्र जोन। हाथ जोडकर सलाम करता सारा अमला पीछे हो लिया। ‘गहूँ सी मोठी बापी में हाल चाल पूछने के बारी-बारी भरीजा के पास खड़े हाते जाते थे कोई तकलीफ ता नहा ? कोई तकलीफ हा तो बनाए ? वे हर किसी से पूछते।

नहीं जी, कोई तकलीफ नहीं अजुन ने उत्तर दिया था पर उसी समय दिल में यह भी कह रहा था कि तकलीफें तो बहुत हैं डाक्टर साहज पर आप को बनाकर भी क्या कर लेंगे ? काम तो फिर तुम्हारे इसी अमल में पडना है।

राऊंड खत होने लगा। डाक्टरों का एकाध सनाह सिविल सजन न दी। दरवाजे के सामने पहुचकर अपने अफसर के सामने डाक्टर ने अमल को घान सा बना और फिर सब चन गये।

जगतसिंह न अंध मारी वमीनाय सासा नम न कुछ मूढ़ बनाया, गुरबचन हस

पल और फिर समझो, चारो तरफ अपना राज हो गया ।

दरवाजा फिर बजा, ' बतन लाओ, भाई दूध वाला !' बाल्टी और डिब्बा पकड़े बाना बावर्ची न आवाज दी ।

आ धार धारे दरवाजा छोड़कर, काकासिंह, कितनी बार कहा है तुम्हें । ' तब डालकर नम बोनी ।

'अच्छा अच्छा आगे स्याल रखूंगा ।' काका ने उत्तर दिया ।

प्रोफेसर न नाक सिकोडा, ' कसे बदतमीज हैं ये ?'

' मैं आप से कहा नहा सरदारजी ? सामन बैठा अर्जुन हूँसा ।

ढोनी म स मरीज बतन निकालन लग । जब अर्जुन के बतन मे दूध पडन लगा तब उसन डाँटा ' बडी जल्दी आ गए ? यह दूध पीन का वक्त है ? ग्यारह बजे ? घंटे म राटी लेकर आ खडे होंगे ।'

क्या करें ? ठेकेदार जब दूध लाय तभी तो मैं लाऊँ । मैं क्या अपना सिर फाड़ू ? मडन की तरह बावर्ची बोला ।

' अगर तुम्हार दूध पर रहें तो हो गय ठीक ।'

' अच्छा अच्छा अब ले लो । और न लना हो तो न लो । लोटे मे दूध डालता काका बावर्ची कहना गया ।

स्प्रिंगवाले किवाड एक पल को कब्जो पर रूक गए । ड्रेसिंग करन वाली पेशेंट ट्राली अदर आ रही थी ।

' पट्टियाँ कराने वाले, हो जाओ भाई तयार ।' ट्राली के पीछे मे पतले और मॅक जस रगवाल करमसिंह कम्पाउडर न लम्बी आवाज लगाई ।

आ गया यह कसाई । अर्जुन थोडा बुडबुडाया । करमसिंह कम्पाउडर उसे बून बुरा लगता था । वह इतना बरहम था कि सीधे सुभा हडडी म धुमेर देता । पट्टी करता चुभा चुभाकर । और भी कई कम्पाउडर थे पर पता नही वह क्यो एना था ।

इ दरमिह क पलग के पास टाली आकर रुक गई । आज उसकी पट्टी थी ।

क्या हाल है इ दरमिह ?' इ दरमिह की टांगा के कटे हुए ठठों पर मे जल्दी जदी पट्टी खोलन ए करमसिंह ने उचे स्वर म कहा ।

अच्छा है वह होठा म से कहने ही लगा था कि जसम पर से रुई उखडने से उमकी सी निकन गई ।

तू ऐस सी-सी न किया कर, इ दरमिह । रहने दे अब नखरे को । अब तो तू अच्छा भला है । रुखे और खुरदरे लहज म करमसिंह ने अँची आवाज म फटकारा ।

इ दरमिह नाक सिकोडकर पीना बेहरा गिराए पडा रहा ।

गदा मास काटन के बाद जरूमा पर फाहे रखकर करमसिंह कहने लगा, ' ले, भाई जगतमिह अब बाँध दे पट्टियाँ ।

बाँध द अब तू ही यार । जगतमिह ने उत्तर दिया ।

' क्या ? मैं क्यो बाँधू भला ? ड्यूटी मेरी है या तेरी ? मेरा काम तोस रदार जी,

“मच्छा भाई अब सारे हूँ। कोई इस न बुलाये। कधे हिनाकर डाक्टर ने सम्बन्धियों से कहा और आप भी यहाँ स चला गया।

अब अन्न की गहरी सामोगी चारो तरफ सान लगी ता नय प्राय मरीज क जन्मा म दद जागने लगा। बनोरोपाम की बहोगी धीरे धीरे दूर हा चली था। एक-दा रात उसकी हालत विनेप ध्यान की मांग करती थी। उसक लिए डाक्टर एक बार फिर बाईं म प्राया था।

नौ साडे नौ हा चुके थे पर नीद किमी की नही आ रही थी। नाद भाज किमी की प्राती भी कम ? तीन नम्बर क ऊँच-ऊँच डकरान की आवाजें मार बाड म सुनाई दे रही थी।

बाहर पास पर चौकडी इक्ठ्ठी हा गई। जगतसिंह अट्टेडेंट बसीलाल आपरगनवाना करमसिंह कम्पाउडर काका बावर्ची और गुरबचन स्वीपर सारी मीमाएँ ताड-ताडकर खुली रात म आ बटे थे। उनम से कई की आज नाईट-ड्यूटी लगी हुई थी। सारी बातें छोड कर जगतसिंह ने मतलब की कही, क्या भाई बाबू करमसिंह तनस्वाह भाई कि नही अभी ?

“अभी कहीं भाई तनस्वाह ? करमसिंह न मह सटकाया।

बसीलाल बोला ‘देख लीजिए अंधेर जनवरी की अभी तक नही भाई आज माच की इक्कीस जा रही है। इस कहते हैं अंधेर गर्दी। अंधे की कलम म ताकत नहा माधूम होती। उसने सिविल सजन को कहा जिस की ऐनक पर बहुत मोटे गाणे थे।

अभी कई इक्कीस गुजरेंगे बेटा। यह काप्रेस का राज है तू चिंता क्यों करता है ? तेल देल तेल की धार देख। लेखराम ने हस कर कहा।

‘सिविल सजन का क्या है भाई एक हजार डकारता है। वह तो बक म स निवाल निकालकर खाता जाएगा। मुश्किल तो हम गरीबों के लिए है—साठ-माठ वालों के लिए। काका बावर्ची बोला।

फिर एक कहकहा उठा।

एक पल बाद काका बोला ‘हाँ आज वाला वह मरीज कहीं स प्राया है जिसकी गोली निकाली गई है जाध म से ?

अट करमसिंह उठ खडा हुआ लो भाई मैं काम भूल गया एक और अगले क्षण वह जा चुका था।

बाड म सब ठीक ठाक था। बराहने की आवाजें धीमी होत जाते अब दब गयी थी। साडे दस से ऊपर का समय था। तीन नम्बर के पलंग क पास जाकर करमसिंह ने ऊँचे स्वर मे कहा ‘उठ, भाई आ नाहरसिंह।’ स्लीपिंग डोज उसके हाथ म था।

कई मरीजों की प्राति भग हो गई। पर नाहरसिंह गहरी नीद साया रहा। अब जाकर उसे नीद आई थी। नीद का भाका आखिर सुली पर भी आ ही जाता है।

वह तो बचारा आराम मे पडा है प्राये सोध-मे अजु न न कहा।

नही जो दवाई ता दनी ही है, कौन खाएगा यह कल को ? बहुत दूए नाहरसिंह

का क्या हिलाकर करमसिंह और जोर से बाला "उठ भाई धो ! सुनता नहीं ?

हडबडाकर जख्मी जागा और तीव्र पीडा से पडपडान लगा, 'हो-हो-हो ।'

'ले पकड, दवाई पी ।' करमसिंह न हाथ बढाया ।

धोए धोए । ना-ना नींद खराब होती है ।'

'ले पकड, पी ले, पी ले, नींद की ही दवाई है यह । जबरदस्ती करमसिंह न गिलास उमक मुह स लगा दिया और नाहर ने आँखें मीच कर नींद आने की दवाई पी ली ।

'वाह भाई, वाह ! यह भी खूब है । करमसिंह के चल जाने पर प्राप्तेनर के मह से निकला, "नींद से जगाकर नींद की दवाई देना हमार दस म ही होता है ।

'मैं कहता नहीं था, सरदारजी ?" फटी-सी आवाज म अजुन बोला 'यही तो मैं चिल्लाता रहता हूँ । बस, एक बात मेरे बस म नहीं है, यदि मेरे बस म हों "

और प्राग अजुन वही कुछ कहने लगा जो वह बराबर कहता रहता था ।

धीरे मे सरदारजी ने टोका, "नहीं अजना, सभी एसे नहीं होत हैं ।

'मैंने कहा आप मान जाइए सरदारजी, आपकी पता नहीं ।'

"नहीं अजना, नहीं ।"

'लो आप मानते नहीं पर मैं ता सौ की एक जानता हूँ भूठ हां तो पकड लीजिए । बस एक तरफ से गडासा फिरन वाला है ।

अपने अपने पलंग पर कई मरीज हस पडे ।

# वारिश

बूटासिंह, १९२०

यूनागिह का म्याद पताची कृतानीकारा की मय पति म  
माना है । म्यादि मय तक मयभग १०० कृतानिची विगा है ।

धिर परिचित समस्यामा का गई हृष्टि म उगता प्रगति  
की परम्परा की विमर्ति क म्य म प्रस्तुत करना इत का कता  
नियम का प्रमुग चरित्त-म्याण है । यूनागिह हमारे नागरिक  
जीवन की घामीणता प्रस्तुत करत म मिद्धम्य है ।

प्रकाशित कृतानी-मग्रह— तो युगार दी ।

बाई स्त्रियो से हो रही वारिश स बह लग भा गई थी । जब रात की वारिश होती  
तो उस मयनी चारपाई मकान की ढकी हुई गली म विछानी पड़ती । चारपाई विछान  
से समता रव जाता और दोना तरफ के मान जाने वाला स उसकी नीच उचाट हो  
जाती । वह सो न सकती । चारपाई पर पड़ी वह मयने मयको पसे स हवा देती  
रहती मरे नाद सरूप देख हमारी भी बाई जिदगी है मजली भर रुपये किराया  
देते है मगर रात को इस गली म ही सोना पडता है और वह भी नाती के किनारे ।

सामन कमरे से पढाई म व्यस्त मानद सरूप जवाब म ही ठीक है जी वह  
धुप हो जाता । वह फिर मयने मयको पसा करती रहती । मालिक मकान की ज्या  
दतिया पर उसे काध म्याता परन्तु नाद न म्याती ।

चाह उसके बाल मभी सके नही हुए थे परन्तु शरीर भारी होने के कारण वह  
बुछ बडी उम्र की नजर म्याती । और सब उम भाई जी कहते । उसका जवान वेटा  
भी उस भाई जी कहता था और बुछ महीनो स भाई बह रानी भी भाइ जी ही  
कहन लग गई थी ।

सब उसका पुत्र और बहू की तारीफ करत । कितनी सुंदर जोड़ी है । किस बंदर मीठे हैं दाना, आँख म पड़ महसूस नहीं हाते और माँ क भाग पीछे भाई जी, भाई जी' करते रहते हैं । इस बचागी न देखा ही क्या है पति की मृत्यु के बाद ? सारी जवानी इम लम्बे के पीछे धरवाद कर दी है । फिर लडका 'माँ जी, माँ जी क्या न करे, बहू रानी भी तो हाथ लगने म मर्ली होती है । कितनी मीठी है जब वह अपन बट और बहू की तारीफ सुनती तो उसकी आँखें बंद हा जाती । उम की आत्मा जुडा जाती । वह बहू का बचन न मलने देती । उम कोई भँजा काम न करने देनी, कहीं उसका कोमल सुंदर हाथ मल न हो जायें ।

दकठठे बठे बट और बहू का दण्डकर परद खीच देती और आप बाहर दहलीज क पास छोटी खटिया बिछा कर पडामिन लडकी के बातें करती रहनी ताकि किसी को पता न नग सके कि उसका पुत्र और बहू अंदर बठे हैं । वह अक्सर सोचती क कौन नी कमबख्त माए ह जो अपन बेटा और बनुआ को लोगा के सामने नगा करती है, उनकी गुप्त बातें बताती हैं । यही तो उन्न होनी है हमन खेलन की । फिर तो गृहम्य के घबे ही सांग नहा लेन देत । फिर वहाँ मिलेगी पुरसत इकठठे बैठकर हँसन की ।

ऐसी बातें सोचती वह कई बार अपने आप मुस्करा देनी । उसका मुँह से भट निकल जाता मूख है मूख मरा लडका । सब लोग कहते हैं 'भाई जी, आपका रघुनाथ बडा नायक है' परन्तु मैं तो उसकी कोई नायकी नहीं देखी । वह अपने पिता की तरह बेपरवाह और भाला है । सोया हुआ हा तो चादर लन की मुध नहीं रहती बडा नायक बना फिरता है । मैं आप उर उठ कर कपडा देती रहती हूँ । जब से काता रानी आई है वह और भी मुस्त हा गया है । न तो काता को होगा रहनी है वह कहा पदी है न ही रघुनाथ को । अब मैं भला अच्छी लगती हूँ इनके कपडे सीधे करती । दोनो हा मूर्ख है कल दोनो कम मोय पड थ बेगम जमाने क । पहले क पीच से उटने का किमी का तिन नहीं चाहता । और कस उर उड जाते थे उनके कपडे इतनी तज हवा म । जब मैं आवाज दी तो काता रानी भट अपन कपडे समेट खाट पर जा पनी । उसे मैं कुछ देखा ही नहीं । वह समझती है भाई जी तो कुछ जानती ही नहीं । अरे मैं पास हूँ ता पर्दे दे दे रखती हूँ, अगर पास न रहूँ तो हा न इनकी बदनामी

आज उसका फिर नीद नहीं आ रही थी । वह करवट बदलती अपने आपका पखा भरती ता उस क बाजू थक जात । कभी पास म गुजरने वाला पर उसे गुस्ता आ जाता । परन्तु जब उसे खिडकी के भीतर पख की हवा से पर्दे उडते नजर आत तो उसका मन चाहता वह भी अपनी चारपाई उठा कर भीतर जा घुस उसे गहरी नीद आ जाए ता ऐसे स्थालो से छुटकारा पाए । भीतर उसका पुत्र और बहू सोते थ । दोना हा बडे भाल हैं । सोए हुआ को होगा नहीं रहती । रघुनाथ काता का हाथ या पकड कर साना है जमे वह कहीं भाग जाएगी ।

ज्या ज्या वह अपने बहू और बेटे क बारे म सोचनी उस और भी अधिक गर्भी लगती । और उसका ध्यान पहले म हिनत पर्ने की और जाना । पर्दे हिनत, बत्ती जलती । जब वह गौर म इन सबकी ओर देखती ता उसे बहू और बेटे की हसन की

आवाज सुनाई देती, और वभी चीखन की वह साचती, इनकी धान हा नहा मत्न होती । न ही इनकी बत्ती बुझती है और न ही भुझ नील आती है सामन आनन्द सरूप बत्ती जगाये रखता है, और पाम से इन की खुमर फुमर नहा खत्म होती ।

सावन भादा क्या आता उसका जान पर बन जाती । वहाँ साए बिधर जाए ? ऐसी बातें सोचत सोचते जब उसन करवट बदली तो उसे कोई चीज चुभ गई । वह भट उठ बठी । उस एम लगा माना किसी न परधर का टुकडा चुभा लिया हो । उसन अपन बिस्तर को हाथ स टटोला तो उसका हाथ अपनी रुद्राक्ष की माटी माला पर जा पडा जिस वह प्रात उठकर फेरती थी । आज उसे माला पर गुम्मा आ रहा था और उसका दिल चाहता था इस बाहर फेंक दे जिसन उसका कमर म दन पदा कर दी है । मगर वह उस माला को बाहर कम फेंक सकती है जिस उसने अपन गुरु देव स प्राप्त किया था । चाहे उसे माला था बहुत सत्कार था परन्तु उसकी चोट भा तो बहुत करारी थी ।

वह खाट पर बठी अपने आपको पता कर रही थी और मोच रही थी इस तरह जागत-जागत वह पागल हा जाएगी । उसका सिर पट रहा था । सिडकी के पीछे अभी तक पर्दे हिलते नजर आ रहे थे, बत्ती जल रही थी । और सामन कमरे म बठा आनन्द सरूप पढ रहा था । उसकी परीक्षा सिर पर थी । नहा ता आजकल अदर कहाँ बठा जाता है । पिछले दिना बेचारे को बुखार हा गया था । कोई पानी तक देन वाला नही था । उसने कितनी बार आनन्द सरूप को धाय बना दी और वह कहता भाई जी आप को बहुत तकलीफ दी है ।' बेचारे की न भा न बाप ।

कभी-कभी उसे नींद का भोबा आ जाता, तो उसके हाथ स पखा गिर जाता । उसकी नाद उचाट हा जाती । एक शरीर भारी उस पर गर्मी का जार कहा सोया जाए ? उमे अपने आप पर गुम्मा आ रहा था इतन म उसके बह पुत्र के कमरे स एक अजीब सी आवाज सुनाई दी । उसन सिडकी की आर दखा । पखे की हवा स पर्दे हिल रहे थे । और वे दोना अभी तक बातें कर रहे थे । वो सोते क्या नही ? इतनी रात तक जागने का क्या काम है । उसके जी म आता कि उठ कर आवाज दूँ अब सो जाओ मगर वह आवाज न दे सकी और वसे ही बठी रही ।

वह पर्दे हिलते देख रही थी बत्ती जलती देख रही थी । और उसक मन म विविध प्रकार क भाव उठ रहे थे । इतने म अदर से आवाज सुनाई दी । 'आप तो मराड देते है चाहे मेरी जान निकल जाये । यह आवाज सुनकर उसके माये पर बल पट गये और उसके जी में आया कि आवाज दूँ अम्मा स कहना था कुछ खिला पिला कर भेजती

अभी य विचार उसके मन म चक्कर लगा रहे थे कि आनन्द सरूप बाहर निकला । उसने आवाज दी सरूप तू सोया नही ?'

सो रहा हूँ भाई जी

आज तो सरूप बहुत गर्मी है । नील ही नही आती ।'

आप साती भी तो वहाँ है जहा हवा न लग ।

“जगह ही नहीं, वारिध न तग कर रखा है।”

‘भाई जी जब वारिध हा आप मरे कमर म खाट बिछा लिया करें, पखा ता है।’

‘तुम्हारी पढाई न खराब हो।’

मेरी पढाई क्या खराब होनी है ?’

वह जानता था कि जब उसे बुखार हुआ था तो भाई न उसकी कितनी सेवा की थी।

मैं आपकी खाट उठा लेता हूँ। आप अपना बिस्तर उठा लें।

उसन आनन्द सरूप के छोटे से कमरे म खटिया बिछा ली तो उसकी जान म जान भाई। पखा चल रहा था, पसीना अब ठंडा-ठंडा लग रहा था।

आनन्द सरूप सो गया। और वह भी लेट गई। पखा चल रहा था। नाईट-लाइट जल रही थी। परन्तु उसे नींद नहीं आ रही थी। उसे अनुभव हो रहा था, जैसे उसके काना म अभी तक बहू और बेट की बातें सुनाई दे रही हैं। आप तो भुके मराड दत हैं। काता रानी बढी भोली नडकी है। भला ऐसे भी चिल्लाया जाता है। मरोडा जाए कोई भाग्यवान। हमने भी तो ब दिन देखे थे कभी ऊँचा सास नहीं लिया था। सास ननद पाम लेटी रहती। आजकल के लडके-लडकियाँ कितने खुल हुए हैं। न किसी का लिहाज न शम। खुन दरवाजे सो जात हैं। इतना ख्याल नहीं करत कि भाई प्रात उठता है अपना आप समेट लें। उसे पुत्र और बहू की ऐसी हुरकतें याद आन लगीं तो अपना आप गव मे भरा प्रतीत होन लगा। वह उठ कर बैठ गई। उसने पास ही सोय हुए मरूप का और देखा। वह बेसुघ सोया हुआ था। उसके बाल बिगरे हुए थे और उसका एक हाथ भाई की खाट की ओर लटक रहा था। कितना फासला था उमक और भाई जी की खाट मे वालिशत डेड वालिशत। यह भी कोई बहुत बडा फासला होना है ?

वह उठ बठी, और सरूप के मुह की ओर देखनी रही। उसक बिखरे बाल बंद हाठ और लटकते हाथ की ओर कितनी दूर तक निहारती रही। उसन सोण हुए सरूप को एक बार सिर स लेकर पाँव तक इस तरह देखा जस उसकी लम्बाई नाप रही हो। कितना लम्बा हो गया है दिनों मे लम्बा-लम्बा प्यारा-प्यारा।

उसके जी म आया, सरूप के भाये पर बिखरे बाल पीछे हटा दे उमक मुह को हाथ से छुए और अपना हाठा को उस के चमकते हाठा पर रख द। उसका तिन धक् धक् करने लग गया। उसने कई बार अपना ख्याला को राकन का प्रयत्न किया, परन्तु जब भी उसकी नजर सरूप की ओर पडती उम की घडकन तज हा जाती। वह सरूप क लटकते हुए हाथ को देखती कितना फासला है। दाना की खाटा म। यह भी कौन फामना होता है ?

अब उसक मुह मे गम-गम साँस आ रही थी और वह अपने आप का राक राक रखनी मगर उसका ध्यान सरूप की ओर से न हटता।

वह समझ रही थी कि इन ख्यालो का कारण नीली नाइट-नाइट है। जिमकी



चमक सूर्य के मूह पर पड़ती है और वह बिना देख रह नहीं सकती। उसने उठकर छोटी बत्ती को बुझा दिया और जब वह लेटने लगी तो उसका हाथ सूर्य के हाथ पर जा पड़ा उसे अनुभव हुआ जैसे उसके शरीर के भीतर बिजली दौड़ रहा है। उसका हाथ काँप रहा था। उसका शरीर काँप रहा था, मगर उसने अपना हाथ सूर्य के हाथ में न उठाया। अब उसकी कपकपी हट गई थी परन्तु उसका हाथ सूर्य के हाथ में बँस ही पड़ा रहा जम रघुनाथ के हाथ में जाता रानी का हाथ।

वह कितनी देर बस ही लेटी रही। फिर किसी आवाज में आकर वह उठ बठी। उसने धीरे धीरे सूर्य का हाथ अपनी छाती से लगाया अपनी आँखा से लगाया और अपने डलके गालों में छुआ चूमा। वह कितनी देर ऐसा ही बग्ती रही और उस ऐसे अनुभव हुआ जैसे सब डर उड़ गये हैं।

साथ वाले कमरे से घड़ी का अतारम बजा तो उसने सूर्य का हाथ छोड़ दिया और नट से बत्ती जगा दी। वह काँपती टाँग से उठी और विस्तर लपटने लगी। जब खटिया उठाने लगी तो चारपाई की आवाज से सूर्य की आँख खुल गई। उसने आँखें मजबूत हुए कहा 'भाई जी, मालूम होता है आपको नींद नहीं आई'

हाँ।

जल्दी से खाट उठाते हुए पसा पर गिरी रुद्राक्ष की माला उसके पाँव में पड़ी थी। उस महसूस हुआ जम माला के आघार पर बनाई फौलादी दीवार आज की वारिष्ण न चूर चूर कर दी है।

# दूध की तलैया

कुलवन्तसिंह विकर्क, १९२१

नई पीढी के सगवन कथानारा म कुलवन्तसिंह विकर्क अग्रगण्य है। विकर्क की कहानिया मे माम टच जैसा एक स्पग है जो उनकी लावप्रियता म बहुत सहायक हुआ है। विकर्क ने ग्राम्य जीवन के कवन बाह्य स्तर को ही नही देखा बल्कि उसकी आत्मा को भी पहचाना है। शहरी मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण भी उन्होंने बडी कुशलतापूर्वक किया है।

प्रकाशित कहानी-संग्रह 'आह बेला 'घरती ते आकाश', तूडी दी पड एक्स के हम बारक दुडु दा छप्पट', आदि।

संग्रहीत कहानी 'दूध की तलैया' ग्राम्य जीवन के एक पारिवारिक चित्र को बडी मार्मिकता स प्रस्तुत करती है।

चचेरे भाई होने के नाते लाल तथा दयाल का आपस म बडा स्नेह था। वे खेती भी इकट्ठी करते थे। गाँव के आदर एकता का बडा प्रभाव पडता है। दा मग भाण्यो की अपेक्षा यदि चचा-ताऊ के बटे आपस म मिल कर चलें, तो उन्हें और भा बडी ताकत समझा जाता है। कारण कि ऐसा मेल बहुत कम देखन म आता है। दो सगे भाइया ा मिलकर रहना तो स्वाभाविक है। इसीलिए गाँव वाले इन दोना—लाल और दयाल का नाम लते थे। मजदूरा की काम के लिए बुला सवना उनके लिए आसान था, क्याकि व तुरत उनका कहा मान लेते थे। गाँव की गलिया क आदर चलना उन्हें मुहाता था क्योंकि वहा उन पर पडने वाली दृष्टि आदर भरी हानो थी।

बिना प्रयाम क मिले इस आदर के अतिरिक्त उनका बाने जीवन का काम भी सुगमतापूर्वक चरता था। मिलकर रहन स वे दो हलो की जुनाई करते थ। एक मज

दूर रख देने में प्रतिदिन उनमें कोई एक आराम कर सकता था और काम भी निविघ्न चलता रहता था।

यदि जोत केवल एक हल की हो तो एक तो उसमें आनंद नहा आता, दूसरे वह बाबू में भी नहीं रहती। झकड़े रहते हुए खुद को तो पशुओं के साथ पशु बनना ही पड़ता है यदि कोई मजदूर रखा हुआ हो तो गुजारा नहा हो सकता।

यह कट्टी खेती जिस तीसरे आदमी को पूरा आराम देती थी वह था दयाल। दयाल गौर बरण का सुंदर नखशिखवाना भरे बदन का जवान था। दिन के पहलू पहलू तो वह खेतों में जाकर थोड़ा-बहुत काम करता परंतु पिछले पहलू वह नित्यप्रति उजले कपड़े पहनकर गांव के आंदर गश्त लगाता रहता या फिर चौपाल में बैठकर गप्पें हाकता रहता। लोग उसमें आख मिलाकर बातें करके खुश होते।

परंतु गांव वाला और दयाल को मिल रही यह खुशी केवल लाल के कारण थी, जिस मरीच को बाद में सारा काम करना पड़ता।

'क्यों तू पिछले पहलू गांव से बाहर ही नहा निकला। गहूँ के खेत को बाड़ दनी थी। दा आदमियों को तुझे पता है बाड़ देने में बड़ी मुश्किल होती है।' लाल कभी गिला करता।

वैसे ही आलस आ गया। गांव में थानेदार आया था। मैंने सोचा कुछ बातों का पता लगेगा।' दयाल धीमे स्वर में उत्तर देता और लाल आगे कुछ न कहता।

लाल की पत्नी का भी दयाल अपने घर घूमता हुआ खिंसाइ देता। लाल जिस समय लेता में काम पर होता उनके घरों की सामी दीवार के उस पार दयाल की पगड़ी झधर उधर घूमती दिखाई देती। कभी वह अपने लडके को गोठ में उठाकर एक लकड़ी का टुकड़ा हाथ में ले बढई के घर की आर चढ़ देता और वहां से बालक के लिए गाड़ी आदि बनवा लेता। कभी अपनी पत्नी का साग काटन का हसिया उठा कर उस लुहारा में यहाँ तेज करवाने ले जाता और कभी सत्तो जुलाहिन के सिर पर चरखा उठवाकर उनकी तकली सीधी करवाने के लिए चल देता।

उधर लाल की पत्नी के सारे काम बिना हुए पड़े रहते। दयाल के घर में घूमती हुई पगड़ी तथा वहां से आती हुई आवाज उसका मन में कई आकाशाएँ जगाती—यदि कहीं लाल भी उस समय घर आ सक तो वह उसे गरम दूध पीने को दे गांव के आंदर जाने के लिए उस उजले कपड़े पहनाये और जब तक वह कपड़े पहन तब तक उसकी पगड़ी को बलफ लगा दे। अभी तक तो उस न कपड़े धाने में आना आता था न कपड़े पहनवाने में। आठ-दस दिनों में लाल कभी रात को सोने समय धुल कपड़े अपने सिर हाने रखवा लेता और सुबह उठकर मैले कपड़े सिरहाने रखकर धुल कपड़े पहन लेता। लड़कियाँ जन्मा ही वे फिर मैले हूँ जाने और अगले कई दिनों तक वह उठे ही पहन रहता। कभी कभी लाल भी दयाल की तरह गाम घर पर बिता सकता।

और जब वह रात को घर को आना तो वह उस डिट्टी तू काई उसका नोकर ! रखा हुआ है। स्वयं तो वह नवान बनना गांव में घूमना रहता है और तू वहाँ मिट्टी में मिट्टी बना रहता है।

'गाँव के अन्दर घूमने में क्या रखा है। पानी लगान के बारे में बात करनी थी इसलिए वह आया था।' लाल बात को टाटता और फिर दिलासा देते हुए कहा, 'कभी कोई इन आदि ठीक करवाना रहता है, कभी कोई रस्ती बटनी होती है कभी किसी आत्मी को काम के लिए कहना होता है—गाँव में आने के ऐसे सबका काम रहते हैं।'

'गाँव में काम रहते हैं, तो तू भी आ जाया कर। क्या यह जरूरी है कि गाँव के सारे काम वहाँ करे?'

'अच्छा, मैं आ जाया करूँगा इसमें कौन भी बात है। वह कह देता है कि मैं चला जाता हूँ। मैं कह देता हूँ अच्छा तू ही चला जा।'

लाल इस प्रकार आने का कह तो देता, परंतु वह आना कभी न। इस सभे में असल में वह अन्दर की ओर का बल था। वह भोर तारे के साथ उठ जाता और अपने मजदूर के साथ हज़ जोतने को निकल पड़ता। दयाल बाद में दिन चले उठकर भैंसा को बाहर निकानता उन्हें घास डालता और फिर उन्हें दुहता। वह पशुओं के खाने योग्य घास काटकर रख देता, उन्हें खोलकर बाहर घुमा लाता और फिर उन्हें अपने अपने स्थान पर बाँध देता। शाम को वह किसी टोनी के साथ बैठकर शराब पीना कभी कभी बठकर तांग खेलता रहता। कभी अन्नवार की खबरें सुनता और उन्हें कहीं समझने की काशिण करता। खेती का सारा भार दिन प्रतिदिन लाल के ऊपर पड़ता जा रहा था। दयाल हमेशा दास्ती गाँठने और अपना रसूल बनाने में लगा रहता। सामेदारी में ऐसा ही जाता है। एक पक्ष अधिक काम करता और दूसरा कम। जब तक अधिक काम करने वाला पक्ष चुप किए रहता है, सामेदारी चलती रहती है और जहाँ उस अधिक काम खटवन् लगा उसी समय सामेदारी टूट जाती है।

फसलो की कटाई के बाद एक दिन लोहारों के लडके किसानों के यहाँ गेहूँ की पूलियाँ इकट्ठी कर रहे थे। लाल किसी और किसान के खलिहान में बैठा था। लोहार का एक लडका उस किसान से पूनी मागने आया। उस लडके का साथी सिर पर पूली रखे पास ही रास्ते में गुजर रहा था।

वह पूली तुम कहीं से लाय? किसान ने पूनी मागने आये लोहार के लडके से दूसरे लडके के सिर पर रखी पूनी के बारे में पूछा।

वह तो वहाँ दयाल के खलिहान से लाय है।'

लाल ने यह बात सुनी तो उसे अपना खून जमता सा प्रतीत हुआ। खलिहान तो साँभ का था लेकिन उस पर अकले दयाल का नाम चल रहा था। काम में यस्त लाल का तो अपनी भूमि और उस की पदावार से नाम मिटता जा रहा था। उसने दयाल से पथक होने का फैसला कर लिया। फसल का कटाई के बाद वैसे ही ये जोतों को बदलने के दिन थे।

अनाज तो हर बार के बाँटते ही थे अब उन्होंने भूसा भी अलग-अलग कर लिया। भूमि अपने अपने खूँटा पर अलग बाँध ली गयी। एक थोड़े दिनों की ब्याई भस की थोड़ी मुसीबत थी। उसकी बधिपा मर चुकी थी। वह दयाल से हिनी हुई था किसी

श्रीर को दूध न देती थी। लाल ने कुछ दिना तब उसका चने व आट म नमक धोलकर फिलाया, अपने हाथ उस आटा गिनाया, अपने हाथ की हथेली पर दूध का धारें डालकर उसे चटायी और फिर दूध की धारें अपने मुह म भरकर उसकी फुहारें उसके नथना पर डाली। य सब उपाय करने म धीरे धीरे भम उसको दूध दन लग गयी। लेकिन दयाल न भस का मोह फिर नी बना रहा। जब कभी वह खुल जानी सीधी जाकर उसके पास लडा हो जाती या उसकी भसा म गामिन हो जाती।

भस का दयाल के साथ प्यार बना रहा किन्तु लाल व दयाल आपस म एक-दूसरे से दूर होते गय। सत उनक पास पास होने के कारण पशु खुलकर कभी कभी एक-दूसरे के खेग म चल जाते। इस पर बडा-बडी तकरारें हाती। ऐस अवसर पर दोनों म से कोई कम न बालता। काइ अपने आपको छोटा बहनवाने को तैयार न हाता। जब दयाल की छोटी सी बछिया लकडी व फिरक म स निकलकर सारी रात लाल के सीचे हुए शलगमा को रोदती रही तो दयाल अनड कर बोला मैं बछिया क साथ बधने मे तो रहा। इन छोटे छोटे जीवा का कोई पता है कि कब गायें-बायें मे निकल जात है।

श्रीर अगले गिन जब लाल की घोडी साबल समत दयाल की फुली हुई कपास क पीधे तोडती और गिरानी रही तो लाल न रुक स्वर म कहा, घोडी तो कपास का मुह नहीं लगाता। पीध ता उस समय टूटते है जब कोई साबलवाली घाडी को पीछे न धमकाता है। यदि उस आराम से निकाला जाता तो पाधे नहीं टूटते।”

दयाल का इस बात से बडा क्रोध आया। शलगम ता आखिर खाने की चीज थी, लेकिन कपास तो पस वाली पसल है। सरियत अभी तक यही थी कि लाल और दयाल दोनों म स किसी न अभी एक दूसरे म उलझन की नहीं ठानी थी।

कुछ दिना बाद वर्षा हुई। दयाल के पास बाहर एक धामा हुआ घेरा था। रात न अभी तक कोई एसा घेरा नहा बनाया था फिर भी वह दयाल क घेरे म जाकर सिर छुपाने को राजी न था। उसका गहतूत का पड था उसक नीचे कुछ बचाव हो सकता था। वर्षा हाती रही और एक चादर ओडकर वह उस पड क नीचे ही बठा रहा। गाव भर म यह बात पन गयी। गहतूत क पेड पर बगलों क घासलें थ। लाग तिल्ली उडान लग ऊपर बगन स्नान करते रहे, नाच लाल नहाना रहा।

इस घटना क बाद यह चर्चा आम हो गयी कि एक न एक दिन लाल और दयाल म सडाई जरूर हांगी। को कहता दयाल तगण है, वह मारगा। दूसरा दलीन देता, लाल के आदर गुस्ता बहुत है वही मारेगा।

य सब चर्चा लाल की पत्नी के बाना तब भी पहुचनी और वह कभी कभी धबरा कर पूछनी ‘मुना है दयाल तरे साथ उनभने का उतावला है।

मर साथ उलभकर अपनी मौत बुनाएगा वह। वह तो मरे आम खडा तब नहीं हो सकता। लाल तन कर उत्तर टता।

अपन आपका ऊंचा दिवान क लिए एक दिन तो मान सब भीमाएँ पार कर गया। गहूँ की फसल बान क पहल दयाल अपने सन म खाद बिखरना चाहता था। गाडा का

रास्ता लाल के खेत में होकर था। खेत को अभी जोता नहीं गया था, इसलिए उमम स गाड़ा ले जाने में कोई हानि नहीं थी। लेकिन जब दयाल गाड़ी ले आया तो लान लटके लेकर अपनी कटिया के ऊपर लड़ा हो गया और उसने दयाल को गाड़ी वापस ले जाने पर मजबूर कर दिया।

रात के समय लाल ने जब यह बात अपनी पत्नी को बताया तो उसका विश्वास हो गया कि दयान जरूर उसके पति से डरता है। दयाल को भी अपनी हालत अखरने लगी थी। अब यह खाहमखाह लाल के साथ उलभने पर उतारू था।

एक दिन सूरज डूबने के थोड़ी देर बाद लाल अपनी घोड़ी पर सवार गाँव की ओर आ रहा था। रास्ते में पानी की एक नाली पर दयाल एक और आदमी के साथ बठा गराब पी रहा था। लाल और दयाल ने एक-दूसरे को देख लिया। नाली पार करने के लिए घोड़ी का चाल धीमा करनी ही थी। लाल के हाथ में एक खाली लाटा था।

‘कौन है?’ दयाल स्वर को जरा लटकाते हुए बोला।

‘मैं हूँ।’ लान ने कड़कती आवाज में कहा और फिर तरऊ-तरऊ करके घोड़ी का पानी पिलाने लगा जब वह कह रहा हो आ जाया मैं तो खडा हूँ। लेकिन आया कोई नहीं और लान घाड़ी को पानी पिलाकर चल दिया। घर आकर लाल ने अपनी पत्नी को बताया मैं सोच रहा था कि अगर वह आगे आया तो उसके सिर पर लाटा दे मासगा। घोड़ी पर सवार आदमी बस भी चार आदमियों में भारी होता है। जिसे चाहे घोड़ी के नीचे डानकर रौंद दे।”

‘शाप्राग’ लाल की पत्नी ने कहा।

फिर एक रात थोड़ी बूदावाँदी हुई। गरीर पर पड़ी बूदा से पदा हुए आलस्य के कारण लान ने तडके भस को घास न डाली। घास को भूख से तुनकी भस न माकल पीचकर वर्षा के कारण ढीला हुआ खटा उखाड़ लिया। काफी दिन चढ़ने पर लाल उठकर बाहर रास्ते में घूमती भस को पकड़ लाया और बैठकर उसे दुहन लगा। भस की भोन आज बहुत गम थी। ऐसा लगता था जैसे किसी ने पहले उसे दुहा हा अब नवल दान के तानच में ही वह दोबारा दूध दे रही हो। लेकिन दुह कौन सकता है? दयाल के अनावा वह किसा और को तो पास फटकने तक नहीं देती। उस दयान न ही इस दुहा होगा। दा-दो, चार चार घाँ न निकलने के बाद चारा स्तन खाली हा गये।

लाट के अंदर तीन चार गिलास दूध की जगह सिर्फ करीब एक गिलास दूध था। अब क्या होगा। दयान न बहुत ही मूखता की थी। अपनी पत्नी से लाल अब क्या कह? उसे पता था कि दयाल द्वारा भस को दुहाकर अपनी पत्नी के आग वह चुपचाप बस बठ सकता था। वह भस के स्तन को हाथ में लिये अकारण ही बैठा रहा, पर और अधिक घाँ न निकल सकी। दूध की आखिरी बूँद भी समाप्त हो चुकी थी। अचानक लान को एक तरकीब सूझी। जमीन पर गिरे दूध के बारे में यह अदाजा लगाना मुश्किल है कि वह मात्रा में कितना है। थोड़ी मात्रा में गिरा दूध भी बहुत सा मालूम देता है। यदि वह लोटे के दूध को गिरा दे, तो वह अपनी पत्नी से कह सकता

है कि भग मे ली। लिताकर दूध गिरा लिया। हाथ म पकड़ा हुआ दूध का साग उमने उमने कर लिया। कर्मा के कागग सब धार कीपड़-ली-कीपड़ या धोर कर्मी-कर्मों पाना की छोटी सागी ताँवा भी कर्मी हुई थी। इस कारण गिरा हुआ दूध धोर कर्मी मायूम हो रहा था। साग का घना निय पर गुग मगप था।

दूध का घात्र गिरा लिया लिताही ने। उमने कर्मी पनी म धारर कहा।

“हाथ हाथ। कग ?”

बग टाँग उठाकर सोर पर मारी धोर साग उमट गया।

दा सट्ट ता मार जो एमा मातूम क। पनी का धार पटर बिना दूध के रटन की बाग पर गुग्गा घा रहा था।

तही मारत ग कपा हाता। कर्मी मकमी ने काट लिया होगा। मकमी क काटने से गुग्गा बचत हो जाता है। है ता कपारी बड़ी कपरी।

गुग्गा क पाग म उठकर पनी भत क पास घाया। कसापागग कर्मी घटना का देगने की उरगुमता हरेक क कदर जाग उठनी है।

“हाथ कितना सारा दूध था। तलेवा भरी पठी है दूध की। कटकर उमने सात के मन का सात कर लिया।

# ए शाला डाकात

गुरमुखसिंह जीत, १९२२

---

गुरमुखसिंह पंजाबी के एक आलोचक भी हैं और कहानी-कार भी। अमृता प्रीतम की काय कला और समकालीन पंजाबी कहानी पर उनकी आलाच्य पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। समकालीन पंजाबी उपन्यास पर उनकी पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है।

जीत के पंजाबी में तीन कहानी-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं— 'काले आदमी', 'घरती सोन सुनहरी', 'दसवाँ ग्रह'।

---

'केमान दादा ?

भाना आछी । नमस्कार ।'

मुकजी बाबू के जुड़े हुए हाथ नीचे आत हुए कुरत की जेब में गये और उसमें से नस्वार की डिब्बी निकाली। बायें हाथ की हथेली पर थोड़ी सी रखकर उसने मसलते हुए दोना नासिकाओं में थोड़ी-थोड़ी चलाई। उसे मामूली सी छीक आई और इसके पश्चात् वह चटर्जी बाबू में कुशल-क्षेम पूछने लगा।

हर रोज की तरह आज भी मुकजी रात का खाना खाकर घर से बाहर टहलने के लिए निकल आया था। बलकत्ता निवासियों की तरह उसने भी मई मास की गर्मी सहन नहीं हो रही थी। वह खाने से निपट कर अपनी पत्नी के साथ दो चार बातें करता और जल्दी-जल्दी हवा की तलाश में मैदान में आ जाता करता। कई बार तो वह अपने मुह का कुल्हा भी बाहर आकर ही फेंकता। उसका हृदय घर में बहूत ही घबराने लगता था। आज भी उगने वाले होटल के निकट बड़े एक पनवाड़ी में तम्बाकू-वाला पान लिया और एक सिगरेट उसके यहाँ सुलग रही रस्सी में सुलगाई। फिर



यह घाटिस्ता घाटिस्ता घोरगी पार करता मानुमन्त्र क पाग म गुजगा टूपा मैशन की लडका पर खबर लगा रहा था । इसी समय उग जगता मिन चन्नी बाबू मिन गया था ।

द्रामा की कहकरी क हलन-मुम्न म तग घाया टूपा चन्नी बाबू भी कुछ महार क लिए मैशन की लडका क खबर काट रहा था । शाना दोम्ना न एक महार स पीना बागम लिया । एक एक दान का बट रग क साथ ताड कर सान हुए वे नगर म हो रह एक पसारा मुड क सम्बन्ध म बान बान करन लग । बानबान क दोगन प्रपनी धोती का टोप करत हुए चन्नी बड जाग क साथ बाग्य एई घाना टाकान द्राम कम्पनी वाला । मरगाई का ता निग्न करता फिर छांग भा करना मांगता । हम लोग का बतन नही बडान सक्ता एक पसा विराया बडनी करना मांगता ।

मुक्जी बाबू इस बात स पहल हा तग बडा था । उसका बतन बटून थाडा हाने क कारण उसका गुजारा घाग ही नही हा रहा था । घोर उमक तिर पर कर्जे का भार चढता जा रहा था । इपर द्राम कम्पनी न एक पसा फी टिकट बडा निया था । इस एक पन क मुड स उन की पूरी सहानुभूति थी । उसन फिर नम्वार चडाइ घोर प्रपन दपतर म हुई हडताल की बात सुनान लगा । वह हडताल इस मुड क साथ सहानुभूति व्यक्त करन क लिए की गयी थी ।

बलबत म इस घाटोलन न बहुत अधिक जोग पदा बिया टूपा था । लोग स्थान स्थान पर दल बनाकर सड हो जाते घोर इस घाटोलन क सम्बन्ध म बातें करत । देसन वाल भी कई इस एकत्रित भीड म बडी उत्सुकता स भाकर सम्मिलित हो जाते घोर प्रपन पीडित भावो की व्यक्त करते ।

जिस समय मुक्जी घोर चटर्जी बाबू बातें करते मदान की सडकें पार करत विक्टोरिया ममोरियल के सामने पहुँचे तो उह एक पेड के नीचे भारी भीड इकट्ठी हुई दिखाई दी । उहोने देखा कि मदान के हर घोर से लोग भागते हुए इस भीड की घोर घा रह है । बट के नीचे बहुत भारी शोर होता सुनाई दे रहा था पर दूर हाने क कारण उह कुछ समझ म नही घा रहा था । प्रपनी धोतियो क किनारो को मजबूती से हाथो म सम्भालते हुए वे भी उत्सुकता स भाग रह लोगो के साथ-साथ पीछता से पग उठाते बट क नीचे पहुँच गये ।

उनका साँस फूल गया लम्बे साँस सते हुए उहोने लोगो स बात पूछने का प्रयत्न बिया परन्तु सभी लोग बट क ऊपर की घोर देखकर शोर करते जा रहे थे शाला डाकात । ऊपर बडा नजर आता ।

हम उसको देखा रहा, रसकोरस रोड से इधर भाग आया ए शाला डाकात ! भीड म से किसी ने बडे भेद भरे ढग से कहा ।

शाला चोरी सामान का थली भी हाथ म पकडा रहा एक घ य बाबू ने भी प्रपनी जानकारी लोगो को बताई ।

एई शाले का घोर साथी तो रहा । शाला भाग गया । मूगफली बेचने वाल केंसी लडक न लोगो का ध्यान प्रपनी घोर खेंचते हुए कहा ।

लागा म तरह-तरह की आवाजें उठ रही थीं। कुछ ब्रेनार्थ वॉलेंट का घना शाखाप्रा और पत्ता म कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। पर वे भी हर नये आने वाले को यही बात बताते थे कि बट के ऊपर एक डाकू चढ़ा हुआ है।

फिर अचानक पतिया की खर-खर हुई और विजली के खम्भे के प्रकाश म लोग ने देखा कि ऊँचे लम्बे बट के सिखर पर एक बिलकुल नगा मटमले रंग का कोई व्यक्ति था। अपने आप का नटक रह एक रेशे से बाध कर एक शाखा के किनारे पर बठा था। उसको देखते ही लोग ने और अधिक शोर मचाना आरम्भ कर दिया था। बड़यो ने उसको नीचे आने के लिए मनुहारा। 'नीचे नव एसा रे ए ए' जोर जोर से चिल्लाया। पर उस पर इम प्रेरणा का भी कोई प्रभाव नहीं हुआ।

ए शाला डाकात किमी न बड़ी खुरदरी आवाज से कहा पायर मारो।' इससे बट के ऊपर पायरा की बपा शुरू हो गयी। वह बहुत ऊँचा बठा था। जिस किसी को पायर न मिलता वह बट के नीचे पड बटबटठे ही मारन लग जाता ताकि वह भी डाकू को बाध करने की वीरता का भागीदार बन सके। जिस समय कोई पत्थर उसके नज नीचे पहुचता वह रंग से बँधा हुआ होने के कारण बदर की तरह एक शाखा से झूल कर दूसरी पर जा बठता।

कई लागो म उसके लिए हमदर्दी भी जागृत हा गयी थी कि कही गिर कर बेचार मग हा न जाय। बूट पालिस करने वाल एक लडके ने अपने बकने को जमीन पर रख कर गना हाथ मह के आगे जोड उसको मरने के खनरे से परिचित कराते हुए नीचे उतर जान के लिए जोर से आवाज दी, "मारो जावे नेवे एशो रे ए ए।" पर वह जमे समझ ही नहा रहा था, या उसे बात सुनाई ही नहा दे रही थी। उस पर किसी भी प्रेरणा का प्रभाव नहीं हो रहा था।

गहन करत-करते पुनिस के कुछ सिपाही भी भीड म आकर सम्मिलित हो गय, और वे सारी बात को समझन का यत्न कर रहे थे। बल्ब की रोशनी म पहिचानन की कोशिस करते हुए भीड म से ट्राम कम्पनी के किसी कर्मचारी न उसे आवाज दी 'नेवे ऐय, निल बहादुर दाग।' पर इसका भी उस पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। एक सिपाही ने लागो से डाकू के सम्बन्ध म पता लगन पर दौडकर विक्टोरिया मैमारियल म पायर ब्रिगेड को टलीफोन किया। ब्रिगेड वाले तुरत अपने मभी साजो मामान सहित वहाँ पहुच गय। कुछ रात अघेरी थी और कुछ बट के पत्ते भी बडे घन थे पायर ब्रिगेड वाले को ऊपर निल बहादुर दिखाई ही न दिया। इसके अतिरिक्त वन भी टारजन की तरह दूदकर एक शाखा से दूसरी शाखा पर चला जाता था। अपना जान बचान के लिए वह अपना म्यान बराबर बदन रहा था क्योंकि नीचे म धव भी कई बावू डाकू को पत्थर मार रहे थे। पायर ब्रिगेड वाला न दिल बहादुर का तनाग करने के लिए बड पर मच लाइट फकी। सच लाइट के प्रकाश म बड के माथ के कृपा के लाल-लाल फून और फन चमक पडे। उस चौधिया देने वाल प्रकाश म निल बहादुर का मटमला गठा हुआ शरीर भी बट के घन पत्ता मे अलग उह दिखाई द गया। लागो म उसे पकडने की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी। उनके विचार

वह ग्राहिस्ता ग्राहिस्ता चौरगी पार करता मानुसटम क पास से गुजरता हुआ, मैदान की सड़कों पर चक्कर लगा रहा था । इसी समय उसे उसका मित्र चटर्जी बाबू मिल गया था ।

ट्रामो की कडवटरी क हल्ले-गुल्ले से तग घ्राया हुआ चटर्जी बाबू भी कुछ सहारे क लिए मैदान की सड़कों के चक्कर काट रहा था । दोनों दोस्तो ने एक लडन स चीना बादाम लिया । एक एक दाने को बडे रस के साथ तोड कर खाते हुए वे नगर म हो रहे एक पसारा युद्ध के सम्बन्ध म बात चीत करने लगे । बातचीत क दौरान अपनी धोती को ठीक करते हुए चटर्जी बडे जोश के साथ बोला एई शाला डाकात ट्राम कम्पनी वाला । महँगाई का तो निंदा करता फिर छाँटी भी करना माँगता । हम लोग का वेतन नहीं बढ़ाने सकता एक पसा किराया बढ़ती करना माँगता ।

मुक्जी बाबू इस बात से पहल ही तग बटा था । उसका वेतन बहुत थाडा होने के कारण उसका गुजारा घ्रागे ही नहीं हो रहा था । और उसक सिर पर कजों का भार चढता जा रहा था । इधर ट्राम कम्पनी ने एक पसा की टिकट बना दिया था । इस एक पसे के युद्ध स उन की पूरी सहानुभूति थी । उसन फिर नस्वार चढाई और अपने दपतर म हुई हडताल की बात सुनान लगा । वह हडताल इस युद्ध क साथ सहानुभूति यक्त करने के लिए की गयी थी ।

कलकत्त म इस म्नादालन ने बहुत अधिक जोश पदा किया हुआ था । लोग स्थान स्थान पर दल बनाकर खड हो जाते और इस म्नादोलन के सम्बन्ध म बातें करत । देखन वाल भी कई इस एकत्रित भीड म बडी उत्सुकता स घ्राकर सम्मिलित हो जाते और अपने पीडित भावा को व्यक्त करते ।

जिस समय मुक्जी और चटर्जी बाबू बातें करते मदान की सड़कों पार करत विक्रारिया ममोरियल क सामन पहुँच तो उह एक पेड के नीचे भारी भीड इकट्ठी हुई तिसाई दी । उहाने देखा कि मदान क हर ओर स लाग भागत हुए इस भाड की घार घा रह है । बट क नाच बन्त भारी गोर हाता मुनाई द रहा था, पर दूर हात क कारण उह कुछ समझ म नहीं घा रहा था । अपनी धानिया क विनारा का मजबूता म हाथा म सम्भालत हुए व भी उत्सुकता स भाग रट तागा क साथ-साथ चीघना म पग उठान बट क नाच पहुँच गय ।

उनका साम पून गया सम्ब साम लत हुए उहान तागा स बात बूछन का प्रयत्न किया परन्तु सभी लाग बट क ऊपर की घार दसकर गार करत जा रह थ तागा टाकात । ऊपर बटा नजर घाता ।

हम उमका दसा रहा रमकोरम राण म इधर भाग घ्राया ए गाता डाकात ! नीड म म किमी न बड न मर डग स कहा ।

गाता चारा मामान का घती भा हाथ म पकडा रहा एक घ य बाबू न भी अपना जानकारी मागा का बताई ।

एई गान का और माथा ता रहा । गाता भाग गया । मृगपत्नी बचन बाप किमा सडक न तागों का ध्यान अपनी घार खेंचन हुए कहा ।



म यह डाकू बड़ा साहसी और बहादुर था जो मैदान में ही एक वृक्ष पर चढ़कर किंगी की पकड़ में नहा आ रहा था। भीड़ में से कहा-वही अब भी आवाजें उठ रही थी 'ए साला डाकात पायर मारो' भारे जाये 'नेव एग रे ए ए ।'

सच लाइट के प्रकाश में जिन बहादुर की आँखें चौंधिया गयी थी। अब वह पहले जसी सुविधा से गालामा पर झूट नहीं रहा था। लाइट की सीध में फायर त्रिगेंड वालों ने अपनी उस बड़ी सीढ़ी को जोड़ा जिम मोनवर उनकी लम्बाई बढ़ स भी ऊँची जा सकती थी। त्रिगेंड के कमचारी सीढ़ी खालते गये और साथ-साथ ऊपर चढ़ते गये। जब सीढ़ी बढ़ के पहले पत्ता के पाग पहुँची लोग की उत्सुकता तीव्र होनी लगी। उनकी सामें कोई बड़ी उपलब्धि के लिए रुक गइ और व डाकू के पकड़ जाने की प्रतीक्षा करने लग। तब ही जब सीढ़ी जिन बहादुर से चार फुट के लगभग नीची थी कि उसमें कुछ मनीनी गड़बड़ हा गयी और भाग न खुल सकी। उस समय फायर मैना की निराशा के अतिरिक्त खड़ी लोग की भीड़ की निराशा भी देखने योग्य थी। सभी हैरान थे कि यहाँ तक पहुँच कर भी डाकू वाबू में नहा आ रहा। उन सबकी बहादुरी को डाकू चुनौती देता मालूम होता था।

अपने यत्नों की असफलता पर सटपटाते हुए फायर मन सीढ़ी को ठीक करने में लगे थे और इस सारे समय में सच लाइट बराबर दिल बहादुर पर पड़ रही थी। कभी कभी यह लाइट चक्कर खाकर साथ के वृक्षों के फूलों और फला को चमका जाती। लोग का जोश कम होने के स्थान पर बढ़ता ही जा रहा था। इसी तरह भीड़ भी बढ़ती जा रही थी।

इससे पूर्व कि फायर त्रिगेंड वाले सीढ़ी उतारें अथवा कोई अन्य यत्न करें एका एक पत्तों की खडखडाहट के साथ लोगो ने देखा कि डाकू ने अपने आपको रेशे से खोल लिया है और वह लंगूरी की तरह शाखाओं पर कूदता नीचे आ रहा है। लोगो की सामें वही रुक गइ। सबकी नजरें सच लाइट के प्रकाश में बट के शिखर पर लगी हुई थी। उन्हें यह डर लगने लगा कि वह अभी गिर कर मर जायेगा।

मुकर्जी वाबू ने चटर्जी वाबू के बंधे पर हाथ रखते हुए अपने डर को बड़े जोर से व्यक्त किया 'भारे जाये दादा रे ए ए।'

अब भीड़ के किसी कोने में से भी पायर मारो की आवाज नहीं आ रही थी। रुकी हुए सासों से सबकी आँखें दिल बहादुर का पीछा कर रही थी। वह आहिस्ता-आहिस्ता बट के शिखर से नीचे उतर रहा था। जैसे-जैसे वह नीचे आता जा रहा था लोगो को कुछ सतौष होना जा रहा था। जिस समय वह बिलकुल नीचे की शाखा के पास पहुँचा 'पकड़ो रे धरो रे के जाने पावे न की आवाजें ऊँची होनी लग गयी। नस्वार चढ़ाते छीकें मारते चीना बादाम खाते माथे का पसीना पोछते हुए तथा बार-बार अपनी धोतियो के किनारा को सम्भालते कुछ लोग पुन शोर करने लग गये ए साला डाकात !

दिल बहादुर वहाँ पहुँच कर रुक गया जहाँ बट की दो शाखायें अलग अलग होती थी। इसके साथ ही लोगो की जो साँस तनिक चलने लग गयी थी पुन रुक गयी

और उनकी वाता फूली भी बन्द हो गयी। पर तुरत ही दिल बहादुर ने उस स्थान से अपन मोट-वाले बूट उठाय और पैरो मे डाल कर बडी दीनता से नीचे उतर आया।

उसके जमीन पर उतरने की देर थी कि लोग उस पर दूट पडे, परतु पुलिस के सिपाहिया न उमे घेरे म ले लिया।

मुकजी और चटर्जी बाबू ने उसके चेहरे पर उभरी भूख और गरीबी देखी और उनके हृदय म उसके लिए सहानुभूति जागृत हो आई। दोनो ने मिलकर सिपाहिया की सहायता की और लोगो की दिल बहादुर से परे रखा।

दिल बहादुर के हाठ सूखे हुए थे। उसका पट अदर को घँसा हुआ था। उसने एक फटी हुई निकर पहिन रखी थी और उसके शरीर पर स्थान-स्थान पर खरोचें लगी हुई थी। चेहरे की अवस्था ता बहूत ही शोचनीय थी। इस तरह अनुभव होता था कि वह किसी अपरिवित स्थान से क्लकत्ते के मैदान मे आ गया है। वह बार-बार अपने पेट पर हाथ रख कर उसे दवाता और अपनी शुष्क जीभ को अपन सूखे होठी पर फेरता हुआ बोलने का प्रयत्न करता। पर उसके मूह से एक शब्द भी नही निकल रहा था, उसकी जीभ मूह मे ही चख चख करके रह जानी।

उधर लोग अधीर हा रहे थे। बडी कठिनता से उन्होंने डाकू को पकडा था। वे घर जाकर अपनी सो रही पत्नियो तथा सम्बन्धियो को जगाकर अपनी वीरता की बार्ता सुनाना चाहने थे। यह देर उनके लिए असह्य बनती जा रही थी।

मुकजी बाबू भाग कर नल पर गया और पानी का एक लोटा भर लाया। दो घूट पानी पीन से दिल बहादुर की साँम तनिक ढग से चलन लगी। अभी वह बोलने का मनुहार कर ही रहा था कि दुबन-सा लडका भीड को चीरता हुआ आया और दिल बहादुर की कमर पर जोर से मुक्का लगाते हुए चीख पडा, 'शाला डाकात !

इस पर पुलिस के सिपाहियो ने भीड को पीछे हटाया और दिल बहादुर को घोरज देते हुए उससे सारी बात पूछने लगे।

दिल बहादुर भी अपनी घायल हुई जीभ म इतना ही कह सका 'हम हम भूखा है बाबू।

'शाला डाकात ! भीड म से एक आवाज पुन उठी, गायद बोलने वाला कहना चाहता हो कि देखो दिन बहादुर ऐसे ही बनने की कोशिश कर रहा है।

इस समय तक ट्राम कम्पनी वाता बाबू जिसन बट पर बठे दिल बहादुर को पहिचान कर आवाज दी थी भीड को चीर कर भाग आ गया। दिल बहादुर के हाथ को दवाता वह पूछने लगा 'तुम इधर कस ? दिल बहादुर दास।

हम भूखा है भट्टाचाय बाबू।

फिर भट्टाचाय ने भीड को मुखातिब करते हुए कहा, दिल बहादुर खराब आदमी नही। हमारा आफक ट्राम कम्पनी म बडवदरी करता रहा। कम्पनी ने इसको नौकरी से निकाल दिया। हमार दिल बहादुर को भूख लग नही सकती। अन्तिम वाक्य जस उसने दिल बहादुर को घोरज देने के लिए ही कहा हो।

लोटा अभी मुकजी क हाथ मे ही था। उसने दिल बहादुर की रकी साँस को देन

उसकी अज्ञानि में पानी के दो घूट और डाले ।

भीड़ के दूसरे कोने पर जहाँ भट्टाचाय बाबू की आवाज नहीं पहुँची थी कोई छोटी मारता हुआ बोला 'शाला डाकात ! पाथर मारो !' परन्तु साथ खड़े लोग ने उसे ठंडा किया ।

सूखे हुए हाँठों पर जबान फेरता हुआ दिल बहादुर बोलन का मत्न करने लगा । उसकी नजर भीड़ पर टिकी हुई थी पर वह पागला की तरह देख रहा था । उसे यह समझ नहीं आ रही थी कि वह क्या कहें । बड़बड़े पूक को गले में से बड़ी कठिनाई में गुजारते हुए उसके माथ पर बल पड़ गए ।

उसके पैर टूटी हुई चप्पलो से बाहर निकल रहे थे । फटी हुई निक्कर के कारण वह कोई गूदड़ी वाला भिखारी लगता था ।

जैसे जैसे भट्टाचाय की बताई बात लोगों के पास पहुँचती गयी लोगों का जोश ठंडा पड़ता गया । भीड़ जा चुपचाप अपने परा पर खड़ी थी अब आहिस्ता आहिस्ता कम होने लग गयी थी ।

दिल बहादुर चुपचाप खड़ा टुकर टुकर देख रहा था । उसकी पथराई आँखों की पुतलियाँ किसी समय फिरली हुई लोगों पर एक नजर मार लेती थी । अपने खुरदरे पुष्क बालों पर हाथ फेरते हुए उसकी उगलियाँ उसमें अड गयी । उसने जोर से भँभोडा जिससे उसके कुछ जुड़े हुए बाल टूट गए । पीडा की दबी हुई टीस से उसके मुँह का बोल खुनकर दिए की तरह हो गया । बालों को एक बार आँखों के सामने करके उसने एक ओर फेंक दिया । फिर एक हाथ अपनी टाँगों की खरोचों पर फेरता हुआ बोला बाबू हम कल शाम मदान में बड़ा रहा कुछ बाबू लोग हमको ।

गन्ध उसने मुँह से एक एक कर निकल रहे थे और उसकी आत्मा लोगों के व्यवहार में पीड़ित हुई उसकी जबान से बहुत कठिनाई के साथ गन्ध को बाहर धकेलने का मत्न कर रही थी ।

पाथर मारा रहा डाकात भी बोलता रहा हम पड़ पर चढ़ गया बाल बरत-बरत उसने अपने पेट का दोनों हाथों से जोर से दबाया और कुछ दद हाती व्यक्त की और साथ ही सिर चकरा जान में वह धम में जमान पर गिर गया ।

उस समय तक लागू का जोश समाप्त हो चुका था । कानापूभी करत और छीकें मारते बड़-बड़ करत अपने अपने रास्ते पर ही गए ।

मिफाही भी दिव बहादुर को छानकर अपनी गन्ध पर चढ़ गया । घटकों बाबू में उमक कर धीमे पेट की धार देखते उस महार दकर जमीन में उठाया और सहानुभूति में पुचकारते हुए कहने लगा 'मि बहादुर दाग ! हमारे माथ चटना माँगता । भान माना माँगता ।

उसके माथ भट्टाचाय बाबू भी मित गया था । मुखर्जी भाग ही माथ था ।

बिस्तर रनी भीड़ में भी पानिण करन वाला एक लड़का जिनमें पाथर भाग था भाग ही हाथ जाइकर नम्रना में कहने लगा 'नमाकार दाग ! तुमारे भाग वधु ।

और फिर उमने बड़ा नम्रना में कहने लगा 'मनुनय विनय का । धामा कि विमा

करा दान ।

दिल बहादुर की भवें कुछ-कुछ डीनी हुई पर वह बोला कुछ नहीं । उसने अपने पद की टीसा को दबाया हुआ था ।

भट्टाचाय बाबू ने दिल बहादुर को अपने अघ आलिंगन म लिया और चटर्जी बाबू और मुक्जी बाबू न भी उमे सहारा दिया ।

पालिंग बाबा लटका दिल बहादुर के पैरा पर गिरकर उसके चपला पर द्रुश मारता हुआ जाग से कहने लगा 'तुमी आमार भाई । तुमी आमार गरीब बाधु ॥ तुमा डाकात नहीं, दादा ॥'



उसकी अजलि में पानी के दो घूट और डाल ।

भीड़ के दूसरे कोने पर जहाँ भट्टाचाप बाबू की आवाज नहीं पहुँची थी, कोई छोका मारता हुमा बोला 'शाला डाकात ! पायर मारो !' परन्तु साथ खड़े लोगो ने उसे ठडा किया ।

सूमे हुए होंठो पर जबान फेरता हुआ दिल बहादुर बोलन का यत्न करने लगा । उसकी नजर भीड़ पर टिकी हुई थी पर वह पागला की तरह देख रहा था । उस यह समझ नहीं आ रही थी कि वह क्या कह ! कड़वे धूक को गले में से बड़ी कठिनार्द्ध से गुजारते हुए उसका माथे पर बल पड़ गए ।

उसका पर टूटी हुई चपलो से बाहर निकल रहे थे । फटी हुई निकर के कारण वह कोई गूदडी वाला भिलारी लगता था ।

असे-असे भट्टाचाप की बताई बात लोगो के पास पहुँचती गयी, लोगो का जोश ठडा पड़ता गया । भीड़, जो चुपचाप अपने पैरा पर खड़ी थी अब आहिस्ता आहिस्ता कम होन लग गयी थी ।

दिल बहादुर चुपचाप खटा टुकर टुकर देख रहा था । उसकी पयराई आँखो की पुतलियाँ किसी समय फिरली हुई लोगो पर एक नजर मात्र लेती थी । अपने पुरदरे शुष्क बाला पर हाथ फेरते हुए उसकी उँगलियाँ उसमें अड गयी । उसने जोर से भँभोडा जिससे उसके कुछ जुड़ हुए बाल टूट गए । पीडा की दबो हुई टीस से उसके मुह का बोल खुलकर लिए की तरह हो गया । बाला को एक बार आँखो के सामन करके उसने एक ओर फेंक दिया । फिर एक हाथ अपनी टांगो की खरोचो पर फेरता हुमा बोला 'बाबू हम बल गाम मदान में बटा रहा कुछ बाबू लोग हमको ।

गदबद उसका मह से रुक रुककर निकल रहे थे और उसकी आत्मा लोगो के व्यवहार से पीडित हुई उसकी जमान से बहुत कठिनार्द्ध के साथ गल्ला को बाहर धनेउन का यत्न कर रही थी ।

पायर मारा रहा डाकात भी बीनता रहा हम पड पर पड गया 'घान करन-करन उसन अपने पड का दोना हाथा में जोर से दनाया और कुछ दन हानी व्यक्त की घोर माप ही सिर चकरा जान में वह धम में जमान पर गिर गया ।

उम समय तक लागो का जोश समाप्त हो चुका था । बानाफूसी करन और छोके मानन बन्-बन् करन अपने अपने राह पर हो गए ।

मिपाही भू टिन बहादुर का छात्रकर अपनी गान पर चन गए । चन्त्री बाबू न उसका छात्रर घेने पड की धार दमन उम गगरा दकर जमान में उठामा और सहानुभूति में पृथकारन हुए कहन लगा 'टिन बहादुर दाग ! हमारे माप धनना माँगता । भात माना माँगता ।

उनका माप भट्टाचाप बाबू भी मिच गया था । मुखोँ धाग हा माप था ।

विगर रने भीड़ में म पातिग करन काग एक सक्का त्रिमन पपर माग था धाग हा हाथ जालकर नेग्रना में कहन लगा 'नेमाकार गाना ! तुमा धमार बंधु ।

घोर टिन उमन बडा नग्रना मून् बनाकर धनुनय तिनय का । 'धामा कि धिमा

करो दादा ।”

दिन बहादुर की भवें कुछ कुछ ढीली हुई पर वह बोला कुछ नहीं । उसने अपने पत्र की टीसो को दबाया हुआ था ।

भट्टाचाय बाबू ने दिन बहादुर को अपने अध धालिगन म लिया और चटर्जी बाबू और मुकर्जी बाबू ने भी उसे सहारा दिया ।

पालिश वाला लडका दिल बहादुर के परा पर गिरकर उसके चपला पर ब्रुश मारता हुआ जोश से कहने लगा, ‘तुमी आमार भाई ! तुमी आमार गरीब बंधु ॥ तुमा डाकात नहा दादा ॥॥’

# युद्ध

तरलोक मसूर, १९२३

---

तरलोक मसूर भारतीय सेना व एक अधिकारी हैं और पंजाबी के एक गतिशील कहानीकार हैं। वे अब तक लगभग २०० कहानियाँ लिख चुके हैं और युद्ध जीवन पर लिखी हुई उनकी कहानियाँ पंजाबी में ही नहीं बरन् सभी भारतीय भाषाओं में अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। मसूर की कुछ कहानियों का अनुवाद पूर्वी यूरोप की भाषाओं में हुआ है और एक कहानी मास्को से प्रकाशित भारतीय लेखकों की कथा निर्मा सग्रह में भी संकलित हुई है।

'अधूरी कहाणी' 'मौसम खराब है' पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। धरती ग्रहण फुल्ल ते बडे और शीने बिच परी प्रकाशन मार्ग पर हैं।

युद्ध-जीवन से सम्बन्धित एक कहानी यहाँ संप्रहीत है।

---

स्वप्न में करमसिंह को लगा मानो किसी मजबूत दुश्मन के हाथों ने उसे पकड़ लिया हो। उसने चौंक कर आँखें खोल दीं। ठंडी रत पर उसके साथ ही युद्ध से भागा हुआ भजीतसिंह बहोस सो रहा था और उसकी दाइ बाह करमसिंह की गदग से लिपटी थी। करमसिंह ने चारा और डरा और सहमा नजरा से दूर-दूर तक दखा। हर तरफ रेतीली धरती फनी हुई थी। पूरब की आर से चढता हुआ सूर्य अपना सिर उठा रहा था।

आज स तीन दिन पूव वह दोना दुश्मन के घेरे से निकल भागे थे। बगाजी शहर की बाहरी खाइया में उन लोगो न भाचें लगाय हुए थे जब उह खबर मिली कि

जमना ने घेरा ढाल लिया है। फिर दिना दिन वह घेरा सँकरा होने की खबरें पहुँचती रही। वह प्रतिदिन काहिरा से अपनी मदद का इंतजार करते, पर वह पन कभी न आया, जब कोई आकर कहता कि काहिरा से पहुँची हुई फौजा ने दुश्मन को हराकर वेग तोड़ लिया है।

घेरा दिन प्रतिदिन तग होता जा रहा था और सिर पर आते हुए खतर से वे भलीभाँति परिचिन थे। वह जानते थे कि जब शत्रु का टिड्डी दल सिर पर आ पहुँचा तो फिर सिवाय हाथ ऊँचे करके युद्ध के बंदो हो जान के और कोई चारा न रहेगा और पिंजड़ में पकड़ हुए चूहों की भाँति युद्ध के बंदी के साथ व्यवहार विजयी की इच्छा पर होना है, जैसी मौत चाह वह मार सकता है।

अंत में बड़ कमांडर ने अफमरा की एक बैठक बुलाई और फँसला हुआ कि रात-ही रात में मार घाड़ करने, घेरा तोड़ कर भाग जाना चाहिए। वह रात क्यामत की रात थी। शत्रु ने डाकी हलचल को ताड़ लिया था, और अपनी तोपों के मुह खोल दिये थे। प्रकाश पन्नाते हुए गोल ऊपर और फिर उनकी रोशनी में घबरा कर द्धर-उधर भागत मनुष्य नड-नड करती गोलियों से चने के समान भून दिये जाते जिधर किसी का मुह उठा शत्रु की पकियों के बीच से भाग लिया।

इस तरह ताड़ब नत्य से दूर जब करमसिंह जल्दी जल्दी भागा जा रहा था तो रात में अघकार में किसी ने आकर उसका हाथ थाम लिया। डर से करमसिंह का शरीर सुन हो गया। एक निदयी भटके से उस पकड़न वाले का हाथ भटक देना चाहा पर दूसरे ही पल उसके कानों में सुना 'मुझे भी ले चल भाई' पलट के उसने देखा तो हाथ पकड़नेवाला यही अजीतसिंह था।

फिर दो रात और दो दिन इस मरुस्थल को पार करते रात को वह यहाँ तक पहुँचे थे। थकावट से उनका बुरा हाल था नींद ककड़ के समान उनकी आँखा में धुभ रही थी।

"दोस्त अब नहीं चला जाना अजीतसिंह ने सिर हिलाकर कहा था और फिर दाना ने मलाह की कि चाहे वे शत्रु के हाथों पकड़े जाएँ पर एक रात इस रेत के विद्यौन पर गवदम आराम करेंगे। अपने फौजी पला से नमकीन विस्तुट का बचाबुचा पूरा खा कर इस विशाल रेगिस्तान के भयानक एकांत में वह दोनों एक-दूसरे के साथ लग कर सो गए थे।

अपने साथी के कंधे को हिलात हुए करमसिंह बोना 'अजीत ! आ अजीत !' अजीत ने एक गहरी साँस लेते हुए आँसू धोत दी।

उठ अब जिधर जाना है ?

अजीतसिंह उठकर बैठ गया। निचले होंठ पर लकड़ी हुई जीभ को फेरता हुआ बोना 'मेरा मुह आँक के समान कडवा हो रहा है।

यही हाल मेरा भी है।"

'कुछ खाने को मिल जाता तो

रेत ही है खानी है ?

यह गा बनने बनने लगी ही पदगी ।  
 गा को पाठ वह पैना गाती करन गाद य फिर भी उनका गिन इग तरह  
 गधषार्ड को मागागी रही चाहाया या इगाल उगाग गाती पैना का उगा करन माग  
 यह गधमुध गाती य ।  
 तेरी बनती य गाता है र ? अजीगीगद न घणा। गाती बनता का गिना  
 हुए पूगा। घणा बनता का बाक गाताया हुआ कर्मगिग बाता "। पूं मापुमता  
 पटा है ।

एक घट अजीगीगाग १ भर निया घोर दूगग कर्मगिग न घोर गिर बिना एक  
 गिगट बकाग बिद दाता पूरय की घार बसन रह य । गिगन गाग गिन म बर इग  
 गह पर बसन घा रहे य । उनक अनुमान स इग घार घागिगघवावा का गहर पघता  
 घा । घागिगघवावा घोर बितनी दूर या ? इग बिवावान म इग बाग का कग घागत्रा  
 हो सक्ता या । बिनतु एक घागा हा है गिगक। मनुष्य मरने दम तक पकड रगता है ।  
 उगी घागा का दामन पकड वह गान। गिगन तीन गिना स ग्य तरने हुए गीगन म  
 मटक रह य ।

उपर स मूरज घगिन य बाग बन गहा या । नीच रेत सपिग छोड रही थी । वहाँ  
 तक नजर काम देती थी रेत के ऊँच-नाच टीन ही नजर घान थ । कोई पापी कोई  
 जनु बनस्पति बस्ती किसी घावादी के घागार कुछ भी नहीं बस घारा घार एक  
 भयानक गान्ति थी घोर उस घागित म सल लोटें स मुनगन मूय क नीच दो इनमान  
 जिदगा को पुकारते हुए घपर स उपर भटक रहे य । जब पूय न उनको जताना गुरू  
 किया घोर पसीना सर स बह-बह कर पीजी जूता म परो को भिगोने लगा तो वह  
 ठहर गग । अपनी बडूक को पास पाग गाड दिया घोर अपनी कमीजें उतार कर दोना  
 बडूक पर डान कर थोडी छाँव बनाई घोर एक-दूसरे से सट कर दोनो बठ गग । मूसा  
 घूट गन क नीचे उतारता हुआ अजीतसिंह बोला— गना गिक्कुल मूय गया है कतली  
 को निचोड बना ? सली बैतलियो क बाक खोल कर उहोन अपनी हथेलिया पर  
 उतटा रखा । पाँच छ बूँदें उनकी हथलियो पर घा गद अमृत समझ कर वह दोनो  
 उह जीभ स घाट गग । जरा-सा मुस्ता लेने के बाद अजीतसिंह ने कहा मेरा बिचार  
 है हम पूरय की घोर जाने के बजाय बाद घोर बन आदिसघवावा इतनी दूर नहा  
 हो सक्ता । हम जरूर राह भून गय हैं ।

कर्मसिंह न उत्तर दिया कही भी जायें हमारी खर नहीं । दो ही प्रकार क  
 लोय हम मिलग । एक वह जिनको हम गुनाम बना चुक है घोर दूसर वह जिन्ह  
 हम गुलाम बनाने के लिए लड रहे हैं । किसी के भी हाथ लग गय कोई भी हम  
 छोडेगा नहीं । एक कठवी सक्चार्ड का पहली बार अजीतसिंह को अहसास हुआ ।  
 एक मोटी सी गाली अग्रजो का दे कर बोला हरामी ! वहाँ ला कर छोड़ गये हम ।  
 अपने दग से हजारो मील दूर मोत की गोद म बठे हुए उस पल कर्मसिंह का  
 अग्रजो पर बहुत गुस्ता आया । निचले होठ की शोध स दाँतो म चवाते हुए बह वाला  
 तुक मात्रम है उहोने हम इस तरह बसहारा कयो छोड दिया है ?

“क्या ?”

‘इसलिए कि उनको हमारे जंमे और सोलह मोनह रूपए पर बटुत-न मिल जायेंगे।’

“उनकी मा की ” एक अति गंदी गाली अजीतसिंह ने अश्रेजा को और दी। ‘एक बार मुझे गांव पहुंच लन दे फिर अगर मेरे गांव से कोई भी भरती हा गया तो मेरा नाम बदल दना। मैं गांव-गांव घूम कर लोंगा का युद्ध की बरबादी के विषय में बताऊंगा और बहूगा, भाइयो मांगी राटी खा लेना पर भरती न होना।

बहूगा ता मैं भी यही, किन्तु घर पहुंच गये तब न। करमसिंह के बंध पर हाथ मार कर अजीतसिंह बोला, धबराओ नही दोस्त। हम जरूर घर पहुंचेंगे। मुझे तरा भगवान के समान आमरा है। अगर तू न होना तो मैं कब का इस मरुस्थल में तत्प-तत्प कर मर गया होता।’

कुछ समय तक दोनों चुपचाप घदन पर टपकत पसीन की धारा को पाछे रट। फिर करमसिंह बोला ‘एक बात है।’

‘क्या ?’

चाह हम मर जाएं हमारे गांव से काई भरती नही हागा।

कमे ?

‘जब हमारे जमे हुआ जवाना की मौत की खबरें उनके रिश्तेदारा को मिलेंगी तो उनसे मिनाप हो सुनकर लाग त्राहि त्राहि न कर उठेंगे।’

इस दलील में सहमत होता हुआ कुछ समय तक अजीतसिंह करमसिंह को देखता रहा और फिर बोला रोटी का तो कुछ नही थाडा-सा पानी ही मिल जाता।

पानी ?

‘हा पाना।’

पानी के विषय में करमसिंह के पास कोई उत्तर न था। तपत मरुस्थल में जगह-जगह में रेत की आंधियां उठ उठ कर आकाश को छू रही थी और टीलो के पीछे नाचनी घूम की लहरें भूला का धोखा दे जाती थी। अचानक उनके काना में फड फड की आवाज सुनी दोनों न सिर उठाया हवाई जहाज ऊपर चक्कर लगा रहा था। आगा से अजीतसिंह की आंखा में जिदगी नाच उठी। बोला ‘अपना ही लगता है।’

करमसिंह न गौर से देखा और बोला नही, शत्रु का लगता है।

अपना है मार क्या बातें करता है।’ अजीतसिंह ने कहा और खुशी में पागल हां कर उठ खडा हुआ।

नही शत्रु का है।

अरे भाई अपना ही है मान भी जा कह कर अजीतसिंह ने हाथ ऊंचे कर के इनारे किये और जहाज की ओर भागना शुरू किया।

पहले जहाज गोश्त के ऊपर भपटता नीचे के समान नीचे आया जमे नीचे हवाई छूटती है सां गा करता एक गोला नीचे आता हुआ उहनि देखा।

‘बम्ब ! बम्ब !’ चिल्लाते दोनों रेत पर सेट गए। एक जोर का दिन हिला बने

वह तो अपने पतन गायी ही पढ़ती ।

राज को बात यह भेना गायी करके गाए थे फिर भी उनका जिन इम मरू मरुपार्थ को माता गयी पाता था इमलिए उजान गायी भेना का उजान करके माता वह मरुमुष गायी थ ।

तरी कनकी म पाता है २ ? धर्मोर्गाय न घनाः गाना कनकी को त्रिगा दूष दूष । घनाः कनका का काक गोतता तथा कर्ममिह याता ॥ पूट मानु म ता परगा है ।

एक घट धर्मोर्गाय ॥ भर निया घोर दूषण कर्ममिह १ घोर त्रि विगा एक मिहत्त यकार विष दाता दूषण की घात चलन रह थ । विद्वान् गात त्रि न वर इम गात पर चलन घा रहे थ । उनक अनुमान म इम घात धर्मिगधवावा का गहर परना था । धर्मिगधवावा घोर कितनी दूर था ? इस विवाचान म इम बात का कम घातका हो सकना था । किन्तु एक धागा ही है त्रिगका मनुष्य मरुत दम तक पनह रगता है । उगी धागा का दामन परह वह दाता विद्वान् तीन त्रिना म इम तरने दूष मीनान म भटक रह थ ।

उपर म गुरात धमि न बाण चलता रहा था । नीच रत तपिण छाड रही थी । जहाँ तक नजर काम देती थी रेत व ऊँचे-नीचे टीन हो गजर घाने थ । काई पनी कोई जानु बनस्पति बस्ती किसी धावादी व धासार मुद भी नहा यत धारा धार एक भयानक घाति थी और उस घाति म सान सोह स मुनगत गूय व नीचे दा इनमान जिदगी को पुवारते हा इधर स उधर भयक रहे थ । जब धूप न उनको जलाना शुरू किया और पसीना सर स बह-बह कर पीजी जूना म परा को भिगोन लगा तो वह टहर गए । अपनी ब-दूका को पास पाग गाड दिया और अपनी कमीजें उतार कर दाता ब-दूको पर डान कर थोड़ी छाँव बनाई और एक-दूमरे मे सट कर दोना बठ गए । सूखा घूट गले के नीचे उतारता हुआ धर्मोर्गाय बोला— गला बिल्कुन सूख गया है कतली को निचोड भला ? खाली केतनिया के काक खोल कर उहोने अपनी हथेलिया पर उलटा रगा । पाँच छ वूदें उनकी हथेलियो पर घा गई अमृत समझ कर वह दोना उह जीभ स चाट गए । जरा सा मुस्ता लने के बाद धर्मोर्गाय न कहा 'मेरा विचार है हम पूरव की और जान के बजाय बाइ और चलें आदिधधवावा इतनी दूर नहीं हो सकता । हम जहर राह भूल गय हैं ।

कर्मसिंह ने उत्तर दिया, कही भी जायें हमारी खर नहीं । दो ही प्रकार के लोग हम मिलेंग । एक वह जिनको हम गुनाम बना चुक हैं और दूसरे वह जिन्ह हम गुलाम बनान के लिए लड रहे हैं । किसी के भी हाथ लग गये कोई भी हम छोडगा नहीं । एक कडवी सच्चाई का पहली बार धर्मोर्गाय को अहसास हुआ । एक मोटी सी गाली अग्रजो को दे कर बोना 'हरामी ! कहीं ला कर छोड गय हम ।

अपन दश से हजारों मील दूर मौत की गोद म बठे हुए उस पल कर्मसिंह को अग्रजा पर बहुत गुस्सा आया । निबते होठ को क्रोध से दाँतो म चवाते हुए वह बोला, तुम्हे मानुम है उहोने हम इस तरह बेसहारा क्या छोड दिया है ?

“क्या ?”

इसलिए कि उनको हमारे जम और सोलह मोलह रूप पर बटुल-मे मिल जायेंगे ।

उनकी मा की ' एक अति गंदी गानी अजीतसिंह न अग्रेजो को और दी । ' एक बार मुझ गाव पहुच लने दे फिर अगरे भेरे गांव से कोई भी भरती हो गया तो मरा नाम बदल दना । मैं गांव-गांव घूम कर लोणा को युद्ध की बरबादी के विषय म बनाऊंगा और कहूंगा, भाइया, मांगी राटी खा लेना पर भरती न होना ।

' कहूंगा तो मैं भी यही, किंतु घर पहुच गये तब न । ' करमसिंह के कंधे पर हाथ मार कर अजीतसिंह बोला, ' घबराओ नहीं दोस्त । हम जहर घर पहुचेंगे । मुझ तरा भगवान के समान आगरा है । अगरे तू न होता तो मैं कब का इस मरुस्थल म तल्प-नडप कर मर गया होता । '

कुछ समय तक दोनों चुपचाप वदन पर टपकते पसीने की धारा को पाछन रहे । फिर करमसिंह बोला ' एक बात है ।

' क्या ?

चाहू हम मर जायें हमारे गाव से कोई भरती नहीं होगा । "

कसे ?

' जब हमारे जने हजारा जवाना की मौत की खबरें उनके रिश्तेदारा को मिलेंगी तो उनका विलाप को सुनकर लोग त्राहि त्राहि न कर उठेंगे ।

इम तलीन मे सहमत होता हुआ कुछ समय तक अजीतसिंह करमसिंह को देखता रहा और फिर बोला ' रोटी का ता कुछ नहीं, थोडा-सा पानी ही मिल जाता ।

पानी ?

' हा, पानी ।

पानी के विषय म करमसिंह के पास कोई उत्तर न था । तपने मरुस्थल म जगह-जगह स रेत की आबियां उठ उठ कर आवाज का छू रही थी और टीला के पीछे नाचता धूप की लहरें भूता का घोखा दे जाती थी । अचानक उनके काना न फड फड का आवाज सुनी दोना न सिर उठाया हवाई जहाज ऊपर चक्कर लगा रहा था । आगा मे अजीतसिंह की आंखो म जिदगी नाच उठी । बोला ' अपना ही लगता है ।

करमसिंह न गौर से देखा और बोना ' नहीं, गनु का लगता है ।

अपना है यार, क्या बातें करता है । अजीतसिंह न कहा और खुशी से पागल हो कर उठ खडा हुआ ।

नहीं गनु का है ।

अरे, भाई अपना ही है मान भी जा कह कर अजीतसिंह न हाथ ऊंचे कर के इंगारे किये और जहाज की ओर भागना शुरू किया ।

पहले जहाज गोता के ऊपर भपटती बोल के समान नीचे आया, जम नाच हवाई छूटनी है सां सां करता एक गोला नीचे आता हुआ उहाने देखा ।

बम्ब ! बम्ब ! ' चिल्लाते दोना रेत पर लेट गए । एक जार का तिन हिता दन



खाला घमाका हुआ । चारा दिगएँ घुएँ की चादर म समा गई । धीरे धीरे घुमाँ छट गया । करमसिंह न भयभीत झालें खाल दी ।

क्या हाल है भई ? कहता हुआ करमसिंह उठ कर जिस ओर अजीत लटा था चल पडा । दस कदम आग अजीत की एक लात पडी हुई मिली, पाँच कदम ओर आग अजीत का एक हाथ पडा था । जहाँ अजीत लेटा था वहाँ एक गहरा गडडा खुदा हुआ था और उसक चारो ओर बालूद से जली हुई अजीत की बोटियाँ पडी थी ।

किमी डर स करमसिंह क दोना हाथ ऊपर उठे और

मैं हार मानता हूँ । मुझ कद कर लो ।' यह चिल्लाता हुआ करमसिंह उस तपते मरुस्थल म इधर उधर भागन लगा ।



“खिड़की बंद कर दो” जल्थेदार जी बोले।

पालासिंह मुस्करा दिया। ‘यही तो हमारा पैग का मवा है, बादागाहो तुम इस रेत कहते हो। इस रेत के लिए तो मरी आँखें तरम गई।’

आज चौदह साल के लम्बे अरस के बाद पालासिंह देग जा रहा था। आज स चौदह साल पहले यह उसका अपना देश था—यह रेगिस्तानी देग। रावर्लापिंडी व पश्चिमी रेतीले इलाके में उसका गाँव था। घर घाट था जमीन थी एक दुनिया थी। फिर न जाने क्यों लोगों के सिर पर पागलपन का भूत सवार हुआ और बड़े बिठाए अपने पराए हो गए। पालासिंह अपना सब कुछ पीछे छोड़कर सरहद के इस पार चला आया। अब मू तो उसके पास सब कुछ था घर घाट था माल असवाब था लेकिन वह दुनिया न थी। अपने दालान का कुर्मा उम कभी न भूला। वम तो उस अपने देग की हर चीज प्यारी थी लेकिन कुएँ से उम विगेप म्नेह था।

पालासिंह का गाँव उस इलाके में था जिसके चारा ओर रेगिस्तान फला था। यहाँ की खुश्क बजर धरती में और कोई फसल पदा नहीं होती थी। केवल बाजरा होता था जिसके बारे में लोग कहा करते थे यह रूखे लोगों की रूखी पदावार है। सारे इलाक में न कहीं पानी था और न कहीं पानी का निगान। लोग भीला का सफर तय करके उटो और गधो पर मशकें लाद हजारों मुमीवतें झेलकर पीने का पानी लन जाया करते थे।

पालासिंह का बाप चौधरी हीरासिंह सचमुच एक हीरा ही था—एक अनमाल हीरा। सुबह उठने पर अगर किसी को उसके दशन हो जाते तो वह समझता कि आज का दिन भाग्यशाली है। हीरासिंह बड़ा दमदार व्यक्ति था—पूजा पाठ में यस्त रहने वाला साधु स्वभाव जिसके दालान में सदा साधु सत्ता की भीड़ लगी रहती। एक बार उसके द्वार पर एक महात्मा आए। चौधरी ने उसकी बहुत मवा की। चौधरी की सवा में प्रसन होकर महात्मा ने कहा जोगी चौधर वरम का चिल्ला काट कर आया है। माँग क्या मागता है ?

सब आपकी कृपा है चौधरी बोला।

देख ल चौधरी तेरी खुशी है।

महाराज चौधरी ने कुछ सोचते हुए कहा इस धरती का किसी का गाप लगा है। कई साधु महात्मा यहाँ आए यह धरती उनके चरणा से पवित्र हुई लेकिन लोग उसी तरह दुखी रह।

क्या ?

यहाँ की धरती बाक है और पानी खाग। पीने का पानी नान के लिए लागा को बहुत दूर जाना पडता है। महाराज यदि आप कृपा करके हम लोग के इस कष्ट का निवारण कर मक्के ता बहुत लागा का भना हागा।

बहुत अच्छा। फिर तू ही इसका पात्र है क्योंकि तू मभी की भवाई चाहता है। ऐसा करना कि जिस जगह जागिया का यह चूहा है यहीं में धरती खुतवाना और इस जगह कुर्मा बनवाना। किसी को पानी भरन में मना मत करना। जा, भगवान तेरा

भला करें।

महात्मा जी तो चल गए लेकिन हीरासिंह न उसी दिन उनकी बताई जगह पर मिट्टी खुदवानी प्रारम्भ कर दी। कई मजदूर जुट गए। दिन रात काम होने लगा। कई दिना की खुदाई के बाद भी पानी की एक वूद तक न मिल सकी वसी ही सूखी और खुरदरी रेत निकलती रही।

यू ही कोई बहकाने वाला जोगी था। अगर वास्तु धरती में इस तरह पानी के साते फूटन लगन तो इस रेगिस्तान में इतनी रेत दिखाई न देती लाग कहत। लेकिन चौधरी हीरासिंह का हृदय सागर की तरह अथाह और विंगाल था। वह अपनी धुन में मग्न और अपनी प्रतीक्षा पर दृढ़ मिट्टी खुदवान पर लगा रहा। उमने आशा का धार न छाडा। अत में तूणिमा के दिन उसके खुदवाए हुए कुए में पानी का सोता फूट पडा — पानी भी इतना भीटा कि कुछ न पूछिए।

चौधरी हीरासिंह ने भगवान को धन्यवाद दिया और अपने इस खजान का मुह खोल लिया। उसका कुआ सात इलाके में बेजोड था। रात दिन वहा मेला लगा रहता। साग आत अपनी प्यास बुझाते और उस दुआएँ देते चले जाते।

जब स पालासिंह ने होश सम्भाला यह कुआ उसके विचारा पर छाया रहा और विचारों पर ही क्या उसके मन की गहराइया में पानी की इस मिठास ने अपना घर मा बना लिया था। यदि वह अपनी स्मरण शक्ति पर जोर भी देता तो भी वह उम कुएँ के ससार में आग नहीं जा सकता था। चारदीवारी वाली बड़ी हवेली में उस कुएँ को विशेष महत्त्व प्राप्त था। वास्तव में इस हवेली में अगर कोई मन्त्रवपूण वस्तु थी तो यही कुआ था। इसके चारों ओर चबूतरा बना हुआ था। चबूतरे के चारों ओर सीटिया थी। मुडर के पास बड़-बड़ गन्नीर गड हुए थे जिन पर रस्सी की रगड स कुछ धारियाँ-भी बन गई थी और उनसे रस्सी फिसल फिमल जाती थी।

पालासिंह ने सोचा जब उसने जिंदगी में पहली बार आख खोनी होगी तो सचमुच उसकी छाटा छान्नी आँखों में पहनी निगाह में इन कुएँ को ही देखा होगा जहाँ रेगिस्तान की अल्ट्रा नौजवान लडकियाँ और औरनें कच्च घड गागरों और कलगे लकर पाना भरन आषा करती थी। उसे याद आषा कि पहले पहल यही पर उमकी भेंट अपनी पत्नी हुरनामकीर से हुई थी। भुटपुटा मा हा रहा था। उसने दखा कि हुरनामकीर जल्नी जल्नी कदम उठाती हुड आई और कुएँ की मेड पर चड गई।

उमने गागर बही रखी और कुएँ में लाटा लटका कर उसके पीछे सारी रस्सी छोड दा। रस्सी रोगम की डोर की तरह फिमलती हुई चनी गई और दूर पानी में नाट के गिरने की आवाज आई। उमने दावारा लोटा पानी में खगाना और फिर जाच-नीचकर रस्सी समटन लगी।

पालासिंह इन तमाम घडियों में उम दखता रहा। गागर भरकर उसने कुएँ की मेड पर रत दी और उधर उधर भकिने लगी। सभक गाँवना हो चनी थी और बबून के पड की पगछाइयाँ धनी हा गई थी।

पालासिंह कुछ भिभकने हुए आगे बढ़ा और बोला, 'मैं हाथ बँटा दूँ ?'

चल, परे हट ओ छोकरे। बडा आया पहलवान कही था। मैन भी तो इमी कुएँ का पानी पिया है।' और उसने पालासिंह के दसने-सने गागर को एक भटका दिया उसे अपने मिर पर रम किया और फिर रेत पर छमछम पाँव रसती हुई पनक भपकते बबून के पेडा की छाँव म यह गुम हा गई थी।

अगर अंधेरा ज्यादा गहरा न हाता तो पानागिह उसने परा की रेत पर बनाई हुई उस जजीर को देर तक दसता रहता। परो क निगान दखना भी उसका एक गौक था। ये निगान उसन कुएँ से आरम्भ होकर रंगिरानन म चारा ओर खिखर गए थे। इन निगाना की उस इतनी पहचान हो गई थी कि वह यह बता सकता था कि अनगिनत निगानो म स कौन स निगान हरनामकीर के बाप की चारदीवारी म जाकर गुम हो जाते थ।

और फिर हरनामकीर के साथ उसकी दानी हो गई। वे दिन भी खूब थे। दोना सारा दिन बाजरे क खेता म किलकारियाँ मारते रहते। वह उस डोल सिपटिया बाकिआ माटिया (सजीला जवान बाँका प्रभो) कहा करती और वह उसको खूह ता पानी भरेंदिए मुटियारे नी (कुएँ पर पानी भरती हुई अल्टड नवयुवती) वाला गीत सुनाया करता था।

अगर कभी उह गाँव के बाहर जाना पडता तो वे दोना उदास हो जाते।

हरनामकीर तू असल म बाजरे की कोपल है जिसके फलने फूलने और बढने के लिए रेगिस्तानी धरती ही उपयुक्त है।

रतीली धरती तो खर ठीक है लेकिन तुम्हारे कुएँ का ठण्डा और मीठा पानी भी ता सौ दवाओ की एक दवा है।

'यह तो बिल्कुल सच कह रही है हरनामकीर। अपने कुएँ के पानी के लिए तो मैं खुद भी तरस गया हूँ।

अपने बतनाँ दियाँ ठडियाँ छाइ वे

अपन बतनाँ दियाँ सद हवाइ वे।

(अर्थात् अपन देश की ठडी छाँव अपने देश की ठडी हवाएँ।)

गीत के अगल बोल हरनामकीर पूरे कर देती है

लगिया निभाइ वे मिधी छोड न जाइ वे

दम्म दिया लोभिया वे परदेस न जाइ वे।

(अर्थात् प्रीत की रीत निभाना और मुझे छोड न जाना। ओ पैसे के लोभी परदेस न जाना।)

और आज पालासिंह काले कोस तय करके अपने देश पहुँचा था। पकिस्तान एक्स प्रेस छकछक उडती जा रही थी और खिडकी से बाहर कहीं कहीं बबूल के पेड खुले हृदय स स्वागत कर रहे थे। उसके विचारा पर एक भीना सा आवरण छाया हुआ था और उस पर कई पगडण्डियाँ उभरी हुई थी और यह सब उसके देश को जाती थी कुएँ वाल गाव को जहा बाजरे की कोपल बढ कर पक जाती है और काटो भरे बबूल के पील फूल खिलते है।

छक्छक् करती हुई रेलगाड़ी रेगिस्तान से गुजरती हुई बाजरे के खेता को पार करता जब ब्राउटर सिगनल के पास स गुजरी, तो उसकी चाल धीमी पड़ गई थी। पालासिंह मन-ही मन बहुत खुश हुआ कि कुछ पला के बाद वह अपनी मजिल पर पहुंच जाएगा। उमन दूर स्टेशन पर खड़ा हुए आदमिया को पहचानन की काशिश की। य तमाम लोग उसके स्वागत के लिए आए थे जा पाकिस्तान के रेगिस्तानी इलाकों की यात्रा के लिए वहाँ पहुंच रहे थे। जब पालासिंह को इस यात्रा की खबर मिली थी ता वह बन्त ही खुश हुआ था, क्योंकि यात्रा के स्थाना म उसका गांव भी शामिल था। उसके गांव के पास ही एक धार्मिक स्थान था।

गाड़ी स्टेशन पर पहुंची, तो डोल-तागे वजन लगे। पालासिंह को लगा जैसे वह यात्रा पर नहा किसी की बारात म आया था। उमका और उसके साथिया का उल्लास भरा स्वागत किया गया। उसके गांव क मुसलमान मित्र उससे और उसके साथियो से बारा-बारी मिल रहे थे। पालासिंह से हरेक आत्मी गल मिला। इस भीड़ म उसके कितने ही मित्र थे—अल्लारक्वा, मिर्जा अगारफ और राजा जहादाद।

मुना यार अल्लारक्वे तेरा क्या हाल है ?

बस उसका फजल है। तू अपनी मुना।

इस तरह एक-दूसरे से गल मिलत और कितनी ही छोटी मोटी बातें पूछने और सुनाते रहे व मत्र गांव की ओर चल पड।

रेलवे स्टेशन गांव स दस मील की दूरी पर था। पालासिंह ने जीवन म इस दो मान की यात्रा को कई बार पूरा किया था। उस समय जब वह बहुत छोटा था तो अपन साथिया के साथ दिन म दो बार स्टेशन पर जरूर आया जाता करता था। उस छात्र-स स्टेशन पर रांच लाइन की दो गाड़िया तो दिन म जरूर आया करती थी—अप और डाउन। वे गाड़ी आन के पहले ही स्टेशन पर पहुंच जाया करते थे और जब तक गाड़ी स्टेशन से खाना न हो जाती मत्र मुग्ध मे वहा खडे रहते थे।

उस याद था कि एक बार गाड़ी के टिके म कुछ गोरे सिपाही बडे हुए थे। उन सब न जब नीली निगाहा से उन लोगों की आर देखा ता एक गोरे न उह डाट पिलाई थी। इस पर सब हस पडे थे। एक गोरे न सतर और माल्टे के डेरा टिके उन पर भे मारे थे।

जब गाड़ी चलन लगी तो एक गोर ने माल्टा की टोकरी उनकी ओर फेंक दी था। सब न एक एक माल्टा बाट लिया था। खाली टोकरी को आँधा करके अल्लारक्वा ने सिर पर रख लिया था और फिर वह गोरा की नकल उतारता हुआ अकड कर चलन लगा था। उसे याद था, वह खिनखिलाकर कह उठा था टोपी वाले माह्य के क्या बन्त !

माव' पालासिंह ने कहा। उसक मुह से सब शब्द सुनकर अल्लारक्वा उम पर निटावर हा गया। किसे मालूम था कि इस तरह से भी भेंट होगी।

अरे अभागे कुएँ से कुर्घा नही मिल सकता लेकिन इनसान मे इनसान मिल सकता है।

सच कहा तू न, मार ।'

पालासिंह न अपना कुएँ बं बार म पूछा, अपना मना बं बार म पूछा और अपनी हवनी बं बार म पूछा । साग रास्ता इगा तरह बट गया ।

पालासिंह बं मकान म अब कोई महाजर अपना परिवार बस गया था ।

यह तो बहुत अच्छा हुआ हमारा घर ता आबा है ।

और तुम्हारी जमीन भी किसी महाजर बं नाम आटा हा गई है ।'

जमीन उसकी होती है जो उसकी गया करता है, भाग्यो ! अब वह मरी क्या ?

और तुम्हारी हवला म हम आगा न पचायत घर बना लिया है ।'

यह तो और भी अच्छा बिया । आज पालासिंह तुम सबका साथी बन गया है ।

इसम बड़ी खुशी और क्या होगी । पालासिंह न पूछा मरे कुएँ का हान ता मुनामा ।

उम यूँ लगा जस अल्लारकसा कुएँ बं बार म कुछ बहुत-बहुते भिन्नक गया था ।

क्या बात है गिराईमाँ (ग्रामभाई) चुप क्या हो ? चुन कर बहो ।

लेकिन अल्लारकसा बात टाल गया । पालासिंह यात्रिया बं साथ धमस्थान की ओर चल पडा ।

यात्रिया न पूर धम स्थान की अच्छी तरह भाड पाछ की धो धोकर पग का इट्टे चमकाइ और जस जस इट्टे निखरती जाती लगता कि उनकी आत्माएँ किसी अलौकिक प्रकाश से प्रकाशित होती जा रही थी । तीन गिनो तक आद-जीतन चलता रहा और अखण्ड पाठ हाता रहा ।

तीसरे दिन जब यात्रिया का जल्दा लीटन वाला था पालासिंह मुह आंधरे जाग गया । अभी भूटपूटा ही था । वह अपना गाँव की ओर चल पडा । यह वही गाँव था, जहाँ उसने जन्म लिया था जहाँ वह पला था जहाँ वह जवान हुआ था ।

उसके पैरों म नरम नरम रत इस तरह बिछ बिछ जाती थी जस धरती न उसका स्वागत के लिए मखमली कालीन बिछा दिया हा । बहुत दिना बाद उम रत पर चलना बडा भला मालूम हा रहा था । हवा बं भाका म बाजर की बालियाँ भूम रही था । फिर हवा का एक और भाका आया और पालासिंह का अपना सेता की यह गाँव जाना-पहचानी सी लगी ।

अपना गाँव की हरेक गली का वह जानता था हर मोड़ को वह जानता था यहाँ तक कि वह आंधरे म पाँव रखते हा बता सकता था कि इस जगह से कितनी दूरी पर एक गड्ढा है । वहा पहुँचकर पालासिंह का यूँ लगा जस गड्ढा अभी तक भरा नहो गया था वह चलता गया । सरदारो की हवली की पयरीली दीवार उसके साथ-साथ चल रही थी । उस बाद आया कि जरा आग जाकर जहा बाईं ओर मुडती ह पत्थर का एक कोना आग को निकला हुआ ह । अगर वहाँ से आसावधानी से निकला जाए, ता आदमी के हाथ पर टूट सकत है ।

उस जगह पहुँच कर उसने अनजान ही उस पत्थर का स्पग करन के लिए हाथ बढाया । वह बसा-का-बसा आगे की ओर निकता था । वही कोई परिवर्तन नही हुआ था । वही गाँव था, वही गलियाँ थी, सिर्फ वहाँ पालासिंह न था ।

वह अपने आप आग बढ़ता जा रहा था। सरमा और तारामीरा की मिली-जुली गंध में उसने अनुमान लगाया कि वह तेलियों के मुहल्ले से गुजर रहा है। कुछ आगे जाकर चमड़े की सड़ाई ध्यान लगी। उसने समझ लिया कि वह चमारों के घर के पास से जा रहा है। उसने एक लम्बी मास ली। गीली मिट्टी की मोधी-माधी गंध उमक दिमाग तक पहुँच गई। अब कुम्हारा के घर पास आ गए थे। बस अगले मोड़ पर वह अपनी हवेली में पहुँच जाएगा। उसका घर आ जाएगा। उसका कुआँ आ जाएगा।

लेकिन यह क्या? उसके कुएँ पर शम्शान जसा सूनापन क्यों? व भौंभगा और गागरा के स्वर के चंचल अठखेलियाँ आज यहाँ क्यों नहीं? और वह भौंचक्का-सा सीनियों चक्कर अपने कुएँ के पास जा खड़ा हुआ।

उसने देखा कि कुएँ पर कोई लाटा न था। चरखी के साथ हमेशा लिपटी रहने वाला जजीर भी नहीं थी। लोटे की तो खर कोई बात नहीं, लेकिन जजीर के न हान पर उस अचम्भा हुआ। उसने अपने स्वभाव के अनुसार पड़ोस के मकान की दीवार पर निगाह दौड़ाई। यहाँ रस्सी के साथ उनका लोटा हमेशा लटका रहता था। उसने बैम हाँ खोप-खोप लोटा दीवार से उतारकर कुएँ में लटका दिया। चरखी की आवाज एक भयानक चीत्कार के साथ चारों ओर गूँज उठी। निंदियारे वातावरण में यह आवाज बहुत अनोखी भालूम हुई। जिनकी देर में उसने लोटा कुएँ से निकाला, सारा गाँव उसके चारा और इकट्ठा हो चुका था।

“पालासिंह! अरे आ पालासिंह, यह पानी न पीना।

‘क्या?’

‘तुम्हें मालूम नहीं इस पानी में जहर मिला हुआ है।’

‘जहर! यह क्या कह रहे हो?’

खत्री इसमें जहर मिला गए हैं।

पालासिंह को याद आया कि देग के बँटवारे के समय बहुत सी स्त्रियाँ अपना सतीत्व बचाने के लिए इस कुएँ में कूद गई थी। उसे बहुत दुःख हुआ। अमृत आज विष में बदल गया था। वास्तव में अमृत और विष इकट्ठे रहते हैं—जब देवताओं और राक्षसों ने मिलकर अमृत निकालने के लिए समुद्र को मथा था तो अमृत और विष साथ साथ निकले थे।

पालासिंह जोर से चीखा नहीं यह पानी जहर नहीं अमृत है—अमृत। यह सतियज का कुआँ है। हमारे बुजुर्गों ने हम सभी की भलाई के लिए इस कुएँ को खुद वाया था लेकिन तुमने इसे जहर बनाकर बंद करवा दिया। अरे नासमझो यह जहर नहीं यह अमृत है—अमृत। और अरे गाँव वाला के देखते-देखते पालासिंह उस पानी को गटागट पी गया। लोग आश्चर्यचकित पत्थर की मूर्ति बने खड़े थे। उन्हें विश्वास नहीं आ रहा था कि वे कम चौदह वर्षों तक अनजान बने रहे। अपने पास ही अमृत का खोन हाने हुए भी वे कितनी मुसीबतें उठाकर बोसा दूर पानी खने के लिए जाते रहे।



पालासिंह ने सम्मान और श्रद्धा के साथ अपने कुएँ का पानी एक बोतल में भर लिया ।

दिन का जब पालासिंह और उसके साथिया का जल्था बड़ी चारदीवारी वाली हवेली के पास से निकला तो उसकी आँखा में आसूँ छनक रहे थे ।

यह मेरा घर है । यह मेरी जमीन है । यह मेरी हवेली है । यह मेरा कुआँ है । और यह जो कुएँ पर पानी भर रही है मेरे मित्र अल्लारक्खा की बेटी है । अल्लारक्खा की कहाँ खुद मरी अपनी बेटी है, जानी जी । मैं बहुत खुश हूँ । तुम्हें क्या बताऊँ मैं बेहद खुश हूँ ।

‘छोडा भी पालासिंह । जिस गाँव को छोड दिया उसका अब नाम क्या सना ।’

साधु-मगत चली जा रही थी । पालासिंह पल भर के लिए रुका उसने भुक् कर घरती को प्रणाम किया मुट्ठी भर रेत उसने अत्यन्त स्नेह श्रद्धा और सम्मान के साथ कागज में लपेट कर अपनी जेब में रख ली और जोर जोर से शब्द के वही धोल पता घण्टा जल्प से जा मिला

‘जे मिले ताँ मस्तक लाइएँ घूड तेरे चरणों दी ।’

# प्रेम कहानी

प्रमजोतकौर, १९२४

---

प्रमजोतकौर पंजाबी का प्रमुख कवयित्री हैं। सन् १९५७ में उन की कविताओं का एक संग्रह फारसी भाषा में अफगानिस्तान में प्रकाशित हुआ था। अंग्रेजी, रणियन फ्रेंच, इटालियन और रूमानियन आदि भाषाओं में भी उन की कविताओं के अनुवाद प्रकाशित हुए हैं। पंजी नामक कविता-संग्रह पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हो चुका है।

प्रमजोतकौर ने पंजाबी में गीतात्मक तत्त्व में युक्त सुन्दर कहानियाँ लिखी हैं। उन की कहानियों के दो संग्रह 'किरणें' और 'अमन दे ना' शीर्षक से प्रकाशित हुए हैं।

प्रमजोतकौर के पति ब्रिगडियर नरिन्दरपालसिंह भारतीय मना के एक उच्च पदाधिकारी और पंजाबी के प्रमुख उप-यासकार हैं।

---

तुम्हें देखते ही मुझे लगता मानो तुम्हारी आँखों में सप्यार की कुछ किरणें मेरी ओर आ रही हैं। मैंने माडी का पल्ला अपने ऊपर अच्छी तरह लपट लिया जैसे यह मेरा रक्षक हो।

पल्ला खिसक गया था और बाँतों की एक लट मेरे माथ पर फिसल आई थी। मैंने लाएँ हाथ से उसे पीछे भटक लिया।

'हैनो! अमीन मेरा नाम है।

और मेरा बीणा।

तुमने मेरा हाथ दबा लिया और प्रतीसीसी प्रथा के अनुसार हल्के स हाठों को तुमने

छुवाया। मुझे, लगा मानो ऐसा करते हुए तुमन साधारण से अधिक समय लगाया था। मेरी उँगलियाँ म भनभनाहट सी हो गई।

और मेरा दिल धडक रहा था।

शायद तुम्हारा भी धडक रहा होगा।

फिर कितनी ही देर हम उस कोन म खडे बातें करते रह। हमारे आस पास असह्य चोगो की भीड़ थी।

यह भाँकी उस जीवन की है जिसम लोग हाय दबाते हुए मिलते और कितनी कितनी देर तक कुशल-क्षेम पछते रहते हैं। हर रोज पाटियाँ होती हैं जिनम बार बार वही चेहरे दिखाई देते हैं। वही बातें होती है। कुशल-क्षेम पूछी जाती है और सरसरी तौर पर मौसम का जिक्र भी आता है। जाने पहचाने मित्रो की बात छिडती है और बीच बीच म नही कही राजनीतिक हालता की भी बातचीत होती है।

विदेग म एकत्र ऐसे ही अलग अलग देशो के प्रतिनिधि ऐसे ही एक दूसरे क ढग की थाह लेते रहते हैं। और एस ही बार-बार इकट्ठे होते है। लच पाटियाँ काफी पाटियाँ डिनर और डाम पाटियाँ। यह है जिदगी राजदूतावास के कमचारियो की।

ऐसे ही एक दिन हम भी मिले और हमारी आँखो म एक रोगानी फल गई और एक मडिम मडिम सी खुशी में अपन साय पर ले गई। ठाई घटे खडी रहकर भी मैं जरा थकी नही थी। लगता था कि उस खुशी के पत्तो पर मैं उड रही हूँ। रात अथ नीनी अवस्था म बीत गई। दिन चढने पर मैंने बेसब्री से शाम की प्रतीक्षा की। शाम को तुम फिर मिलोगे।

हाँ हम मिल और एक दूसरे को देखकर सजुचित हो गए। ऐम लगा मानो हमारे प्यार का भेद हमारे चेहरो पर लिखा हुआ हो।

हम एक दूसरे से दूर-दूर भीड़ म सो जाने का प्रयत्न करने लगे। पर हमारी आँखें सब कुछ भूलकर एक दूसरे को ही पढ़ती रही और एक दूसरे के अस्तित्व से हमारे दिल धडकते रह।

न प्यार की बात तुमन की न मैंन।

फिर मैंन तुम्ह अपन घर पर बुलाया। पहल औपचारिक ढग से लोगा की तरह और फिर अपना की तरह तुम आए। तुमने मेरे घर की, मेरे व्यवहार की जो भरकर प्रगप्ता की। मेरे बच्चा क भाय तुमने मोह पदा किया। यहाँ तक कि मेरे नौकरा के माप भी तुम्हारी मत्री हा गई।

कभी कभी खाली समय म नाम का तुम हमारे घर आ जान और हम घना तक इकट्ठे बठ रहत। नाम को मन्-मन्-भी रोगानी म मधुर मगीन सुनने रहत या कुछ पढ़ने रहत और या फिर तुम मेरे पति म किसी मन्भीर विषय पर विचार करत रहने।

कम तरह बटना छाणी-छाणी बमननब की बातें करना मुझे बडा अरुदा लगता। तुम्हारी निबन्ता का अहमाम मर भीतर उमाद् भरता रहता और समय विगलता

जाना। तुम्हारे लौटन का समय होता तो मैं हट करनी—  
नहा।”

क्या नहीं?”

खाना खा कर जाना।’

नहीं।

“क्या नहीं?”

घर वाले नाराज हगि।

नहा हाग कह दना यहा आया ‘ना।’

जिन् नहीं करत।’

श्रीर अत म मैं ही जीतती। तुम्हार साग बच्चा वाला हट करना मुझे बडा अच्छा लगना था। जाते-जाते भी कितना समय बीत जाता। दरवाजे के पाम खड़े-खड़े ही आग प्राध घटा बीत जाना श्रीर तुम्हे कोई-न-कोई आवश्यक वान याद आती रहती।

जब जान का ख्याल आता तो तुम मुझ से खफा हो जात—

दखा फिर देर हो गई।’

मैं तो नहीं की।’

मेरी माँ इतजार करती होगी।

“उह मालूम तो है कि तुम यहाँ हो।

पही तो मुसीबत है।

मुसीबत?

दुख।

दुख?

इसमे पहल कि मैं कोई और प्रश्न कर्ँ श्रीर तुम उत्तर दा तुम साइकिल पर पाव रख गत के अंधेरे मे विलीन हो जात। श्रीर मैं साबती कि एक दिन मेरे जीवन मे भी एमे ही अनजाने मे फिमन जाग्रोग। जानती थी कि तुम मरे कोई नहीं मरे इमवतन भी नहीं।

श्रीर हमारे बीच मे बडी दरारें थी बडी खाइयाँ। सोचती-सोचनी मैं अन्दर आ जानी श्रीर अन्दर आकर मुझे उस सर्दी का अहमास होता जिमम मैं बाहर खडी रही था श्रीर मैं काँपने लगती।

पहाडी सर्दिया की शाम। चारा श्रीर जमी हुई मफेद बर्फ मानो सन्ध्या के घन अंधेरे म दूध धाल रही हा। आस पाम ऊँचे-ऊँचे पहाड बर्फ की कामनता मे ढके हुए माना अपनी प्रिया के आलिंगन का रसपान कर रह हो। एम समय म मैं अपनी बठक एक छोट-मे कमरे म ल आती। बड कमरे म वह उप्पलता नहीं आती थी। यह छोटा कमरा मैं बड चाव मे सजानी। दाहरी लिडकिया पर रगीन चित्र। एक वान म मेर पकून लिखन का मेत्र हाता इमरे म बैठने का प्रवच। सर्दिया म जो भी मुझे मिथन आता मैं उस इसी कमर म बटाती। सारा दिन यहाँ पर अगीठी जतती रहती थी।

उस दिन मैंने मन ही मन तुम्हें घात किया। पता नहीं यह मरी घात का आक-  
पण था या तुम्हारे अपने दिल की बचती, तुम सचमुच ही भा गए। धापवाद में मेरी  
आँखें भीग गई।

तुम आँदर भा गए मैं बोल न सकी। बवल उठी और फिर पता नहीं कस मैं  
तुम्हारी बहो में थी।

बीणा बीणा बीणा, तुम धीरे धीरे कह रहे थे। मैं कुछ भी न बट सकी।  
मेरा मुँह मुँह हा गया।

इस आनिगन की कल्पना में अनक बार मैंने चाहा था। इन बीणा के रूप में अनका  
बार मेरे प्राणा को भकभोरा था। गायद तुम्हारे साथ भी एस ही बीती होगी। हमारी  
यह निकटता समझ पाकर गहरी हा गई थी। चाहे एक दूसरे से किसी सम्बन्ध का  
पान हम नहा था।

बीणा बीणा बीणा

तुमने मरी टुड्डी को उठाया और मेरी आँखा में भाँकना चाहा। कमरे की मद-  
सी रंगना में तुम्हारे नक्क कामल और पिघल पिघले से थे।

अमीन !

मैंने तुम्हारे बक्ष में अपना मुँह छिपा लिया। पता नहीं क्यों मरी आँखें बरस पड़ी  
और आँसू अपने आप पलकों पर उतर आए पर मुझे इसका बिल्कुल एहसास नहीं  
था।

तुम्हारी आँखों में एक मस्ती थी। तुमने मेरे आँसू चूम लिए।

पगली !

तुमने मुँह बटा दिया और स्वयं मेरे सामने घुटना के बल बैठ गये।

‘बीणा बीणा तुने यह क्या किया ?’

मैंने ?

‘नहीं, नहीं तुने कुछ नहीं किया। यह मेरा ही कसूर है मेरा ही।’

कसूर ?

‘किसी का भी कसूर नहीं,’ तुमने स्वयं ही कहा ‘शायद ऐसा ही होता था।’

और तुमने अपना मह मरी गोल में छिपा लिया। अब आपकी वारा थी रोने की  
और मरी थी चुप करान की।

तुम पूरा स्त्री हा बीणा सपूरा तुम्हें पाकर भद किसी चीज की इच्छा नहीं कर  
सकता।’

मरे कान अमृत पान कर रहे थे।

तरा स्त्रीव

अमीन !

तुम चुप हा गए। और फिर जितनी दर हम चुपचाप एक दूसरे की ओर देखते  
रहें। हम दुनिया भूत गए। यात था तो कवन अब का क्षण तुमने मरे टुपटटे का चूमा  
भर हाया का

तुम स्वतंत्र नहा हा तुम मेरी नही बन सकती । मैं आजाद नही । मैं तुम्हे अपना बना नहीं सकता ।'

तुम मुझ से नहीं, अपने आप से बातें कर रह थे ।

तुम भी उदास हो गए । मेरी खुशी म तो पहने स हो उदासी घुली हुई थी ।

कभी देवसा था ।

कई प्रकार के भावों के बोझ से मैं भर गई थी । मेरा रग जरूर पीना पट गया था । मेरी टाँगें बजान हा गइ ।

जीवन म अयहीन अतहीन भावों के वेग स अधिक थकान वाला और कौन-सा परियम हो सकता है ।

मुझे ब्याल आ गया कि यदि मैं कभी कुछ समय पहने या कुछ समय वाद चलती या अगर मैं अपने कदम तेज या धीरे उठाती तो गायद मैं ठीक मीके पर इस मांड पर पडूच जाती । पर क्या पता पडूचती भी या नहीं । क्या पता जिस समय मैं एक रास्ते पर भटकता रहती, तुम किसी दूसरे बिल्कुल अनग रास्ते पर भटक रह होत ।

एक पल के लिए एक क्षण के लिए मुझे पूरगता मिली । मुझे लगा मैं पहन कभी जो नहा रही थी । केवल सास लेती रही थी अभी तक । यही क्षण मेरी जिन्दगी का पडकता पन था ।

कैसा दुर्भाग्य था तुम्ह जानना तुम्ह पहचान लेना ।

कैसा सौभाग्य था तुम्ह पाना चाह पल ही पल का था ।

तुमने मुझे बडा दुख दिया है, अभीन पर मेरे सारे मुख और मभी खुशिया तुम्हारी ओर स ही आई है ।

तुम्ह देखन पर मैंन उस जीवन की भाकी देखी है जो शायद मेरा हो सकता था । मेरी राता के अघेरे मे तुम्हारा प्यार बिजली की तरह चमका । मेरी आत्मा की मव अघेरी गुफाएँ जगमगा उठी । मैं प्यार के इस अनुभव के लिए अब तुम्हारी श्रृणी है तुम्हारी देनदार हूँ । तुम्ह मिले बिना शायद मुझे प्यार का अहसास कभी न हाता ।

हाँ प्यार की कल्पना मैंन ऐसा ही की थी । यह अनिद्राकी भीठी पीडा ही तो प्यार है न ।

क्या सच यही प्यार है न ?

नही । नही । नही ।

मैं छटपटानी और तुम्ह पुकारती । प्यार बियाग नही मित्रन है । प्यार पीडा नही गान्ति है

पर हमारी खुशी किसी न चुरा ली थी और हमारी राहा पर पीडा क ढेर उभर आय स ।

हम मित्रते तो थे परन्तु बडे घुट घुट म । तुम मरा हाथ दवात तो थे पर भट ही भटक दल मानो कटिे खुभ गण हा । और मैं कितनी कितनी देर तक उस हाथ म सामायी हुई तुम्हारे स्पग को अपने दूमरे हाथ म र्बानी रहती ।

मैं देखती प्रतीक्षा ही मेरी प्रतीक्षा का उत्तर था ।

तुम धात विह्वल होकर मिलते परतु जाते समय जरूर बचन हो जाते । इसम न मेरा दोष था न तुम्हारा ।

भाग्य मे मैं विश्वास नहीं करती कि इसके प्राण सिर भुकाऊँ ।

मेरे लिए यह एक मच्छाई थी जो घटित हो गई । मैं इसस डरती नहा और न ही भागती । मेरे पति को मेरी इस उत्कठा का पता था । भला एसी बातें भी कभी छिपायी जा सकती हैं । यह असहनीय और असम्भव प्यार जिस का प्रगट करना भी कठिन था और छिपाना तथा खत्म कर देना तो उससे अधिक कठिन था ।

जो पीडा मैं ली उसकी थाह तुम नहीं ले सकते । कोई भी नहीं ले सकता । भला कोई किसी के दिल म उठते तूफानो का अदाजा लगा सकता है ? कवि और चित्रकार भी यथाथ की सुन्दरता और तीव्रता को पहुच नहीं सकते ।

मैंने तुम्हे प्यार किया है करती हूँ और करती रहूँगी । चाहे मैं अपना घर छाड कर तुम्हारे पास नहीं आ गई । चाहे मैंने अपनी जिंदगी के बन हुए प्रबंध को खराब नहीं किया । पर मेरी जिंदगी सदा तुम्हारे लिए तडपती है और मैं रह रह कर पूछती हूँ कि क्या असमूल्य मानव जन्म का यही अन्त है ।

मैं बार-बार उन क्षणा को जीती हूँ जो मैंने तुम्हारे मिलन म बिताए थे । चाहे हमारा मिलन थोडे समय का है पर हमारा प्यार चिरकालीन है । जब स मेरी मुझ म प्रकाश की पहली किरण फूटी मैंने तुम्ह ही प्यार किया है ।

और फिर कई बार मैं इस प्यार पर हस पडती मजाक करती जब तुम बूडे हाग तो अपना पुत्र पोत्रा को मेरी कहानी सुनायागे ?

हमारे प्यार की कहानी तुम कहत ।

क्या कहोग ?

जो हुआ जो बीता ।

और हमनी हँगती मैं रात सगती और मेरी मुम्कराहें निमकिया म बन्य जाता । तुम मुझ चुप करान ।

इकटठे रहने का सपना मैं कभी नहीं देखा था । मैं तुम्हारे साथ यह ज्यान्ती कभी नहा कर सकती थी । मैं जानती थी तुम्हारे सामाजिक बंधन मुझ भी कठोर हैं ।

हम फिर विद्युद गए । बिना अस्विक्य कह तुम्ह कही जाना पड गया । पहन तुम्हार पत्र धान रत । तुम दूर-दूर दगा का बानें मुझ निम्न रत । फिर क पत्र कम हा गए और फिर बत—

मैं जानता हूँ यन् भा जीवन का गति है । यह गति कभा तड और कभी मन् पड जाती है । मुझ इग बान का काई गिला नहा । मैं जानती हूँ मुझ विश्वास है कि तुम्हार सपना की भीना म अब भी मेर प्यार की परादाइ जरूर पडना हागा ।

जिन्ना का काई भा प्यार स्पष्ट नहीं जाना बल्कि भावनाया क मजान का भर पूर कर जाता है ।

भटकना प्रतीक्षा करना दूढ़ना मिलना और विछुा जाना ।

फिर दूढ़ना प्रतीक्षा करना और भटकना ।

जिदगी कभी सम्पूरा नही हो सकती । इस ढांचे म जहा सच्चाई की परछाईयाँ

बकर ही मनुष्य सन्तुष्ट हा जाता है ।

और सच्चाई की परछाईया सदा पडती रहंगी ।

मुझे भरोसा है कि एक दिन मैं तुम्हे मिलूगी और पूछूंगी "क्या तुमन मेरी कहानी अपने बच्चा को सुनाई है ?"



# जन्म-दिवस

सविन्दरसिंह उप्पल, १९२४

---

डा० सविन्दरसिंह उप्पल पंजाबी व प्राध्यापक आनोचक एक बधाकार हैं। हान म ही उन्हें पंजाबी कहानी का विकास विषय पर दिल्ली विश्वविद्यालय स पी एच०डी० की उपाधि प्राप्त हुई है।

उप्पल न अपनी कहानियो म पंजाब व ग्रामीण एक नगर जीवन की विषमताओं का सफल चित्रण किया है। उनके चार सग्रह प्रकाशित हो चुके हैं—बुडी पोठीहार दी बहिदे मुनार भरा भरावा दे तथा 'दुध ते बुध'।

---

ज्योही जुगलप्रसाद का वेतन पाँच रुपये और बच्चा उसन अपने बनिष्ठ पुत्र ज्योति का एक ऐम स्कूल म प्रविष्ट कराने की अपनी चिर आकांक्षा पूरी करनी चाही जो कि आरम्भ से ही अग्रणी की शिक्षा देता हो तथा नवीन शिक्षा पद्धति पर आधारित हो। दूसरी ओर उसकी पत्नी देवकी पति के वेतन की बढ़ोतरी स घर के लिये आवश्यक वस्तुएँ जुटान की आस लगाय बैठी थी। ज्योति को ऐम स्कूल म प्रविष्ट कराने की बात सुनकर देवकी थोड़ी देर तक तो सोच म पड़ी रही पर इस बात को कहे बिना भी उसस न रहा गया—

मैं तो कहती हूँ कि ज्योति को किसी छोटे मोटे स्कूल म भरती करा दो हम पाँच रुपया महीना फीस कहा दे सकते है।

भली मानस ! यही समझ ले कि यह पाँच रुपये बड़े ही नहीं।'

राम राम। ऐसी बात जीभ पर मत लाओ।'

किर ज्योति को नये ढंग स चढ़ने वाले स्कूल म बड़े उत्साह के साथ प्रविष्ट करा

लिया गया। जुगलप्रसाद जहाँ यह चाहता था कि उसका पुत्र अंग्रेजी में प्रवीण हो जाय वहाँ वह इसलिए भी उमरे एम स्कूल में प्रविष्ट करना चाहता था क्योंकि वहाँ प्रत्येक बालक को अपने यत्नित्व के विकास का अवसर प्रदान किया जाता था। कभी कभी वह दफ्तर के समय से कुछ देर पहले घर से चल पड़ता। और एम स्कूल के बाहर बड़ा हाकर देखता कि वहाँ लग हुए सुन्दर पुष्पा के समान बालक साफ-सुथरे एक जैम वस्त्र पहन, ऊँच नीच में परे खिल हूए धीरे धीरे आपस में प्रेमपूर्वक बातें करत और खते तथा गालीगलीच करना ता वे अपनी और अध्यापिकाओं के आदेशानुसार पाप समझत थे। बिना सकोच के वे सबके साथ बात कर लेते, उरसाहपूर्वक और आत्म विश्वास के हाथ व यथावसर बात विचार सकते। कुछ ऐसी ही बातें थी जिनके कारण जुगलप्रसाद की चिर अभिलाषा थी कि वह अपने कनिष्ठ पुत्र को किसी ऐसे ही स्कूल में प्रविष्ट कराए।

इन स्कूलों में पढ़ाने के लिये ता प्रत्येक की इच्छा होती है पर पढ़ा विरला ही सक्ता है क्योंकि इन स्कूलों की मूर्छें दाढ़ी से भी बहुत लम्बी होती हैं—दाखिला, वर्नी खला की फीस खान पीने के पस आदि कुछ ऐसे खर्च थे जिनको दन में साधारण आदमी का कचूमर निकल जाता है। पर जुगलप्रसाद इराद का बड़ा पक्का था, इसलिए उमने इधर उधर में मागमूग कर बड़ी कठिनाई से एकत्र किये गए चालीस रुपये दन के समय तनिक भी चूँ चाँ न थी। लडके को स्कूल में प्रविष्ट कराके वह अधिक प्रसन्न हुआ। आता तो उसके पैर भी धरती पर न पड़ते थे। वह सोचता कि ज्योति ऐसे निखरे और स्वच्छ वातावरण में पढ़कर बहुत योग्य बनेगा। स्वतंत्र भारत का वह ऊँचा और अच्छा अफसर बन सक्ता। उननि के माग पर अगसर हमारे दन को इस समय ऐसे मनुष्यों की बड़ी आवश्यकता है। सारे खानदान और भारत के लिए ज्योति ज्योति बन कर दिया देगा।

ज्योति जहाँ योग्य था वहाँ सुन्दरता में भी वह कम न था। उसकी अध्यापिका उमके स्वच्छ और धुले हुए कपड़ों में चमकत हुए उसके रूप और सुन्दर नाक-नकनो का देखकर उम प्रतिदिन ध्यान किए बिना न रह सक्ती। वह उमका विशेष ध्यान रखती।

मटीन के बात जब परीक्षा हुई तो ज्योति अपने सहपाठियों में हर बात में आग था। उसकी प्रसिध्पन ने रिपाट में प्रसन्नता प्रकट करने के साथ-साथ जुगलप्रसाद को एम योग्य बालक का पिता होने के लिए बधाई लिख भेजी।

अब तो जुगलप्रसाद अपने जसा भाग्यशाली पिता किसी और को समझता ही न था। दफ्तर में वह अपने कई बन्धु साथियों में ज्योति की योग्यता के विषय में बड़ गव से बातें करता और घर में वह दूसरे बच्चा को ज्योति जसा योग्य बनने को प्रेरणा देता था। देवकी को तो कई बार कहना—

मैं कहता था कि ज्योति सारे खानदान का नाम चमका देगा।

यह बात सुनकर उसकी पत्नी देवकी भी अपने मन ही मन में गव करती कि आसिर एमा योग्य पुत्र जन्मा तो मैं ही है।

अभी छ महीने ही बीते थे कि स्कूल में एक चिट्ठी आई। जुगलप्रसाद उम पत्र ही फूला न समाया—

मैंने कहा मुनता हो ज्योति की माँ! यह दखो। और वह ज्योति को उठा कर रमोई घर में ले गया। उसने ज्योति का इतनी वाज्र चूमा जस वह आज चूमन का रिवाज ही ताड़ कर रख देना चाहता है। और ज्योति आश्चर्यचकित होकर पिता के मुँह की ओर देख जा रहा था। मैंने कहा आगिर बात तो बताओ। आगिर बात क्या है जो इतने प्रसन्न हो रहे हो। देवकी भा बात जानकर इस खुशी में गीघ्र ही सम्मिलित हान के लिए उतावली हो रही थी।

चलो कमरे में चलो। यह बात जग आगम में बतलाने वाली है। और जुगल प्रसाद ज्योति को उसी प्रकार उठाये हुए कमरे में आ गया।

देवकी भी बड़ा आनुरता से पति के पीछे पीछे कमरे में आ गई।

जरा चारपाई पर बैठ जाओ। जुगलप्रसाद भुस्कराया और कुर्सी पर बैठ कर आई हुई चिट्ठी को फिर से पढ़ने के लिए ऐनक को नाक के ऊपर जमाने लगा।

एकाध मिनट के लिए वह अग्रजी में लिखी हुई चिट्ठी को फिर पढ़ता रहा जिसमें कि वह अपनी जीवन सगिनी को इस शुभ-समाचार की प्रसन्नता में पूरा रूप से सम्मिलित कर सकें।

‘बतलाओ भी देवकी न मुस्कराने हुए ऐसा कहा मानो और प्रतीक्षा उसके लिए प्रसन्न हो रही थी।

लो मुनो। और फिर उसने ऐनक का उच्चा करके धीरे धीरे देवकी को समझात हुए कहा—

ज्योति की प्रसिद्धि न निखा है कि इस रविवार का प्रातः के प्रसिद्ध मंत्री जवानाप्रसाद का जन्म दिवस यहां की नागरिक-सभा की ओर से मनाया जा रहा है। गहर के कुछ चुने हुए स्कूलों के दान विद्यार्थियों के साथ मंत्री जी इस अवसर पर मिलना पसंद करेंगे। बंजी० कक्षा में हमारे ज्योति को चुना गया है। यह उनकी हार पटनायगा।

यह सुनते ही देवकी ने उठकर ज्योति की अपनी गाद में ले लिया।

यह मरा लान जायगा इतने बड़े मंत्री के पास। बलिहारी इस पर। फिर उसने भुम्बनो की बौद्धार लगा दी मानो अपने पति के द्वारा स्थापित रिवाज का तोड़न का प्रण कर लिया हो। फिर उठाकर ज्योति को छाती से लगा लिया। देवकी का चेहरा उम समय किमा तज्ज्वा के चर में कम नहीं चमक रहा था।

पत्नी को प्रसन्न होना देखकर जुगलप्रसाद भी मद्गद हो गया। ज्योति ने आज उनकी अभिलाषा को साकार कर लिया था। फिर उसने शीघ्र बतलाने का ताकि सम्पूर्ण प्रसन्नता और उत्सव का अंतमुक्ती कर लें।

पत्नी ही शीघ्र खान कर उमने देवकी में कहा ‘अरे हाँ यह तो शुभ बतलाना भूत है कि ज्योति के नियुक्त विद्यार्थी प्रकार के वस्त्र तय कर देने हैं वहाँ पहनकर जान के नियम। फिर ऐनक का ठीक करके चिट्ठी को पढ़ता पढ़ता कहता गया—

“मफे कमीज, मफे नकर, मफेद जुरावें सफे जून और एक मुनहगे हार।”

इन चीजा का नाम मुनते ही देवकी का उल्लाम काफूर हा गया। उमके मुख पर आना हुई प्रसनता वही-की-वही रुक गई और फिर धीर धीर प्रसनता का स्थान चिंता और क्लेश ने ले लिया। उमने एसा अनुभव किया मानो वह उल्लास क महन वो कवल चहर स हा दखकर प्रसन हो गई थी और जसे ही आतुरता के साथ उसने अदर पग रगन क निय प्रयत्न किया कि किसी न अचानक ही उस उल्लाम रूपी महल का द्वार बन्द कर लिया हा।

क्या बात है तुम उदास क्या हो गई हो ?” जुगलप्रसाद को इस प्रसनता की घनी म उमका चहरा तनिक भी अच्छा न लगा।

‘मैं सोचती हूँ कि इन चीजा के निय पसे कहा मे आवेंगे। आज ता महीन की २६ तारीख है और घर म कुल १० १२ आने साग सगी के निय पड हैं। अभी ता पिठन मांग हुए ४० ६० ही नही उतर पाय।

इस कटु सत्य न ता मानो जुगलप्रसाद को भी ऊपर स पटक दिया। वह तो अभी तक उल्लाम के गगन म वास्तव्य के पख नगाकर उठान भर रहा था। इस आत्रयक पत्र की ओर उसका पहल ध्यान न गया था। जस स्वादिष्ठ भोजन जल्दी जल्दी खाते समय दाता क नीचे आ जान म कटी जीभ सम्पूण भोजन का स्वाद मार लेती है कुछ एसी प्रकार की घस्वानी जुगलप्रसाद ने देवकी की कटु सत्य जसी वास्तविकता म अनुभव की। उस अपनी आर्थिक अवस्था क ऊपर खीरु आई जो पग पग पत्र आकर उम का भाग गेक लती थी। फिर उस की यही खीरु क्रौर वनकर देवकी के ऊपर बरस पटी।

वम तुम तो हर समय यहा रोना रोती रहती हो। लोग तो ऐस अवसर्गों क निण तरमत है। और तुम हो कि

‘आप तो वम ही गरम हा रह ह। क्या मैं नही चाहती मर लाल की शान ले ? पर इन चीजा का प्रवध ता करने स ही होगा न। ऐसे धूक मे ता ब नही पकते।

चाह कुछ भी हा, इन चीजा का प्रवध तो करके ही रहूंगा। जुगलप्रसाद ने दृढ़ता क साथ कहा।

अच्छा मैं देखती हूँ कि गुट्टा की गुल्लक म कितने पस है। वह रोएगी ता सही पर मैं उमे वहला लूगी।’ और वह गुल्लक लेने चनी गई।

देवकी के जाने क बाद जुगलप्रसाद न सोचा— मैं तो यो ही बेचारी देवकी पर गुस्सा होने लग जाता हूँ। पर पस की कमी मुझे सन्ध क्रुद्ध कर देती है। यह भी कई जावन है कि यम-पर्म क लिए हाथ सिक्किडना पडे। क्या हम गरीबा का इतना भी परिवार नहा कि हम अपन एक हानहार बच्च की एक छाटी सी प्रसनता को भी खरीन सकें ? और यह अभीर हैं कि हज्जारो रुपये ऐम ही एयागी म बहाते फिरत हैं। हम गरीब लोग तब तक न उठ पायेंगे जब तक हम स्वय प्रयत्न नही करते। अभीर न तो हम उठाएगा और न ही हम उठन दगा।

फिर उमका ध्यान देवकी की ओर गया जो विवाह के समय स ही तगी-तुर्गी क

पाटा में बिसती आ रही थी। अब उसने मन में देवकी के लिए अधिक दया की—  
बेचारी क्या करे? बड़ी कठिनाई में डेढ़ सौ रुपये में पाँच बच्चा का पालन करता है।  
स्त्री वास्तव में कुछ अधिक मयासवादी होती है। घर में बात-बात पर उम्र अधिक  
दृष्टि से अभाव का अनुभव होता है। उसे गिनी चुनी आय में निर्वाह करने के लिए  
सौ उपाय निकालने पड़ते हैं। उस बेचारी को अधिक समय तक घर की चारदीवारी  
के घिरे वायुमण्डल में ही तो रहना पड़ता है। साथ में वह प्रायः कमाती भी सो  
नहीं। एसा विचार आना स्वाभाविक ही है। इस प्रकार के विचारों में उमरे मन में  
देवकी के प्रति अधिक सहानुभूति और दया उत्पन्न कर दी।

‘मैंने कहा गुटी की गुल्लक में साढ़े सात आने निकले हैं और ज्योति की गुल्लक  
में सवा बारह आने।’

जुगलप्रसाद ने देखा कि वह बेचारी यह प्रयत्न कर रही थी कि किसी प्रकार  
मेरा ताल स्कूल वालों की इच्छानुसार तैयार होकर इतवार को जा सके। उसने  
सोचा—स्कूल वालों ने तो अपनी ओर से हमारे बच्चे को मान दिया है। पर वह क्या  
जानें कि यह मान हमारे लिए मुसीबत बन जायेगा। अच्छा कोई बात नहीं। कुछ भी  
हो जाय मेरे बच्चे को इतवार तक यह चीजें मिलनी ही चाहियें। आज बृहस्पतिवार  
है। बीच में दो दिन हैं—गुरु और गनि। कोई बात नहीं। यह साँचकर। वह दृढ़  
विश्वास से बाहर निकल गया जिससे किसी से कुछ रुपये उधार ले सके।

एक घण्टे के बाद जब वह लौटा तो उसकी जेब में एक एक रुपये के तीन नोट  
थे। उसे ये तीन रुपये भी उधार लेने के लिए कितने लोगों के आगे हाथ फलाना पड़ा,  
तब जाकर वह एक एक करके तीन रुपये उधार ले सका था।

घर आकर बजट पर विचार किया गया।

एक फटी सफेद चादर में से इसकी कमीज तो मैं पडोसिन की मशीन में तैयार  
कर लूँगी। हाँ सफेद नेकर का कपडा भी बाजार में लेना पड़ेगा और मिलाने भी  
उमकी दर्जी से करानी पड़ेगी—मुझ नेकर सीना नहीं आता। देवकी ने पति के इन  
पैसे से ही काम चलाने की युक्ति बनात हुए कहा।

देवकी ने गुल्लक में से निरन्वी रेजगारी को लेकर जब वह जाने लगा तो उसने  
देखा कि ज्योति घर पर नहीं था। इधर उधर दूना पर वह कहीं दृष्टिगत न हुआ।  
यद्यपि इस समय थोड़ा थोड़ा अंधेरा हो गया था पर जुगलप्रसाद ने चाहता था कि  
इस काय में विनम्र किया जाय। वह स्वयं ज्योति को ढूँढने चला गया। उसने दगा  
कि बाहर गली में लड़का के माथे ज्योति खेल रहा है। उसको इस प्रकार निर्मित  
देखकर उसने सोचा कि बचपन बादगाहृत होता है उसको अपने बस्त्रों  
का प्रबंध करने की कोई चिन्ता ही नहीं। माँ-बाप स्वयं ही चिन्ता करेंगे।

तबतक का घण्टे बाद जब जुगलप्रसाद और ज्योति घर लौट रहे थे तो दोनों  
के मुँह पर प्रसन्नता का चिह्न था। ज्योति इस लिए प्रसन्न था कि आज उमरे लिए  
नए बूट नई जुराबें और नेकर का कपडा आदि बस्तुएँ खरीनी गई थी। और जुगल  
प्रसाद इस समझा का हन कर लन पर इसलिए प्रसन्न था कि वह अपने हानहार

पुत्र का मंत्री जी के स्वागत के अवसर पर भेज सकेगा। दर्जी को उसने इस बात के लिए ठहरा दिया था कि वह नवर शनिवार को अवश्य ही द दे। वह रास्त में साचता आया—सच कहते हैं एक होनहार पुत्र भी घर को चमका देता है। इतवार के दिन जहाँ और चुने हुए स्कूला के योग्य बालक स्टज पर जाकर मंत्री जी को हार पहनायेंगे उनमें मरा ज्योति भी होगा। जब इसका नाम पुकारा जाएगा ज्योति प्रसाद, लाला लाला जुगलप्रसाद तब वहाँ उपस्थित अम्त्यागतो और मंत्रिया को पता लगेगा कि वह लाला लाला जुगलप्रसाद का है। फिल्म ली जाएगी। समाचार पत्र में इसका नाम आयेगा और हो सकता है कि इसका चित्र भी आवे—यह सोचकर उसकी बाँछें मिन गइ और वह मन-ही-मन इस बात के लिए अपना ही साधुवाद करने लगा कि कम-कम एक अच्छे की ती अच्छे स्कूल में प्रविष्ट कराने की मैं बुद्धिमानी की थी। जो प्रतिष्ठा मरे और चार लड़के लड़कियाँ न मिलकर भी नहीं बढ़ाई वह इस प्रबल ने ही बनाकर दिखा दी है।

पर आते ही जुगलप्रसाद ने देवकी को बुलाया और बहुत मान और उत्साह के साथ उसने उसे बताया—'ज्याति की माँ! मैं नकर का कपड़ा खरीद कर दर्जी को दे आया हूँ और शनिवार के लिए पक्का भी कर आया हूँ। तुम ये बूट जुरावें और हार पल में निकालकर जरा मँभाल कर रख दो और कमीज बल अवश्य बना देना। फिर कुछ और स्मरण कर वह हृष के साथ बोला—'ज्याति की माँ! आज ईश्वर ने एक और काम बना दिया। मैं जब स्थानीय पत्र के दफतर के पास में निकला तो विचार आया कि पता किया जाय कि उस दिन के अवसर पर किसी प्रकार हार पहनाते हुए ज्याति के चित्र का भी प्रबन्ध हो सके। ज्याही मैं दफतर में भीतर गया एक फोटो शफर कमरा लटकाए बाहर आ रहा था। मैंने उसमें बात की ता पता चला कि इतवार वाले समारोह पर वही जा रहा है। मैं उससे भा बात कर आया हूँ कि जब रिपीनक स्कूल का वे० जी० कक्षा का प्रतिनिधि मेरा यह लड़का मंत्री को हार पहनाए तो वह अवश्य ही उसका चित्र खींचे।

देवकी के मुह पर कुछ चिंता के चिह्न देख कर अपनी प्रसन्नता में बिना अंतर दान वह बोले पडा— बाकी रही पसा की बात, फोटो बनने तक पहली तारीख ता हा ही जाएगी भली मानस। ईश्वर आप ही गरीबों के काय करता है हा हा हा।' जुगलप्रसाद सारी की-सारी बात एक सास में ही कह गया और फिर कभी-कभी ऐसे अप्रत्यागित अवसर में पूरा-पूरा लाभ उठाते हुए वह हँस-हँस कर दाहरा हो गया।

देवकी चित्र सम्बन्धी इस पिजूनखर्ची के सम्बन्ध में कुछ कहना तो चाहती थी पर पति के रग में भग पडन के डर से कुछ न बोली और बाहर चली गई।

मुबह लडक और लडकियों को स्कूल और जुगलप्रसाद को दफतर भेजने के बाद देवकी ने एक पुगनी सफेद चादर निकाली। पहल तो उम खूब निरखा परखा। फिर कप्टि-छाँट की और दिन भर मगज पच्ची करके पडोसिन का मशीन पर शाम तक बनी कठिनाई में कमीज तयार कर सकी।

उधर जुगलप्रसाद ने दो घण्टे की सुट्टी ली और नागरिक सभा के कार्यालय में

जाकर प्रयत्न किया कि किसी प्रकार उसका भी निमंत्रण पत्र भिज सक जिमम वह स्वयं अपने नया म अपने प्यारे पुत्र को मान प्राप्त करता दग मके । पर उम जान हुआ कि उस समारोह म तो बड उड राजनीतिज्ञ नना धनवान सरपनि उँके अधिकारी श्रीर कुछ बुलाए गए बच्च ही जा सकत हैं और तब उमन माचा कि मैं ता इनम स किसी गिनती म भा नहीं आता । यचारा मन की उमग मन ही म दगाच कर रह गया ।

इतवार का दिन आया । ज्योति म उमकी माँ बहना भादया और स्वयं जुगल प्रसाद अपने सारे परिवार ने तयार किया । आज सारे परिवार का ज्योति पर मान था जिस कारण सभी जुट हुए थे । कोई उम साधुन मल मन कर नहना रहा था कोई नेकर कमीज का इस्त्री कर रहा था और कोई उमकी कधी पट्टी क काम म जुगल हुआ था ।

मायकान को सारा परिवार इस बात की प्रतीभा म था कि किम समय ज्योति समारोह म वापस आए जिमम वह अपने मुख स सारी रौनक और प्राप्त सम्मान सविस्तार बताय । जुगलप्रसाद दो बार सडक तक स्वयं हाँ जा चुका था । बच्चा को जाकर देखन के लिए भेजने का ता अत ही न था । पर वह अभी तक नहा आया था । अतनोगत्वा उसने दूर म देखा—उसकी प्रिंसिपल स्वयं ज्योति को अपने माथ ला रही थी । यह दृश्य देखकर ता जुगलप्रसाद की प्रसन्नता का माना कोई अन्त ही न रहा । देवकी का ध्यान उस और आकृष्ट करता हुआ वह गद्गद होकर बाला—

आखिर सार स्कूल का याग्य बालक जा हुआ । प्रिंसिपल भी इसके साथ आने म गव समझती है । वह देखा वह बार बार ज्योति की ओर भुक् कर उग अपनी बाहा स खींचती है और बातें करती है ।

देवकी अपने अय बच्चा को भी इस प्रसन्नताजनक दृश्य स आनंद लेन का अवसर देन के विचार स उनको लिबाने के लिए भीतर चनी गई ।

पर पास आते ही जुगलप्रसाद न देखा कि ज्योति सिसकियाँ भर रहा है । यट देखकर जुगलप्रसाद हक्का बक्का रह गया । यह बात उसकी समझ म न आ रही थी । आते ही उसकी प्रिंसिपल न कहना आरम्भ किया— मिस्टर जुगलप्रसाद मुझे खेद है कि आप के सुपुत्र ज्योति को हार पहनान का मान न मिल सका क्याकि सठ लखपतराय न ज्योति क स्थान पर अपने पुत्र का नाम लिखवा लिया था । मने तो उसकी एक न मुनी पर उसन हमारे चैयरमन को कहकर यह काम करवा लिया । आप जानन ही हैं, मैं तो आखिर एक मुलाजिम ही हूँ मुझे एसा हान के कारण बटून ही खेद है ।

ज्योति की प्रिंसिपल यह सब कुछ एक सास म हाँ कह कर चलती बनी जैसे काँडे मुसाफिर आने बात तूफान की मार स बचन के लिए खिसकने का प्रयत्न करता है ।

जुगलप्रसाद पर जम बच्च गिर पडा हो । उमे अपने परो क नीचे स मानो धरती खिसकती हुई प्रतीत हुई । वह वही का-वही खडा रह गया । उसने एमा अनुभव किया जमे किसी मोटी ताद वाले न उसके भीतर पटाल छिड़कने के पश्चात दियासलाई जता

कर उसकी इच्छाया और उमंगो को भस्म कर दिया हो और वह आग की लपट उसके रोम रोम में निकल कर उसको जला रही हो । सहसा उसकी आखा में लहू उतर आया और वह इस प्रकार दृढता के साथ गर्जा—

आज उस मंत्री का जन्म दिन नहा, मेरा जन्म दिन है मेरे साथ हुए साहम और धय का जन्म दिन है । मैं देखूंगा कि अब कोई कसे गरीबो की इच्छाया और उमंग का लताउने का साहस करेगा ।'

बाहर आकर दबकी और उसके साथ बच्चो ने जब ज्योति को सिसकिया भरते और जुगलप्रमाद को जोग और क्रोध में भभकते देखा तो उनके नेत्र खुले क खुले रह गए ।



# बहन की महक

नवतेजसिंह, १९२५

---

मुप्रसिद्ध साहित्यकार स० गुरवर्गसिंह व सुपुत्र और प्रीतनडी व सपत्न्य नवतेजसिंह पंजाबी की नई पीढ़ी व उन लखवा म हैं जिन्होंने पंजाब व बाहर भी बहुत ख्याति अर्जित की है। सन १९५३ म बुखारेस्ट व चौथे विश्व-युवक-सम्मेलन म आयोजित कहानी प्रतियोगिता म नवतेज की कहानी मनु कल दे पिउ (मनुष्य के पिता) को प्रथम पुरस्कार मिला था और तब से उनकी बहुत सी कहानियाँ रूस तथा पूर्वो योरप की भाषाभाषा म अनूदित हुई है।

नवतेजसिंह के प्रकाशित कहानी-संग्रह हैं 'देग वापसी वासमती दी महक' चानण दे बीज।

---

दिल्ली वाली चाची जी का भी क्या घर था।

जीते के गाँव के गुरुद्वारे से भी कहीं बड़ा।

कुछ दिन ही हुए जीता अपने गाँव स आया था। सारी रात गाड़ी छिक् छिक् करता रहती थी। उसके साथ उसकी बीमार माँ आई थी पिताजी और जीजी सोमा आई थी। और इस वक्त पिताजी माँ को दिल्ली के बड़े अस्पताल म ल गए थे।

माँ ने अस्पताल जाते वक्त जीते से कहा था 'रो न मरा बीबा बीर मोमी जीजी तो तेरे पास है। तरे दिल्ली वाले चाचा की मदद स में इस नामुराद बीमारी म जल्दी ही पिंड छुड़ा ल तो मेरा मुह अच्छा हो जाए। फिर मैं अपने लाल का पहन की तरह चूम सकूंगी। और माँ ने कुछ इस तरह जीते का भीचा था कि उसको लगा जमे होठों की जगह माँ इस क्षण बाँहों द्वारा हा उस को चूम गई हो।

फिर मा न एक पाटली सोमा जीजी को दी थी, बटी इसम दो राखिया भी हैं। चाँये बुध को अपने बीर के एक राखी बाँध देना और दूसरी अपने चाचा के लडक के बाँध देना—वह भी तरा भाई है। उम विचारे की अपनी कोई बहन भी नहीं है। और सामिए, मर जीते का ख्याल रखना। यहाँ उसके लिए तू ही मरी जगह है।' जब मा न अपनी जगह बहन को सौंपी तो जीते को लगा था कि काली जैमी वेडील परछाईं मा की तरफ बढ के आई है और उसे दूर घसीट के लिए जा रही है। परछाईं—टूबटू बसी परछाईं जसी कि डगवनी कहानियो म होती है और अपन गाव के गुरु-द्वारे स भी कही बढ घर म जीते के पास सिफ सोमा जीजी ही रह गई थी।

बम तो इस घर म दो कुत्ते भी थे चाची जी भी थी और चाची जी का इकलौता बटा भी था जिमको काका जी कहती थी और कितन ही नौकर-नौकरानिया थी जो काका जी को छोटा साहब कहत थ (चाचा जी तो सवेरे एक बड़ी सारंगे मोटर मे बढकर अपन काम पर चले जात थे)।

सवेरे चाचा जी की मोटर बाहर के बढ फाटक म मे हो कर निकरती थी और उमके बाद फिर दिन भर इतन बढ घर मे कोई मीठी आवाज नहीं सुनाई पडती थी।

चाची जी तो उनम बहुत कम बोलती थी। जा कभी बातता भी तो—

अदर पर पाछ के आ

कुर्सी पर उधम मत भचा '

पानी पीने बक्त एम गट गट मत किया कर '

तुम्हे दीखता नहीं आखें हैं कि टिच बटन

यह को चूल्हा थोड़ी है। यह अंगीठा है '

निरा गवार कही का ।

चाचा जो बढ अच्छे फूलों वाले कपड पहनती थी पर उनकी आवाज म काट ही काट थ।

काका जी (छाटा साहब) जीते का हम उम्र होत हुए भी उसके साथ कभी नहा खतता था। काका जी के पास कितने ही खिलौने थे—एक छोटी सी रेलगाडी अपनी गोन-गान सक्कीर पर ही घूमता थी आगे भोपू बोलता था तो पीछे पीछे बत्तियाँ जलती-बुझती थी एक टोपी बाना बाजीगर चाभी लगाने पर कई करतब दिखाता था दा दो शाशो वाला एक डिब्बा था जिमे आखा म नगान हुए काका जी ने कहा था दूर-दूर तक का भकिर्या इसम एनभन भसनी सी दिखाई देती है और भी कई चाखें। बाजे थ कि जैसे परिया का बस म कर लें। पर काका जी किसी भी चीज को जीते को हाथ नहीं नगान देता था। वह तो जीते के साथ बात भी नहीं करता था। अगर कभी कुछ कहता तो ऐसे हम क्या तुम क्या करता कि कई बार ता जीन की समझ में भी बृछ नहा घाता—

मरे ध्यूमाम्टर को हाथ मत नगाए

यह हमारा टार्मादकिन है हम तुम को छून नहीं देंग '



बाहर म वही काका जी अन्दर आ गया। उनके साथ उसका एक दोस्त था। चाची ने दाना का बड़ा लाड किया, दुलराया। फिर काका जी और उसका दोस्त दाना बाहर बरामदे म खेलन चले गए। काका जी ने सभी खिलौने अपने साथी के सामन र कर दिए ( वही सब खिलौन जिनको जीता हाथ भी नहीं लगा सका )।

जीता भी बरामदे म चला गया। जीता कुछ दर तक अपने उम के दोना लडका को दखता रहा। जीत क दिल म लहरें उठ रही थी काग वह भी तीन पहिण वाली छोटी सी अपने विचारो की साइकिल पर दो चार क्षण सवारी कर सके। और जब वह दाना यार उम टिपे जैसे को आंखा स लगा कर मृतियाँ देखने तो जीता उतक मुह पर पल-पल म चढती खुशी देख-देखकर ललचा उठना। वह अपने आपमें उसके बार म प्रश्न करता था, इस डिब्बे म ऐसा क्या है गाडिया थी ? पहिए थे ? स्वग क बाग थ ? मा का बीमार मुखडा था ?

‘वह लडका कौन है ?’

‘स की मा अस्पताल म है। मामा बोलती थी वह मर जाएगी।’

जीता एक दम चीक पडा।

‘इमको क्या हा गया है ?’

‘कुछ पागन भी है।’

जीता तडप के अन्दर अपनी जीजी सोमा स जा के चिपट गया।

चाची को फिर हो गई, वह गैड के बाहर काका जी को दखने चली गई। वहा काका जी और उसका यार खिलखिला कर हँस रहे थे।

चाची को तसलनी हो गई। वह अन्दर आई पर बड गैव म जीन से कहन लगी ‘गवार वही का। तू न तो मेरा दम ही खाचनिया था। मैं समझी कही काका जी को कुछ हो गया है।’

और फिर कुछ दर बाद ‘मेमा क्या गजब हा गया है जो इतना राए जा रहा है। कुछ मुह मे भी कहगा।’

पर जीता अपनी जीजी स चिपट कर बम रोण ही गया रोए ही गया राता था कि जम कोई आममान फट पडा हो।

रात को जा कर जीता ने अपनी जीजी से वह सब कुछ बताया जा काका जी न अपने यार स कहा था।

भाई-बहन एक ही चारपाई पर लट हुए थे। उन दाना क लिए चाची न एक चारपाई अपने परिवार की चारपाइयो स दूर यहा घास पर डलवा दी थी।

जीने ने जो कुछ कहा वह सुन के सोमा काप गई। सामा की उँगतियाँ अपने बीर क बाला म फिरती रही। फिर मोमा ने अपने आपको भभोडा—मैं ही ता उमके लिए माँ हूँ। न बीर मेरे वह सब भूठ बोलता है। जितना यह भूठ है कि तू उसक चाचा का नौबर है उतना ही भूठ यह भी है कि हमारी मा और सामा न अपने बार को अपनी बाँहो म जकड लिया। बीर के शरीर म दधी दवा सिसकियाँ बहन की सिसकियाँ क गले मिलन लगी।

मरियन, तुम न शर हूँ मातुर् भास्मा क बाव ।

ब्राह्मण नामा जापो ' क्या तुम तब जायागा तब मैं मर जाऊँ ? वह मुझे कुछ नहीं बतलाया मुझे कुछ नहीं बो धारण्यका नही परमा वम तुम बना जाया । ' निगा पाग ?

य प्रो क पाग टरा गरी मुझे पता है मामा ति यर मुभ वन लग करना था पर अब ता उम गता है कि तुम मरी बोवो हा भगवान कगम अब वह मुम्हारी वन अत्रन करता है जाया मैं मर रहा हूँ ।

ताना मुग्ग म भरी घर म बाहर धा गई है । अरे म बढा-बूढी चास्नामय चीर क बीच धा गयी है और गार रही है एक लडकी क मध्यम ।

× × ×

बहुत ही प्यारी थी वह लडकी जिगदा एक गुड न स्कूल म घर और घर म स्कूल जाना सी बन कर दिया था । दल्प सा बहरी धीरे गल म तावीज बाजुधो के डोना पर काल घाग हर किसी स उमत्त सी का सा व्यवहार पर जब भी वह स्कूल जाती चुपचाप उमर पीछे पीछे बन पडता, स्कूल छाड आता, स्कूल स म आता । न टण्णी भाट न ग गगर न बुर इगार कुछ भी तो नही वम चुपचाप उमक पीछे पीछे चउता रहता । वह अपने म मग धर म स्कूल और स्कूल म घर आ जाती ।

× × ×

अब वह एक पत्र के बार म सोच रही थी जीवन का प्रथम पत्र जो उस लडकी को मिला था उमक मँगतर की तरफ स था

तुम्हारे बिना जीवन मूना हा गया है । मैं पड नहीं सकता अगर फेल हा गया तो उसकी जिम्मेदारी तुम पर होगी । क्याकि पुस्तक क पटा पर भी तुम्हारा चहरा उभर आता है ।

एक बात और भी पूछनी है—चूनी तुम्हारे पीछे क्यों लगा रहना है ? तुम उम फन्कारती क्यों नहा ? किसी दिन सिर पट जाएगा देख लना । म यह सहन नहीं कर सकता ।

मैं माता जी को तुम्हारे घर भन रहा हूँ तुम हट रहना नहीं तो मैं जहर खा लूंगा—हो । चूनी क वारे म जहर सोचना ।

तुम्हारा

जगत

× × ×

उस लडकी के दोनो भाई ओम और मनोज बाजार म खडे है छोटे मनोन न चूनी को पीछे से पकड रखा है । बडा ओम उसको मार रहा है इन तीना का धरे चूनी क आदमी खड दात पास रहे है ।

उस्ताद जी, अगर बहो तो दाता को ठिकान लगाने ।

पर चूनी पर मुक्क ऐसे पड रहू थ जैसे रेत का बारी पर पड रहू हा ।

चूनी मार खाता हुआ भी अपने दोस्ता से कह रहा है

'अर, खबरदार अगर बाबू जी को कुछ कहा तो । यह तो हमारी घर की बान है । उनके ऊपर हाथ उठान का हमारा हक नहीं है, गुण हो लेने दो बाबू जी को । उन के पीछे भीरू म खड़ी हुई लड़की सब कुछ देख रही है, सब कुछ मुन रही है । मुहल्ले वाले मामना पुलिम क मुपुद कर देत हैं ।

× × ×

अदानत म मुकदमा चन रहा है वह बमान देकर बट्टर से नीचे उतरती है कि चूनी अपनी जगह पर खड़ा हो जाता है ।

जब साहब अपने एक एक गद ठीक कहा है गुफ है भगवान का इमकी आवाज ता मुनाइ दी दो बप हो गए हैं इसका पीछा करते-करते पर आज पना बना है कि नैसी यह खुद है वसी ही इमकी आवाज है । मंदिर की घण्टिया की तरह बाह । बाह ॥ अब हवानात ता क्या चाह जेलखाने म भेज दो चाह फाँसी लगा दा मरे लिए सब एक जमा ही है । चूनी को हथकड़ी लग जाती है और वह कुछ महीना क लिए जेल भेन दिया जाता है ।

- - × × ×

अब वह भहदी लगाए गीन वाला मुनाबी मूट और लाल चूड़ा पहन माथ पर भूमर लगाए ठुमक ठुमक जगन क साथ बानार से गुजर रही है

चूनी जेन न वापिस आ गया है । अब वह पहन की तरह उमत्त मांड की तरह नहा फिगता । बल्कि साप की तरह सीधा मुहल्ल म प्रवेश करता है । गदन भुजाए हुए दमदमा का हमन्द गरावा का दोम्न जग्नत क समय दूसरा की जहरते पूरी करने वाला चूनी गार है ।

क्याकि अब वह ठेकेदार है गराव के ठेके का, जुए की बटक मे वठा हुआ वह जम गुजरने हुए देख रहा है ।

वह जगत के साथ जा रही है । मामन से मौला पहलवान और उसके साथी आ रहे हैं । समीप पहुंच कर मौना उम कंधे से धक्का म्ता है । वह चक्कर खाते हुए गिर जाती है । जगत उदल कर मौन को गले मे पकड नेता है । मौल क साथी लम्बे-लम्बे चाकू निकाल लते हैं ।

'टहर जाओ र ओ गुण्णा ! आवाज चूनी के ठके की ओर स आ रही थी । उमक हाथ म डण्डा है वह तहमद बाध कर सडक के बीच म आ खड़ा होता है ।

दामाद है मुहल्ल का कुछ ता होगा करा ।

अर जा र नामद मौन न चूनी को कहा तुम्हारे देवन-देवत तुम्हारा वहनाई उम उठाकर ल गया तुम उन मोने को चिडिया की आवाज ही सुनते रह । त्रिकार है तुम्ह हम न तो तुम्ह पहले ही कहा था कि तुम से कुछ नहीं होगा । हमारा रास्ता छोड दा ।

अभा वह अपनी बात पूरी भी नहां कर पायो था कि तुरत एक ताठी मौल की कनाई पर तगी, दूसरी लाठी मोनी को और तीसरी गफी को लगी । तीना चौराह पर घायल बन्नतरा की तरह फफफा रहे थ ।

जाइए वायू जी सोमा का ले जाइए मैं इनस निपटूंगा ।

पर जगत भी झकड़ कर खड़ा हो गया ।

जगत आज शाम से चूनी की बातें कर रहा था ।

× × ×

सोमा चूनी आदमी बुरा नहीं है, सब पूछो तो बहुत ही नेक है तुम्ह पता ही है कि जरूरत के समय हर किसी की सहायता करता है पर रहता बहुत उदास है । मुझे तो सबकुछ उसकी उदासी देखी नही गयी । मैंने उसमें पूछ ही लिया पहलवान जी क्या बात है आजकल आप बहुत उदास रहते हैं ? वह बोला वायू क्या लोगे तुम मेरी उदासी का हान पूछकर ? मजा करो, एग उडाओ ।

पर फिर भी बात क्या है ? मैंने आग्रह किया ।

अजी बात क्या है एक आवाज का जादू है जिसने प्यास जगा दी है प्यास बढ़ती ही जा रही है पता नहीं क्या बनगा मेरा जगत बायू तुम मजा करो मैं तो सब कुछ त्याग दिया है ।

उसने अपनी खास निकाली हुई शराब से मेरा पैग भर दिया था सोमा ! जानती हो वह किस आवाज के जादू की बात कर रहा था ? वह तेरी आवाज का दीवाना है सोमा बस आवाज का बस आदमी बुरा नहीं । तुम्हारे साथ दो बातें कर ले तो उसकी प्यास मिट सकती है और मेरे लिए वह बोटल आ सकती है सोमा ।

बकवास बन्द करो सोमा चीस पड़ी उसका दिल धक धक करने लग गया था । जगत कमे शराब के लिए बेकरार हा अनुरण विनय कर रहा था । जाओ सोमा जाओ तुम्हें कुछ कहने की जरूरत नहीं पड़ेगी वह तुम्हें कुछ नहीं कहेगा, वह सब कुछ समझ जाएगा । जो कुछ तुम्हें दे दे ले आना ।

और मैं देहलीज पार कर आई हूँ जहा से मुहागिना की आँखियाँ निकलती है—पर मुझे उस पर बहुत गुस्सा है जगत को बिल्कुल कोई गम नहीं रह गयी । वह वही है जो चूनी का मेरा पीछा करने के कारण सदा जान स मारने को तयार रहता था । और आज एक बोटल के लिए मुझे उसके पास भेज रहा है । कभी जगत को भी चूनी की तरह मेरी प्यास लगी थी जब मैं उसे मिल गई उसकी प्यास बुझ गई । प्यास मिटने पर मैं उसके लिए एक खाली बोटल बनकर रह गई जिसको जिस ओर तिल न चाहा फेंक दिया—और मैं गिरती गिरती आज इन बिजली की बलियाँ वाल चौक में आ खड़ी हुई हूँ ।

पर जगत थक क्यों गया है ? क्या आज मिचौनी का खेल छू लेने पर समाप्त हो हो जाता है ? क्या प्रतीभा प्यास और पीछा करने का नाम ही प्यार है ? जा प्राप्त हान पर मर जाता है, समाप्त हो जाता है, धुआँ बनकर उड़ जाता है—और उसने वाना म एम ही गन्द गूजते हैं ।

मैं मर रहा हूँ सोमा तुम चली जाओ ।

चूनी के पास ?

हाँ हाँ, चूनी के पास वह मेरा दोस्त है, मैं जानता हूँ कि वह कभी तुम्हें तग





इस देग में विधवाएँ नहीं हैं एक विधवा और सही जगत, एक विधवा और सही  
 उस साच विचार में उसका आँगा में आँसू आ गए ।

पर चूनी बट क्या साच रहा है ? उसने तो मुँह दख लिया है । अगर मैं बात  
 माँग लू तो जगत जीवित रह सकता है पर चूनी ? हो सकता है चूनी ? चूनी  
 मर जाए । उसका विश्वास धाफल हो जाए मरी इस माँग से नहीं नहीं नहीं  
 उसका भ्रम बना ही रह एक चाह बना रह हमारा हमारा ब टिए ।

सोमा गीत ही वापस लोट आई जिस आर चाँदी में जगमगाता चीक है  
 और बतियाँ मुँकरा रही हैं उस मुँकराती ही जा रही है ।

# वेणियाँ

सुखवीर, १९२७

---

सुखवीर पजाबी और हिन्दी में समान रूप से लोकप्रिय हैं। माहर्नमिह अमृताप्रीतम और प्रभजानवीर की तरह वे कवि भी हैं और कहानीकार भी। परन्तु पजाबी में उन्हें कहानीकार में पहल कवि रूप में ही स्वीकार किया जाता है।

गहरी जीवन के आर्थिक संघर्षों में जूझते हुए मध्यम वर्गीय पात्रों का मानवतात्मक चित्रण सुखवीर की कहानियों की विशेषता है। सौ से अधिक कहानियाँ लिख चुके हैं।

प्रकाशित संग्रह—डुवदा चडदा सूरज।

---

स्वप्न छोड़ी हान पर दफ्तर से निकला।

बाहर भागे दौड़ जा रहे अनगिनत लोग बड़ी बड़ी इमारतों वरग शाम और मला आममान जो किमी तन हुए बहुत बड़ तम्बू का तरह लग रहा था।

आज फिर यह शाम बितान का मसला था।

दफ्तर से निकल कर स्वदेश को कभी घर जान की जल्दी नहीं हुई थी। घर का उस आकर्षण नहीं था। घर का एक बड़वा स्वाद था जो हमेशा उसके दिल में घुना रहा।

उसका वैवाहिक जीवन सुख भरा नहीं था।

काफी अरम में उसकी अपना पत्नी से एकसुरता नहीं थी। न ही उनकी पत्नी उसके साथ एकसुर होकर रही थी। छोटी छोटी बातों पर लड़ाई भगडा हा जाता था। मामूली चीजाँ पर अनवन हो जानी थी। और फिर दाना का अन्नग अलग जतना भुनना कुडना।

इस दंग म विधवाएँ नही हैं एक विधवा और सही जगत एक विधवा और सही  
इस सोच विचार स उसकी आखा म आँसू आ गए ।

पर चूनी वह क्या सोच रहा है ? उसने तो मुझे देल दिया है । अगर मैं बोलल  
माग लू तो जगत जीवित रह सकता है पर चूनी ? हो सकता है चूनी ? चूनी  
मर जाए । उमका विश्वास धायन हो जाए मेरी इस माँग स नही नही नही  
उमका भ्रम बना ही रह एक चाह बनी रहे हमगा हमेगा के लिए ।

सोमा गीध्र ही वापस लौट आई जिस और चान्नी स जगमगाता चीक है  
और बतियाँ मुस्करा रही है बस मुस्कराती ही जा रही है ।

# वेणिथॉ

सुखवीर, १९२७

सुखवीर पजाबी और हिन्दी में समान रूप से लोकप्रिय हैं। माहर्नसिंह अमृताप्रीतम और प्रभजोतकौर की तरह वे कवि भी हैं और कहानीकार भी। परन्तु पजाबी में उन्हें कहानीकार से पहले कवि रूप में ही स्वीकार किया जाता है।

गहरी जीवन के आर्थिक संघर्षों में जूझते हुए मध्यम वर्गीय पात्रों का मनावनात्मक चित्रण सुखवीर की कहानियाँ का विशेषता है। सी में अधिक कहानियाँ लिख चुके हैं।

प्रकाशित संग्रह— डुवदा चढदा सूरज ।

स्वदेग छुट्टी हान पर दफतर से निकला ।

बाहर भाग-दौड़ जा रहे अनगिनत लोग बड़ी बड़ी इमारत बरग गाम, और मला आसमान जो किमी तन हुए बहुत बड़े तम्बू का तरह लग रहा था ।

आज फिर यह गाम बिताने का मसला था ।

दफतर से निकल कर स्वदेग को कभी घर जान की जल्दी नहा हुई थी । घर का उस आकर्षण नहीं था । घर का एक बड़वा स्वाद था जो हमेशा उसके दिन में घुला रहा ।

उसका बवाहिक जीवन सुख भरा नहीं था ।

काफी अरम से उसकी अपनी पत्नी से एकसुरता नहीं थी । न ही उसकी पत्नी उसके साथ एकसुर हाकर रही थी । छोटी छटी बाना पर लडाइ भंगडा हा जाता था । मामूनी चीजा पर अनबन हा जाता थी । और फिर दोना का अलग अलग जलना बुनना, बुनना ।



स्वदेश ने फिर कहा, 'नहीं चाहिए। भला किसके लिए लूगा मैं?'

लडकी को कुछ आशा हुई और उसने कहा, 'किसी के लिए भी सही, एक लो। अभी तक एक भी नहीं बिकी। तुम्हारे हाथ स ही बोटनी होनी है।'

स्वदेश ने एक नजर उन बेरिया की ओर देखा। फिर बोमल पलकें उठाकर उस लडकी की ओर देखा—एक मला-सा, मामूम सा चेहरा चमकीली आँखें, गेहुए रंग में किसी लाज की आभा।

लडकी उसकी ओर देख रही थी। उसने पलकें भुका ली।

"लाओ फिर एक दे दो," स्वदेश ने बेरियों की ओर देखते हुए कहा।

लडकी ने एक बरणी उसकी ओर बढ़ाई।

स्वदेश ने जेब में स निकाल कर एक चवनी उमे दी।

छुट्टे पैसे तो नहीं हैं। यह पहनी ही बिकी है।'

स्वदेश ने जेब में फिर हाथ डाला और पैसे निकाले। एक चवनी थी और एक आना।

लडकी देखकर उलभन में पड़ गई। वही बेरणी वापस ही न कर दे।

तभी स्वदेश ने कहा, "लाओ, एक और दे दो। चवनी पूरी हो जाएगी।"

लडकी ने खुश होकर एक और बेरणी उस दे दी।

और जब वह जाने लगी तो स्वदेश ने कहा, "जरा ठहरो। मैं दो क्या करूँगा? एक तुम लो। अपने बाला में लगा लो। और स्वदेश ने हल्का सा मुस्करा कर बरणी उसकी ओर बढ़ाई।

लडकी का चेहरा लाल हो गया। उस पर की सारी मल जैसे उतर गई और स्वदेश को उसकी आँखें बहुत काला लगी और पलकें बहुत लम्बी।

स्वदेश को हैरानी हुई कि यह लडकी जो बचपन और यौवन की दहलीज पर खड़ी हुई खिख रही थी कसे देखते देखते उस दहलीज को लाघ गई थी।

तनी स्वदेश सम्भला और उसने हल्का सा हसकर कहा लो रख लो। मैंने तो यू ही कहा था। अगर बाला में नहीं लगानी तो फिर किमी दिन दे देना। या छुट्टे पैसे मिल जायें तो दुआनी वापस कर जाना।

लडकी ने हीले स बरणी उसके हाथ से ले ली और फिर आहिस्ता आहिस्ता कदम रखती हुई वहा स चला गई।

स्वदेश ने एक क्षण के लिए उम जात हुए देखा और फिर पहल की तरह सामने की इमारत का देखने लगा—उसकी चौथी मजिल पर नीले पर्दे वाली खिडकी को जिसके सामने खड़ी एक औरत अपने भूरे रंग के बालों में कधी कर रही थी।

स्वदेश कुछ देर वहाँ बैठा रहा। फिर उठकर कुछ देर इधर उधर घूमता रहा। उसका लिल नहीं लग रहा था। आखिर उसने घर का रास्ता लिया।

घर पहुँचा तो पत्नी रसोई में थी। वह पत्तिले में जोग जोग में कलछी घुमा रही थी। सारा घर बराबरी आवाज से भरा हुआ था।

स्वदेश चुपचाप अपने कमरे में गया। बपड़ उतारने लगा तो उमे पेट की जेब

स्वप्न का मध्य लीं धारा वा हि वृत्त का कर्त्तव्य ।

स्वप्न हेतु वा हि नेमो पर पत्नी का भयम् विना मायूम मत्ता वा । पर उगरी तया वा हि धर्माः स्वप्न का कर्त्तव्य भी धीर स्त्रिय म ह्यमा विना रहने वाता जहा । विना स्वप्न स्वप्न वा उगरी । वात-वात पर मत् । वात वात पर तिका मत् । दूग्ध म् विनाय कर्त्तव्य वा मत् जहा । वा मत् भी । धीर जव वृत्त जनी मुनी ह्म वात रता हात वा उगरी भते वा मारी मायूमिप्य गावज हा जहा । उग मध्य उगरी भयम् पर कर्त्तव्य पून मत्ता वा वृत्त वा वराम जहा म भय हात ।

स्वप्न वा एव कर्त्तव्य भव शीत म कर्मो वा धर्मात् एव ही रागा विना वा हि वृत्त पतिव प पतिव ममम पर म वाता रता । वा वृत्त मुवत् पर म विरव जात धीर राग हा । पर पर लुब्धा । पर लुब्धन पर टाट भावन धीर पत्नी वा वृत्त-वृत्त वाता वा स्वप्न कर्त्तव्य धीर पुन रता । विर वता दूग्ध ह्यमा विना पर जाता धीर कर्त्तव्य धीर धीर राग तव नीम म त कर्त्तव्य पुनता रता ।

सर्वत्र पर पत्नी ह्य स्वप्न माय रता वा धातु कर्त्तव्य भा दाता नरा मिता मत् काम केव कर्त्तव्य ? ह्य इत्यत्र म धरत धूमन पर ता धरतापन धीर भा वृत्त जात वा ।

वृत्त धर्मात्ता ह्यमा हीन-हीन धरता रता ।

धाय जात वृत्त धीर म एव कर्त्तव्य पर वृत्त गया । उमत् हाप म सुवह्व भी धरतावर् भी । वृत्त उमत् पत्न पद्य पर पत्नी ह्म मवता का विर त धूमन मत्ता ।

गाम वीर नरा रही वा ।

धन धरने याता एव लडका उमते पास धाया 'गरमा गरम बाबू जी उमता स्त्रिय उहा भाह रता वा विर भी उमते एव धान के धन म विर । यह एव एव दाता मूह म ज्ञानता ह्यमा धन धरता रता वा हि वृत्त पालिग करने वाला एव कर्त्तव्य उमत् पास धाया वृत्त पालिग

स्वदेव न इत्यत्र म सिर हिताया ।

पर उम लडक ने विर महा । स्वदेव क दूगरी वार सिर हिताने पर विर वहा । धाविर स्वदेव न सामने की इमारत की धार देते हुए लडके की धार धरन वृत्त वडा दिए ।

पालिग हो धुक्ता ता स्वदेव न वृत्तो की धीर दसा नही । उसी तरह सामने इमारत की धीर देते हुए उमन जय म से एव धाना निवाल कर लडके को दिया धीर वह धरता गया ।

किर कुछ देर के बाद उगके बाना म एव धीर धावाज भाई, "दा-दो माने वेणी लोभ बाबू जी ?"

स्वदेव तव पड गया धीर उमन सिर हिताकर वहा, "नही ।"

पर वह धावाज उसके पास से हटी नही ।

धाविर स्वदेव न मुह फेर कर देता । एक लडकी हाप म धाठ-दस वरियाँ लिए खडी थी धीर उम एव तरस भरे नहज म वेणी खरीदने के लिए वह रही थी ।

स्वदेश न फिर कहा, "नही चाहिए। भला किसके लिए लूगा मैं ?"

लडकी को कुछ आशा हुई और उसने कहा, "किसी व लिए भी सही, एक ले ना। आभा तक एक भी नहीं विकी। तुम्हारे हाथ म ही बोहनी होनी है।"

स्वदेश ने एक नजर उन वेणियो की ओर देखा। फिर बाभल पलकें उठाकर उस लडकी की ओर देखा—एक मला-सा मासूम सा चेहरा चमकीली आँखें गहुए रंग म किसी लाज की आभा।

लडकी उसकी ओर देख रही थी। उसने पलकें भुका ली।

लाओ फिर एक दे दो स्वदेश न वेणियो की ओर देखते हुए कहा।

लडकी न एक वेणी उसकी ओर बढ़ाई।

स्वदेश न जेब मे स निकाल कर एक चवनी उमे दी।

'छुट्टे पैस तो नही हैं। यह पहली ही विकी है।'

स्वदेश ने जेब म फिर हाथ डाला और पस निकाले। एक चवनी थी और एक आना।

लडकी देखकर उलभन म पड गई। कही वेणी वापस ही न कर दे।

तभी स्वदेश न कहा, "लाओ, एक और दे दो। चवनी पूरी हो जाएगी।"

लडकी ने खुग होकर एक और वेणी उस द दी।

और जब वह जाने लगी तो स्वदेश न कहा, "जरा ठहरो। मैं दो क्या कहूँगा ?

एक तुम ल ला। अपन बालो मे लगा लो।" और स्वदेश ने हल्का सा मुस्करा कर वेणी उसकी ओर बढ़ाई।

लडकी का चेहरा लाल हो गया। उस पर की सारी मल जस उतर गई और स्वदेश का उसकी आँखें बहुत बाला लगी और पलकें बहुत लम्बी।

स्वदेश को हैरानी हुई कि यह लडकी जा बचपन और यौवन की दहलीज पर खड़ी हुई निल रही थी वैसे देखते देखते उस दहलीज को लाघ गई थी।

तभी स्वदेश सम्भला और उसन हल्का सा हँसकर कहा "लो रख लो। मैंने तो यू ही कहा था। अगर बाला म नही नगानी तो फिर किसी दिन दे देना। या छुट्टे पसे मिल जायें तो दुआनी वापस कर जाना।

लडकी न हीले से वेणी उसके हाथ म ले ली और फिर आहिस्ता आहिस्ता कदम रखनी हुई वहाँ से चली गई।

स्वदेश न एक क्षण के लिए उम जात हुए देखा और फिर पहले की तरह सामने की इमारत को दखन लगा—उसकी चौधी मजिल पर नीले पने वाली लिडकी को जिसके सामने खड़ी एक औरत अपने भूरे रंग के बालो म कधी कर रही थी।

स्वदेश कुछ देर वहाँ बैठा रहा। फिर उठकर कुछ देर इधर उधर घूमता रहा। उमका निल नही लग रहा था। आखिर उसन घर का रास्ता लिया।

घर पहुचा तो पत्नी रसोई म थी। वह पती न म जोर-जोर से बलछी घुमा रही थी। सारा घर बणवधी आवाज मे भरा हुआ था।

स्वदेश चुपचाप अपने कमरे म गया। बपड उतारने लगा तो उने पेट की जेब



लनी नहीं भूला था। अब तो उसकी यह जस एक भादन हो बन गई थी।

बस तो बेगियाँ बचन वाली और भी लडकियाँ वहाँ हानी पर स्वदेश हमारा उसी लडकी से बेगी तरीकना जिसन उग पहल दिन थी। हर बार एक जगह स गरी-दन पर चीज अच्छी मिलती है। तभी तो वह लडकी स्वदेश का हर बार मन स बन्दिया बेगी दिया करती थी—चमली की सकेन मोतिया जसी बलिया की बगी, जा रात ही रात स गिनकर सुबह फूल बन जाती था।

स्वदेश को लगता था कि बेगियाँ बचने वाली लडकी भी खिलबर फून बन गई थी। मौवन की दहलीज पर खडा बचपन कम देखन रखन दहलीज लाघ जाता है, पता ही नहीं लगता।

स्वदेश इम लडकी को दखता था तो उसन तिन म एक अजीब सी बरुणा जागती थी। इन लोगों की किस्मत ! यह इसी तरह बगियाँ बेचते-बेचते बूढ़ी हो जाएगी, गादी हो जायेगी (शायद हो ही चुकी हो) बचव हा जाएंगे बूढ़ी हो जाएगी।

एक दिन स्वदेश चौक म बठा सामने की इमारत को दाख रहा था कि बेगियाँ बेचने वाली लडकी आई। स्वदेश ने रोज की तरह जब म स दुमनी निकालकर उसकी ओर बटाई और उसके हाथ स बेगी ले ली। पसे लेकर लडका एक क्षण बहा रुकी रही। स्वदेश ने देखा, उमक चहर पर एक सकोच था। वह जैसे कुछ कहना चाह रही थी।

स्वदेश न उसकी भिभक दूर करन के लिए पूछा, 'कितनी बिक गई अब तक ? लडकी न बहा "चार बिक गई है। अभी ही आई हूँ। आजकल तो बहुत जल्दी सभी बिक जाता है।

अच्छा।

तुम्हारे हाथ मे बोहनी होने पर देखने देखते सभी बिक जाती है।

"फिर तो सबसे पहले मरे पास ही बेचा करो, स्वदेश ने हल्का हस कर कहा।

तुम तो अभी अभी बहुत दर स आत हो, लडकी के तहज म एक हल्की सी शिकायत थी।

स्वदेश आग म चुप रहा। फिर उमने पूछा, "तुम वहाँ रहती हा ?

लडकी ने अपन रहन का ठिकाना बताया और कहा, "वहाँ हमारी छोटी-सी भापडी है। अपना दादी के साथ रहती हूँ। उमे आँखा से दिखता नहीं। पर वह बगियाँ बहुत सुन्दर गूथ लेता है। हमारी भीपडी के सामने दो चमेना क पौधे हैं।"

'दो ही ?' स्वदेश ने कहा। 'उमसे तनी बगियाँ के लिए फून उतर आते है।

"नहीं" लडकी ने कहा 'फून तो हम बहुत करके बाजार मे लत है। हमारे पौधा से ता मुक्किल स एक या दो बेगियाँ क ही फून उतरत है। जा बेगी में तुमको दता हूँ वह हमार पौधा की बनिया की हा हाती है।

स्वदेश न तारीफी सहजे म बहा 'अच्छा' खूब मोटी बनियाँ हानी है उनकी।

लडकी का चहरा खिल उठा।

'वह मैं अपन हाथ स ही गूथती हूँ लडकी ने हल्की-सी लान स बहा।

“अच्छा” स्वदेश के मुह से मिफ इतना ही निकला ।

लडकी के चेहरे पर फिर पहले जसा सकोच था । वह एक क्षण चुप रही । फिर पूछा, ‘तुम रोज बेणी खरीदते हो, इसका क्या करते हो?’

स्वदेश मुस्कराया । वह कुछ कहने को हुआ पर फिर चुप हो गया ।

लडकी फिर कुछ न बोली । उसके चेहरे पर एक लालिमा दौड़ गई । स्वदेश हल्का सा मुस्कराता हुआ चुप रहा । आखिर लडकी ने कहा, ‘अच्छा, मैं जाती हूँ ।’

स्वदेश ने कहा “अच्छा ।

लडकी एक क्षण और बहा खड़ी रही और फिर धीमे धीमे कदम उठाती वहाँ से चली गई ।

स्वदेश समुद्र के थिरकते हुए प्रसार को देखने लगा जिस पर सूर्य की किरणों से बनी लम्बी सुनहरी सड़क को एक छोटी सी कस्ती पार कर क आग निकल गई । कस्ती दूर चली गई तो उसका पान एक छोटा-सा सफेद बिन्दु दोखने लगा । फिर वह बिन्दु जामुनी रंग क आसमान के सामने गायब हो गया ।

अब स्वदेश की अधिकतर शामें घर में ही बीतन लगी थी । दाम्स्त गिकायत भी करते थे कि अब वह बहुत कम मिलता था, पर खुश भी थे कि उस का घरेलू जीवन सुखद बन गया था । अब वह फिर दोस्तों को घर बुलाता पत्नी के साथ उनके घर जाता । कभी वह दोस्तों को दाना निक आजाज में कहता, ‘बिवाहित जीवन एक गाडी है जिसके पहियों को ठीक रास्त पर चलना चाहिए । बस रास्ता छोड़ा नहीं कि गाडी हिचकोले खाने लगती है । बस गाडी का ठीक रास्ते पर चलना ज्यादातर औरत के बस में है ।’

एक दिन स्वदेश ने पत्नी के साथ सिनेमा देखने का प्रोग्राम बनाया । उसकी पत्नी शाम का उसका दपतर में पहुच गई । वहाँ से क सिनेमा देखने चल पडे । सिनेमा देखकर आए तो आधेरा हो चुका था । पत्नी ने कहा, ‘एक चक्कर समुद्र का न लगा आए । बहुत देर के बाद आई हूँ इधर ।’

स्वदेश उसके साथ समुद्र की ओर चल पडा ।

समुद्र पर धूमते हुए सामने वेणियों वाली लडकी दिखी । वह उनकी तरफ ही आ रही थी । उसके हाथ में एक ही बेणी थी । कलिया की बजाए वह फूलों की बनी हुई थी । साधारण सी बेणी थी वह ।

उसके पास आन पर स्वदेश ने पत्नी में कहा, ‘लो आज बेणी लना तो भूल ही गया था । एक ही रह गई है । जैसे हमार लिए ही बची हो । मैं हमेना इसी से लिया करता हूँ । मेरे लिए खास तौर पर मोटी मोटी कलियों की बना कर लाती हूँ ।’

पत्नी ने तीखा नजर से उस लडकी की तरफ देखा । लडकी उसके सामने आसों न उठा सकी ।

स्वदेश ने बेणी लेने के लिए लडकी की ओर हाथ बढ़ाया । पर लडकी ने हाथ में की बेणी देन की बजाए अपनी साडी के आंचल का गाँठ खोली और उसमें से एक बेणी निकाली—मोटी मोटी कलियों की बहुत बढ़िया बेणी । जसी रोज स्वदेश लेकर

जाया करता था।

स्वप्न का भट्टा तिन उठा। पर पता अभी भी तीगा नजर न सका का मग  
रही थी।

भ्रातृत्व स्वप्न का उतकी धार ध्यान गया। घाट दग क्या हा गया है ?  
किर उतान लडकी की धोर देगा। एक मिता हुमा पून जग बग हा गया था।  
एक उतास मीना चहगा।

स्वप्न न उताक हाथ स बणी स ली धोर जेव म ग दुमनी निवालकर उमकी धोर  
बढ़ाई। पर लडकी ने दुमनी नहा ली धोर उतास आताड म धीम ग बहा, 'पिछनी  
घार की दुमनी देनी रहती है। टिगाव पूग हो गया। धोर उनी समय वह वहाँ ग  
एक तरफ का चल पडी। उताकी चाल मनुत मनी हुई लग रहा थी। स्वप्न उम बुध  
देर एकटक दगता रहा।

पत्नी ने बही सड-सडे ही जूडे पर बणी बांधकर स्वप्न को टिगाते हुए का  
देखो ता ठीक बांधी है ?'

'बिल्कुल। आज के जूडे पर ता बहुत मुत्तर लग रही है।

मुत्तर चीर हर जगह मुदर लगती है' पत्नी ने जरा चबलता न बहा।  
पर स्वप्न के हाठा पर मुस्कराहट न धाई।

और जब व वहाँ से घर जाने के लिए चल ता स्वप्न की धपनी चाल म एक  
अजीब-सी धकावट महसूस हुई। उसका दिल बाहा कि वही किसी बच पर बठ जाए।  
पर वह बठा नहीं। बोमल बदम उठाता हुमा चनता रहा, चलता रहा।

# आंधी और मगरमच्छ

अमरसिंह, १९२८

अपने पहले कहानी संग्रह कवरपुट्ट के प्रकाशन से अमरसिंह को पंजाबी में बहुत स्याति मिली। आज पंजाबी में उनका इस संग्रह का नाम उनके नाम के साथ जुड़ कर नाम का एक अंग बन गया है।

अमरसिंह प्रगतिशील दृष्टिकोण के लेखक हैं। कवर पुट्ट तलाश समाद दी जड़ दादे आदि कहानियाँ पंजाबी में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुकी हैं।

अमरसिंह के दो कहानी संग्रह प्रकाशित हैं। 'कवरपुट्ट' और 'सिप्य ते सागर'।

वह प्लेटफॉर्म पर खड़ा था। गाड़ी खाली हो चुकी थी। प्लेटफॉर्म पिछनी और मैं एस खानी हुए जा रहा था। जम आंधी का भाका घाम फूम धून को धकेले जा रहा था। लाग अपना अपना अमनाव सँभाले विक्टोरिया टर्मिनस की गुम्बद वाली जैची छत के विंगल दालान में एस विनीन होने जा रहे थे जस धी-धी-धी एक विंगलकाय दस जसा मगरमच्छ का मुख हो जो सब कुछ निगलता जा रहा हो।

उमन पीछे मुड़कर देखा। लम्बे प्लेटफॉर्म गाड़ों के स्तम्भों में जकड़ हुए खड़े थे। स्तम्भों पर अनुमिनियम का पालिंग इजन के धुएँ में मैंसे दाता की तरह मटमेला आया पला था। मिर पर ऐसे ही गाड़ों की कँचियाँ पर जस्ती चान्दों की छत थी। उम एस अनुभव हुआ कि वह एक दैत्याकार मगरमच्छ के नन्वोतर मुस के भीतर उमके दाना जबड़ा के बीच घिरा हुआ खड़ा है।

मगरमच्छ भूला है। वह जार-जार में साँस खींच रहा है। पिछनी आर स आंधी

का परीक्षा उम मगरमच्छ की घोर धरत जा रहा है। मगरमच्छ क पट म नरक का घाग धधक रही है जिसम उमका दगोर विपन जाण्णा जन जाण्णा। उमकी हट्टियाँ तन विपन जाण्णी घोर यः घोर यः

उम धरत पट म जनतो हूई घाग का अनुभन हुआ। उसका जो चाहा भाग कर मगरमच्छ क तरा म बाहर निकन जाण पर गाडा निरतन मनी था। उमका टाँगें काँपन गयो। यह पाग क एव यच पर बठ गया। नरक म भयक रन घाग का गरमी उमका बुगी तरत भुनग रही था।

तेगा ही अनुभन उम घाज म मरह न्ति पहन भा हुआ था। उमने मगरमच्छ क रकिनम गुना जगडा न भाग जान की चोपन का था घोर भाग कर बाहर भी निकन गया था पर मगरमच्छ की गाँग क गिचाव पर पिछनी घार स घान वाली घायी क भागे न उम धरत कर पुा मगरमच्छ क नम्बाने मुग म ना फँका था।

उम चकरत आ गया। उमन दाना हाथा म अनता मिर धाम निया।

एम क्या है। लना है तो ला नहा ता राती पीनी बूम नहा मारो। उमन मिर उटा कर दना। एक राजस्थानी प्रामीण रहडी बाल से अनन बच्च का बना खरीन कर द रहा था। रहडी बाला जा बना द रहा था यह ग्राहक का पसंद नही था। ग्राहक दूसरा बला लना चाहता था और रहनी वाला खीक गया था।

य बमा दुबानगर है ।

उस रहडी बाल पर क्राध भी आया और दया भी।

ग्राहक क साथ एम पन आया जाता है। यह तो सल्लमैनगिप के विरुद्ध है।

सल्लमैनगिप एक बला है जो बपों के परिश्रम के बाद आती है। उसन स्वय यह हुनर बपों क श्रम अध्ययन और अनयक प्रमलो काम के बाद सीखा था। उसनी अपनी कम्पनी म दजनो सेल्लमैन थे पर मालिको की नजर म वह सबसे बढिया था।

यहाँ तक ही बस नही। वह उत्तरी भारत म अपनी लाइन का सवम अधिक माहिर सल्लमैन गिना जाता था। गत कई बरसो म कम्पनी न कई नए सल्लमैना का उसक मातहत प्रशिक्षण म दिया था और कुछ दिन उसस शिगा प्राप्त करन क बाद वह उच्च दर्जे के सेल्लमैन बन गए थे।

क्या शान थी उस जमाने म। जिस दुकान पर वह एक वार भी चला जाता आडर लिए विना वापस न लौटता। जब कभा कम्पनी यह महसूस करती कि उसक किसी एजेण्ट को किसी खास पार्टी से आगा स कम रकम का आडर मिला है ता भट उस उम पार्टी की और भेजा जाता और वह यदि आडर तिगुना नही ता दुगुना तो अवश्य करवा लाता। उसकी सफलता का राज यह था कि वह हर ग्राहक स बन्त-ही मधुरता और विनम्रता स पेश आता था।

उमन आठ-नौ बप उस कम्पनी म काम किया था। दिन प्रतिदिन उसके काम म वृद्धि ही हाती गई थी और साथ ही साथ उसकी आमदनी म भी। उन दिना जीवन खूब मज स चलता था। मिर पर कोई खास बोभ न था। एक बूनी माँ थी। आधा बेतन वह अपनी मा को रता था ताकि उसके विवाह के लिए काफी पूजी जमा कर

ले ।

उसके बड़े भाई ने भी इसी तरह किया था । माँ ने उसका विवाह उमरे जमा किये हुए रुपये से कर दिया था और वह दोनो मियाँ बीबी अपने दोना बच्चों के साथ आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे थे ।

भारत विभाजन के समय, उसकी कम्पनी पसादा का शिकार हो गई । उसका अपना घर-बार और सब कुछ पहले ही उधर रह गया था । अब भारत में आकर कम्पनी के फेर हा जा के कारण नौकरी भी हाथ से चली गई । जरा शक्ति हुई, तो उसने अपनी ही लाइन में काम करने वाली तीन चार पार्टियों के पाम नौकरिया की, पर वह सब की सब एक के बाद दूसरी बन्द होती गइ ।

देश का आर्थिक ढांचा दिन प्रतिदिन बिगड़ता जा रहा था । उसका भाई भी बुरी तरह मर्दे का शिकार था । गत तीन चार वर्षों से तो यह अवस्था थी कि कभी वह स्वयं बंकर और कभी उसका भाई और कभी दोनो ही बंकर । इस दशा में भतीजे-भतीजियों की हालत देख कर उसके दिल पर छुरिया चलन लगती । वह साचता—यदि उसे एक बार भी कोई मजबूत पार्टी मिल जाए तो वह कुछ दिनों में ही अपनी योग्यता के जौहर दिखा कर अपनी पहले जसी स्थिति नए मिरे से प्राप्त कर सकता था पर न जाने क्या हो गया था । सबकी हालत आवाडोल ही नजर आती थी । कोई भी पार्टी मजबूती से खड़ी हुई दिखाई नहीं देती थी ।

पेपर यूज पपर, आज का ताजा अखबार ।

उसने सिर उठा कर देखा । अखबार वाता अखबार बेच रहा था । उसका जी चाहा कि आवाज द कर अखबार खरीद ले । उसका हाथ अपनी जेब में गया और आवाज उसके कण्ठ में ही घुट कर भर गई ।

अखबार अखबार कितने काम की चीज है । मुझे अखबार हर रोज देखना चाहिए । कम-से-कम रिक्त स्थान का कालम । निलनी में अपनी बंकारी के दौरान अखबार हर रोज देख लिया करता था । इसी के द्वारा तो मुझे कलकत्ता का नौकरी मिली थी

एक दिन म्यूनिसिपल रीडिंग रूम में समाचार पत्र देखते-देखते उसे कलकत्ता की एक फर्म का विनापन नजर आया था । वह फर्म उसी लाइन में काम करती थी जिसका वह माहिर था । उह एक सल्समैन की आवश्यकता थी । उसने सोचा—यदि इन फर्म में नौकरी मिल जाए तो मैं फिर एक बार अपनी योग्यता के करिश्मे दिखा कर अपनी आर्थिक दंगा ठीक करूँ । सो बहा भट एक अरजी भेज दी और साथ ही अपना रिक्वाड और सर्टिफिकेट भी । उसकी खुशा की कोई हद न रही जब कम्पनी ने उसे इन्टरव्यू के लिए बुला लिया और साथ ही सफर खर्च के लिए एक चेक भी भेज दिया ।

कलकत्ता पहुंचने पर कम्पनी ने उसे मध्यभारत मध्यप्रदेश और बम्बई राज्य के लिए सल्समैन नियुक्त कर दिया पर साथ ही उन्होंने गारण्टी मांगी कि वह कम-से-कम कितना बिजनेस प्राप्त करके उह दे सकेगा ।

एस लाइन पर उसने पहल भी कई दूर लगाए थे और एक दूर म दस-दस लाख का रिजर्जन प्राप्त किया था । सो उसने बड़े गव स आश्वासन दिया कि वह कम-से कम एक लाख का विजनेस तो उन्हें अवश्य देगा और कम्पनी ने परीक्षा के तौर पर उस दूर पर भज दिया ।

पास स ही किसी गधे ने हाँक लगाई । उसा चौक कर देखा यह गधे की नहा नए अमेरिकन इजन की आवाज थी । इजन खानी गाडी का गेड म से जा रहा था ।

गाडी गुजर गई और सामने प्लेटफाम का दृश्य उसकी आँखों के सामने खोलती गई । सामने प्लेटफाम पर ह्लाइटवेज धाकी बुल एण्ड कम्पनी नानू भाई गटकाटिया क बड़े बड़ शो वाक्स बड़-बड़े चमकदार शीशों के भीतर से नाना प्रकार क रग विरग कपड़ों का प्रदर्शन कर रहे थे । प्लास्टर की मुदर परी चेहरा पूरे बंद की रगीत मूर्तियाँ विभिन्न रगा की रेशमी और जरीदार साडिया म लिपटी और जडाऊ गहना से सुसज्जित हर दशक को आकर्षित करके उसके दिल म बरबस शोक जगा रही थी । किसका जी न चाहेगा ऐस मुदर कपड़े पहनने को ऐस गहने पहनने को । स्वयं उम एक स्टण्ड पर फने हुए कश्मीरे का टुकडा बेहू पसंद आया था । इस डिजाइन का सूट उमके शरीर पर कितना जखेगा ।

किसी गट करते इजन की तेज हैड लाइट शो-वाक्स के शीशे पर पडी और वहाँ से पलट कर उसकी आँखों म चकाचौंध पन कर गई । उसकी आँखें शो वाक्स की ओर देखन की ताब न ला सकी और अपने आप भट दूसरी ओर देखन ग्या ।

गो-बाक्स के इए गिद अधनगन कोकनी मजदूर मली कुचली एक सी घातिया स अपनी नगनता ढाँकन का असफल यत्न करती हुई घाटिनी और महाराष्ट्रिने गुजराता और राजस्थानी ग्रामीण और किसान इन वाक्सा स निराग हूइ व परवाह नजरा म ऊँपन टूए पसँजर गाडी की प्रतीक्षा कर रहे थे । किसी की भटकी हुई दृष्टि अचानक ही कभी कभी गो-बाक्स पर पडती किन्तु दूसरे ही क्षण चौधिया कर वापस लौट आती । गा वाग्ना का आकषण किसी प्रकार भी किसी की बपरवाही और आत्मनयम स दबन वाला नहीं था । बार-बार वह नजरा का अपनी आर आकर्षित करत थ और उनम रखी हुई हर चीज एक मूक स्वर म विनती कर रही थी—

मुझे ने लो ।

मुझे ले लो !— यह गो-बाक्स भी एक दूसरे ढग म गल्गमँनशिप की बजा का ही प्रमाण है—कितना मुदर और मनमाहक । पर यह आत्मपाम यठ नाम एम कपड क्या नहा पहनत ? उनके बदन पर व पन टूए कपड क्या हैं ? क्या उह फ-गुराने म न-कुचन कपडा के गाय बाद स्वाम प्यार है ? हैं यह क्या प्रान मर मन म उपन हा गया है ? यह मर कपड जो पन पर आ गा है क्या मुझे इन म प्यार है ?

वह बू वह ।

उमन वाइ और मिर घुमा कर देखा । गाजर व स्नग्म म टक लगाए एक महा

राष्ट्रिय बच्चे को दूध पिना रही थी। मा की छाती मुह मे छूट जान से बच्चा चिल्ला उठा था। मां न छाती पुन बच्चे के मुह म द दी। बच्चा चुप हो गया।

उसकी दृष्टि औरत के गिर के ऊपर स्तम्भ से लग ब्राडवरी मिल के रगीन पास्टर न आकृष्ट की और नीचे किसी राजस्थानी राजकुमारी की पालकी जा रही थी। राजकुमारी के पीछे कई बादिया भिन भिन रग की गोख और सुंदर पागाके पहन चली जा रही थी।

बच्चा एकदम पुन चिल्ला उठा। उसकी दृष्टि पुन उस मराठी औरत की आग चरी गई। औरत की मद्धम हर रग की साडी पर मद्धम लाल और कागनी रग के पवद लग हुए थे। कुम्हनाए हुए स लाल टापट के कुत्ते की एक बाह नीली मारकीन की थी और दूसरी फूनदार लिनन की दोनो बगलो म धागीदार गुमटी के भिन-भिन रगो क टुकडे छिप हुए थे। न जान यह कुत्ते कितन कर्तो के स्वगवास हो जान क बाद उनकी हडिडया स तयार की गई होगी। ए मलाकमी आफ कनर तो यह औरत भी ता एक जीनी जागती विज्ञापन थी।

विज्ञापन यह भी सरसमनशिप का ही एक तरीका है। विज्ञानेस की कला न कितनी उनति कर ली है। यह कला कितनी जटिल और विविध हो गई है। इसकी कितनी ही शाखाएँ निकल आई हैं। हरेक शाखा अलग एक हुनर के रूप म कितनी विज्ञान और उनन हा चुकी है कि हरेक शाखा के अपन अपने खाम माहिर और विज्ञे-पन पदा हो गए हैं।

विज्ञापन ग्राहक की नजर को अपील करन का हुनर है। इसके अपन खास माहिर है। मेरी अपनी अलग शाखा है कनवसिंग ग्राहक को आवाज से, वाता म अपील करन का हुनर। मैं अपने इस हुनर का माहिर हू।

माहिर । क्या मैं सचमुच माहिर हू ? हा। ता फिर मेरी नोकरी क्या छूट गई ? मैंन बम्बई तक पहुचते पहुचते एक लाख का विज्ञानेस देने का वायदा किया था। किन्तु सारा वादा क दूर और तीन सप्ताह बम्बई म लगान और एक एक दुकान के कई-कई षक्कर काटने के बाद भी कुन सनह हजार का विज्ञानम नहीं मिला था। इमालिए कम्पनी न अपना गत के अनुसार बम्बई से ही मुझ तवाव द दिया था। सत्रह हजार क कमागन म ता सफर का खच भी नहीं निकन सकता था। फिर म माहिर किस तरह का हुआ ?

नहीं नहीं मैं माहिर हू। मैंन इसी बम्बई स एक एक दूर म दम-दम लाख का विज्ञानम किया है इस बार यदि विज्ञानम नहा मिला तो इसम मरा क्या दाप ? आज-कन मार्केट हा नहीं रही। यह मेरा ही राय ता नहीं। यहाँ बम्बई म ही मुझ क परि-चित सलमन मिल हैं। उन सब की यही राय थी। उनकी दगा भी खगव थी। उनम म कइ तो मरी ही तरह बकार थे। वे सब यही कहन थे आजकल मार्केट नना रहा। तो क्या इमका अर्थ यह है कि मार्केट बिना एक सेम्समन एक माहिर विनकुन तूप हाकर रह जाता है ? क्या मार्केट ही उसही महारत का मापदण्ड है ? हाँ। ता फिर कम्पनी इम बात का क्या नहीं समझती। उनने मुझे हा क्या निक्कमा ममभा ? उसन



मार्केट का क्याल क्या न किया ? ठीक है मैं तो आज तक नहीं किया था, किन्तु यह मार्केट को ही क्या गया है ?

मार्केट मार्केट । यह मार्केट है क्या चीज ? यह इतने से लोग है लावो हा करोडो ही । बम्बई क्या हिन्दुस्तान भरा हुआ है इन स । क्या इनको इन मव चीजो की जहरत नहीं ? इनको तन साबुन बतत क्राकरी, मुनियारी फर्नीचर और दूसरी नित्य उपयाग की वस्तुघा की जरूरत नहा ? इन सामने बडे लोगो को बपड नहीं चाहिए ? इस औरत को नई साडी की इच्छा नहीं ? इसने नगे घडग पच्चे का प्राक नहीं चाहिए ? क्या य लाग मार्केट नहीं ?

मालूम होता है कि मार्केट कोई सूक्ष्म वस्तु है किसी हवाई चीज का नाम है । यह अजीब क्याल आज मेरे मन म उत्पन्न हुआ है । मैं तो आज तक लोगो का ही मार्केट समझता रहा हूँ । किसी जगह की आवादी व अनुसार दुकानो और दुकानदारो की गिनती स मार्केट का अनुमान लगाता रहा हूँ । किन्तु आज मालूम हुआ ये लोग मार्केट नहीं । लोगो को जरूरत है किन्तु मार्केट नहीं ता मार्केट ?

पूव खूब । तो यह मार्केट दीवार है लोगो और व्यापारियो के मध्य । एक अर्थ्य दीवार । जसे वह सामने दो वाक्स का गीगा । बाहर बडे लोगो और भीतर दीखने भाति भाति के कपडा के मध्य । एक काँच की दीवार । वितनी कमजार ह यह बस एक मुक्के की मार । य इतने लोग बडे हैं । हाँ क्या कोर उठ कर तोड नहीं देता ? मैं ही क्यों न तोड दू ? आह ! मेरी टांगे क्या काँप रही हैं ?

यह काँच ताँना जुम है ।

—सींग सींग दाना गरम करारा सींग दाना ।

नूनी हुई मगफली की पुगू और घघवती हुई तबडो की उष्ण मापी यू उमकी नासिका म प्रविष्ट हुई । उसके पेट म एक भूकप सा विनविता उठा । बाद मार एक खोमच बाग चला आ रहा था । खोमच म मूगफली के मुन और छिन पुण मफे नम कीन दाना के पहानी जम डेर की चाटी पर मिटटी न कूज के प्राग उरानामुषी के दहान की भाति घघर रही थी । ज्वालामुषी म प्राग कम थी और धुमा अधिक् । उराना ती चाहा दाना हाथा स अजति भर सींग दान उठा न और खान लग ।

य क्या ? यह मेरे हाथ क्या गिपिन हा गए ? यह माग दान और मर हाथा के बीच दीवार सा क्या बन गई है ? यह ता जिवाई भी नहा देती । गा-ब्यास का गीगा ताँन म पहन मैं इस क्या न ताँन ? गो-ब्यास का गीगा ताँन दूण हाथ भा जम्मी हा मचना है किन्तु यहाँ पर हाथ का भी चाट तगन की आगवा मनी ।

हैं हैं यह मर हाथ किमन जका निग है ? आह ! मर पेट म मान किमन मारी है ? मरी पीठ पर मुक्का वहाँ म बरम रू है ? मेरे मिर पर पूंग कीन मार रहा है ? आह ! मग जरडा ।

य लोग मुक्त कर्ण घगात निग जा रू है ? यह काँची क्या है ? य मताने—।

य अघराध है । माग दाना खाना अघराध है । यह दावार जिगा नहा रनी किन्तु है यह बून मरवून । मैं अचना दन तोड नहा मरना । काई अचना इस ताड

नहीं सकता। यह अपराध है।

अपराध और अपराधी मैं अपराधी बनना नहीं चाहता। मैं ईमानदार आदमी हूँ। मैं एक भद्र नागरिक हूँ। मैं पुरपा जसा काम करता हूँ। तमूर लाला मुझे नाजायज गराव वेचन का काम देता था। गम्भू ने मुझे घपौम और चरम बाहर से जाने का काम पेश किया था। सुलताना, विशोरी, जानकी और आई०वी० ने मुझे काठीवाने की दलाली का काम देना चाहा था। वह सभी मेरी सहायता करने के लिए तयार थे। मैं आसानी से थोड़ा सा सतरा मोल लेकर सक्डो रुपये महीने की आमदनी कर सकता था, किन्तु मैं एक भद्र व्यक्ति हूँ एक ईमानदार नागरिक हूँ। मैं जरायम पशा बनना नहीं चाहता।

हा हा हा हा ।

दो टिकट चकर ऊच-ऊँचे हँसते हुए पास में गुजर रहे थे। उनके साथ एक पुलिस का सिपाही भी था। वह सबल कर वच पर बठ गया। पुलिस के सिपाही ने सदेह पूरा दृष्टि से उसकी ओर देखा, अपने साथियों के साथ कोई बात की और फिर वह तीना उसकी ओर देखने लगे। उसके दिल में से एक तेजाबी कटुता उभर कर उसके हाठ पर आ गई। उन तीनों ने क्षण भर कोई बात की और सदेहपूरा दृष्टिया से उसे देखते हुए आगे बढ़ गए।

इसको सदेह है कि मेरे पास टिकट नहीं।

है ।

उसने ऐसे महसूस किया जैसे उनकी नजर उमका अपमान कर रही हो। उसका हाथ अपनी जेब में गया। उसका जी चाहा कि टिकट निकाल कर उन पर द मारे। अपमान के जवाब में अपमान ही उनके मुँह पर बोल मारे। उसने उनकी ओर घूर कर देखा धीरे धीरे दूर जाती एक नीली और दो सफेद बर्दियों के पीछे उसकी मगरमच्छ का मुख अपने पूरे फलाव के साथ खुला हुआ नजर आया। उसने देखा कि तीन बर्दियाँ टिकट उसके हाथ में लेकर उभर मगरमच्छ के मुख की ओर घेरेल रहा हैं। मगरमच्छ के मुख के पीछे मगरमच्छ का पेट है पेट में नारकीय अग्नि से भडकती अतडिया का गोरखधधा है जिनमें असह्य मनुष्यों के शरीर गलते पिघलते जा रहे हैं। टिकट उसके हाथ से फिसल गई। मगरमच्छ का अतडिया उसकी आँखों के समक्ष अग्निजाल बुनने लगी।

मगरमच्छ की अतडियाँ बम्बई की सडकों वास्पोपोनीटन होटल जय हिंद बोर्डिंग हाउस, गुम्दारा धमशाला पेडरो साह का मजार चोर बाजार चिमना बुचड स्ट्रीट। यहाँ उसकी छतरी बरसाती, हागडाल अटेची बेस डाकूमेण्ट बेस रिस्ट वाच पाउ टन पेन दो गरम भूट कम्बल बिस्तर की चादरें और कई दूसरी चीजें हीले हीले पिघल कर बिलीन होती गई थी।

सडकों के फुटपाथ वह हाथ में अपना बनबस का थैला और बचाखुचा बिस्तर लिए खड़ा था। उसकी पीठ के पीछे धमशाला का दरवाजा खुला हुआ भी बंद हो चुका था। बकाबट से उसका अगप्रत्यग पीडित था। दूटे हुए बूटा ने दोनों पर जगदू

जगह से काट दिए थे। परा के इन जहमा पर मल कीचड़ और पत्तीने का चिपचिपापन मिर्चों की भाँति सुई चुभो रहा था। मस्तिष्क में जस गरम गरम सिक्का भरा हुआ था। आखा के सामने धुएँ के चक्कर से घूम रहे थे। पेट का खाली खीन घ्रायी के दात वन कर अतडियो को चीर चीर कर फेंक रहा था।

वह सुबह का भूखा था पैदल चल कर छ मील के फासल पर इस बात का जवाब लेने गया था कि क्या उसको उम फ़ट्टरी में नौकरी मिल सकती है? जवाब नकारात्मक मित्रा था यह उसकी अंतिम आशा थी।

अभी अभी वह उसी दशा में भूया प्यासा ही पल चल कर वापस आया था। धमंगाला में एक नियत समय तक ही ठहरा जा सकता था। यद्यपि धमंगाला में उमकी रिहाइश काफी दिनों में निश्चित समय की सीमा लाँघ चुकी थी किन्तु हर सप्ताह जब दो रुपये पण्डित जी की जव में पहुँच जाते तो चार दिनों की अवधि समाप्त होत ही न आती किन्तु अब जब वह गन दो सप्ताह से पण्डित जी को बुद्ध नहीं दे पाया था तो आज चार दिनों की यह अवधि एक द्वाँग में अपनी सभी सीमाएँ लाँघ गई थी।

वह फुटपाथ पर खड़ा था

फुटपाथ फुटपाथ ही फुटपाथ

मानवगत धार्मी के प्रान्तिक डैड क्वार्टर की मजदूर पथरीला दीवार के साथ एक स्पाइड्रॉल अग्रिम मुर्त बच्च की लाग गोट में लिए बठी थी। कोई उनकी ओर ध्यान तक नहीं देता था और वह धरलाई हुई आँखें फाड़ हरेक की ओर हर चीज का तरफ घूर घूर कर लेग रती थी।

गिगर दोपहर की चित्रचित्रता घूप में मरहूस के चित्र पर एक बहाने वृत्त-मा मुक्क आंध्र मह पडा हुआ था। रानिया की एक मरिता उसकी टाँग का लाँपनी हुई बन्नी जा रही थी। कार्ट दृष्टि स्थिर कर उम पर पतता और फिर एकदम धररा कर भाग उठता। घूप और तीसरा हानी जा रही था। लाग पमान में मरावार हान जा रहा था किन्तु सुबक के त्रिम्म पर पमान की एक भा वूँ नहीं थी। उमर खुल हुआ था वर फुटपाथ का घून का चाट रहा था। एक घूट पाना की आशा जस वहा तम कर रहे गद था।

नायर अस्तान का चारणावारी के साथ बूँसाने की वगत में एक विचारवय की तका चक्कर से घून घसन जग गरीर का लिए सुररर पथरा पर पना बगा रहा थी। उमर मल निरावन यान अगा में म बहूँगर मवाँ और मन निरन कर उमर मार गगर का मान रता था और सक्रियता का घना उम पर भिनभिना रहा था।

मानपुर में धमनपुर में पतन का चाना के पाद्य बूँताव के गनमत्र में अन्वितेन निर्याँ और पुरा फुटपाथ पर माण रता है नर रता है। उम मारन रतन के और घपना मुँरा में भर ता कमर जोय गीँ और बूँत गुनरात रतन है। गुनरात गुनरात जस उनक नागुन चक जान है उगनियी गुन मानी है ता वह घानियाँ उठा

कर दरख्तों की जड़ों या दीवारों में खुरदरे पत्थरों में माथ रगड़ने लगते हैं। रगड़ते जाते हैं और हाथ हाथ करते जाते हैं। यहाँ तक कि जख्मा में से मटियाल रंग का खून बहने लगता है और फिर वह सी-सी करते हुए जख्मा को दवा-दवा कर खून निचोड़ने लगते हैं।

यह फुटपाथ के नजारे वह घमशाला के सामने फुटपाथ पर खड़ा हुआ देख रहा था। सामने ट्रामा-बसा कारा टक्सियो का एक तज दरिया प्रवाहित है। किनारा पर पदल चलन वाले धीरे धीरे किनारों से टकराते एक-दूसरे से कंधे भिडाते हुए भागे जा रहे हैं।

एक कुली हाथ रेहड़ी खींचता हुआ उसके समीप से फुटपाथ के साथ साथ हाँ कर गुजरा। बम्बई की नास, नीका जमी लम्बोतरी सी रेहड़ी की, जिमक आग आदमी दानो हाथा को पकड़े घाड़ की भाँति जुत जाता है, वह घसीट लिए जा रहा था। रेहड़ी का पिछला भिरा जमीन में सिफ बालिशन भर ऊँचा था। रेहड़ी पर एक ग्रथ नग्न स्त्री का गव था। उसका मुँह खुला था और उबल कर बाहर निकली हुई आँखें एक पापाण दृष्टि में आकाश को धूर रही थी और खुल लम्ब बाल रेहड़ी से लटक कर सड़क पर घिसटने जा रहे थे।

उस ऐम महभूस हुआ जैसे एक दिन वह भी इसी प्रकार फुटपाथ पर स्वाग हा-हा कर मर जाएगा और उसकी लाश में से उठने वाली सटाप ही किसी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर सकेगी और फिर कोई पाटी वाला कुली उसे हम औरत की तरह खींच कर ले जाएगा जब कोई भगो मुर्दा कुत्ते का टागा से घसीट कर बूड़ ब डेर मर पकने जा रहा हो।

नही नही, मैं मरना नहीं चाहता। इस उम्र में अभी तो मैं दुनिया का दखा ही क्या है? यहाँ में भाग जाऊँ किंतु कहाँ? पूजाव? किसके पास? दिल्ली वहाँ मेरा कौन है? हदरावाद ही मेरा भाई है वहाँ। जहाँ पाँच जीव खात ह वहाँ छठे की रोटी आसानी से निकल आती है। किन्तु वहाँ पहुँच कैसे? किराया कहाँ से लू? भाई को क्या मैं निख दूँ किराया भेजने के लिए किंतु वह कमे भेज सक्ता? एक सौ दस रुपय तो कुन उसका बतन है। महीने के अन्तिम दिनों में कई बार उनको फाँके काटने पड़ते हैं, एक सौ दस से बनता ही क्या है। हदरावाद पहुँचने के लिए उसके आधे महीने का बतन लग जाएगा। मैं स्वयं चला जाऊँ तो वह राटी तो मुझे खिला ही दे स्वयं भी गायद कष्ट सह ले किंतु बच्चों को भूल मार कर वह मुझे पैसे नहीं भेजने लगा, और मैं भी यह कस सहन कर सकता हूँ कि भाई भाभी और भतीजे भतीजिया को भूल ब जानिम मुख में धकेल द एब अपना अकेला जान के लिए तो फिर हाँ क्या?

बिना टिकट सफर किन्तु यह तो जुम है। फिर दूसरा रास्ता है। तमूर लाला के पास जाया जाए। गराव की भट्टी लगाई जाए चोगी की गराव बची जाए। शम्भू को मिला जाए। अफीम भग, चरस बरआमद की जाए गजिस्तान चलाए जाएँ। सुल्ताना किशोरी जानकी या आई० वी० के पर चाट जाएँ सड़का चौराहा

और मरगाहा पर सड़े हो कर हर जाने-जाने वाले के कान में बड़ी निलज्जता और जितनत से सरगोशी की जाए—

—‘साहब । टेवमी चाहिए ? पजाबी गुजराती बंगाली मराठी—हर तरह का माल है साहब । ईरानी, कश्मीरी, पारसी यूरोपियन चीनी यहूदी ।’

और जब कोई भद्र पुरुष गाली देते हुए दुल्कार दे, तो कान लपेट कुत्ते की भाँति पूँछ टाँगो में दबा भीड़ में खो जाए और उसी निलज्जता से किसी और साहब की खोज की जाए पूरे तौर पर जरायम पेशा बना जाए । नहीं नहीं मैं यह जलील काम कभी नहीं कर सकता । मैं जरायम पेगा नहीं बनूँगा । मेरी रगो में गरीब खानदान का खून है । मैं भद्र नागरिक हूँ । मैं अपमान बर्दाश्त नहीं कर सकता । तो फिर तो फिर फुटपाथ की मौत भी तो बड़ी जलील है । तो फिर क्या किया जाए ? ओ हाँ । यह सामान यह सामान क्या ने बेचा जाए ।

और चोर बाजार की चिमना बुचड स्ट्रीट में उसके रहे-सहे कपडो कम्बल और दरी को भी निगल लिया ।

पाव भुजिया खाकर पेट भरने के बाद उसका पास केवल इतने पस बाकी बचे थे कि पूना तक पहुँचा जा सके किन्तु पहुँचना हृदरावाद था । अब बिना टिकट सफर करने के सिवा और कोई चारा नहीं था । जुम की अनुभूति ने एक बार फिर उसके मन में दृढ़ उत्पन्न किया किन्तु दूसरे क्षण मौत मुह खोलने चली आ रही थी— फुटपाथ की खार हुई जलील मौत कुत्ते की मौत ।

फिर वह इस निश्चय पर पहुँचा कि उम्र भर के लिए जरायम पेगा बनने से बचने के लिए अच्छा है कि छोटा सा जुम कर लिया जाए । हमेशा के लिए कानून विरोधी जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा अच्छा है कि एक छोटी सी गलती करके ईमानदार नागरिक जीवन व्यतीत किया जाए ।

सो रास्ते के खर्च के लिए तीन रुपये रख कर उसने पूना तक की टिकट ले ली और विकटोरिया टर्मिनस से मद्रास एक्सप्रेस में सवार हो गया । उसके पास अब पहनी हुई कमीज पतलून के अतिरिक्त एक और कमीज पतलून के सिवा कोई सामान ही नहीं था ।

ढोड स्टेशन पर उसे टी० टी० ने आ पकड़ा । टिकट उसके पास पूना तक का था । सो टी० टी० ने उसे रेल मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया । उसने बहुत मिनटों की पर मजिस्ट्रेट ने उसके हर वास्ते का साथ-साथ जुर्माने में वृद्धि करते हुए उस पचीस रुपये जुर्माना और साथ ही किराया भी फौरन जमा कराने का हुक्म दिया, नहीं तो पन्द्रह दिनों की जद

वह एक सीखचोवाली कोठरी में बंद था ।

दे दे बाबा एक पसा । मुबह से भूखा हूँ एक पसा

सामने प्लेटफार्म पर एक छ-सात बप का नगाघडगा लडका एक गुजराती बनिए के सामने बिलख रहा था । उसकी बाँधियाँ ऊपर चढ़ गई थी और बत्तीसी बाहर निकल निकल आती थी ।

कितना जलील मालूम होता है—दूसरे आदमी के सामने इस प्रकार दांत निकाल कर बिलखना ।

उसको ख्याल आया और एकदम उसके सारे शरीर में कंपकंपी दौड़ गई, कान रक्तिम हो गए ।

जेल से रिहाई के बाद वह जेल के सामने इसी प्रकार बिलख रहा था—मैंने हैदराबाद जाना है । मुझे वहाँ का टिकट दिलवाइए ।

पर तुम बम्बई से चढे थे, यही तुम्हारे काड में भी लिखा है ।

हाँ हुजूर, पर मैंने हैदराबाद जाना है । वहा मेरा भाई है । बम्बई में मेरा कोई नहीं ।

पर एमा नहीं हो सकता । तुम्हें वही का टिकट मिल सकता है, जहाँ से तुम सवार हुए थे ।

लेकिन हुजूर, मैं वहाँ भूखा मर जाऊँगा । बेकारी और भूख से जान बचा कर तो वहाँ से भागा था ।

हम कुछ नहीं कर सकता । मजिस्ट्रेट साहब ने फसले में यही लिखा है और यही कानून है ।

और मद्रास एक्सप्रेस ने उसे पुन उठा कर बम्बई के विक्टोरिया टर्मिनस पर ला फेंका ।

टिकट ।

उसने सिर उठा कर देखा । वही दोनो टिकट चँकर और पुलिस का सिपाही उससे टिकट माँग रहे थे । उसने टिकट निकाल कर उनके हवाले कर दिया और प्रतीक्षा करने लगा कि कब एक नीली और दो सफेद बर्दियाँ उसे मगरमच्छ के मुख में घके लती हैं ।

# गुलबानो

अजीतकौर, १९३१

---

पंजाबी की स्त्री ललितकामा में अजीतकौर का बड़ा प्रमुख स्थान है। इस बीच हिंदी में भी उनकी बहुत सी कहानियाँ अनूदित हो कर छपी हैं। नारी जीवन की विषमताओं पर लिखी अजीतकौर की कुछ कहानियाँ बड़ी मार्मिक बन पड़ी हैं। उनकी एक ऐसी ही कहानी इस संग्रह में संग्रहीत की गयी है।

उन्हें अपने प्रथम कहानी संग्रह गुलबानो पर पंजाब के भाषा विभाग का पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। अन्य प्रकाशित कहानी संग्रह हैं महिष की मौत 'युत शिकन'।

---

खुगदिल खाँ गाँव की बीबी गुलबानो बहुत सुंदर थी, घास-पास के घीसाँ गावों में एक।

लम्बी ऊँचा पटानी। मुँह जम कच्चे दूध का बटोरा भ्रम जमे साग के कोमल इच्छन शीत सुंदर जैसे परिमों की रानी।

पर हर परा को जमे कोई देव अपने पत्थर के किल में बंद करके रखता है, वम ही खुशतिन खाँ गाँव में गुलबानो को छिपा रखा था।

यू मभी पत्थर अपनी बीबिया को इस छिपा कर रखते हैं माना ब्याह कर न लाय हा सूटकर लाय हा कही से। लकिन खुगदिल खाँ गाँव की बीबी की तो छाया भी कभी किसी पुरुष में नहीं देखी।

युन मौसम में सब गाँवों की औरतें मिलकर गहर सौंग खरीतन जाता, हर स्त्री उस पत्थर की प्रतापना एमे करती जैसे किसी मेल में पहल हुआ करती है।

सजधज कर-बुरके पहन घर में निकल पडती। सबसे आगे ढोल बज रहा होता। दूर से ढोल की आवाज सुनकर पठान रास्ता छोड़ देते। गाँव के बाहर जब किसी के देख लेने का भय न रहता तो वह बुरको को ऊपर चढ़ा लेती और उनके मेहदी रंग चांदी की पाजबा वाले पाव ढोल की ताल पर नाचते-नाचते वावरे हो जाते। चिरकान में जबरदस्ती रोक कर रखा हुआ नाच उनकी एडियो से फूट पडता।

ज्या ज्या के आग बढती और भी गाँवा की औरतें उनके साथ हो लेती। लेकिन वे खुशदिन खाँ गाड के गाव गढी महाज खाँ पहुँचती तो सबसे हृदय में एक टीस सी उठने लगती। यह दद गुलबानो के कलेजे में असह्य पीडा बनकर रह जाता। गाव की सब स्त्रिया उनके साथ हाँ लेती लेकिन बेचारी गुलबानो घर की दीवारो से घिरी रह जाती। खुशदिन खाँ गाड ने कभी जाने की इजाजत ही नहीं दी।

सब औरतें खुशदिन खाँ गाड के घर जाती—पिजरे में बंद गुलबानो के घर। फिर सब उसके आँगन में नाचने लगती। ढाल बजता रहता और सेव अमहत्, भुट्ट मुरमानियाँ गूड और मिथ्री बाँट जाते। सभी मिनकर खाती।

गुलबानो को देखकर सबके दिल पर बादल घटाएँ बनकर छा जाते—मस्ती से भरपूर। ढोल की द्रुम द्रुम में पीडा के बोल साकार हो उठते। पठान स्त्रिया नाचती तो उनका एडिया से कोई दद विलाप कर उठता। और गुलबानो? उसकी पीडा उन राता के समान थी, जिन्हें अंधेरी राहा पर ठोकर लग जाता है और लाखो तारे जिनके दद में कोयल से मुलग उठते हैं।

स्त्रियाँ अपनी राह लेती। गुलबानो को लगता घर की दीवारो की तपती हुई भट्टी में उसका जीवन जलकर राख हो जाएगा।

खुशदिल खाँ गाड के यार दोस्त कहते कि उसे भी अपनी बीबी को स्त्रियो के साथ जाने देना चाहिए। लेकिन वह किसी की एक न सुनता। वे कहते, गाय भैंसा को भी ता भूण्ड के साथ नहाने और पानी पीने भजना पडता है—खुशदिल खाँ उनके प्रश्न का कोई उत्तर न देता।

जब भी स्त्रिया का दल खुशदिल खाँ गाड के घर आता वह गुस्से से लाल हा जाता और बारी-बारी से सब में भगडने लगता। दफ्तर में मातहता पर गरम और घर में नीकरो से नाराज। बच्चों पर क्रुद्ध और बीबी से रूष्ट। बतन फोड देता, चीजें तोप देता—बिनकुल वस ही जस आधी घर के द्वार ताड कर अंदर आ जाती है।

फिर ज्यो-ज्या दिन बीतने लगते आधी अपने आप शान्त हो जाती। जिंदगी अपनी राह हो लेती—ऐसी राह जहा नया कुछ न होता, न ही कुछ नया होन की सम्भावना हाती। गुलबानो के प्राण घर की दीवारो का ऐसे स्वीकार कर लेन माना उह दखत रहन में ही उसके जीवन की सायकता हा।

खुशदिल खाँ गाड के घर बरसो से चन्दन नाम का एक व्यक्ति दूध देन आता था। उसकी दृष्टि सदा आँगन में कुछ खोजती रहती, लेकिन उस गुलबानो के दशन कभी नहीं हुए।

फिर एक दिन ।



चन्दन ने अभी राग्य बरामत्ते में रखी ही थी कि श्रीदर प्रांगन में गुलवानो गुजरी। उसने चन्दन को नहीं देखा, लेकिन चन्दन को उसकी एक झलक भर मिल गई। उसे लगा गुलवानो का सीदय सागर जल से धुली दूध-सी सफेद धमकदार सीपी के समान है। वह गुलवानो के रूप की एक ही भाँकी पाकण बादशाह हो गया।

चन्दन जहाँ कहीं उठता-चटता गुलवानो की बात करता उसका मुखड़ा ऐसा था, चाल एसी, कपड़ फर्ला रंग के, गहन गहन उसके हाथ चलते-चलते उसके पाँव

गुलवानो चन्दन के सामने से प्रांगन में गुजरी थी—साकार गुलवानो स्वयं। और चन्दन के मानस के धँधरे आकाश में बिजली सी कौंध गई।

इतकी आपस में कभी कोई बात नहीं हुई। गुलवानो ने चन्दन की ओर देखा तक नहीं। चन्दन की लगा यह सब सपना है—एक ऐसा सपना जो पक्ष फलावर उमक मानस पर बैठ गया था। इन कीमल और गरम पक्षों के नीचे कई चाह कई कल्पनाएँ आशाएँ धपनी छोटी पतनी और लम्बी गरदने निकाल निरीह और भय हीन प्राँखों से ससारा का स्तम्भित सी देख रही थी—उस आकाश उस धरती को जो लाखा वष पुरानी थी मगर उसक लिए आज ही अभी, कच्चे दूध-सी मोटी और गरम, कबल उनके लिए बनी थी—कबल उनके लिए ही।

एक और चन्दन था जिसके दिन की दहरी गुलवाना की एक ही भनक से खुल गई और धरती आकाश दोनों उमम ममा गए।

दूसरी ओर सुगन्धि साँ या जो गुलवानो की बरमों की निवटता पाकर भी पत्थर बना रहा—ऐसा पत्थर जो लावे में जल धुन कर ककड बन जाता है।

इधर एक गुलवानो सुगन्धि साँ के पास रहते हुए भी उसमें काँसा दूर था।

और उधर एक गुलवानो चन्दन से जोसा दूर रहते हुए उसकी माँगा में ममापी हुई थी।

गुलवानो का उसकी एक सखी ने बताया कि उसके घर दूध देकर जाने वाला चन्दन भूम भूम कर उसके हाथा, पाँवा बालो और हाटा की प्रगता करता है।

प्रांगन में चन्दन की दूध की गागर में एक धार जब उसके घर की गागर में गिरी तो गुलवाना ने द्वार की तरार में पनक भर देना। उसे लगा दूध की एक धार चन्दन की गागर में निवलय कर उसक अपने शरीर में ममा गई है।

धर गुलवाना घर के प्रांगन में घनती तो पाँव धिरक धिरक जाते। उसका जीवन मशीनमय हो गया। सीता की कर्णियाँ धाप में धाप उमर धपरा पर घानत सी। मन्ती का सुमार में प्राँगे बन्द किए वह तर तक घानत का अनुभव करता रहती।

उमर मानस के शिव प्रांगन में एक पीषा उगा—चन्दन के प्यार का पीषा। और उसक जीवन के सभी श्परीत वष मुशामिन हा था मरक उठ। उसका गुणना का माया में एक बँद प्यार का पनी और वह हाक कपा धमनी माना बन गई। उस बार जब पय के शँखों की शिवियाँ हान का ताप पर मापनी हुई उमर पर

के आंगन में आयी, तो ढोल भी खुग था, गुलबानो भी खुग। गुलबानो को खुश दख कर सब औरतें खुश थी और गाँव से दूर नदी के किनारे भैंसा को नहलाता हुआ चन्दन भी खुश। इस दिन यदि कोई खुग नहीं था तो वह खुशदिल खाँ गाड।

धीरे धीरे चन्दन की कहीं हुई बातें लोगो की जबानी खुशदिल खाँ तक पहुँची। उसका सिर घूम गया, आँखो में खून उतर आया। इसी हालत में वह घर पहुँचा।

गुलबानो उस समय कपड धो रही थी और कपडें धाने वाले मोटे की ठप्प-ठप्प क साथ कोई गीत गुनगुना रही थी। खुशदिल खाँ ने वही सोटा छीन कर उसकी कमर में दे मारा और कहा, जानती नहीं यहाँ गाना कुफर है।

फिर उसकी बाह पकड कर घसीटता हुआ उसे आंगन में ले आया, बता, चन्दन वाली बात सच है ?

गुलबानो चुप। अपने जीवन के एक अकेले सच को वह कस भूठ कह दे ? खुशदिल खाँ घसीटता घसीटता उसे छत पर ले गया। आ तुम्हें चन्दन से मिलाऊँ

फिर उसने गुलबानो को नीचे गली में गिरा दिया। एक चीख निकली और वस

आवाज सुनते ही लोग सब ओर स दौड पडे। खुशदिल खाँ ने देखा उसकी बीबी नग मुह गली में पडी है और सब लोग उसे देख रहे हैं।

वह दौडा-दौडा नीचे आया। अन्दर से एक मोटी चादर लेकर गली में पहुँचा और भटपट गुलबानो के मुह पर डाल दी।

# रत्ती

गुरदयालसिंह, १९३३

---

पजाबी की नई पीढ़ी व लेखकों में गुरदयालसिंह बड़ी उज्ज्वल सभायनाओं में युक्त हैं। आर्थिक सघनों से भरे हुए जीवन में उन्होंने शिक्षा प्राप्त की और अपने लेखन की गति दी है।

गुरदयालसिंह की अब तक १० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। गोरकी की रचना मेरा बचपन का इतना पजाबी में अनुवाद भी किया है।

एक दो तीन वर्षों से हिंदी के अनेक प्रतिष्ठित पत्रों में भी इनकी कहानियाँ निरंतर प्रकाशित हो रही हैं।

---

रत्ता भड़के की भाँति उनका घर व भीतर घुम भाई। बिलरी हुई लहरियाँ, कान्तिनी और डरावनी आँखें पीला रंग पट तथा मन कपटे—सायात टायन जसी वह तिमिर्दी पच्छी थी। एक चुटिया जसी काठी-कसूटी बालिका उमने गोद में उठा रखी थी और तीन चार बानका की पक्षि उनका पीछे पीछे आ रही थी। यह सब दमन ही जम राधा की जान मूँठा में आ गई।

मुन की ठकानना अन्तर कर्म रसत ही रत्ती गरजी अरु लुम्हें तिमजिला मवान बना कर गानि नगा भिना ता हमारी भोंपणी छीन कर बलजा ठहा हा जाणा क्या ।

और वह राधा व पाम आकर का पर ही बट गई। गाँव में उठाई हुई बालिका व मम में अपना मन लन हुए उमने राधा का भार ऐन दमा जम उन खा जाना चान्नी हो। गया का चहरा एक हा गया।

“सारे गाम में स ऊँची तुम्हारी भटारिया,”- गुस्स भरी ऊँची आवाज में रत्तो ने कहा, ‘बसने वाले तुम तीन जने हो। अगर इनमें भी तुम्हारी तारी नही समाती तो जाकर दमशान के चारा और चारदीवारी बना लो।’

‘कुछ सोच विचार कर बात करो मरी बहन।’ राधो ने बड़ी नम्रता से, पर कुछ डरी हुई आवाज में कहा।

पर रत्तो को तो जमे चढान चढा हुआ था।

‘बोलूंगी सोचकर। उसने आँखें दिखाते हुए उत्तर दिया, ‘तू भी मुन ल और अपना खसम को बता दीजियो कि यदि किसी ने हमारे घर में अन्दर पाव भी रखा तो मैं उसका कलेजा निकाल कर खा जाऊंगी। जानन नही, मैं रत्तो हूँ, मनु सिरकट की बटी। मरने के बाद भी पीछा नही छोडूंगी, प्रेत बाकर तुम्हारी सात कुला का नाम नही किया तो मुझे सिरकटे बाप की बटी कौन कहेगा?’

राधो की जवान को जसे ताला ही लग गया हो। उसने रत्तो का समझाना तथा फिर कुछ बहना चाहा परन्तु उसके सूखे कण्ठ से आवाज नही निकली। रत्तो, मुँह आई कहती चली गई और ऐसी ही बुडबुडानी बालका की पलटन को पाछे लगाए चली गई।

दोपहर को केशू ठेकेदार जब रोटी खाने घर आया तो राधो ने उसे सब बात बनाई और बोली, ‘मुझे तो राम वसम उस पर तरस खाता है। कुणें में फेंको ऐसी जायदाद को अपनी पहली ही हममें सभाली नही जाती तो और क्या करेंगे।’

परन्तु ठेकेदार का उसकी बात पर हँसी आ गई और वह व्यग्य से बोला, यदि तेरे जसा स्थाना होता तो आज तक टीडे-ककडिया बेचता होता।’

और दूसरे क्षण वह कुछ क्रोध में आकर कहने लगा उसी बड़ी अक्ल वाली ने पहल अपना उस खसम को क्यों नही समझाया जो एक हजार की अकेली शगव ही पी गया? जो ढाई तीन-सौ की अफीम तथा नम्वार चढा गया, वह अलग रही। जाने मैं आज तक कसे चुप कर रहा, यदि कोई और होता तो इनके सिर में बाल तक उखाड देता। मैं तो फिर भी तरस खाता चला आया कि चलो गरीब है थोडा-थोडा करके दे देगा।’

‘परन्तु तुम ऐसी को उधार दिया क्या करते हो?’ राधो ने कुछ खीझ कर पूछा।

तुम्हें क्या पता है दुकानदारी के भेदा का हम ही पता है जिनको इन मूख लागा से निपटना पडता है। नकद तो इनके पास जहर खाने को भी पैसा नही होता, उधार हम दें नही तो कर ली दुकानदारी।—जाट गुड की भेली ही दिया करता है पाना नही दिया करता।

मुझे तो उसकी बददुमा से डर लगता है ऐसी दुखिया की आह खाली कभी नही जाती। दूसरे कितने ही छोटे छोटे बाल बच्चे ठहरे, उनको लेकर कहा जाण्यो बचारी।

परन्तु ठेकेदार ऐसा आदमी नही था जो राधो की बातों के लिए इतना बडा नुक

साथ उठा लेता। राधो को उसने बताया कि यह भी उसकी दरियादिली ही थी कि उसने रत्तो के पति जीवने से केवल घर ले कर ही पसला कर लिया था। कोई बारह सौ रुपया उसने जीवने से शराब, अफीम तथा नस्वार का लेना था। कोई प्रदाई सौ से अधिक का ब्याज बन जाता था परन्तु जीवने के पुराने घर का कोई पाँच सौ भी देने को तयार न था। यदि उसकी इच्छा होती तो वह जीवने की सारी जमीन भी कुरब करवा सकता था। उसने तो जीवने पर इतना तरस खाया था परन्तु वह फिर भी वेई मानी कर गया था। उसन चोरी चोरी अपनी तीन बीघा जमीन बेच दी थी। अब यदि ठेकेदार उस पर मुकदमा कर देता तो घर के साथ-साथ उसके बतन भी कुरब हो सकते थे। परन्तु क्योंकि वह खुद बाल बच्चेदार आदमी था इसीलिए उसने सोच कर उसका घर लेकर इतना घाटा भी सहन कर लिया था।

परन्तु यदि इस पर भी वह ऐसी बातें करती फिरनी है ठेकेदार ने गुस्से स कहा 'तो मैं भी अपने बाप का बेटा नहीं जो रात पडने से पहले पहल उनका बोरिया बिस्तर न उठा दूँ ता। जितना इन लोगों से नमीं करें, उतने ही सिर पर घड जाने हैं।'

अपन पति की यह बात सुनकर राधो का मन और भी उलस हो गया परन्तु बियग हो कर चुप हो गई।

ठेकेदार न उसी रोज जीवन की बुलाकर कह दिया कि यदि उसने कल तक घर खाली नहीं किया तो वह पुलिस बुलवा लेगा।

लाला जी मुझे चार दिन और काट लेन दो। फिर मैं गहर जाकर कोई मेहनत मजदूरी कर लूंगा। यहाँ अपने गाँव म रहते मुझ स गरम क मारे गुजर नहीं होगी। जीवने न मिनत म कहा।

परन्तु ठेकेदार न भासैं दिखाते हुए उत्तर दिया 'तो बड़ी इच्छत बाल ने मेरा कज कयो नहीं द दिया? अब तो गाँव म घर छोड कर रहत गरम भान लगी जब बोनन की हिला हिला कर दखते कहा करता था 'ठेकेदार, पहन ताड की नहा है यार! तब यह बातें याद नहीं थी?'

जीवना सिर नीचा किए चला आया।

रात पडने स पहले-पहल इस बात की चर्चा मार गाँव म हान लगी। रत्ता क ताभे स्वभाव को सभी जानते थे कि वह मर कर भी अपना घर नहीं छोडेगी जीव जी तो उस बौन निजालन वाला ठहरा। परन्तु दूमरे दिन जब जीवना अपना दूगा दूगा सामान गाड़ी पर लाद कर अपने चचा क पगुआ बाल अहात का भार जान लगा ता लोगों का इस बात का भरामा नहीं हुआ। सभी महा माच रहे थे कि उसने रत्ता का घर छोडूदन पर कम राजी कर दिया?

किन् तीन दिन रत्ता का किमी न नहा देगा। परन्तु चौथ रोज जीवत के चचा क पगुआ क अहात म से गाँव वाला न उमकी किन्कारियां सुनी। वह कसू ठेकदार क बचा का म्यापा कर रहा थी। भापी गत तक वह म्यापा करन करते धक-हार कर जब बेहाग सी हा मर्द तब कहा जाकर चुप हुई।

और उसके पश्चात् गांव वालों को रत्ता की क्लिबकारियां हर रोज सुनाई देने लगीं। वह केसू ठेकेदार के सारे परिवार का स्थापा करती, उमे गालियां निकालती, और बहुत रात गए तक न जाने क्या-क्या बोलती रहती। उसकी क्लिबकारिया जैसे सब के बसेजे चोर जाती और लोग रात भर उसी की बातें करते रहते।

रत्तो के बच्चे घर को गिराकर केसू ठेकेदार ने वहा नई हवेली की नींव रख दी थी। हवेली को बनते कई दिन हो गए थे परंतु राधा वहाँ नहीं गई थी। ठेकेदार उमे रोज कहता कि चलो अपना नया घर बनता देख लो परंतु राधा को हर समय रत्तो की क्लिबकारियां सुनाई पडती रहती। उमे ऐसे जान पडता जैसे रत्ता, अपने बाल-बच्चू पटे-पुराने चीखडा म लिपटे बच्चा की परतन लिए उसके घर के भीतर घुसी आ रही है और उसको डायन की भांति खा जाना चाहती है। मारे डर के वह यह सब ठेकेदार को भी नहीं बताती थी।

और जब पति के बहुत कहने पर वह एक दिन अपनी, बन रही नई हवेली देखने चली तो उसके मन का भय पूरा हो गया। जिस गली से होकर वह आ रही थी उसी के मोड़ पर उसने रत्तो को खडे देखा। नगा मिर चहरे पर विखरी नटें भय-कर आँखें और चुडला जैसे हाथ पाव। वहा खडी वह ऊँची आवाज मे केसू ठेकेदार का नाम ले-सकर गालियां निकाल रही थी। चीखें मार रही थी और उसके बेटा का स्थापा कर रही थी। उसके देखते ही राधा बेहोश सी हो गई। दीवार का सहारा लेकर वह बहो रुक गई।

थोड़ी देर बाद जब उमे कुछ होश आई तो उसने देखा कि रत्तो उसकी बन रही नई हवेली के पास चली गई थी। उसके हाथ मे एक टूटा हुआ जूता था और पास ही गाड हुए एक सूटे पर जोर जोर से जूता मारते हुए वह चिन्ता रही थी

अब बोल मर भग्या के साल, अब बोल। तू न जो ठालाव का पानी बोलला म भरकर मेरा घर फूक डामा है मैं भी रत्ता नहीं जो तेरे सारे कवीने क बच्चे-बच्चे को न खा जाऊँ तो। अब बाल मेरे मामू अब बाल

राधा गीवार के सडारे कांपती हुई उमे देखती रही। जूता मारते और गालियां निकालते निकालते जब वह थक-सी गई तो अपने आप ही, अपने अज्ञात की ओर चली गई। राधा भी उसकी आँख बचाकर वही मे घर को लौट पडी अपनी नई हवेली तक पहुँचने का उम साहस नहीं हुआ।

उस दिन रात को जब ठेकेदार घर आया तो राधा ने उसे कहा 'यदि कहा मानो तो इस घर को जैसे भी हो बेच डालो। मुझमे अपनी आँखा यह मव नहीं देखा जाता—उस अभागी की यह दगा मुझमे देखी नहीं जाती देखो तो कमी कुरी हालत हो रही है ? उसकी बददुआयो मे मुझे डर लगता है।'

बडी दयावान न बन। घुप करके बठी रह। ठेकेदार गुस्स मे बाजा 'यदि हाथी कुत्तो क भीकने मे डरकर भाग जाएँ तो दुनिया न उलट जाए' मैंन घर बज के पैमा म लिया है कोई दान गहा लिया जो ऐसी घुडन की बददुआयो म डरकर छोड़ दूँ।

राधा फिर घुप हो गई।

उम लिन क बाद राधो को किसी ने कहीं फिरते नहीं देखा। जो कोई कभी उसके अहाते के आग न गुजरता उसे छप्पर-क नीचे खाट पर लेट लेट, धीमी धीमी-आवाज में ठेकेदार के बेटा का स्थापा करते देख पाता। वह अब इतनी दुबल हो गई थी कि उसकी आवाज उसके अहाते के बाहर तक भी मुश्किल से पहुंच पाती थी। बिना किसी के सहारे वह उठ बैठ भी न सकती थी। परंतु अपने दालान में एक बड़ी लकड़ी का खूटा गाड़कर और उसके ऊपर एक हाड़ी झोंधी रखकर उसने जो, ठेकेदार के लू या पुतला बना रखा था रात को सोते समय और प्रातः काल उठते समय, वह उस पर पाँच जूते अब भी मारती थी। और कहने वाले कहते हैं कि यह प्रण उसने आखिरी श्वास तक निभाया।

थोड़े दिन बाद राधो ने मुना कि रत्तो मर गई। उसका यह सुनकर इतना दुःख और भय लगा कि वह दो दिन खाट से नहीं उठ पाई न कुछ खाया न पिया, बस पड़ी पड़ी सामने दरवाजे की ओर देखती रही। उस पल पल ऐसे जान पड़ता जैसे अपने, उही काले कलूट, फटे-पुराने चीथड़ा में लिपटे बच्चा को पलटन लिए, रत्तो उमक घर क अ दर घुसी आ रही है। परंतु तीसरे दिन उसका मन कुछ शान होने लगा और एक लम्बे समय से उसके मन में बड़ा भय दूर हो गया तब भी भीतर उसके कहीं कोई उदासी का बोझ सा अनुभव होने से नहीं रह पाया।

और कुछ दिन बाद राधो की नर्त हवेली तयार हो गई। मीठे चावल बाँटने के लिए वह स्वयं गई। चावल बाँटते-बाँटते उसने एक बहुत दुबली पतली काली कलूटी तथा नगी घडगी बालिका की ओर देखा तो उसका हाथ अपने आप रुक गया। उसे एक भय सा लगा।

‘तू किसको बेटी है री?’ राधो ने उससे पूछा।

रत्तो की। बालिका ने उत्तर दिया।

राधो से आख भी नहीं झपकी गई। वह देवती की देखती रही वही कानि हीन बड़ी बड़ी आँखें सफेद रंग, बिखरी सटें डायन जैसे हाथ पाँव जस वही रनो सामन खड़ी हा।

राधो की टांगें कापन लगी। नाई को चावला वाली परात पकड़ाकर धड़ भट से भीतर चली गई—घर वापस आने तक का साहस भी उम में नहीं था। भीतर जाकर वह दीवार का सहारा लेकर नीचे फश पर ही बठ गई। कितनी दर उम कुछ भी दिखाई नहीं पडा और वह आँखें फाड़ फाड़कर छत की ओर देखती रही। कुछ दर बाद जब उम थोड़ा-थोड़ा खिझाई पडन लगा तो उसने देखा कि छत के बड़े गाड़र से कंधो रंग विरगी कातरा की बनी हुई चिड़िया जो सटक रही थी उसकी आँखें बिल्कुल रत्ता का आँखा जैसी जान पड़ती थी। और फिर एम ही उसका आँखा का मोर लखन दखन वह बहाग हो गई।

अगले दिन लोग न राधो का रत्तो की भाँति ही गालियाँ देने और कितना रिया मारत हुए मुना। उसी भाँति उमने ठकदार कलू का नाम ल लेकर उमक बटा का स्थापा किया। ठेकेदार ने कई डाक्टर, हकीम बुनवाए परन्तु राधो का आराम

नहा आया। यदि धरण भर उसे होना आ भी जाती तो अगले क्षण वह अधिक जोर से धिलाने लगती पहले से अधिक गात्रियाँ निकालती अधिक जाग जार स स्थापा करती।

जब कई दिन राधा को आगम नहीं आया तो गाव म इस बात की अधिक च्चा होने लगी। गाव की बूढी स्त्रिया कहने लगा कि उम पर रत्तो की छाया पड गई थी—तभी तो रत्तो की भाति वह गालिया निकालती थी, उसी की भाति म्यापा करनी थी और तो और उसका स्वर भी रत्तो जमा ही बन गया था।



# उमस

कुलदीप वर्गा, १९३३

---

कुलदीप यद्यपि बहुत दिना से लिख रह हैं परंतु उन्होंने लिखा बहुत कम है। इस समय तक उनकी लगभग ४० कथा नियाँ छप चुकी हैं। उन्ही के शब्दा मे— मैंने कई बार सोचा कि मैं नहीं लिखूंगा और इसलिए अपने प्राय वा कई ऐसे कामो म लगाया जिससे यह बीमारी छूट जाय। परंतु मैं सफल नहा हुआ। और अब निश्चय किया है कि लिखूंगा।

कुलदीप ने किशोर वय के लडके-लडकियों की मनो वज्ञानिक समस्याओ पर अच्छी कहानियाँ लिखी है। सग्रहोत कहानी भी एक एसी ही कहानी है।

---

गर्मी से राज का बुरा हाल था। सारा दिन वह झेनी घर पर पत्नी से भीगती रही।

गाम को उमका पति नित्य की भाँति दरुनर स पका माँग प्राया, म्नान कर पलग पर लटे-लेटे वह होम्पापची की पुस्तक म लो गया। राज गर्मी से बहुत ही खीझ उठी थी। उसके जो म प्राता प्राज वह अपने पति से खूब दिल खान कर बातें करे—वह उह बताए—शोष ? प्राज किननी गर्मी है। एमा मनहूस मौसम और कब तक रहगा ? उस पना था कि इन बातों म मौसम म कोई परिवर्तन ता हागा नही परंतु प्रातिर वह गर्मी की खीझ को निवाल भी कसे सक्ती थी सिवाय इसके कि वह उनम दा बातें कर लेती। परंतु अपने पति को हाँम्पापची की किताब म दूखे देख राज मन ममोम कर रह गई। उम अपने प्राय पर गुम्मा था रहा था, अपने पति पर गुम्ता था रहा था और सब से ज्यादा उम निगाडी होम्पोपची की पुस्तक पर।

उसकी गादी को हुए अभी पाँच ही महीने तो हुए थे। पहले पहल जब राज को पता लगा कि उसके होन वाले पति की आयु पतीग वष की है तो उस अपने माता पिता पर बहुत गुम्मा भ्राया। उसने साफ इन्वार कर दिया था इस रिन्ने के लिए।

राज बी० ए० व प्रथम वष म थी और उसकी अपनी आयु उनीस वष से भी कम थी।

फिर माता पिता ने अपनी मजबूरी बतलाई कि उनके लिए इस जमान म तीन सौ रुपया बमाने बाना पदा लिखा वर दूटना कितना मुश्किल है।

आखिर राज ने उनका यह सुभाव मान लिया। लेकिन एक गत पर, कि वह कम म कम एक वार स्वय अपनी आँखा स उस लडके का देख लेगी। जब उमन लडके को देखा तो उसका मन मे बड़ी उन्न के पति के प्रति जो घृणा के भाव उठे थे व एक क्षण मे विनीन हो गए। उसने शादी के लिए अपनी स्वीकृति दे दी।

गाम का घुघना हो चला था। बादला की घटाटोप स जल्दी ही भँघेरा फँल गया। राज ने बत्ती जलाई। तभी जोरा स वर्षा होने लगी। ठण्डी हवा का एक भोका राज को आनन्द की हिलोर दे गया। वह उठकर खिडकी के पास आ खड़ी हुई। खिडकी से होकर नही-नही फुहारें आ रही थी। छोटी-छोटी धूँ उसके मुख को आ चूमतीं। यह उसे बडा भला लग रहा था। हृदय हल्का और प्रफुल्लित होने लगा। मन म एक आनन्ददायक भाव भलवने लगा।

उसने अपने पति की ओर देखा। वह अभी तक होम्योपैथी की पुस्तक म हूबा हूबा था। उसके मन म आया वह दौड कर जाय और कहे—देखिय—बाहर वर्षा हो रही है—कितना सुहावना मौसम है? लेकिन दूसरे ही क्षण उसने अदर राम की लहर दौड गई। उसे उनस बात करने म ऐसा सकोच हो रहा था जने किसी गर मद से बात करने म होता है।

राज कब से खाना परोस कर बैठी थी कितनी बार उनमे खाने व लिए कह चुकी थी। लेकिन वे थे कि पुस्तक छाडने का नाम ही न ले रहे थ। राज खीझ कर बोली—कब से खाना परोस कर रखा है। अब उस किताब का पीछा छोडेंगे भी कि नहीं? सार दिन तो दफ्तर म पाइलो स माया पच्ची करते रहते हैं, और घर आकर किताब के पीछे। गुप्ते म वाक्य अपूरा ही रह गया। वह कुर्सी पर आ बठी चुप चाप। उसके पति ने अपनी किताब म निगान रखा और चुपचाप कुर्सी पर आ बैठा। वे दाना खाना खाने लगे। बाहर अब भी जोरा की वर्षा हो रही थी।

भोजन करते हुए उसके पति ने होम्योपैथी और औलियापथी की बहस शुरू कर दी थी। उनकी बाता स राज के पल्ल कुछ भी नहा पठ रहा था, वह तो केवल हँ हँ करती जा रही थी।

ऐसी उकता देने वाली बातें मुन-मुन कर उसके कान पक गए थे। जल्दी-जल्दी खाना खाकर वह चौके म बतन रखन चली गई। उसका पति ने फिर अपनी होम्योपैथी की किताब खोल ली थी और उममे ऐसा हूब गया था जम किगोर बालक जामूसी उपवास म सो जाता है। राज खिडकी के पास आ खड़ी हुई। वह बरसते वाली की

धूदो की अलसाई आखा से देखने लगी। बाहर कुछ देर से खट-खट हो रही थी। उसने सोचा शायद हवा दरवाजे टकरा रही होगी। परन्तु अब आवाज साफ सुनाई देने लगी। राज ने पति का ओर देखा वह किताब में मग्न था।

‘बाहर कोई है। उसने ऊँची आवाज में पति से कहा। किताब में आँखें हटाते हुए बोले—सगता है—बाहर कोई दरवाजा खटखटा रहा है। उहाँ ने किताब में निशान रखा और उठ कर दरवाजा खोला।

अब बाहुरे सुरेश तुम कसे? फौजा निवास में आने वाले मुक्क को उहाँने सुशी में अपनी बाहा में समेट दिया।

सुरेश राज के निकट पहुँचते हुए बोला—‘मामी जी नमस्त—साथ ही दातों हाथ जोड़ दिए। उसके आँठों पर भयुर मुस्कराहट तर रही थी। मामी गज मुन कर राज के अदर एक हल्की सी शम की लहर दौड़ गई। उसने सकोच से हाथ जाड़ दिए। दूसरे ही क्षण उसके अदर बहप्पन का भाव आ कर गुदगुदा गया।

सुरेश उसके पति का भानजा आज पहनी वार उसने मिल रहा था। सुरेश अपनी युनिवर्सिटी की तरफ से लगे एन० सी० सी० के कप में यहाँ पहुँचा था। बारिश से वह पूरी तरह भीग गया था। उसने मामा के कपड़े पहने और बोला—‘आज तो वर्षा का श्रोगण हो गया है। आज तो हृद कर दी धो गर्मी ने। इतनी गर्मी मैं कभी नहीं देखी थी। पर दबिये तो? वर्षा की पहली बीछार ने बातावरण कितना ठण्डा कर दिया। ठण्डी ठण्डी हवा दिन को टण्ण कर रही है। फिर वह बाता ही वानों में बाता—मालूम पड़ता है आप लोग खाना खा चुके हैं पर मामी जी मुझे तो भूख बड़ी जारा की लगी है। सुरेश की बातें सुनकर गृहिणी राज को एक भेंद सी महसूस हुई। दूसरे ही क्षण वह मुस्कराती हुई चौक की ओर उठ खड़ी हुई। राज को सुरेश का यह बातनीपा अच्छा लगा। उसके जी में आया कि वह सुरेश की बातें सुनती हा रहे, सुनती ही रहे। चौके में खाना बनाने हुए भी राज के वान मामा भानजे की वाना की ओर लग थ।

खाना का सिनसिना टूटा तो सुरेश रसाई में आ धमका। मामी जी मुझे खतापे ना मैं कुछ काम में हाथ बटाऊँ। राज बोई उतर दनी दूसरे पहन ही वह अन्मारी में प्लट्टे निवाने लगा।

आप यह क्या करत हैं? राज ने जदी में प्लट्टे उसने हाथ में लीन लन के लिए अपने हाथ बनाए परन्तु एक अज्ञात भिन्नक में बागण उमका हाथ रन गया। अपनी भिन्नक को धिमान के लिए वह उँचे स्वर में बाती—इधर आकर दखिण न। सुरेश क्या कर रहा है। उसका दरान था व अपनी हाँमोपयी की पुस्तक में ही दून हाग पर उह रमाद के मामन आकर यह दख राज का वना आचय नुपा। ‘आप राकिण न दखिय प्यरें साफ करत लग गए हैं। धर जाकर क्या बह्य—मामी मरे में काम भी करती रही है। गिकायन के स्वर में राज न क्या।

सुरेश खाना खाने हुए पत्र पर लट अपने मामा में और पान में उठी मामी में वाने करता रहा। खान-खान ही वह बाता, ‘मामी जी आपका हाथाम तत बाई जादू हा

है, इतना स्वादिष्ट भोजन आपके घटे में तयार करना—कमाल ही है।

राज ने इस घर में आज पहली बार अपने बनाए भोजन की प्रशंसा सुनी थी। उसे पता था वह खास अच्छा खाना नहीं पका सकती। सुरेश जैसे जस प्रशंसा करता, राज का गम सी लगती।

सुरेश कप की मज्जेदार घटनाओं का वर्णन करने लगा। मामा जी भी उनकी बातों में शामिल हो गए। वह कम्प के उस्तादा और कप्टनो की ऐसी नकल करता कि राज हसते-हसते लोट पोटा हो जाती। इसी तरह घड़ी दर तक कमरे में हँसी का स्वर गूँजता रहा।

बाहर अब भी वर्षा ही रही थी। कभी कभी बिजली की चमक भी दिखाई दे जाती, बादलों की गड़गड़ का आवाज आती और राज को भय सा लगता। जब जोर की बिजली कड़की तो राज बोल उठी—आप मामा भानजे इकट्ठे मत बैठिये। बाहर बिजली कड़क रही है। राज की बात सुन सुरेश जोर का ठहाका मार कर हस पटा। बाला, मामी तो पूरी पुराण-पथी है। और वे तीना हँसने लगे।

सुरेश अब राज के घर आने जान लगा। वह जब आता तो घर में एक चहल पहल सी आ जाती। उसकी बातें सुन-सुन कर राज के पेट में हँसते हँसते बल पड़ जात। वह कहती—बम करिये—थोड़ा भूँठ बम बाला करिए। मामी जी आप मानो या न माना बात बिल्कुल सत्य है। और वह कोई नया किस्सा गुरू कर देता और राज बस हँमती ही जाती हसती ही जाता। कभी वह धीन उठता—मामी जी, आप भी कुछ सुनाइय न—राज को कुछ सूझना नहीं वह क्या सुनाए ?

कुछ दिन बीतने पर तो वह सुरेश का नई नई बातें सुनाने के लिए साग साखर दिन प्रतीक्षा करती रहती। कभी कभी तो उसे अपने आप पर आश्चर्य होता—उस इतनी बातें करना कसी आ गई।

वह मोचनी—एक लडके के साथ रहने से ता गूगी लडकी भी बातूनी बन जाय।

मामी जी आज पिक्चर चला जाय, सुरेश आत ही बोला। वह पिक्चर बिल्कुल पसंद नहीं करत—। उनकी बात छोड़िये। आपको पसंद है या नहीं ? उनसे पूछ दखिये मुझे जाने में कोई उजर नहीं। परन्तु व जायेंग नहीं।'

—और वे तीना पिक्चर देखने गए।

दूसरे दिन कोई बात छिड़ी ता व बाल उठे—'सुरेश तो बिल्कुल अच्छा है। बालका जसी चपलता उसमें में गई नहीं। भला इन पिक्चरों में खड़ा ही क्या है ? एम००० में पढ़ता है पर अभी गभीरता डू तक नहीं गई। बात-बात पर हँसने लगता है। इतना पत्र लिखा होने पर भी अभी कोई बात बना नहीं।

सामने कुर्सी पर बठी राज मन में सोचती रही सारी बातें ता होम्यापथी की जितना पढ़ने में ही बननी है। उसका मन भारी हो गया।

मामी जी आप लम्बी बिन्दी क्या नहीं लगाता ? तम्बा बिन्दा से तो आप और अच्छी लगेंगी। तयार हाती मामी को वह मुभाव देता। इस साडी के साथ यह ब्लाऊज अच्छा लगया। आप पाउडर की पिंक गेड लगाया करें। राज ०५११

एक छापी छापी जाता न उमरी छवि जिती भानपक बाबा दा थी जिसरा उमन मभी चलता भी नहीं थी थी । वह साधा—एक गुनक को एक साधारण-मा नडकी भिन जाय ता क्या न उम गुनगाय क परा सम जायें ? क्या न वह निजिया का तरह हर समय पुन्यता रह ?

वह लक्ष्मी फन की तरह गिल उठती है जब उमन नमरा का बाभ उठान क निण मनभावन पनि मिल जाय । वह नमरा कितनी भावमान होगी जो इमकी जीवन रागिनी बागी ।

—कि जब उम अपने पनि का ध्यान आया तो वह मन-ही मन खीभ उठी ।

गुरंग आता और अपनी छोटी छोटी गरारतें गुरू कर देता । उम दिन राज यठी मगीन पर कुछ भी रही थी ।

‘मामी जी पानी ! आत ही मुरेग बोला ।

एक मिनट ठहरो, देती हूँ ।—राज जल्दी-जल्दी मगीन चनाने लगी ।

‘पानी राज मामी कुछ खीमत हुए ऊधे स्वर म वह बोला ।

वह मगीन स उठन ही वाली थी कि पानी के कुछ छीटे उस पर आ पड । वह सचपका उठी । उमन नजर उठा कर देता मुरेग हस रहा था । लीजिए—मामी जी ! पानी !

राज के सारे कपडे गीले हो गए थे । राज को मुरेश पर बडा गुम्सा आया लेकिन वह सिफ मुस्करा कर रह गई ।

अचानक मुरेश ने देखा वह भरी वाली लिए आ रही है । वह उसकी चाल समझ गया । जल्दी स पास पडी हुई दवात का ढक्कन खोल उसने स्याही अपने हाथ पर पोत ला । वह राज की ओर भपट पडा । राज वाली वही छोड डाइग रम की ओर दौडी । राज और वह कितनी देर दौडते रहे—कितने चक्के दिय राज ने ? आखिर मुरेश ने उसे पकड ही तो लिया । पलग पर गिरी राज अपने मुह को दोनों हाथा से टके हुए थी । वह कनी एक हाथ काट कर लेता तो राज दूसरा छुडा लेती । राज के दोनों हाथ उमके काठ मे नहीं आ रहे थे । इस कणमकण म दोनों की सास फूल गई । सामें एक दूसरे को छू रही थी । मुरेश न आखिर उसक दोनों हाथ अपने एक हाथ म काट कर लिए । राज बिल्कुल निडाल हो गई । उसन महसूस किया कि मुरेश उमके बहुत निकट आ गया है ।

जाइए माफ कर दिया । उसन दोनों हाथ छोडते हुए कहा । राज क्षण भर के लिए उसी तरह आखें मूदे पडी रही । इस निकटपन के अनुभव से वह लज्जित सी हो गई । उसका चेहरा लाल हो गया । उसने मुरेश की ओर देखा वह एक जिद्दी बच्चे की तरह चुपचाप सामन खडा था ।

मुरेश घर पर पाव रखता तो राज उसक मन के भाव पूरी तरह ताड लेती कि आज मुरेग खुश है या उदास अथवा कुछ असात है ।

आज वह आया तो राज बोल उठा—आज बहुत मुस्त नजर आते हो क्या बात है ?

मामा जी आप का कम पता चला कि मैं '

राज हँसती हुई बोली— ज्योतिष भी जानती हूँ । और व दोना हँसने लग । कुछ समय परधान् गज एक छोटी गींगी उठा लार्द । 'यह वालीफास खा गो, तबीयन ठीक हा जाएगी ।

मामो जी, आप तो होम्योपथिक भी जानती हैं ?'

यह सुनकर राज को ऐसा लगा कि जम सुरेग न उसकी दुखती रग पर हाय रख दिया हो । वह बहुत देर तक यही साचती रही—यही होम्यापैथी है जिसम उमक मुख-दुख दोना निपट हुए हैं ।

गाम को वह दूसरे ढग स सोचने लगा—यह लोग भी कितन अच्छे हाते हैं । जो अदर हैं वही बाहर भी । जो दिन म हाता है वही भाव चेहरे पर प्रकट हो जाता है । सुरेग इमोलिए गायद अच्छा लगता है । विल्कु न सीधा । एम आदमो की पत्नी तो रोज अपने पति स गते लगाती रह कि आज आप नाराज मे दिखाई देते हैं, जम्र कोई वान है—आज आप उदास म दिखाई देते है नहा ? लगाइए गत और वह हर गत जीतती जाए । उसे अपने पति का ख्याल आया जिसके वारे म वह कोई गत नहा लगा सकता थी ।

उस दिन सुरेग न आत ही बाजार चलने की जल्दी मचाई । अभी वे बाजार पहुचे ही थे कि वूदावाणी शुरू हा गई इसलिए घर पहुचने म उन्हें काफी देर हो गई थी । राज को तो उनका डर खाए जा रहा था । वह रास्ते भर सोचती रही कि वह खूब गुम्सा हागे । वे दोना घर पहुचे तो वह दफ्तर से आ कर उनकी राह देख रहे थ । सुरेश न मामा जी स देरी हो जान की बात छोडी पर वह कुछ नही बोल ।

दूसरे दिन उनका एक मित्र गाम को उनस मिलन आया । परन्तु वह दफ्तर से अभी तक नही लौटे थे । मिन बडी देर तक प्रतीक्षा करना रहा । प्रतीक्षा करते-करत वह ऊव गया और आम्बिर विना मिले ही चला गया ।

आत आप बडी देर स आए ह । आप के एक मित्र मिलन आए । देखने-देखत अभी गए है ।

तुम्ह किसने कहा है कि कोई आए ता घर पर बठायो करो ? आइदा मरे पीछे यहा कोई नही

राज क मन म वन सुरेग के साथ विना उनकी आना के जाने का ख्याल उभर आया । अचानक उसक मुह स निकल पडा ।

सुरेग भी आए

हाँ वह भी उहोने बीच म ही वान काट दी ।

रमोई म काम करती राज की आँखिं रह रह कर डब-डबा आती । उसका ध्यान सुरेग के कल आन की ओर बरबस चला जाता । अगर सुरेग अपने मामा की गैर-हाजिरी म आया तो उसक लिए क्या वह दरवाजा नही खोलगी ? यह विचार उसके मस्तिष्क म चक्कर काट रहा था । उस कुछ मूक नही रहा था ।

रात को भी इस विचार ने उसका पीछा नही छोडा । बडी दुविधा म थी वह

आज दोपहर से आकाश में बादल मँडरा रहे थे। हवा बड़ी जोर की चल रही थी। खिड़कियाँ दरवाजे हवा के झोकों से बज उठते थे। कभी कभी ऐसा लगता मानो बाहर कोई दरवाजा खटखटा रहा हो। राज को साग तिन ऐसा लगता रहा जैसे बाहर कोई दरवाजा खटखटा रहा हो और फिर आवाज सुनाई देने लगती— राज मामी दरवाजा खोलिए और उसका जान काँप जाती। हर बार उसका हाथ मॉकन पर होता। उसे याद आता उसे तो दरवाजा खोलने की आज्ञा नहीं है। दफ्तर से जब थ लौटे तब कही उसकी जान में जान आई। अब उसकी घबराहट कम हुई।

रिमरिम मह बरस रहा था। हवा बिल्कुल रुक गई थी। वे खाना खा कर उठे ही थे कि सुरेश आ गया। कितनी देर तक सुरेश बठा रहा। वह हरान था कि आज कोई खान जम ही नहीं रही थी।

बाहर कभी कभी बिजली चमक जाती जिसे बाहर की प्रत्येक वस्तु साफ नजर आ जाती। बिजली के प्रकाश से बाहर पेड़ के पत्ते स्थिर देख पड़ते। आज वातावरण में अज्ञान घुटन सी थी। सुरेश रुमाल से पसीना पालता रहा। वह उदासी लेते हुए बोला— मामी जी, आज मौसम को क्या हो गया है ? इतनी उमस कहाँ से आ गई है।

राज को कोई उत्तर सूझा नहीं वह चुपचाप डबडबाई आँसुओं से गुसलखाने में चली गई। वह कितनी देर तक गुसलखाने में गुमगुम खड़ी रही।

# एक माँग, एक गिला, एक नशतर

जगजीतसिंह, १९३४

---

जगजीतसिंह भी काफी समय में लिख रहे हैं परन्तु लिखा अधिक नहीं है। य भी उन लोगों में हैं जो न लिखना चाहते हैं, क्योंकि लिखना उनकी मजबूरी है। जगजीतसिंह ने इस मजबूरी का अहसास कर लिया है और अब कुछ अधिक गभीरता और सक्रियता में लिख रहे हैं।

जगजीतसिंह की हिन्दी उर्दू में भी काफी कहानियाँ छपी हैं और कुछ कहानियों का अनुवाद कन्नड़ और गुजराती आदि भाषाओं में भी हुआ है।

---

छ वष पहले मैंने भाभी का जो साडी देने का वचन दिया था वह मैं पूरा न कर सका। और इस छ बरस के समय में वह साडी पहले तो केवल एक मांग थी, फिर एक गिकवा बन गई और अब मुझे वह एक नशतर बन कर चुभन लगी थी। छ साल का समय भी कुछ कम न था। मगर मैं लाख चाहने पर भी अपने वचन को पूरा न कर सका था और उस दिन भी जब मैं भाभी के घर उसे मिलने गया था उसने कहा— 'रमेश, अगर तुम्हारे पाम साडी खरीदने के लिए पाम नहीं हैं तो मुझ से उधार ले जाओ।

और यह बात मेरे मीने पर एक नशतर के समान लगी और मैंने निराश कर दिया कि कम भी हो भाभी की साडी का अनुरोध अब पूरा करके ही छोड़ूंगा।

वम मिमज नारग मेरी भाभी न थी। मगर उनका पति बिरटर नारग मेर एक बड अच्छे मित्र थे। वगक आयु मे मुझ से कुछ बडे थे। लेकिन फिर भी हम दोना म



काफी प्रेम था। छ साल पहले वह हमारे पहाग मार्टिन में रहते थे। नारग माह्व एम्पोट का काम करते थे। रूप तो बड़ी रंगीन तबीयत के धनी थे ही उनकी पत्नी भी सोन पर मुलागा थी। कुछ ही दिनों में हमारे सम्बन्ध कुछ इस प्रकार बन गए कि हम अपने पराग कपड़े अपने ही हाथों पर रह गए थे। उनकी पत्नी मुझे अपना दरममभन लगा और मैं उन्हें अपनी भाभी। उम्र बचन मैं अपनी एम० ए० की पढ़ाई कर रहा था। वह लाग मरी पढ़ाई में और विभाजन एम० ए० का परीक्षा में सफलता चाहते थे। मैं परीक्षा दो और परीक्षाफल निकलने से कुछ ही दिन पत्नी मिसज नारग कहने लगा— 'रमेग देखो। मैं दिन रात तुम्हारी सफलता के लिए प्रार्थना करती हूँ। अगर तुम पास हो जाओ तो मुझे एक बटिया सी साड़ी तो ल दोग न ?

'तुममें क्या साड़ियाँ अच्छी हैं भाभी ? एक क्या हजार ल लता।

'लेकिन मुझे तो एक ही ल दोग तो बहुत है। भाभी न कहा।

उसी नाम जब हम घूमने के लिए पाठ में गए तो भाभी ने मुझे अपनी पसन्द की हैण्डलूम की एक आसमानी रंग की साड़ी दिखाई, जिसके बाहर पर थ गुलाबी रंग में कुछ कढ़ाई का काम किया हुआ था। भाभी कहने लगी— 'बस यही साड़ी लनी है मुझे। भूत मत जाना।'

मैंने औरत बचा कर साड़ी का मान पड़ा। साड़ी की क़ामत लगभग तीस रुपये थी।

परीक्षाफल निकला। मैं एम० ए० में अच्छे नम्बर लेकर पास हो गया। कुछ ही दिन पश्चात् मुझे पूना में प्रोफेसर की नौकरी भी मिल गई। लाख चाहने पर भी मैं भाभी का अनुरोध पूरा न कर सका। कई बार मैं पूना से बम्बई आया। जीवन के बाकी सब काम हाथ रहे, मगर वह साधारण सा काम ही एक ऐसा काम था जो मैं पूरा न कर सका। कभी पस होते तो खरीदने का 'मूड' न होता कभी खरीदने का 'मूड' होता तो पस न होने। कभी मैं बम्बई आता तो भाभी के घर न जा सकता। मेरे बहुत चाहने पर भी पूरे छ वर्ष बीत गए और मैं भाभी का साड़ी लेकर न द सका।

इन छ वर्षों में कितने परिवर्तन भी तो हो चुके थे। मिस्टर नारग अपने मापार में दिन दुगुनी और रात चौगुनी रकम बनाने लग और परमात्मा भी जब देता है तो छत फाड़ कर देता है। मिस्टर नारग की आर्थिक दशा के बारे में यह बात बिनकुन मच थी। छ सालों में मिस्टर नारग लखपति बन गए। वह माहिम से मातावार हिल पर जाकर रहने लगे। पहले वह बस या गाड़ी में सफर करते थे अब उनकी अपनी दो कारें थीं। एक उनके अपने लिए और एक भाभी के लिए। घर में टेलीफोन का रेजिस्टर था, पन्ट के दो कमरे एयरकंडीशण थे हर काम करने के लिए नौकर थे घर का खाना पकाने के लिए सफाई के लिए कपड़े धोने के लिए, उनके दो छोटे-छाटे बच्चे थे और उनके लिए भी दो नौकर थे। घर में पैसे रखते ही या लगता था जस कोई स्वर्ग में आ गया हो। इन परिवर्तनों के साथ ही साथ मिमज नारग भी कुछ परिवर्तन आया था यह मैं न जान सका। परन्तु अब वह एक स बड़का

एक बपटा पहनती तो हर वक्त बन-सँवरे कर बैठती। बाल बने-सँवरे होने, हाटो पर लिपस्टिक लगी हाती, नाखूना पर नेल पालिश, पहले अगर भाभी को सादगी से प्रेम था तो अब उँह मैंने यह बात कहत सुना है—“वह मनुष्य ही क्या हुआ जो अपने हालात और वातावरण के साथ अपने आप को न बदले ?” परन्तु इन परिवर्तनों के बावजूद भी भाभी उस साडी के बचन को न भूली थी। जब कभी मैं जाता तो बातों-बातों में भाभी कह ही देनी— देखो रमेश अब मैं साडी के लिए आखिरी बार कह रही हूँ।’

एक बार फिर गया तो कहने लगी ‘अच्छा रमेश लो देख लो आज मैंन साडी के बारे में कुछ नहीं कहा।’

उसके बाद जब मैं गया तो कहने लगी— ‘रमेश तुम समझन होग कि मैं उस साडी के बारे में भूल गइ हूँ ? लेकिन एसा कभी भूल से भी न सोचना। मैं ता प्रति-दिन इसीलिए दस बादाम की गिरिया खाती हूँ कि कहीं भूल न जाऊँ कि तुम मुझे साडी ले दोग।’

भाभी की यह माग अब माग से कहीं अधिक एक गिक्वा थी एक गिला थी। परन्तु इन शिक्वे में भी मुझे कुछ अपनापन ही दिखाई देता था और मैं साधना भाभी कितनी अच्छी हूँ। भाभी अब तक भूरी हो नहीं

उस दिन मैंने सोचा—आगामी मास का वेतन पाते ही भाभी को साडी ल आऊँगा और हमेशा हमेशा के लिए इन शिक्वे का एक हकीकत में बदल दूँगा। मगर पहली तारीख से पहले ही मुझे चाचा की मृत्यु का समाचार पाकर पजाब आना पडा। जब मैं वापिस आया तो भाभी की साडी की माग एक चट्टान के समान वही की वही खड़ी थी। देखते-देखते दो-तीन महीन और बीत गये। अब मैं भाभी के घर जल्दी जा भी नहीं सकता था क्योंकि मैंन निश्चय कर लिया था कि अब ता मैं भाभी का तप ही भिन्नने जाऊँगा जब हाथ में साडी होगी।

थोड़े ही दिन बाद जब मैं किसी काम से बम्बई गया तो बाजार में मिस्टर नारंग न अचानक भेंट हो गई। मुझे वह जबरदस्ती पकड़ कर घर ले गए। कहा गया ता भाभी कहने लगी— देखो अगर साडी के पैस नहा है ता उधार ले जाओ। धीरे धीरे उनार देना।

भाभी के इन शब्दों ने मुझे नगा करके रख दिया था। मैं मध्यम श्रेणी का एक व्यक्ति ही तो था जो बहुत चाहने पर भी एक छोटी सी माग को पूरा न कर सका था। मुझे भाभी की यह माग गिले से कहीं अधिक एक नशतर बनकर लगी और मुझे बहुत दुःख हुआ। मैं उस वक्त कुछ ज्यादा दिन रहने के लिए बम्बई आया था। मैं उसी वक्त माहिम अपने घर पर गया। मेरी कुछ वादों की पत्नी मैं सम्बन्धित कितारों था जा मैंन दा वष पहले खगेनी थी और व अभी तक मैंने पड़ी भी न थी। मैंन उँह उठाया। बाजार गया और उँह वच दिया। कितारों बँचकर मुझ तीस रुपये मिल। मेरी जेब में भी कुछ रुपये थे। मैं उसी वक्त हैण्डलूम-हाऊस गया। वहाँ जाकर मैंने वून सी साडियाँ देखी और बहुत सी साडियाँ देखने के बाद मुझे वही

साड़ी मिल गई जो ठीक छ थय पहल भाभी न पगद की थी। मैं वही साड़ी ले ली। उस टिन्ने म बन्द करवाया और सीधा मालाबारहिल भाभी के घर गया।

वहाँ पहुँच बेल बजाई। दरवाजा खुला और भाभी न हल्की सी मुम्बराहट से मेरा स्वागत किया। मैंने कहा— 'भाभी जरा आँखें तो बन्द करो। भाभी न आँखें बन्द की मैंने डिब्बा खोला और साड़ी निकालकर कहा— 'भाभी यह देखो।

यही है न वह साड़ी जिसके लिए तू छ सान स मुझे बह रही थी।'

भाभी बीच म ही बोल पड़ी— 'हाँ सौ। ठीक है। अब ता तुम्हारे मह म भी जवान आ गई। अब साड़ी ल जो आए हो। रख दा इस मज पर।'

इसके पदचात् मैं कुछ समय और वहाँ टिका। भाभी न मुझे साड़ी के बारे म कुछ न कहा और चुपचाप बठी रही। भाभी की बातचीत म भी मुझे कुछ पहले जसी मिठास न लगी और मैं जल्दी ही माहिम अपने घर लौट आया।

उस दिन के चार ही दिन बाद मुझे पूना जाना था। मैं सोचा चली जाने से पहले भाभी से मिलता जाऊ। इस विचार से मैं मालाबारहिल गया। मैंने फ्लॉट के चाहर पड हो कर घटी बजाई। थोड़ी देर बाद दरवाजा खुला। सामने भाभी के घर काम करने वाली आया छोटे पप्पू को उठाए खडी थी और उसने हल्के नील रंग की साड़ी पहन रखी थी जिसके बाडर पर गुलाबी रंग के फूला की बडार्दी थी। उस साड़ी म 'आया' को देखकर मेरी आँखें फट कर रह गई। यह साड़ी वही थी 'तो मैंने चार दिन पहले भाभी को दी थी।

अदर से भाभी की आवाज आई— 'सावित्री कौन है?'

लेकिन उत्तर सुनने के पहले ही मैं वहाँ स वापिस आ गया। रास्ते पर चलत हुए मुझे कुछ इस प्रकार प्रतीत हो रहा था जस भाभी की माँगें और उसके गिल बहुत तेज नन्तर बन गए हो। और इससे भी बन्द कर मुझे ऐसे लगा जस भाभी की माँग और उसके गिले बहुत बडे और भारी पत्थर हा जिनसे बाधकर मुझे किसी बहुत ही गहरे सागर म फक दिया गया हो और मैं सागर की उस गहराई म जिमकी वाई सीमा न हो नीचे बहुत नीचे और उससे भी नीचे उतरता चला जा रहा हू।

# अपनी-अपनी सीमा

जसवन्तसिंह विरदी, १९३४

---

जसवन्तसिंह विरदी पंजाबी की नई कहानी के निम्न  
ताम्र म से एक हैं। महानगरी के यात्रिक जीवन म पिसते  
दृष्ट निम्न मध्य-वर्गीय परिवार की मूल्य बद्धता और मूल्य  
विघटन के द्वन्द्व का वस्तु साधक चित्रण विरदी की कहानिया  
म हुआ है।

प्रकाशित कहानी-संग्रह 'पीड पराई', प्रापणी आपणी  
सीमा।

---

बाहर का गेट खोलकर पूना और लताम्रा के पास से होता हुआ जब मैं आगन  
में पहुँचता हूँ दरशी का गुनाही बेहरा मधुर मुस्कान के साथ मेरा स्वागत करता है।  
दम बक्त या तो वह घर की सफाई करण म लगी होती है या सीने पिराने क काम  
में—लगता है जैसे काम क बिना उस का जीवन साधक न हो सकता हो। वह कोई  
भी काम कर रही हो मुझे देखत ही उमे मभी काम भूल जाते हैं जैसे वह मुबह म  
मेरा ही इतजार कर रही हो। जिदगी का हर पल मेरे ऊपर योद्धावर करने के  
लिए वह तयार हो जाती है। उस वक्त जब वह अपने प्यार परिपूर्ण पोरा से मेरी  
दह का स्पस करती है और मेरे कपडे को खूटियो पर लटका देती है उस वक्त ऐगा  
प्रनीत हाता है जस सार दिन की यातनाम्रा की पीडा के विय को गिव रूप धारण  
कर स्वय ही पी जाता चाहती हो। उस वक्त मैं एक अलौकिक मस्ती के ध्यानम म  
हाता हूँ। मुझे लगता है जैसे मैं सत्य-खड म विचर रहा होऊँ। सत्य-खड म रहने  
वान लोग क्या मेरे से ज्यादा सुखी हाग ? यह एक ऐसा स्वग है जहाँ मैं इद्र हूँ  
और दरशी मेरी अलका मुस्तरात पून और दरशी। मेरी अलका।

पर पिछले कुछ अरने स दरगी मुझ स मरा यह स्वग छीन लना चाहती है ।

गाम की चाय उधेदबुन म ही खत्म हा जाती है । इसस पहल कि म उम का सार दिन क अपन रोजनामके म स कोई दिलचस्प बात सुनाऊ—वह पहले ही अपना बात सुनान के लिए तयार हाती है । बहुत सी इधर उधर की बाता की भूमिका क बाव रह रहती है— वह है न आप क दोस्त सम्बरवाल की पत्नी कीर्ति ।

हा क्या हुआ कीर्ति को ?

उस को भी स्कूल म सविस मिल गई है ।

अच्छा ! बहुत बुरा हुआ मैं जस खीभता हुआ कहता हूँ ।

बुरा क्यों हुआ ? वह भी तल्प हा जाती है । पर मैं तल्की के वातावरण का सहन बनाने क लिए कहता हूँ—

बस तुम बुरा ही समझे । इस वकन मैं बहुत कुछ कहना चाहता था पर मुझ कुछ भी तो नहीं सूझता और मैं बेमतलब इधर उधर की लगाता हूँ ।

देखो न मरी दरगी औरतो का नौकरी करना बड़ा खतरनाक है । आज जितनी बुरी हालत नौकरी-पगा औरता की है वसी और किसी की नहीं ।

कम ?

तुम देखती ही हो कि वमो म औरता का कितना बुरा हाल होना है । अगर वर्षा के दिन हा तो कहर ही तो है ।

वर्षा क्या सारा बप होती है ?

सारा बप तो नहीं पर सारा बप कोई न कोई मुसीबत वर्षा के समान आता ही रहती है और और

मेरी इन निरर्थक बातों क प्रागे उसे हथियार डालने पडते हैं । उस का चहरा उतर जाता है और लगता है जम नयनो के कोरो म सारा पानी छलक रहा हो । इस वकन लगता है जम उस की नौकरी करने की आकाशा छटपटा कर आत्महत्या कर रही हो—क्या मैं इतना जालिम हूँ ?—नहीं ।

और मैं उसकी तसल्ली के लिए कहता हूँ— मेरी प्यारी म भल ही औरता की नौकरी के पक्ष म नहीं हूँ पर म लगातार कोशिश करता हूँ कि तुम्हें नौकरी मिल जाए । मैं जानता हूँ कि तुम सारा दिन घर म अक्ली बोर हो जाती हो । नौकरी करन स तुम्हारा व्यवित्त भी तो विकसित हो जाएगा—है न ?

और मैं फिर कागजी फूला को खिलन देता हू । यानी इस वकन मैं प्रम दृष्टि म उम की ओर दखना हू और वह खुग हो जाती है ।

बचारी औरत !

जिस दिन स उसन एम्बरान्दरी डिजाइनिंग की ट्रेनिंग ला है बस नौकरी क सिवा और कुछ सोच ही नहीं रहा । नौकरी करन की आकाशा उस की नस नम म समा गई है ।

कई बार जब हम नान म बठ हाते हैं और घर क प्राग स अचानक ही बाइ प्रमन खिलखिलाना और चहकना हुआ मुन्त्र जाच निकल जाता है तो दरगा की दृष्टि

उसी बिंदु पर केन्द्रित हो जाती है—वह औरत अपन पति के कदम-ने कदम मिला कर बड़ अभिमान से चल रही नजर आता है। उस का कद अपन पति से छोटा होते हुए भी वह अपन कद-काठ से पति के समान लगती है। मेरे बोलने से पटन ही दरशी कहती—' यह औरत जहर नौकरी करती होगी।

'तुम्हें कम पता चला ?'

जब तक औरत नौकरी नहीं करती, उस में स्वाभिमान की भावना उभर ही नहीं सकती।

और फिर वह दूर जा रहे उसी जोड़े की ओर देखती हुई नजर आती है। मैं कल्पना में ही अनुभव करता हूँ जब वह दूर जाने वाले पति पत्नी में और दरशी हो। फिर मैं कल्पना करता हूँ कि यदि दरशी को नौकरी मिल जाए तो उस में कितना स्वाभिमान उभर आएगा। उस चाल में कितनी दृढ़ता आ जाएगी। गायब उस का व्यवहार मरे जीवन पर हावी ही हो जाए और मैं दब जाऊँ ? इस बिंदु पर आ कर मेरी विचार मूखला चटक जाती है और मुझे महसूस होना है कि दरशी के साथ चलता हुआ मैं जम निरीह सा लग रहा हूँ। मैं सूखे पत्ते के समान काप जाता हूँ जब मैं कोई भयानक सपना देख लिया हो। क्या यह सपना सब हो जाएगा ?

इस वक्त भी दरशी दूर जाते हुए उसी सुन्दर जाड़ की परछाई का देखती जा रही है। उसकी गलन मुकी हुई, आँखें नम, और चेहरा पर कापती ली जमा आत्म-वि वास। अभाव की साकार प्रतिमा दरशी। मामूम और निवस ।

इस झूठ में वह मुझ बड़ी भली लगी। यह दृश्य मेरे लिए कितना गानित्यापक था ? और मैं खुश हुए बिना न रह सका। मैं मुस्करा पड़ा और हन्की भी हँसी मेरे होंठों से काप गई। मेरी यह रहस्यमयी अवस्था देखकर दरशी की ममाधि टूट गई और वह छटपटा कर बोली— आप का क्या हुआ है ? उस की आनाज काप रही थी। मैं खुश हाकर झूठ-मूठ कह दिया—' मैं सोचना हूँ अगर तुम्हें भी नौकरी मिल जाए तो हमारी जिंदगी भी उसी सुन्दर जोड़ के समान हो जाए और और तुम भी तुम भी

भाग मैं कुछ न कह सका। झूठ बोलना जम मरे लिए मुश्किल हो गया हो—मारक विष। पर दरशी के ता खूनी से आँसू निकल आए और अत्यन्त प्रसन्न हो कर वह मेरे लिए काफी बनाने के लिए रमार्क में चली गई।

कई बार अखबार पढ़ते हुए अचानक ही मेरा नजर एक पटिया नी खबर पर जा कर रुक जाती और मैं कितनी ही देर तक उस पढ़ता रहूँगा—यह खबर एक ऐसी औरत के संबंध में होगी जो नौकरी करत हुए अपन दपन में हा किसी अति-स्टैंड में प्रेम-बंधन में बंध कर किसी और गृहस्थ खनी जानी है। जब यह खबर अखबार खबर में दरशी का सुनाता हूँ तो उस का रंग पीला पड़ जाता है हाथ काप काप जाने हैं और वह स्वयं जन्नी से अखबार की पवित्रता पर नजर दौंगती है—जम-जम उस के खदरे का रंग उभता है मैं जमे मस्त होना जाना हूँ। और खबर है जमे दरशी

बेचनी की सूनी पर पटक रही हो। उस को घोर भी लग गगन के लिए मैं बड़ बटीन  
दृश्य में गगना हूँ—

माना कि विज्ञान न बड़ी तरक्की की है। आज इंसान चाँद पर भी पहुँच चुका है।  
घोरता का बराबरी के हृष भी मिन गए है, पर क्या लाभ? जब तक भोगता की  
जिन्दगी में आचरण की पवित्रता घोर दृष्टता नहीं आनी—सारी इंसानी तरवरी  
बेकार है।'

इस बात पर दरगी ठड मन से पलंग पर जा सटती है और कई दिन तक उग के  
चहरे पर पतभङ पसारा रहता है। बगीचे में तिल हुए फूल बनार लगन हैं। और  
बर्षा की बूँदा में हमारी जिन्दगी में कोई रोमांस नहीं आता।

पिछले दिन में तो मैं दरगी की जिन्दगी को दब घुट कर खन के लिए एक बटून  
ही घटिया किस्म की हरकत कर बँटा हूँ और मेरी आत्मा एक जल्मी परिदे के समान  
सहमी हुई छत्पटाती रही है।

और एक दिन अचानक ही दरगी हाथ में भसवार पकड़े मरे सामने आ खड़ी  
होती है। उस के चहरे पर गभीर शक्ति है जग इस सागर में कोई हनचन मचने  
वाली हो। वह उस दिन वाली खबर का आखिरी क्षण पन्न के लिए मुझे कहती  
है—पत्र कर मुझ पता चलता है कि उस दिन अतिस्टेंट के साथ भाग जान वाला वह  
औरत असल में कोई घरलू स्त्री नहीं थी। वह तो कोई परित्यक्ता औरत थी जो अपनी  
कलकित जिन्दगी को साथ के करना चाहती थी। मैं पडपडा कर साँस सने के लिए  
तडपता हूँ और दरगी से नजरें चुरा कर जल्दी से फूलों की ओर देखता हुआ कहता  
हूँ— दरशी! ये फूल मुझे बगीचे में लग अच्छे लगते हैं इन की खुशबू को यही रहने  
दो दरशी मेरी प्यारी। देखो न ।'

पर आग में कुछ भा नहीं कह सकता कुछ भी नहीं।

दरशी अभी तक मरे सामने खड़ी है और मेरी दनीना के सारे हथियार बुद कर  
देना चाँती है। मैं मन ही मन सोचता हूँ कि यह औरत स्वाधीन होकर जहर एक  
दिन मरे मकाबल में खड़ी हो जायेगी अपने आप को मुझ से उत्तम समझेगी।

मैं फिर उस से नजरें बचा रहा हूँ पर वह हर बार मेरी नजरा का पकड  
लेती है।

कन में एम्पनाइमट एक्सचेंज गई थी ।'

तुम? मैं काँप गया।

हा, 'उस की आवाज ऊँची होते होते और उची हो गई।

'डीलिंग क्लक ने बताया कि बहन जी आप को पिछले हफ्त इण्टरव्यू कांड भजा  
था—सिफ एक ही कडीडेंट था क्या कोई इण्टरव्यू कांड आया था?'

'हां आया था पर मैंने फाइ दिया असल में मैं मैं'

और मैं उस को सब कुछ सच सच बता दिया कि मैं क्यों उस को नौकरी नहीं  
करने देना चाहता।

'दो सौ की नौकरी करके मैं इस घर का और भी सुंदर बना सकती हूँ।

‘पर पर अब क्या हो सकता है । छोडो ख्याल नौकरी का । नौकरी जिंदगी म बहुत बडी चीज नहीं है ।’

मैं बहुत प्रमत्न था । अपन पडयत्र म मैं सफल हो गया था । पर मरी बात अन-सुनी करके वह उसी दृढता से कहती गई— काड फाडने के वक्त आप ने इण्टरव्यू की तारीख नहीं लेखी शायद । मुझे इण्टरव्यू काड और मिल गया था । आज मैं इण्ट-रव्यू करके अप्वाइण्टमट लेटर ले आई हूँ ।



# वंचिता

गुलज़ारसिंह सधू, १९३५

---

नई पीढ़ी के कहानी कहनेवाले म गुलज़ारसिंह सधू का नाम पहली पंक्ति में आता है। पत्राच के प्रामाण्य जीवन का विचित्र गमन में यह बहुत कुशल है। सधू की अनन्त कहानियाँ प्रसिद्धी हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में अस्तित्व में हैं। इन्होंने कुछ प्रसिद्धी और हिन्दी उपन्यासों का प्रकाश भी किया है।

सधू की कहानियों का एक समूह हमें दे हाणों नाम से प्रकाशित हुआ है।

---

इस बार जब नसीब अपनी बहन के विवाह में गाँव आया तो जम्मू वाली बेव (बूढ़ी चाकी) अचरस से लाचार थी। बेव का एक हिस्सा बजान हो चुका था और वह अपने उस हिस्से के किसी अंग को बिना दूसरे हिस्से के अंगों की सहायता के नहीं हिना सक्ती थी। छोटी उँगली की हरकत तक भी उसके अंगन बस में नहीं थी। दिन रात खटिया पर पड़ी रहती जो उसके बहू-बेटों ने भूम वाली कोठरी में डाल रखी थी। बेटे तो पहल ही उसके काबू में नहीं थे, पर अब तो बहू भी उसकी बात पर कान न देती। भूमे की कोठरी वाली खटिया पर पड़ी बेव इस ताक में रहती कि चारा में से कोई एक बहू उस तरफ से गुजरे और वह अपने मन का सारा रोष उस पर निकाले। उमे लगता कि जब से वह बीमार पड़ी है घर का कोई भी काम उस तरह नहीं चल रहा था जसा चलना चाहिए था। उस लगता कि भस गाय की नाँद पर बाँध दी गई है और गाय बकरी की खूटी पर। कई बार वह नीले में ही बडबडा

उत्पत्ती, "इन छोना का मुगिया के दडरे म क्या ठूम रहे हो और फिर इस बडे मुगों का ममन की जजीर क्या डाल रखी है।' कोई आश्चय नहीं था अगर वह यह भी सोचती है कि उमकी छोटी बहू बडी बहू की खाट पर जा लटी है और बडी बहू मेंभली की खाट पर। पर वह बवस थी मन ही मन बुडा करती।

बव के बटो को बव के रोग का बडा दु ख था। किमी न जगली बबूतर का मास खिलाने की राय दी तो उहाने आसपास के अये कुआ के सारे बबूतर एक एक कर खत्म कर दिए। किसी न कोई टीका बताया तो उहाने जहा तक हो सका टीके भी लगवा दिए। खात पीते जमीनारी घराने म छोटे मोटे खर्चों म फन ही क्या पडता था? किसी को बस यह पता चल जाए कि कुछ करने घरन स बिपना निकल सकता है। पर अब तो यह बात बव भी जान गई थी कि इलाज किसी के बस का नहीं रहा था। इस निराशा के बढने स वह और भी जल्दी-सीधी बातें साचने लगती। जो बातें अपनी बहूआ सच पूछा जाए तो गाव की सारी बहूआ के बारे मे उसके दिल मे चक्कर काटती रहती थी अब किसी न किसी रूप म बाहर निकलन लगी। गाव का कोई भी आदमी उसकी खबर लन न आता। बहू-बट भी राटी पानी मिगहान रख एक तरफ हट जाते। अगर उसस कोई बान करता तो एसा आदमी जो नसीब की तरह कई महीने बाहर रहकर कभी-कभार छुट्टी पर आता हो।

नसीब का जम्भू वाली बेव की बान सुनकर बडा दु ख हुआ। एक चलता फिरता व्यक्ति जो गांव के हर जीव की खबर लेकर ही पूरी नीद सो सकता था कसे सारा दिन खटिया स लगकर पडा रह सकता है। नहीं तो कौन सा मातम था जिसकी अगुआ बेव न होती? कौन सा कारण था जिसम उसकी राय न ली जाती? कौन सी दीवार थी जा बिना उसकी राय क बनाई गई हो? कौन सा कुआ था जिसका बड पटता अपनी आखा स न देखा हो? चक्कन्ती के दिना म उसे भूमि के चप्प-चप्पे की कीमत का ज्ञान था। यहां तक कि एक एक नुए अथवा एक एक पड का जो मोल आका था वह उस के दिल पर खुदा था। यह उसी की हिम्मत थी कि उसन अपन सता क लिए बढिया-स-बढिया जमीन म जगह बना ली थी। उमे यह भी मानूम था कि स्कून का मास्टर किस लडकी की और दखकर गुजरता है या गाव के पटवारी का किस क घर म आना-जाना है। बीमार हान स पहल जब पन्द्रह साल के एक जाट लडके न करीब तेरह साल की बहार लडकी को घडा उठवात हुए यह कहा था कि इतने भार से उस की कभर लचक जाएगी ता और किसी को मानूम हो या न जम्भू वाली बेव नरूरी जानती थी कि जवाब म लडकी ने जाट के लडक को गोद म उठा लेन का दावा किया था। अब जब कि बवे को बीमार पडे छ महीने हो चल थे वह क्या जानती थी कि वह कहार लडका जाट लडके को गोद मे उठा पाई थी या नहीं?

नसीब का दिल भर आया। जब वह बेवे को मिला तो बव ने छ महीन की जमा हुई बातें उसे कह सुनाइ। उस साल मौसम कितना खराब रहा था। भूमलाधार बरसात। फूलती फसल को कीडा खा गया था और लहलहाती फसल का टिड्डी दल। टिड्डियां तो नीम के पत्ते तक चट कर गई थी सारी बनस्पति रुण्ड मुण्ड नजर आ रही

थी। जिस पर ज्योतिषी घन न लन न। पहन कि अष्टग्रह का योग है। बच्चे भी जानते थे कि हवा पानी और मिट्टी एक दूसरे में घुन मिल जाते हैं। यह बात अलग है कि राजाना जीवन के काम बाज उसी तरह जारी थे। किमान उमी उरमाह स टिड्डी दल स फसलें बचा रहे थे। लडक-लडकियाँ पहन की तरह ही बुझा जोहडों, भट्टिया पर मिचते और घाँवें लडाव के घाँव पानी की बाल्टी लेकर या भट्टी स दान चराते घाँवें बचात सोन घात।

बच के पाना तब कोई बात पहुचती और चाई न पहुचती। हा' एक अफवाह जो प्राग की तरह पंजाब भर में फैल गई थी, 'बच तब भी पहुच गई। लोग कहते थे कि भागड की भील में इतना पानी जमा हो गया था कि भाखड का बाघ अथ अथिब दर उस नहा राक सबना। बांध टूटने के नुक्सान बच्चे-बच्चे को जबानी याद थे। सार पंजाब की रानी धरती बाड के समुद्र में विलीन हुआ चाहती थी। कीबर बरियाँ तो क्या पीपल और बरगद के पडा तब ने जड स उखड जाना था। जल प्रल का अतर मिटा ही चाहता था। पानी के प्रवाह स दरियाआ के रस बदल जाते थे। नती नाने जरनैली सडकी की तरह वह निबलत थे।

दिल ही दिल में हर आदमी डर रहा था। पर ऊपर ऊपर से सब हस रहे थे। अगर कुछ निशक थे ता छोट छोट बच्चे। किसी यात्री ने अयरोट खेलते हुए बच्चा से पूछा था कि व इतने प्रलयकारी बवडर में कम उछल-कूद रहे थे। एक नउरे ने बकिरा स कहा था और क्या करें बापू कहता है कि थोडे दिना तब दुनिया खरम हान वाली है। नसीब भी इस स्थिति में नहीं डोला था। जम्मू वाली बेब खुन था कि नसीब न लोग की तरह डरते हुए अपनी बहन के विवाह की तारीख आगे नहीं सर बाइ थी। वह खुश थी कि वह नसीब की मिनन-समाजत कर लडकी के विवाह में जा बठगी। क्या हुआ अगर विवाह के मीने पर उसकी बात अनमुनी कर दो जाएगी उम कुछ कहने का मौका तो मिलेगा।

बटा नू आ ही गया भल भागो। मुझे लडकी का विवाह जरूर दिला देना। मैं तो यहा बड में पडी रहती हू बम उस एक दिन मुझे चौकी पर बिठा कर गामियान में ले चलना। क्या पता मुझे और बितने दिन जीना है? मरने से पहले मैं गाव का मुह ही देखूँगी।"

इतना कहकर जम्मू वाली बचे चुप हो रही। इससे अथिब कह भी क्या सकता थी? और फिर उमे सूभा कि वह उसे अपने राग का बात ही पूछ देले कि क्या अब तक किसी न अथरग का इलाज नहीं ढूँढ निकाना। क्या बचत्ता में भी इसकी दवा नहा? क्या वह फिर स गाव के कारना में भाग लेने के योग्य हो जाएगी? क्या वह फिर स हूँट पुँट होकर तिनका तिनका पिखरने जा रहे अपने परिवार या गाव या अपनी मुट्ठी में लकर इबट्टा नहा कर सकती थी? उसके राग की कोई न कोई दवा ता कही-न कही जरूर होगी। ठेकदार सतराम में कोई ऐसी वस्तु अवश्य मिल सकती थी, जिसमें वह पहले की तरह ही उठ बठ सक। सतराम ने आधे गान का भला किया था क्या वह एक दुनिया की परियाद नहीं मुनगा? 'बच के दिल में घाता कि

मिस्त्री सतराम और नसीब ईश्वर को गन्ध से पकड़ कर उसके पास ले आएँ और वह उसके पाँवा पकड़ कर उसकी दो हुई बीमारी उसे लौटा दे।

पहल बारात म बैठने की और अब बीमारी स छुटकारे की बात न जम्भू वाली 'बब' के चेहरे पर एक अजीब सी चमक ला दी। नसीब को लगा कि वह आधे शरीर से ही उठ कर चलन फिरने लगेगी। नसीब ने 'बेबे को डाइस बधाइ कि आज की दुनिया म कोई रोग ला इलाज नही। डाक्टरों के पास हर एक रोग की दवा है, इस-लिए बेबे को इतना निराश नही होना चाहिए। वह शायद विलकुल अरोग भी नहीं होना चाहती थी। छ महीने म उसके विचार म दुनिया इतनी बदल चुकी थी कि फिर से 'बेबे' उसे काबू म नही ले सकती थी। उसके बहू-बेटे, उसके सग-सम्बन्धी और के और हो गए थे। वह उन्हें किस तरह मजबूर कर सकती थी कि वे सारे उसे पट्टे सा ही आदर और सत्कार दें। उसे लगता जस उसकी बीमारी के दौरान सारा गाँव बिगड चुका है। एक बार बिगड कर कौन कब सुधरता है? उसके गाँव का अर्जिनवीस बब' को बताया करता था कि अगर वह चार दिन बाद काम पर जाता ता तहसील की दुनिया बदल चुकी होती थी। उसक पक्के ग्राहक भी नए अर्जिनवीस से काम करवाना शुरू कर देते थे। बेबे तो भला छ महीने मे बीमार थी। न जाने उसकी पत्नी अब किस बुडिया ने सभाल ली होगी। न जाने वह कौन सी बुडिया थी जिसका रोग जम्भू वाली बुडिया के समान चनता था। बब को उस दुनिया से डर लगता जिसकी वह राजी होकर भी मालकिन नही हो सकती थी। अब किस परवाह थी उसकी। वह उदास थी। उसने किसी की बारात से क्या लेना था किसी की खुशी म उसे कौन सी डाइस थी। वह खुद मरे बिछुडो मे भी गई-बीती थी। नसीब चुपचाप जम्भू वाली 'बेबे' के चेहरे की ओर देखता रहा। उसके माये पर उसकी चित्ताएँ छपाई के अक्षरों की तरह प्रत्यक्ष थी। उस की आँखें दूर कही गूँथ म गडी हुई थी। वह अपनी आदर की आख से लोगो को अपटग्रह स भागते हुए देख रही थी। वह देख रही थी कि कई लोगो न घरों म से निकल कर अपने डेरे ऊँचे ऊँचे टीलो पर लगा लिए है। उस लगता कि उसका सारा परिवार उसे भूसे की कोठरी म छोड़ कर माता रानी के टीले पर जा बठा है। वह देख सकती थी कि उसके परिवार के एक भी जीव को उसके साथ कुछ लगाव नही रहा था।

ईश्वर की इच्छा स भाखडे की भील म अधिक पानी इकट्ठा हो चुका था। 'बेबे' को भील का पानी विष धोलता नजर आ रहा था। पानी जम आदर-नी आदर मे ऐंठ रहा हो। वह जानती थी कि ऐसी अपवाह भूठ नही हुआ करती। उसने अपना जवानी म कोपटे के भूचाल की अनेक अपवाहें सुनी थी और उस बहुत दुख भी हुआ था। पर भाखडे के बाध का टूटना ता उस ईश्वर का वरदान सा लगता था जो एक बारगी ही सारे पंजाब को मुक्त कर देगा। उस के जी म आता कि वह किसी तरीके स उस इंजीनियर को मिल जिसने इतना पानी बंद कर रखा है। बब का निश्चय था कि इंजीनियर को इस बात का पूरा ज्ञान था कि एक दिन जब वह अघ-रग के कारण जिंदगी स निराग हो चुकी होगी तो यह इतना बडा बांध मक्की की

थी। जिम पर ज्यादागी चान लन एन। चान कि घण्टा का याग है। बच्च नी जानो थ कि ह्या पानी घोर मिट्टी एन दूगर म घुन मिन जाने हैं। यह वान अनग है कि राजाना जीवा के काम काज उमी तरह जारी थे। विमान उमी उसाह स मिट्टी दल म फमलें बाा रह थ। लठक-लठकियाँ पहन की तरह ही कुमा जीहना भट्टिया पर मिनत घोर घाँसें लहान थ बाा पानी की घाटी लकर या भट्टी म दान घवाते घाँसें बचात लोटा घाते।

'बव क बाना तव कोई बात पढ़ुचनी घोर काई न पढ़ुचती। हाँ' एक अफ याह जो भाग की तरह पजाव भर म पन गई थी 'बन तव भी पढ़ुच गई। लाग बहने थ कि भागद की भीन म इतना पानी जमा हा गया था कि भासड का बांध अब अधिक् दर उम नहीं राव सकता। बांध टूटन के नुक्मान बच्च-बच्चे का जबाना याद थ। मार पजाव की रानी घरती बाा क समुद्र म विलीन हुमा चाहती थी। कीकर बगियाँ तो क्या पीपल और बरगद के पडो तव न जड से उखड जाना था। जल बल का अंतर मिटा ही चाहता था। पानी क प्रवाह स दरियाघा के रुस बाल जात थ। नदी नाल जरनीली सडका की तरह वह निबलत थे।

दिल ही दिन म हर आदमी डर रहा था। पर ऊपर ऊपर स सब हम रह थ। अगर कुछ नि गव थ ता छोट छोट बच्च। किसी यात्री न अखरोट खेलते हुए बच्चा स पूछा था कि व तने प्रलयवारी बवडर म कम उछन-कूद रह थे। एक लडके ने दफिकरा म कहा था और क्या करें बापू कहता है कि याड दिना तव दुनिया खरम हान वाली है। नसीब भी इस स्थिति म नहीं डाला था। जम्मू वाली बेव खुस थी कि नसीब न लोगी की तरह डरत हुए अपनी बहन के विवाह की तारीख आग नहीं सर-काई थी। वह खुस थी कि वह नसीब की मिनत-समाजत कर लडकी के विवाह म जा बठगी। क्या हुमा अगर विवाह के मीने पर उसकी बात अनसुनी कर दी जाएगी उन कुछ बहन का मौका तो मिलेगा।

बटा त आ ही गया भल भागो। मुझे लडकी का ब्याह जरूर दिख देना। म तो यहा बन्न म पडी रहती हूँ वस उस एक दिन मुझे चौकी पर बिठा कर गामियान म ले चलना। क्या पता मुझे और बितने दिन जीना है? भरने स पहल में गाव का मुह ही दल लगी।

तना कहकर जम्मू जाती बवे चुप हो रही। इस अधिक् वह भी क्या सकती थी? और फिर उस सूभा कि वह उस अपन रोग की बात ही पूछ दसे कि क्या अब तक किसी न अघरम का इलाज नहीं दूड निकाना। क्या बलकत्ता म भी इसकी दवा नहा? क्या वह फिर स गाव के कारना म भाग लेने के योग्य हो जाएगी? क्या वह फिर स हूट पुट होकर तिनका तिनका विखरन जा रह अपने परिवार या गाव म। अपनी मुट्टी म लकर इकट्टा नहा कर सकती थी? उसने रोग की कोई न कोई दवा तो बही-न बही जरूर हागी। ठकदार मतराम म कोई ऐसी बस्तु अवय्य मिन सकता थी जिमम वह पहल की तरह ही उठ बठ सक। सतराम न आध गाँव का भला किया था क्या वह एक बुढिया की परियाद नहीं मुनगा? वर के दिल म आता कि

मिस्तरों सतराम और नसीब ईश्वर को गदन स पकड़ कर उसके पास ले आएँ और वह उसके पावा पकड़ कर उसकी दी हुई बीमारी उसे लौटा दे।

पहल वारात म वठन की और अब बीमारी स छुटकारे की बात न जम्मू वाली 'बवे' के चेहरे पर एक अजीब सी चमक ला दी। नसीब का लगा कि वह आधे शरीर से ही उठ कर चलन फिरने लगेगी। नसीब ने बवे को डाढ़म बँधाई कि आज की दुनिया म कोई रोग ला इलाज नही। डाक्टरों के पास हर एक रोग की दवा है इस-लिए बवे को इतना निराश नही होना चाहिए। वह शायद बिलकुल अरोग भी नही होना चाहती थी। छ महीन म उसके विचार म दुनिया इतनी बदल चुकी थी कि फिर स बवे उस काबू म नही ल सकती थी। उसके बहू-बटे उसके सग-सम्बन्धी और के और हो गए थ। वह उन्हें किस तरह मजबूर कर सकती थी कि वे सारे उमे पहले सा ही आदर और सत्कार दें। उसे लगता जमे उसकी बीमारी के दौरान सारा गाव विगड चुका है। एक वार विगड कर कौन बव सुघरता है? उसके गाँव का अर्जनिवीस 'बवे' को बताया करता था कि अगर वह चार दिन वाद काम पर जाता ता तहसीन की दुनिया बदल चुकी हाती थी। उसके पक्क ग्राहक भी नए अर्जनिवीस स काम करवाना गुरू कर देते थे। बवे तो भला छ महीने से बीमार थी। न जाने उसकी पदवी अब किस बृद्धिया ने सँभाल ली होगी। न जाने वह कौन सी बृद्धिया थी जिमका रोव जम्मू वाली बुद्धिया के ममान चलता था। बवे को उस दुनिया म हर लगता जिसकी वह राजी हाकर भी मालकिन नही हो सकती थी। अब किसे परवाह थी उसकी। वह उदास थी। उसन किसी की वारात से क्या लेना था, किसी की खुशी से उस कौन सी ढाढ़स थी। वह खुद मरे बिछुडा से भी गई-बीती थी। नसीब चुपचाप जम्मू वाली बवे के चेहरे की ओर देखता रहा। उसके माथे पर उसकी चिताएँ छपाइ के प्रक्षरा की तरह प्रत्यक्ष थी। उस की आँखें दूर कही गूम म गढी हुई था। वह अपनी आँर की आँख से लोगों को अप्टग्रह स भागते हुए देख रही थी। वह देख रही थी कि कई लोगो न धरो म से निकल कर अपने डेरे ऊँच-ऊँचे टीला पर लगा दिए हैं। उम लगता कि उसका सारा परिवार उस भूस की कोठरी म छाड कर माता गनी के टीने पर जा बटा है। वह देख सकती थी कि उसके परिवार के एक भी जीव को उसन साथ कुछ लगाव नही रहा था।

ईश्वर की इच्छा से भासडे की भील म अधिक पानी इकट्ठा हो चुका था। बव को भील का पानी विप घोलता नजर आ रहा था। पानी जन अदर-ही घन्टर मे एँठ रहा हो। वह जानती थी कि एसी अफवाह भूठ नही दृमा करती। उसन अपना जवानी म थोपट के भूचाल की अनेक अफवाह सुनी थी और उस बहुत दुख नी दृमा था। पर भासडे के बाघ का टूटना ता उमे ईश्वर का वरदान मा लगता था जा एक बारगी ही सारे पजाव को मुक्त कर देगा। उस के जी म आता कि वह किसी तरीके मे उस इजीनियर को मिले जिसने इतना पानी बंद कर रखा है। बव का निश्चय था कि इजीनियर बा इस बात का पूरा जान था कि एक दिन जब वह अघ-रग के कारण जिंदगी स निराश हा चुकी हागा तो यह इतना बस बांध मक्की की

थी। जिस पर ज्यातिपी चन न लन दत। बहने कि अष्टग्रह का योग है। बच्च भी जानते थे कि हवा, पानी और मिट्टी एक दूसरे में धुल मिल जाते हैं। यह बात अलग है कि राजाना जीवन के काम काज उसी तरह जारी थे। विमान उमी उस्ताह स टिड्डी दल में फमनें बचा रहे थे। नडके लडकियाँ पहल की तरह ही कुआ, जौहडों भट्टिमा पर मिलत और आँखें लडान व बाद पानी की बाल्टी लेकर या भट्टी में दाने चवाते आँखें बचाते लौट आते।

बब' व कानो तक कोई बात पहुँचती और कोई न पहुँचती। हा! एक अफ बाह जो आग की तरह पंजाब भर में फल गई थी, बेब' तक भी पहुँच गई। लोग कहते थे कि भाखड़े की भील में इतना पानी जमा हुआ था कि भाखड़ का बांध अब अधिक दूर उसे नहीं रोक सकता। बांध टूटने के नुबतान बच्च-बच्चे को नबानी याद थे। मार पंजाब की रानी धरती बाड के समुद्र में विलीन हुआ चाहती थी। कौबुर वरिषाँ तो क्या पीपल और बरगद के पेड़ों तक ने जड में उखड जाना था। जल थल का अन्तर मिटा ही चाहता था। पानी के प्रवाह स दरिमाभा के रस बरल जात थे। नदी नाले जरनला सडका की तरह बह निकलत थे।

दिल ही दिल में हर आदमी डर रहा था। पर ऊपर ऊपर स सब हस रहे थे। अगर कुछ नि राक थ ता छोड छाट बच्चे। किसी यात्री न अस्परोट खेलते हुए बच्चा में पूछा था कि व इतन प्रलयकारी बबडर में कैसे उछल-बूद रह थे। एक लडके न बकिबरा स कहा था और क्या कर, बापू कहता है कि थोड़े दिना तक दुनिया खत्म होन वाली है। नसीब भी इस स्थिति में नहीं चीना था। जम्भू वाली बेर खुश थी कि नसीब ने नागा की तरह डरत हुए अपनी बहन व विवाह की तारीख आगे नहीं मर-बाई था। व खुश थी कि वह नसीब की मिनन-ममाजत कर नडकी व विवाह में जा बठगी। क्या हुआ अगर विवाह के मौन पर उसकी बात धनमुनी कर दी जाएगी, उम कुछ बहन का मोबा तो मिलेगा।

बग नू आ ही गया भते नागा। मुझे नडकी का ब्याह जरूर किया देना। मैं तो मरू बन्न में पडी रहनी हूँ वस उस एक दिन मुझे चौकी पर बिठा कर गामिमान में ल चलना। क्या पना मुझे और मिनन दिन जीना है? मरते ग पढ़ने में गाँव का मुह ही दाव लगी।

इतना कहकर जम्भू वाली बब धुप टा रही। मन अधिक वह भाँ बपा सकता थी। और फिर उम सूभा नि वट उम अपन राग की बात ही पूछ दमे नि क्या अर तक किया न अररय का इन्तार नहा नू निवरात। क्या करवता में भी इन्तरी नू नहा? क्या नट फिर स गाँव व कारना में भाग लन व घाय्य हा जायगा? क्या वन फिर में हूँ-मुष्ट हाकर निवका निवरा निगन जा नू अपन परिवार या गाँव का अपना मुँगी में लकर इबट्टा नहा वर गवनो थी? उमरे राग की मोई न बाई दवा ता वन-न वन जरूर हागा। उन्कार मनगय में बाई एमा उम्बु अवरय मिन तकता थी मिनन वट पन्न की तरह हा उठ बठ मर। सनगम में बांध गाँव या गता निना या क्या वट एक सुविधा की परिग्या नू मुना? 'बब व दिन में भासा कि

मिन्तरी सतराम और नसीब, ईश्वर को गदन से पकड़ कर उसके पास ले आएँ और वह उसके पावो पकड़ कर उसकी दी हुई बीमारी उसे लौटा दे ।

पहले बारात में बैठन की और अब बीमारी से छुटकारे की बात ने जम्पू वाली 'बवे' के चेहरे पर एक अजीब सी चमक ला दी । नसीब को लगा कि वह आधे शरीर से ही उठ कर चलने फिरने लगेगी । नसीब ने 'बवे' को डाढ़स बंधाई कि आज की दुनिया में कोई रोग ला इलाज नहीं । डाक्टरों के पास हर एक रोग की दवा है इसलिए 'बवे' को इतना निराश नहीं होना चाहिए । वह शायद बिलकुल अरोग भी नहीं होना चाहती थी । छ महीने में उसके विचार में दुनिया इतनी बदल चुकी थी कि फिर से बवे उसे काबू में नहीं ले सकती थी । उसके बहू-बटे उसके सग-सम्य-धी और के और हो गए थे । वह उन्हें किस तरह मजबूर कर सकती थी कि वे सारे उस पहले सा ही आदर और सत्कार दें । उसे लगता जैसे उसकी बीमारी के दौरान सारा गाँव विगड चुका है । एक बार विगड कर कौन कब सुधरता है ? उसके गाँव का अर्जिनबीस बवे' को बताया करता था कि अगर वह चार दिन बाद काम पर जाता तो तहमील की दुनिया बदल चुकी होती थी । उसके पक्के ग्राहक भी नए अर्जिनबीस में काम करवाना शुरू कर देते थे । बवे तो मला छ महीने में बीमार थी । न जाने उसकी पदवी अब किस बुढ़िया ने संभाल ली होगी । न जान वह कौन सी बुढ़िया थी जिसका रोव जम्पू वाली बुढ़िया के समान चलता था । वेव को उस दुनिया से टर लगता जिसकी वह राजी होकर भी मालकिन नहीं हो सकती थी । अब किस परवाह थी उसकी । वह उदास थी । उसने किसी की बारात से क्या लना था, किसी की खुशी से उम कौन सी ढाढ़स थी । वह खुद मरे बिछुणे में भी गई-चीती थी । नसीब चुपचाप जम्पू वाली बवे के चेहरे की ओर देखता रहा । उसके माथे पर उसकी चित्ताएँ छपाई के अक्षरों की तरह प्रत्यक्ष थी । उस की आँखें दूर कहीं गूँथ में गड़ी हुई थी । वह अपनी आदर की आँख से तोगा को अष्टग्रह से भागते हुए देख रही थी । वह देख रही था कि कई लोगो ने धरो में से निकल कर अपने डेरे ऊँचे-ऊँचे टीलो पर लगा लिए हैं । उन लगता कि उसका सारा परिवार उस भूसे की कोठरी में छोड़ कर माता रानी के टील पर जा बैठा है । वह देख सकती थी कि उसने परिवार के एक भी जीव को उसका साथ कुछ लगाव नहीं रखा था ।

ईश्वर की इच्छा से भासडे की भील में अधिक पानी इकट्ठा हो चुका था । वह को भील का पानी विष पोलता नजर आ रहा था । पानी जम आर-ही आर में ऐंठ रहा हो । वह जानती थी कि इसी अफवाह भूट नहीं हुआ करता । उनमें अपना जवानी में कायट के भूचान की घनक अफवाहें सुनी थी और उन बहुत दुःख ना हुआ था । पर भासडे के बांध का टूटना तो उम ईश्वर का वरदान सा लगता था जो एक बारगी ही सारे पजाब को मुक्त कर दगा । उस के जी में आता कि वह किसी तरीके से उस इजीनियर को मिल जिमने इतना पानी कद कर रखा है । 'बवे' का निश्चय था कि इजीनियर को इस बात का पूरा पान था कि एक दिन जब वह अग्र-रग के कारण जिन्दगी में निराश हो चुकी होगी तो यह इतना बड़ा बांध मक्की का



तरह टूट जायगा।

'बब न गूय स दृष्टि इगवर नसीब की धार देगा घोर बोनी ही सय तुम जानते ही हाग इस भासठ क टूटने क धारे म । कितन तिन रप्ते हैं मना ? यह अभागा किसी दिन बटगा भी या नहा ' उसन झानिरी वाक्य अपन तिन पर बचूय धारू रगवर बहा ताकि नसीब यह न भाप ल कि भासठ का बाँच टूटन म बने बहुत घुरा है।

स्वाभाविक ही था कि नसीब बय क तिन म मडरा रह भासठ म सम्बन्धी त्रिचारा का नहीं भाँप सवता। वह यह भी जानता था कि एमी काई बान भविष्य म होने की नहा थी। 'तुम्ह हो बया गया है बने तुम ता या हो छरे जा रही हो। काई बाँप टूटन नहीं जा रहा। वह कोई ऐरे-गरे ने तो बनाया नहीं। वहाँ बारीगरा क हाथ लग है उसे। लोग सात ता ध्यप म तसी अपवाह पत्तात रहत हैं। तुम बचिबर हा कर लेटी रहा करो। उसने बय का ढाढस बघाई।

नसीब ने देखा कि 'बेबे' का चेहरा यह सुनकर घुस की तरह पीला पड गया। उसक एक ओर की नब्ज तेज तज चलने लगी। है ? वह घडवत दिल स बोली जैम वह ठगी गई हा। वह छटिया पर निरास निस्तज पडी थी जस उसक जीवित अग भी निर्जिव हा गण हा।

# एकाकी

राजेन्द्रकौर, १९३६

---

नई पीढ़ी की कहानी लेखिकाप्रा म राजेन्द्रकौर बहु-चर्चित लेखिका हैं। उनकी एक कहानी सत्ते कुमारीया (साता कुमारीया) की पजाबी म काफी चर्चा और प्रशंसा हुई।

राजेन्द्रकौर ने अब तक लगभग ४० कहानिया लिखी हैं किन्तु अभी तक उनका कोई संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। इस बीच इन की अनेक कहानियाँ हिन्दी में भी प्रकाशित हुई।

तहगी विधवा से सम्बन्धित एक मार्मिक कहानी इस संग्रह में ली गई है।

---

मीना ने आखिर रतना को एक दिन लिख ही दिया —

मैं बहुत ही अकेली हूँ बहुत ही अकली। मेरे चारों ओर अकेलापन है एक मूना-पन, एक वीरानगी एक उदासी। मैं इस भयावह एकाकी जीवन की घुटन में मर जाऊँगी। हो सके तो एक बार आओ अवश्य आओ, रतना।

मीना ने कई बार पहले भी ऐसा ही पत्र लिखने के बार में साचा था। परन्तु लिखा न था। अब उसे भय था कि उसका विचार फिर वही बदन न जाए। अब उसने वह पत्र उम्मी समय डाल दिया।

परन्तु पत्र भेजकर वह फिर सोच में पड़ गई कि उसने रतना का क्या निरता। रतना आया चार दिन, नहीं तो आठ दिन उसके पास रहगी आर फिर ?

फिर वही अकेलापन वही वीरानगी वही उदासी।

और अब यहाँ आन में रतना को न जाने कितनी मुसीबत भेलनी पड़। अपने

## पजाबी की प्रतिनिधि कहानियाँ

पति को मनाना पड़ेगा, वह तो खर मान ही जाएगा। उसके दो छोटे छोटे बच्चे हैं, उनको साथ लेकर आना, अकेली यात्रा और कितना बखेडा।

इही विचारो म ही सध्या की हल्की रोशनी गहरे अंधेरे म परिवर्तित होनी धारम्भ हो गई।

वह उठकर रसोई म गई और अपने लिए खाना बनाने लगी। खाना ही क्या बनाना था। वस दो रोटियाँ ही तो सबनी था उसने स्वयं के लिए। खाना बनाते-बनाते वह सोचने लगी कि यदि रतना आ गई तो घर म कितनी चहल पहल रहेगी। रतना तो हरदम खिल खिल हसती ही रहती थी। न हसनेवाली बात को भी हसने वाली बना देती थी। और उसकी हंसी भी कोई छोटी मोटी नहीं होती उसकी गुजार दूर-दूर तक पहुँचती है उसने आने से यह उदास और शांत घर हँसी स खिल उठेगा।

और उसके दो फूला स मुन्ना गुलाबी बच्चे—टोनी तथा टीना। उनकी तोतली तोतली बातें उनका हसना रोना जिद करना मचलना खेलना बिखेरना इस घर को रौनक से भर देगा।

उसकी एक ठण्डी आह निकल गई। उसके वक्ष म भरी ममता एक हसरत बन कर रह गई थी। इस अनुभव स उसके अंदर स एक बसक सी उठी और उसका मन बड़ा भारी सा हो गया। इस पीडा ने उस खाना भुला दिया। वह चुप चाप आँसू जाकर लट गई। अंधेरे म लेटी लेटी अपनी पीडा से लडती रही सधप करती रही दबाती रही और धीरे धीरे यह घुटन आँसुआ द्वारा वह गई।

उसने उठकर रेण्वी चला लिया और ठण्ण हो चुका खाना ही पाने लगी। आँसिर खाने स वह कितनी देर नाराज रह सकती थी। डाक्टर ने भी उस कहा था कि उस भूल लग चाहे न लग वह जबरदस्ती माना छाया करे। डाक्टर ने भ्रम बढाने क लिए उम कई टानिक भा बताए थे। मीना के टानिक ल भी रही थी परन्तु भ्रम भी मूड क साथ ही साथ बल जातो है। यदि मन जरा हल्का होता है चुप होता है तो वह भी अपना अधिकार आ माँगती है पूरे जारा म। किन्तु मन तनिक भी भारी हा जाए उगास हा जाए तो भ्रम डर की मारी वहाँ जा भागतो है। चाह कितना अच्छा स्वास्ति साधपणाय बना-बना कर इसका तिल लुभाया जाए वह सालस म नहा आतो।

और हमी दगा म मीना न छ मराने गुजार लिय हैं। अब उमका चहूँगा पीना जद आँसू आँसू का धसी हुई आँसा क गि कान चक। आँसा म उमन अनन पर स भी भयावह मूतापन था।

माना मान-मान वह फिर माव रहा था कि रतना के लिए और उमन बच्चा क लिए यन् नए-नए पक्वान बनाएगी। सब मिनकर हमी मत्र पर गम-गम माना गारेंगे। कभी साग कभी पूछी कभी । वह अपन मन म एक लम्बी निम्ट बनाना रही।

धारम्भ म ही उन मान-मान का बाद गोक नहा था हाँ दूगगा का बना-बना

कर उमे खिलाने म बडा भजा घाता है । उसका पनि खाने-पीने का बडा शौकीन था । वह स्वय रसोई म सडा हो मीना म भाति भाति के खाद्यपदार्थ बनवाना रहता था । लगभग प्रत्येक छुट्टी वाले दिन वह अपने मित्रो को खान पर निमन्त्रण दे घाता था । मीना न कई तरह की नई-नई डिग बनानी सीख ली थी ।

परन्तु यह सब बबल छ महीने तक ही रहा, और फिर उसका पनि उम सदैव क लिए बीरान कर गया, सूना कर गया, केवल छ महीने ही उसने विवाहित जीवन क बिताए थ । अब एक बप स वह विधवा थी । अभी न जान कितन दिन, कितने महीन, कितन बप उसने जीना था, इस सूनेपन म ।

विधवा होन क पश्चात् तीन-चार महीने वह अपनी ससुराल म ही रही । वहाँ उसके जेठ जिठानी और उनके बच्चे थे । वह जेठ, जिठानी के पास किम सहारे, कितन दिन काट सकती थी । फिर उसका भाई उम अपने पास ले आया । उसकी भी पत्ना थी, बच्च थ, दो महीन उसन वहाँ भी गुजारे, परन्तु भाई के पास इतन दिन रहन का भी उस क्या अधिकार था । उसके भाई ने कितनी कठिनाइयाँ भेन कर मुश्किल मे यह लडका ढूढा था और किसी तरह विवाह कर दिया था । अब मीना का भाग्य ही फूटा हो तो वह क्या करे ? उसके अपन बच्चे थे, परिवार था ।

और दूसरा मीना का था ही कौन ?

उम भाई के ही शहर म नौकरी मिल गई । अब छ महीन हो गए थे उस नौकरी करत । उसन रहन क लिए अलग जगह ले ली थी । साफ गिना-बुना थोडा सा उतका सामान था इस घर म और वह स्वय थी अनेली ।

मुम्ह उठकर वह स्वय अपने हाथ स घर को भाडती, पोछती, सजानी मँवारती अपना नाश्ता तयार करती और फिर तयार होकर काम पर चली जाती ।

वह भाई की कठोर निगरानी म पली थी । आरम्भ से ही सकोची और गम्भीर थी । पति उसका बडा हसोड और बातूनी था । उसके साथ म धीरे धीरे उस का मकोच भी दूर हो गया था, परन्तु अब फिर सब खत्म हो गया । अब अपन आफिस म वह चुपचाप रहती थी । काम के समय काम स मतलब रखती थी काम के पश्चात् सब को अपन-अपन घर जान की जल्दी होनी । कौन किसी की सुनता है ? इन छ महीना म आफिस म उसकी हैलो हैलो तक ही पहचान थी ।

एक दो जवान लडका ने इस जवान विधवा पर डोरे डालने की कोशिश की थी परन्तु मीना की और स कोई प्रोत्साहन न पा उनकी हिम्मत खत्म हो गई थी ।

सजी सबरी रगी, पुती कई लडकियाँ उसके साथ काम करती थी । वह उसका देखकर मुस्करा देती तो वह भी मुस्करा देती । काम क विषय म कभी कभी दा-बात बाता का आदान प्रदान भी हो जाता था ।

जिस बिल्डिंग म वह रहती थी उसी म एक प्रौढा स्त्री रहती थी, उसका पति था उमकी एकमात्र लडकी ब्याही हुई अपन घर सुखी थी । पति बाहर काम करन चला जाता तो पत्नी सारा दिन खाली बातें करन क लिए आदमी ढूढती रहती । यदि कार्द न मिलता ता नौकर पर ही बरसना आरम्भ कर देती ।

मीना को वह बाबूनी स्त्री बिचकून पगल नहीं थी। वह कई मीन-मगल निवान-निवान कर उसका पूरा जीवन के बारे में कितना कुछ पूछती रहती। अपनी उठना के बारे में दामाद के बारे में उसका घर वाला के बारे में न जान पना-पना विस्तारपूर्वक बताना शुरू कर देती कि वह धर्म हानि में ही न घाना और मीना राम उठनी। इन लिए जहाँ तक ही मीना अपने आपका उस स्त्री की याता की सिकार न बनन देती।

एक और परिवार था उस औरत के सात बच्चे थे। उनकी आयु में एक एक बच्चे का अंतर था, सब बूँबें हैंके करत पाल मुरभाण हुए बच्चे। उनकी माँ सारा दिन खीभती कुत्नी गुजार देती। उमर पास इतना समय कहाँ कि दा-बाग धाग बठपर बात कर सके।

एक और परिवार था। दो ही सदस्य थे। पति-पत्नी दाना ही नौकरी पगा था शाम को दाना इकट्ठे सभी पिककर चल जाते कभी घूमते फिरत और कभी घर बठ ही सास सेवते रहते।

ऊपर की और नीचे की मजिल पर और भी परिवार थे, किन्तु वह किसी को जानती नहा कोई इस जानता नहीं।

आफिस से घर आकर वह अपने घर की चारणीवारी में पस जाती समाचार पत्र पढते कुछ पत्रिकाएँ और किताबें पढती। उनमें भी तिल तग भा जाए ता रडिया लगा लेती रेडियो में भी खीभ उठे तो बाहर बालकनी में लडकी हाकर नीचे सडक पर आते जाने लोगो को देखनी रहती। यदि यह भी न कर सके ता रोनी रहती बस उसका मन हलका हो जाता।

पिककर वह जा नहीं सकती, अनेली लडकी पिककर जाए तो क्या पगता।

कहाँ घूमन वह नहीं जाती अनेली कहाँ जाए ?

माई माभी को भी मिलन कितनी बार जाए ?

विवाह से पूरा वह इसी गहर में रही है बनी हुई है। उसकी सहलिया हैं। कोई ब्याही गई कोई बाल-बच्चों वाला है, घर गृहस्थी का बोझ है।

कही भी जाना उसे अच्छा नहीं लगता। उसका दिल में बात बठ गई है कि उसका जान पर कोई प्रसन्न नहीं हाता किमी के पास उसका जितना खाली समय नहीं कि कोई उसका साथ बात कर सके। कई उम जैसा अनेना नहीं कि उसकी उदासा का अनुभव कर सके।

अन वह अपने में ही मिमटी सिबुडी रहती है।

कवन रतना है जिस वह लगातार पत्र लिखती रहती है। रतना और मीना एकदुई पनी हैं। कुछ वर्षों का मत्रा उह एक दूसरे के बहुत समीप ल आई परन्तु मीना की दूरी है। पत्रा द्वारा यह दूरी मिटती सा नगा पगती मीना का। क्याकि पत्रा द्वारा वह अपना मन खान नहीं सकती। अपने मन के भाव बता नहा सकती।

मीना का अकनापन ही मीना का, उसका गरीब का उसका मन का, उसका तिल को उसका त्रिमाग को उसकी आत्मा को खाल जा रग था। उम लगता था कि वह भीतर-बाहर से खोखली हाता जा रही है।

वह अपना पुराना अलमन निवाल कर देखती । उस मीना और आज की मीना में कितना अंतर है । अलमन वाली मीना है रस भरा सेव, और आज की मीना है सब का गमहीन भाग, उसका छिलका ।

परन्तु अब तो रतना और उमक बच्चे आ रहे हैं । उसे दुनिया में किमी बात का यकीन है तो यही कि वह जब भी रतना को बुलाए वह आ जाएगी ।

इहा विचारा में मीना की आंखें लग गईं ।

सपन में उसने देखा कि वह एक बाग में खड़ी है । उस बाग में लाल सुख फूल हैं, फूल ही फूल । उन फूलों की ओर देख कर वह मुसकरा रही है । उन फूलों की कोमलता को अनुभव करने के लिये उनका स्पर्श करने के लिए वह हाथ आगे बढ़ाती है तो मारा वातावरण हमी की गुजार में भर जाता है और वह क्या देखती है कि सार लाल सुख फूल लाल-लाल मुसकराते बच्चा में बदल गए हैं । और सब बच्चे उसमें इतने गिद आकर घेरा डाल लेते हैं । एक गाल दायरे में खड़े एक दूसरे का हाथ पकड़ के एक गीत गाने लग । मीना उन सब के बीच मंत्र मुग्ध होकर उम खल में डूब गई । और उन लाल बच्चा की काशनी, बिल्लौरी काने, नीले भूरे नैना में झकती रही । उसके वक्ष में साईं ममता मचल उठी उसकी छातियां दूध में भर उठी और वह सब बच्चे उसमें देखते देखते, दूध पीते नहे बच्चा में परिवर्तित हो गए । उसका मन चाहा कि इन सब बच्चों को एक साथ अपनी छाती से चिपका ले और वे दूध पीते रह पीते रह उसने अपना हाथ उन बच्चों की ओर फलाया परन्तु उसके हाथ फल ही रह गए । जम ही वह बच्चों के समीप आ रही थी बच्चे दूर ही रेंगते जा रहे थे दूर उसकी पहुंच से बाहर । वह हाफ कर बैठ गई उसने अपनी छातियां को अपने हाथों में दबा लिया उनमें से एक पीड़ा उठी और वह उस पीड़ा से कराह उठी ।

उसकी आंखें खुल गई थी । उसमें अपने हाथों से छाती को दबाया हुआ था । उसे लगा कि वास्तव में ही वहा पीड़ा हो रही है ।

उसने रतना और उसके बच्चा के आने की तयारी शुरू कर दी । बिस्किट टाफियां खिलौने और न जान कितना कुछ खरीद लाई । लाइब्रेरी के बाल विभाग से रंग बिरंगी तस्वीरें वाली किताबें निकाल लाई ।

वह स्वयं तीन चार दिन चिन्तियां कीबे रीछ शेर राजा रानी भूत, देव की कहानियां पढ़ती रही जो वह टोनी और टीना को सुनाएगी ।

और सचमुच ही रतना का तार आ गया कि वह आ रही है । मीना स्टेशन पर पहुंच गई वह बहुत प्रसन्न थी । आज उसकी आंखों का सूनापन, मूढ़ का पीनापन सब इस प्रसन्नता में छिप गया था ।

गाड़ी रुकी, दूर एक दरवाज में खड़ी रतना मीना को हाथ हिला रही थी । मीना भाग कर गई उसने जोर से रतना को बांहों में ल लिया ।

तुम आ गई हो रतनी मुझे पूरा यकीन था कि तुम आओगी ।'

मीना तुमने यह क्या हाल बना रखा है ? हैरान हो रतना मीना की ओर देख रही थी । उसकी आंखें तरल हो गई थी ।

“अब तुम आ गई है सब कुछ ठीक हो जाएगा।” मीना हम परी। उमन टाना टानी का प्यार किया। अपना सोने से लगा लिया।

उस दिन उसने आफिस से छुट्टी ले ली थी। खाना पीना खता रहा, गप्पें बसती रही छोटे छोटे मजाब हाने रह। रतना की हँसी न सारा घर चटक उठा। रतना अपने पति की, अपने समुदाय की अपने गृहस्थ जीवन की दुःख-सुख की सब बातें मीना को बताती रही।

मीना न अपने एकाकी जीवन के बारे में अपनी उदासी के बारे में, रतना का कुछ नहीं बताया। हम रौनक में, इस सुनी में वह उस मूनपन का अन्वय नही करना चाहती थी।

दोपहर को उठने पिक्कर देरी, शाम का बाहर पूरा खाना भी बाहर ही गया और एक घर घर आ गइ।

मीना बच्चों में तोनली-नोतली बातें करती हुई, उनको मुलाती मुलाती स्वयं भी सो गई।

रतना अभी जाग रही थी। वह कितनी दर माना न साए चहरे को देखती रही, उसके एक और टीना थी दूसरी और टोनी था। दोनों को अपने साथ लगाए मीना गहरी नाद में साई थी। एक ही दिन में दोना बच्च उसका साथ घुल मिल गए थे और अब उठ माँ का फिक्र ही नही था। टोनी अपने पिता के बिना सोना ही न था। सो सी जिदें करता था, टीना अपनी माँ के बिना कभी न साई थी। इस मीना न उन दोनों को माँ-बाप भुला लिए थे।

मीना न यद्यपि रतना को कुछ न बताया था। परन्तु उसने उसकी आँखा से, उसके चेहरे से, उसके वातावरण से सब कुछ भाँप लिया था। सोई हुई मीना उस एक बच्ची सी लगी। उसका दिल चाहा कि वह उस छान्नी से लगाकर भींच ल।

कितनी दर रतना बड़ी-बड़ी मीना के एकाकी जीवन के बारे में, उसके बतमान और भविष्य के बारे में सोचती रही। उसका गला भर आया और वह कितनी देर मीना के लिए रोता रही।

सुबह हुई मीना आफिस चली गई।

‘मीना जी आज आप बड़ी प्रसन्न नजर आ रही है।’ उसके बास ने उसकी तरफ मुस्करा कर देखते हुए कहा जब वह किसी काम से उसके आफिस में आ गई था।

मीना हैरान होकर बास की धार देखने लगी। तो क्या यह भी मेरी उदासी खुशी को नोट करता है। मीना न साँचा।

मीना बल आप छुट्टी पर थी। क्या बात है ‘ठीक तो है?’ नच टाइम पर नगभग सब लडकियाँ उसने गिद हाँ पूछ रही थी। जब स वह इस आफिस में काम कर रही है उसने छुट्टी कभी नहीं ली थी।

‘मीना जी, आप के चेहरे पर आज बड़ी चमक है क्या कोई विशेष बात है?’ एक और लडकी ने गुरारत में आँस मटका कर पूछा।

माना और भाँ हैरान हो गई। यह सब लडकियाँ भी उसकी प्रसन्नता का भाँप

गई थी। क्या चेहरा वास्तव में ही मन का दर्पण है। उसने स्वयं तो कभी किसी से अपने बारे में कुछ कहा नहीं। शायद ही कहीं जानता है कि वह इतनी उदास और शांत क्या है।

मध्या समय छुट्टी होने पर वह जल्दी-जल्दी आफिस से निकल रही थी। आफिस के दा-तीन युवक उम सुना-सुनाकर कह रहे थे—

‘क्या दोस्त कल छुट्टी पर थे?’ एक बोला।

‘क्या दोस्त, आज बड़े खुश दीखते हैं?’ दूसरा बोला।

और अनायास मीना के होठों पर मुस्कराहट खेल गई। उसने मुड़कर दस्ता बैलके भेंप म गये।

घर जाते समय रास्ते में मीना सोच रही थी कि रतना तो केवल आठ दिन के लिए उसके पास आई है। चली जाएगी तो फिर ?

सारे रात में फिर ही प्रश्न चिह्न बनकर उसकी आँखों के सामने घूमता रहा, चक्कर काटता रहा। वह बस में बैठ गई। उस लगा कि फिर प्रश्न चिह्न का भी पहिए लग गए हैं और वह उस ऊपर चढ़ाए आगे ही लिए जा रही है। इस बस की ता कहीं पर मजिल है, परन्तु उस प्रश्न चिह्न ही मजिल का कोई ठिकाना नहीं।

उस प्रश्न चिह्न में से घुमड़ घुमड़ कर भिन्न भिन्न चित्र उसकी आँखों के सामने घूमते रहे। वह अकेली बठी रेंथियो चला रही है। उस पर खीर रही है। किताब पढ़ रही है। उनमें खीरकर उनका भी पटक रही है। बालकनी में खड़ी लोमा को देख रही है। उसमें भी तग आकर बालकनी में कूदने की साज रही है। दीवारा में सिर टकरा रहा है और फिर रोए जा रही है।

और इसी अचेतन अवस्था में वह न जाने कब घर पहुँच गई। घर में रतना थी उसके बच्चे थे। सारा घर भरा पडा था। उसके आन पर पाच सात मिनट के अंदर ही सब बच्चे टीना-टीनी का नेकर भी बाहर चले गए।

रतना मीना का पीला मुग्धाया चेहरा देखकर हैरान रह गई। उसकी आँखें बाँवरी पौ सूनी-सूनी न जाने क्या साज रही थी। रतना को लगा कि मीना कुछ काप-सी रही है।

‘मीनी, क्या बात है?’ रतना घबरा-सी गई थी।

मीना काँपती जा रही थी।

‘क्या हुआ है मीना?’ उसे अपने साथ लगाकर ममता से रतना न पूछा।

‘रतना तुम चली जाओ कल मुबह हो चली जाओ।’

‘मीनी तुम्हें क्या हुआ है?’ पागल हो गईं हैं क्या? क्या क्या हुआ है? चली क्यों जाऊँ?’

रतना भीचककी हो गई थी।

रतना, तुम्हारे आन की खुशी मेरे लिए असह्य है तुम चली जाओ ही चली जाओ मुझे अपने एकाकी जीवन से स्नेह हो गया है। तुम्हारे यहाँ रहने से मेरी चिन्तन म अंतर आ जाएँगे। और उस अचेतन में मुझे फिर से खीर करना



पटगा । अपना हठान बानना पडगी । प्र।  
ग मजान करेग फिर पूछेगे घाज तुम र  
बानेगी ।

घोर न जात रिपनी दर पागला का त  
बाहर ग टीना क रीत का आवाज आ  
थी । रतना भीना का यूँ हा छोड बाहर टीन  
आवाज बान हा गई घोर फिर बाग आर त।  
माना न उसा समय उठकर रडिया लगाय  
पडरह थीस मिनट क पचात् यह बावनी म  
आवर रोन तग गई । उम बाद हाग न थी ।  
यमर म थटा उसाका यह मय हक्के दग गरी



पटगा। अपनी फटान बखाना पड़ेगी। घाट जिता व यात्रे आदिम के साग फिर मुझ  
 म मजाज करेण फिर पूछेगे घाज तुम उन्म क्या हो ? तो फिर बनावी में क्या  
 करेगी ।

श्रीर न जान कितनी तेर पागला की तरह मोता क्या-क्या बोलती रत्ना।

बाहर म टीना व रात का आवाज आ रही थी। वह कितना बच्च म भगड पत्नी  
 थी। राना मीना का यूँ ही छोटा बाहर टीना व पाम चला गई थी। उमर रात का  
 आवाज बल हा गई श्रीर फिर आरा आर आमागा छा गई।

मीना ने उसी समय उठकर रेडियो उगाया श्रीर तटकर एक पत्रिका पढ़न लगी।  
 पन्द्रह बीस मिनट व पश्चात् वह बातबनी म जाकर खडी हा गई। फिर कमर म  
 आरग रोत नम गई। उम बाद हाश न था कि रतना अपने दाना अच्छा महित उमा  
 कमरे म बठी उमकी यह मत्र हलकन लग रही थी।

